घर मागता फिरे ॥ मागंता पण न दीये कोय, अव
त्त तणां फल एहवां होय ॥ २ ॥ किण कर्में अति खी
णु अग, किण कर्में पुष्टता प्रसंग ॥ गोली सरिखु मो
टुं पेट, दु ख देखतां चाले नेट ॥ ३ ॥ छिद्र पारकां
जोतो फरे, विघन पारका हियडे धरे ॥ निंदा करतां
न लहे शंक, परत्भवमां ते थाये रंक ॥ ४ ॥ राजाना
फाड्या भराार, रस तेहनां चोर्यां सार ॥ थूलदेह ते
करणी तणुं, मीखें मांस वधे अति घणु ॥ ५ ॥ एक
दीकरी आवी रहे, पुत्र तणु नामज नवि लहे ॥ को
णें कर्में सीधां मली, वलतु बोले एम केवली ॥ ६ ॥
विप्रजाति तव खेती करी, गाय एक ते जाये चरी॥
क्रोधें ब्राह्मण मारी गाय,तिण पापें एक पुत्री थाय॥
॥ ७ ॥ एक पुरुष जे नारी वरे, ते सघली जाये ज
मपुरें ॥ कोण कर्म पहोंले तेहने, होवे न नारी एक,
जेहने ॥ ८ ॥ पर[illegible] अति घणी, विण अ
पराध हेथें अवगणी ॥ शस्त्रघात विषघातें करी,
री पाप बुद्धि मन धरी ॥ ९ ॥ जेह जीवनें ऊप
भरम, तेहज पोतें कहो कोण कर्म ॥ उत्तम जाति
अनें गर्वियो, भांग अफीण सुरापान कियो ॥ १० ॥
ज्वर अति दाह ऊपजे,तेहने कर्म कहो कोण

ञजे ॥ पोठी गाडां वाहे उंट, ञरे ञार अधिकी तस पूंठ ॥ ११ ॥ उनाले अग्नि ज्वले अति घणी, धन लो ञें थाये ते ञणी ॥ तापें पीड्यां आर्त्ति करे, तृषा क री पशु डुःखियां मरे ॥ एह पाप जाणो तस शिरें ॥ १२ ॥ चार पांच ठ मासें ऊरे, अधिको नारी ग ञे नहिं धरे ॥ कोण कर्म पोहोते तेहने, ते संबंध क हो हित घणे ॥ १३ ॥ आहेडी वनमांहे शोर, करे पापीया पाप अघोर ॥ पाडे हरिणने बहुला त्रास, गञपात तिणे गञनो नाश ॥ १४ ॥ विधवा बालपणे जे थाय, तेहने पाप कोण कहेवाय ॥ निज ञरतारनें मारी हाथ, रमे रंगें बीजानी साथ ॥ १५ ॥ पुत्र जनम पामीने मरे, संतति एक नहिं तसु घरे ॥ कोण कर्म पूरव ञव कस्यां, तेणे संतान विना अवतस्यां ॥ १६ ॥ प हेली ढाल ए पूरी करी, कर्म विपाकथकी उद्धरी ॥ एहवां कर्म टाले नर नार, वीर सुखी थाये संसार ॥ १७ ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मृग वराह शंबर शशा, महिष ठाग बक मोर ॥ तर पोपट चरकलां, हंस कपोत चकोर ॥ १ ॥ रे एहवा जीवने, हाथ सरासर नाडी ॥ मीनादि जलचर हणे, जाले पाशमां पाडी ॥ २ ॥ प

शु पखीमाणस तणां, जेह विणासे चाल, नाश करे जू लीखनो, ते बाळीया संभाल ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वाट जोवता आव्यांजी ॥ सुदर साहेली ॥ मोरलीयें टहुकायाजी ॥ सुदर गोरडली ॥ ए देशी ॥

॥ पुत्र पांच प्रकारना कहियेंजी ॥ शिष्य तुमें सांभलो ॥ जेहवा कीधां तेहवा फल लहियेंजी ॥ शिष्य० ॥ पहेलो थापणमोसो जाणोजी ॥ शिष्य० ॥ बीजो रणियो पुत्र वखाणोजी ॥ शिष्य०॥ १ ॥ त्रीजो वेरी पुत्र भणीजेंजी ॥शिष्य०॥ चोथो उदासीन गणीजेंजी ॥ शिष्य० ॥ पुत्र पांचमो ते सुखकारीजी ॥ शिष्य० ॥ ते जाणो तुमो निरधारीजी ॥ शिष्य० ॥ २ ॥ थापणमूकी जाये कोइजी ॥ शिष्य० ॥ उंखवीनें राखे सोइ जी ॥शिष्य०॥ धणी आवीने जब मागेजी॥ शिष्य० ॥ कहे ताहारु कांहि न लागेजी ॥ शिष्य० ॥ ३ ॥ में हाथो हाथें दीधीजी ॥ शिष्य० ॥ तुमें घरमें मूकी लीधीजी ॥ शिष्य० ॥ तु गाम चूक्यो ठे भाईजी ॥शिष्य० ॥ ताहरे महारे कोण सगाइजी ॥ शिष्य०॥ ४ ॥ क्रोधें ते अतिधडधडताजी ॥ शिष्य० ॥ दरबारें जाय ते वढताजी ॥शिष्य०॥ साखी विण कहे रायजी

॥ शिष्य० ॥ अमथी कांइ न कहेवायजी ॥ शिष्य० ॥ ५ ॥ प्राणांत लगें दुःख व्यापेजी ॥ शिष्य० ॥ तोही लोजी पाछुं नापेजी ॥ शिष्य० ॥ ते मरण पामे तसु दुःखेंजी ॥ शिष्य० ॥ आवी उपजे ते कुखेंजी ॥ शिष्य० ॥ ६ ॥ पहेली अघरणी कीजें जी ॥शिष्य० ॥ द्रव्य बहुलुं तिहां खरचीजेंजी॥शिष्य०॥ घर पुत्र थई जब आवेजी ॥ शि० ॥ तव आशा पूरी कहावेजी ॥ शि० ॥ ७ ॥ वधामणि दीधी जेणेंजी ॥ शि० ॥ लखमी पामी बहु तेणेंजी ॥ शि० ॥ जन्मोतरी जोषीयें कीधीजी ॥शि०॥ बगशीस घणी तस दीधीजी ॥शि०॥८॥ रूपवंत घणुं गुणवंतोजी ॥ शि० ॥ सघले लक्षणें संजुत्तोजी ॥ शि० ॥ जाट जोजक जांरू जवाया जी ॥ शि० ॥ गीत गाये नाचे सवाया जी ॥ शि० ॥ए॥ दान देइ घणुं संतोषे जी ॥ शि० ॥ निजनाति कुटुंब सहु पोषे जी ॥ शि० ॥ पान फोफल नारीयर दीधां जी ॥ शि० ॥ पहेरामणी करी राजी कीधां जी ॥ १० ॥ शि० ॥ कुलवर्द्धन नामज दीधुं जी ॥ शि० ॥ जाणे कारज माहरुं सीधुं जी ॥ शि० ॥ माथे नवरंगी टोपी जी ॥ शि० ॥ जरफाग फिरंगी उंपी जी ॥ शि०॥११॥ आंगलां दरीयाइ दीसे

जी ॥ शि० ॥ माय बाप तणां मन हींसे जी ॥ शि० ॥ हाथ पगें सोनानी कमली जी ॥ शि० ॥ अणिआली आंखडली जी ॥ शि० ॥ १२ ॥ कानें मोतीनी लालडी सोहे जी ॥ शि० ॥ केडें कंदोरो मन मोहे जी ॥ शि० ॥ पगें राती पगरखी घाले जी ॥ शि० ॥ ठमकतो आगण चाले जी ॥ शि० ॥ १३ ॥ जेमरूप नंदननु निरखेजी ॥ शि० ॥ तेम हियडामां घणु हरखे जी ॥ शि० ॥ मुज भाग्यदशा सपराणी जी ॥ शि० पुत्र बोले मधुरी वाणी जी ॥ शि० ॥ १४ ॥ पांच वरस लगें लाले पाले जी ॥ शि० ॥ पठी भणवा मेल्यो निशालें जी ॥ शि०॥ आपे निशालीया ने खडीया जी ॥ शि० ॥ रूपा सोनाना ते घडीया जी ॥ शि० ॥ १५ ॥ वतरणां विणा जवफुली जी ॥ शि० ॥ आपे सुखडली बहु मूली जी ॥ शि० ॥ खीरोदक शणियां चकमा जी ॥ शि० ॥ पांमरी पीतांबर थकमां जी ॥ शि० ॥ १६ ॥ पंडितनें बहु धन आपे जी ॥ शि० ॥ जाणो कीर्त्ति माहारी व्यापे जी ॥ ॥ शि० ॥ भणी गणिने थयो ते पोढो जी ॥ शि०॥ सहु कहे पिताथी दोढो जी ॥ शि० ॥ १७ ॥ माता पण वचन न लोपे जी ॥ शि० ॥ कुवचन कहे तो

ही न कोपे जी ॥ शि० ॥ एम प्रीति देखाडी पूरीजी ॥ शि० ॥ जो थापण होवे अधूरी जी ॥ शि० ॥ १८ ॥ रोग उपजे तेहने अंगें जी ॥ शि० ॥ वात पित्त प्रबल कफ संगें जी ॥ शि० ॥ तव वैद्य तेडे तसु काजें जी ॥ शि० ॥ धन नाहिं तो काढो व्याजें जी ॥ शि०॥ १९ ॥ जुआ धूणे ने कहे जूतो जी ॥ शि० ॥ ऊजणी नाखी अवधूतो जी ॥ शि० ॥ दोरा मंत्री बहुला बांधे जी ॥ शि० ॥ आयु त्रूटुं कोइ न सांधे जी ॥ शि० ॥ २० ॥ आपे वली गोली क्वाथ जी ॥ शि० ॥ करे कार ज सघलां साथ जी ॥ शि० ॥ निज थापण सघली लेइ जी ॥ शि० ॥ सुत पोहोंचे परभव तेइ जी ॥ जी० ॥ २१ ॥ नंदन तुं प्राण आधार जी ॥ शि० ॥ कांइ मेली गयो निरधार जी ॥ शि० ॥ एम करे अनेक विलाप जी ॥शि०॥ उदय आव्यां जे कीधां पाप जी ॥शि० ॥ २२ ॥ ढाल बीजी पूरी कीधी जी ॥ शि० ॥ राग सोरठमांहे सीधी जी ॥ शि० ॥ एहवी करणी जे टाले जी ॥शि०॥ वीर पापपंक पखाले जी ॥ शि० ॥ २३ ॥ ४८

॥ दोहा ॥

॥ रुण संबंधें ऊपजे, पुत्र कुपुत्र कुमित्र ॥ पशु बेहिन भाई वहू, मात पिता कुकलत्र ॥१॥ माथें रण

कोइ मत करो, रण जूनु नवि थाय ॥ परजव जीव आये तिहां, रण जाणो फुःखदाय ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ देशी फुवखडानी ॥

॥ रखे कोइ रण करो ॥ ए आंकणी ॥ सुणजो हवे आदर करी रे, रणिया सुतनी वात ॥ रखे कोई रण करो ॥ जे दिनथी ते ऊपजे, ते दिनथी तिरजात ॥रखे० ॥१॥ कोइ गुण माने नहि, बोले निठुरी वाण ॥ रखे० ॥ मीतुंमीतु सवि जखे रे, कोइ न माने आण ॥ रखे० ॥ ॥ २ ॥ वस्तु जली जे घरे होवे रे, ते चोरी करी लेय ॥ रखे० ॥ जो वारे माता पिता रे, तो गाली तसु देय ॥रखे० ॥ ३ ॥ राठ पीठ जे घर तणां रे, वेची खाये सोइ ॥ रखे० ॥ जांजे हांकलां कुकला रे, जो तेहने कहे कोइ ॥ रखे० ॥ ४ ॥ ए बालक कोइ नवि लहे रे, करशे घर तणा काम ॥ रखे० ॥ मा बाप तेहनां इम कहे, मोहोटो थाशे जाम ॥ रखे० ॥ ५ ॥ शोल वरसनो जव थयो रे, परणाव्यो मन रंग ॥ रखे० ॥ विवाहे ध न खरची घणु रे, वहूअर आणी चग ॥ रखे० ॥६॥ मास एक परण्या थयो रे, मांकी तव वढवाढ ॥रखे०॥ सासु ससरो एम कहे रे, आवी नही कुहाड ॥रखे०॥ ॥ ७ ॥ जंजेरयो जरतारने रे, सासु जूमी रांक ॥रखे०॥

खांडुं पीसुं जल वहुं रे, मुजने भांके भांड ॥ रखे० ॥
॥ ८ ॥ नारायण वश नारीने रे, माणसनुं शुं ज्ञान ॥
रखे० ॥ अंतसमय सहु एम कहे रे, नारीनां जूठं प्रा
ण ॥ रखे० ॥ ९ ॥ वयण सुणी नारी तणां रे, कोप्यो
ते परचंड ॥ रखे० ॥ हणवा ऊठे माय तायने रे,
लेई मूशल दंड ॥ रखे० ॥ १० ॥ माल मंदिर ए
माहारां रे, एहमां नथी तुम लाग ॥ रखे० ॥ फाली
जंटीयां मा बापनां रे, काढे ते निर्भाग ॥ रखे० ॥ ११ ॥
एम दुःख देइ तेहनें रे, पामे मरण अकाल ॥ रखे० ॥
मुह आगल मूकी जाय, विधवा वहूनुं शाल ॥ रखे०
॥ १२ ॥ पेहरी ऊढी नवि शके रे, कांइ न सूजे काम
॥ रखे० ॥ लेणिआयत जो आवशे रे, किहांथी देशुं
दाम ॥ रखे० ॥ १३ ॥ शंकातो निशि दिन रहेरे, ऊठी
जाये परदेश ॥ रखे० ॥ घरनी नारी दुःख सहे रे,
बाली जोबन वेश ॥ रखे० ॥ १४ ॥ इह भव परभव रण
तणां रे, जाणी दूषण टाल ॥ रखे० ॥ वीरमुनि त्रीजी
कहे रे, फुंबखडानी ढाल ॥ रखे० ॥ १५ ॥ स० ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हसे रमे मीठुं चवे, मोहे मन माय ताय ॥
वैरी सुत ते जाणीयें, बाल पणे मरी जाय ॥ १ ॥ वली

कोइ मत करो, रण जूनु नवि थाय ॥ परजव जीव जाये तिहां, रण जाणो फुःखदाय ॥ २ ॥

॥ ढाल श्रीजी ॥ देशी कुयखडानी ॥

॥ रखे कोइ रण करो ॥ ए आंकणी ॥ सुणजो हवे आदर करी रे, रणिया सुतनी वात ॥ रखे कोई रण करो ॥ जे दिनथी ते ऊपजे, ते दिनथी तिरजात ॥रखे० ॥१॥ कोइ गुण माने नहिं, बोले निठुरी वाण ॥ रखे० ॥ मीठुमीठु सवि जखे रे, कोइ न माने आण ॥ रखे० ॥ ॥ २ ॥ वस्तु जली जे घरे होवे रे, ते चोरी करी लेय ॥ रखे० ॥ जो वारे माता पिता रे, तो गाली तसु देय ॥रखे० ॥ ३ ॥ राठ पीठ जे घर तणां रे, वेची खाये सोइ ॥ रखे० ॥ जांजे हांकुडां कुकडां रे, जो तेहने कहे कोइ ॥ रखे० ॥ ४ ॥ ए बालक कोइ नवि लहे रे, करशे घर तणा काम ॥ रखे० ॥ मा बाप तेहनां इम कहे, मोहोटो थाशे जाम ॥ रखे० ॥ ५ ॥ शोल वरसनो जय थयो रे, परणाव्यो मन रग ॥ रखे० ॥ विवाहें ध न खरची घणु रे, वहूअर आणी चंग ॥ रखे० ॥६॥ मास एक परण्या थयो रे,मांकी तव वढवाड ॥रखे०॥ सासु ससरो एम कहे रे, आवी नही कुहाड ॥रखे०॥ ॥ ७ ॥ जंजेरयो जरतारने रे, सासु चूकी रांक ॥रखे०॥

खांडुं पीसुं जल वहुं रे, मुजने भांके भांरु ॥रखे० ॥ ॥ ८ ॥ नारायण वश नारीने रे, माणसनुं शुं ज्ञान ॥ रखे० ॥ अंतसमय सहु एम कहे रे, नारीनां जूठं प्राण ॥ रखे० ॥ ए ॥ वयण सुणी नारी तणां रे, कोप्यो ते परचंरु ॥ रखे० ॥ हणवा ऊठे माय तायने रे, लेई मूशल दंरु ॥ रखे० ॥ १० ॥ माल मंदिर ए माहारां रे, एहमां नथी तुम लाग ॥ रखे० ॥ फाली जंटीयां मा बापनां रे, काढे ते निर्भाग ॥ रखे०॥ ११॥ एम डुःख देइ तेहनें रे, पामे मरण अकाल ॥रखे०॥ मुह आगल मूकी जाय, विधवा वहूनुं शाल ॥ रखे० ॥१२॥ पेहरी ऊंढी नवि शके रे, कांइ न सूजे काम ॥ रखे० ॥ लेणिआयत जो आवशे रे, किहांथी देशुं दाम ॥ रखे० ॥१३॥ शंकातो निशि दिन रहेरे, ऊठी जाये परदेश ॥ रखे० ॥ घरनी नारी डुःख सहे रे, वाली जोबन वेश ॥ रखे० ॥१४॥ इह नव परनव रण तणां रे, जाणी दूषण टाल ॥ रखे० ॥ वीरमुनि त्रीजी कहे रे, कुंवखडानी ढाल ॥ रखे० ॥ १५ ॥ स० ॥७०॥

॥ दोहा ॥

॥ हसे रमे मीठुं चवे, मोहे मन माय ताय ॥ वैरी सुत ते जाणीयें, वाल पणे मरी जाय ॥ १ ॥ वली

ऊपजे वळि वळि मरे, गर्भे आव्यो सोय ॥ नाश करे धन धान्यनो, एम दुःखदायी होय ॥ २ ॥ जो कदाच महोटो थयो, घणो करे हेराण ॥ विषप्रयोग शस्त्रे हरे, मात पिताना प्राण ॥ ३ ॥ सुख दुःख काई न वि करे, नवि आपे नवि लेय ॥ रूसे तूसे जे नही, उदासीन गणो तेय ॥ ४ ॥ जात मात जे प्रिय करे, क्रीडा करतो रंग ॥ यौवन वय जे सुख दिये, भक्ति तणे पर संग ॥ ५ ॥ संतोषे माय बापने, मीठे वचनें जेह ॥ कथन कदा लोपे नहिं, सुत ए पंचम ग्रेय ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नेमिराय तुं धन्य धन्य अणगार ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो काळां कासां, जामणां लाला सघले कीर्धे रे थाय ॥ जीहो पूछे जंबु सुधर्मने, लाला कुण कर्मे कहेवाय ॥ कृपानिधि मुजने भाखो तेह ॥ जेम भांगे मन संदेह ॥ कृपा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो सर्व विषस मुनिने दृये, लाला सतीने करे संताप ॥ जीहो तेणें पापें करी ऊपजे, लाला कोढ रोगनो व्याप ॥ कृपा० ॥ २ ॥ जीहो केणें कर्मे मुख वासना, लाला दुर्गंध होय असराल ॥ ... ... आंगुलि, लाला जे दिये मुनिनें ... जीहो रातु-

अंग रोम उज्ज्वलां, लाला पांपण जेह्नी श्वेत ॥ जीहो पिंगल नर ते जांखिया, लाला कवण कर्मनो हेत ॥ कृपा ॥ ४ ॥ जीहो चैत्य सूरज सन्मुख सदा, लाला जे करे लघु वड नीत ॥ जीहो तेणे पापें करी प्राणी या, लाला पिंगला धरजो चित ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ जीहो धोलो पीलो रातलो, लाला नानाविध परमेह ॥ जीहो करणी तेह्नी कोण लहे, लाला धातु क्षीण होय देह ॥ कृ० ॥ ६ ॥ जीहो सूत्र रजत कंचन त्रंबु, लाला हीरा विद्रुम जेह ॥ जीहो धातु सकल चोरी ग्रहे, लाला बहु मूत्रता निःसंदेह ॥ कृपा० ॥ ७ ॥ जीहो सूकर कूकर गर्दन्ना, लाला कूकड महिष मांजार ॥ जीहो काक उलूक अहि वृश्चिका, लाला कहो कोण पाप प्रकार ॥ कृपा ॥ ८ ॥ जीहो दान दया तप व्रत नही, लाला यात्र न पर उपकार ॥ जीहो रात्रिजोजन जे करे, लाला तेह्थी ए अवतार ॥ कृपा० ॥ ए ॥ जीहो चंग कुशीला कर्कशा, लाला कलह करे दिन रात ॥ जीहो रूप कुरूप काली घणुं, लाला जेंशलंकी सुविख्यात ॥ कृपा० ॥ १० ॥ जीहो घूकस्वर खरगामिनी, लाला माथे बाबरवाल ॥ जीहो क्रोधमुखी बडबड करे, लाला दांत जिस्या को

ऊपजे वलि वलि मरे, गर्जे आव्यो सोय ॥ नाश करे घन धान्यनो, एम दुःखदायी होय ॥ २ ॥ जो कदाच महोटो थयो, घणो करे हेराण ॥ विषप्रयोग शस्त्रे हरे, मात पितानां प्राण ॥ ३ ॥ सुख दुःख कांई न वि करे, नवि आपे नवि लेय ॥ रूसे तूसे जे नहीं, उदासीन गणो तेय ॥ ४ ॥ जात मात जे प्रिय करे, क्रीडा करतो रंग ॥ यौवन वय जे सुख दिये, भक्ति तणे पर सग ॥ ५ ॥ संतोषे माय बापने, मीठे वचनें जेह ॥ कथन कदा लोपे नहि, सुत ए पंचम जेय ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नेमिराय तुं धन्य धन्य अणगार ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो कालां कालां, जामगं लाला सघले कीर्तें रे थाय ॥ जीहो पूछे जंबु सुधर्मने, लाला कुंण कर्मे कहेवाय ॥ कृपानिधि मुजने भांखो तेह ॥ जेम भांगे मन संदेह ॥ कृपा० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ जीहो सर्व दिवस मुनिने हणे, लाला सतीने करे संताप ॥ जीहो तेणें पापें करी ऊपजे, लाला कोढ रोगनो व्याप ॥ कृपा० ॥ २ ॥ जीहो केणे कर्मे मुखे वासना, लाला दुर्गंध होय असराल ॥ जीहो संकल मे वली आंगुलि, लाला जे दिये मुनिने गाल ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ जीहो रातुं —

निदान ॥ कृपा० ॥१ए॥ जीहो अणजाण्यो नय ऊपजे, लाला सूतां बेठां रे आव ॥ जीहो अणदीठुं दीठुं कहे, लाला तसु फल मन संनाव ॥कृ०॥२०॥ जीहोएउपदेश सोहामणो,लाला सांनलि टालो रे दोष ॥ जीहो चोथी ढाल पूरी थइ, लाला वीर कहेपुण्य पोष ॥ २१ ॥ ए७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार पांच पुत्री हुवे, ते सघली रंमाय ॥ पूरवन्न व तिण प्राणीयें, कीधा कोण अन्याय ॥ १ ॥ चैत्य कूप सर वावनां, करे विघन धन खाय ॥ ग्रामादिक बाले वली, जनमांतर नर हाय ॥ २ ॥ मेद वायपी डा करे, पाप तेहनां नांख ॥ मद्य मांस जे नर नखे, मरणांत फल अनिलाख ॥ ३ ॥ कानें कांइ न सां नले, कोण कर्यां कुकर्म ॥ कहो पूज्य! जंबू नणे, व लतुं कहे सुधर्म ॥ ४ ॥ साधु वचन नवि सांनले, सु णे नहीं सिद्धांत ॥ अणसांनल्युं कहे सांनल्युं, ब हेरो थाय इम न्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ पुण्य प्रशंसियें ॥ ए देशी ॥

॥ वात गुल्म होये जेहने रे, पेटें थाये रे पीड ॥ खाधुं धान्य जरे नही रे, कवण कर्मनी नीड रे ॥ १॥ कर्मकथा कहो ॥ ए आंकणी ॥ गणधर गुण नंमार रे

दाखि ॥ कृपा० ॥ ११ ॥ जीहो चाड़ु पाड़ु पाळखे,
खाखा पतिने करे प्रहार ॥ जीहो पहची नारी जेहने,
खाखा कवण कर्म अविकार ॥ कृपा० ॥ १२ ॥ जीहो
नणद देराणी जेठाणीयां, खाखा सासू ससरो जेठ ॥
जीहो वडसासू देयर वहू, खाखा कर्म करे नहिं वेठ
॥ कृपा० ॥ १३ ॥ जीहो जे जिनवर पूजे नहि, खाखा
करे आशातन धूख ॥ जीहो निंदे जनने जे सदा,
खाखा जाणे ए पापनु मूख ॥ कृपा० ॥ १४ ॥ जी
हो पांच सात पुत्री हुवे, खाखा पुत्र तणु नहिं नाम ॥
जीहो तेहतणां परकाशियें, खाखा पूरव जवनां काम
॥ कृपा० ॥ १५ ॥ जीहो आहेडी जवें जंगखे, खाखा
रोके जखनां ठाम ॥ जीहो कूप नदी डह वावडी,
खाखा पशु पखी आवे आम ॥ कृपा० ॥ १६ ॥ जी
हो कनाखे अति आकरो, खाखा तडके वाके रे देह॥
जीहो तरस्या ते पाणी मखे, खाखा पाप घणुं तसु हो
य ॥ कृपा० ॥ १७ ॥ जीहो आरंज्यु निःफख होये,
खाखा सीझे नहिं कोइ काज॥ जीहो विघन घणां होय
तेहनें, खाखा कोण कर्में महाराज ॥ कृपा० ॥ १७ ॥
जीहो मात पिताने पीडवे, खाखा माने नही गुरु आ
ण ॥ जीहो कारज गुरुनु नवि करे, खाखा तेहनु पह

ष्ट रे ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ एक नर दान बहुविध दिये रे, आपे उलट आणि ॥ निंदे तेहनें नित्यप्रत्यें रे, ऊंफमुखो ते जाण रे ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ गर्जें शाल थई रहे रे, वधे नहिं जे बाल ॥ पूरव नव तेणें आद स्यां रे, कवण कर्म विकराल रे ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ जातमात्र ते बालने रे, विवाहनी धरे शंक ॥ मारे पाडे गर्जनें रे, तेहनें शाल निःशंक रे ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ स्थानच्रष्ट नर जे हुवे रे, पामे नहि किहां ठाम ॥ पापप्रकृति कोण तेहने रे, ते संजलावो स्वाम रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ मारग अथ जल थानकें रे, वृक्ष महाफल नार ॥ पशुपंखी पंथी जिहां रे, ल्ये विशराम अपार रे ॥ कर्म० ॥ १६ ॥ कापे एहवा वृक्षनें रे, तेहनें ठाम न होय ॥ जिहां जाये तिहां डुःख सहे रे, बेसण न दिये कोय रे ॥ कर्म० ॥ १७ ॥ कोढ रोग घट जेहने रे, धोलुं थाये गात्र ॥ मोहोटा माणस जेहशुं रे, बोले नहीं क्षणमात्र रे ॥ कर्म० ॥ १८ ॥ लोपे वृत्ति जे साधुनी रे, गोवध चोरी जूठ ॥ कन्या धन जे वावरे रे, कूलां कूंपल डुठ रे ॥ कर्म० ॥ १९ ॥ खूटे खांतें ख्यालशुं रे, ते नर कोढी रे थाय ॥ कीधां कर्म न बूटीयें रे ॥ जब तब डुःख दे आय रे ॥ कर्म०

॥ कर्म० ॥ अमृत वाणी वरसता रे, जगजीवन हितका र रे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ कोश्रो विणठो जे होय रे, को इ न बांधे जास ॥ ते वहोरावे साधुने रे, ए फल जा णो तास रे ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ खयन व्याधि तस ऊप जे रे, रोग सहुनो रे धास ॥ रात दिवस खूं खूं करे रे, कफ तणो आवास रे ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ हाड तणो विक्र य करे रे, जे वली विष व्यापार ॥ मधु पाडे वनमां ज इ रे, क्षयरोगी निर्धार रे ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ जन्मथकी जे आंधलो रे, पर्फल प्रवालां गाय ॥ नेत्र रोगी बहुजाति ना रे, कवण कर्म अंतराय रे ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ परस्त्री निरखे रागशु रे, परनारीशु प्रीत ॥ काज विणासे पारकु रे, आख तणी ए रीत रे ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ आधा शीशी अतिघणु रे, माथे पीड करत ॥ ऊंचु जोइ न वि शके रे, कोण अशुभ आचरंत रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ अग्नि सार्से आदरे रे, श्यामा आयत कीन ॥ चित्त ताहरुं ने माहरु रे, जिम गणवा लयलीन रे ॥ कर्म० ॥ ॥ ए ॥ परणी नारी परहरी रे, पररमणीशु रंग ॥ घरना वे जे आपणो रे, तिण शिर दुःख प्रसंग रे ॥ कर्म० ॥ ॥ १० ॥ सूयर सरखु जेहने रे, मुखडुं होये अनि ष्ट ॥ तेणें श्यां पाप समाचर्यां रे, ते भांखो मुज इ

व तेणें जीव रे ॥ सो० ॥ मुखरोगें करी मानवी, पाडे घणी घणी रीव रे ॥ सो०॥२॥ गांठ छोडे जे पारकी, धूता वी लीये माल रे ॥ सो० ॥ कंठमाला होय तेहने, गं ऊमाल रुंऊमाल रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ स्वाद करे जे न व नवा, खावानो होय वाढ रे ॥ सो० ॥ आठम पां खी नवि गणे, दूःखे दांत जीन्न दाढ रे ॥ सो० ॥४॥ जिव्हा वश राखे नहिं, बोले बहुलां कूड रे ॥सो०॥ संयम सहित सूधा यति, कूड करे तस मूढ रे॥सो०॥ ॥ ५ ॥ ते परन्नव थाये बोबडो, होये वली मुखना रोग रे ॥ सो०॥ आप कमाइ डुःख सहे, बूटे न कर्मना न्नो ग रे ॥ सो० ॥ ६ ॥ श्रवण वहे जेहना सदा, रुधिर परु निकसंत रे ॥ सो० ॥ कानें नाखे ऊाटका, कव ण कर्म विकसंत रे ॥ सो० ॥ ७ ॥ न्नांऊ न्नवाई सां न्नले, चाडि चुगलनी घात रे ॥ सो० ॥ आदर करी आदरे, कान तणी ए वात रे ॥ सो० ॥७॥ दी र्घदंत मुख नीकले, दीसे घणुं विरूप रे सो० ॥ प र अपवाद घर घर करे, ए तसु कर्म स्वरूप रे ॥सो०॥ ॥ ए ॥ पगरहित होये पांगलो, पगलुं एक न खसा य रे ॥ सो० ॥ पूरव न्नवनुं तेहनें, कवण कर्म डुःख दायरे ॥ सो० ॥ १० ॥ पग न्नांगी वाहे पशु, दया र

॥ २० ॥ मात पिता नारी तणो रे, बेटा वेटी वियोग ॥ जेहनें आवी ऊपजे रे, कवण कर्मनो जोग रे ॥ कर्म० ॥ २१ ॥ गाय वत्स माय बापनो रे, पखी पुत्र विछोह ॥ पाडे पापी तेहने रे, मलवाने होये रोह रे ॥ कर्म० ॥ २२ ॥ सूत्रनी वाणी सांजली रे, टाले दूषण दूर ॥ वीर कहे ढाल पांचमी रे, पामे सुख ज रपूर रे ॥ कर्म० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नंदन अथवा नंदिनी, जन्म पामे माय बाप ॥ मरण धर्म पामे तुरत, कवण कर्म संताप ॥ १ ॥ शरणें आव्या जीवने, जे शरणु नवि थाय ॥ परजव तेहना पापथी, शरण विना सीदाय ॥ २ ॥ जलो वरें करी जे दु खी, पेट न खोवे नर्म ॥ तेणें संध्या कोण पाठले, जवमा अधिक अधर्म ॥ ३ ॥ जाति पांति गणे नहिं, खाये जक्ष अजक्ष ॥ विरति नहि कोइ वस्तुनी, जलोदर थाये प्रत्यक्ष ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥

॥ कंठनाल रुकमाल जे दांतें जीनें दुःख रे ॥ सोहम स्वामी कहो ॥ संघ होठ होय बोबडो, पाके जेहनु माव रे ॥ सो० ॥ १ ॥ अकारज कीधां किस्यां, पूरव ज

कहे वीरजी, दूषण नहि लवलेश रे ॥ सो० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूल व्याधि जे नर लहे, रूाबी जमणी कूख॥ औषध को मानें नहि, कवण कर्मनुं दुःख ॥ १ ॥ पशु पंखी मानव प्रतें, बेठां बाण हणंत ॥ शूलरोग त स ऊपजे, सोहम एम जणंत ॥ २ ॥ कारण चार विना मरे, जे नरनां संतान ॥ तेह तणां गुरुजी कहो, कवण कर्म विन्नाण ॥ ३ ॥ सूरजने सन्मुख थई, देवालयमां जाय ॥ द्रव्य लोज्ञ मनसा धरी, साधु तणा सम खाय ॥ ४ ॥ सम खातो शंके नहि, रुषिमाथे कर देय ॥ मृषासम कीधाथकी, संतति नाश करेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ हांसलानी ॥ रुषनजिणं-
दशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ ठुंठा जे होय मानवी, बेहु हाथें हो न कराये काज के ॥ पूज्यजी कहे कवियण सुणो ॥ ए आंकणी ॥ जव पहेलो जे जांखियें, तेहने होय हो जे कर्मनो साज के ॥पूज्य०॥१॥ सुधर्मा वलतुं एम कहे, सुण जंबू हो तसु कर्मनी साख के ॥ रसीयो पाप तणे रसें, जे छेदे हो पंखीनी पांख के ॥पूज्य० ॥२॥ मात पिता गुरु साधुने, निजहाथें हो ताडना करे तिरूक के ॥ परजव करम उद

हित रखवंत रे ॥ सो० ॥ आंबली वड आवली, को पें कुमति पडत रे ॥ सो० ॥ ११ ॥ श्वेतारकादिक ओषधि, काले तेहनी जडंत रे ॥ सो० ॥ पाप उद य जब आवियां, सूको पगु खोम्तत रे ॥ सो० ॥१२॥ मूत्र कृछ्र करी महा दु खी, पथरी रोग प्रचन्न रे॥सो०॥ अतगैल शोफो होय, कवण कर्मनो बंन्न रे ॥ सो०॥ ॥ १३ ॥ जे राजानी रमणीशु, सेवे विषयनां सुख रे ॥सो०॥ मूत्रकृछ्रनु तेहने, परनव थाये दु ख रे॥सो०॥ १४॥प्रेम करी परनारीशु, काम राग विलसंत रे॥सो०॥ परदाराना पापथी, पथरी प्रबल वमत रे ॥सो०॥१५॥ गुरुणीशुं रंगें रमे, कामविषयना राग रे॥ सो० ॥ अ तगैल होय तेहने, किहां न लहे सोजाग रे ॥सो०॥ ॥१६॥ महिला मित्रनी जोगवे, वारे तेहशुं वढंत रे॥ सो० ॥ नवि बीये अपवादथी, शोफो तास चढंत रे ॥ सो० ॥ १७ ॥ दीसंतो अति फूटरो, बोली न शके बोल रे ॥ सो० ॥ मूंगो गूंगो मूलथी, कवण कर्म नो रोल रे ॥ सो० ॥ १० ॥ अनिर्वचन गुरुने कहे, महोटानु हरे मान रे॥सो०॥ कूडी साख तिहां दीये, गूंगो होवे अजिमान रे ॥ सो० ॥ १९ ॥ ए दूषण जे लहो, सांजली ए उपदेश रे ॥ सो० ॥ डाख ठठी

खास कफ फूटणी, कये डुःखें हो एम होवे मोग के ॥ पूज्य० ॥ ११ ॥ साप सरीटी सापणी, वींठी वींठ ण हो मारे पुण्यहेत के ॥ गोह ठबुंदरीनें हणे, तेणे करणी हो मुख तस फल देत के ॥ पूज्य० ॥१२॥ मंद वाड थाये चीकणो, घरमांहे हो थोडी होये तोण के॥ जनमांतर तेणें पापीयें, पाप संच्यां हो जगवन् कहो कोण के ॥ पूज्य० ॥ १३॥ धर्मतणे थानकथकी, साज देइ हो सहु दूषण लेह के ॥ जीवदया पाले नहिं, व्याधि सघलो हो व्यापे तस देह के ॥ पूज्य० ॥ १४ ॥ हितउपदेश हियावटें, सांजलीने हो सहु दूषण टाल के ॥ पुण्यवशें प्राणी घणो, सांजलजो हो सहु सातमी ढाल के ॥ पूज्य० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पीनस रोग पीडा करे, शोणित नाक स्रवंत ॥ वांकी बेसे नासिका, कीटक प्राणी दमंत ॥ १ ॥ केहेवां कर्म कस्यां तेणें, पूरवले जवें स्वाम ॥ जविक जीव तुमें सांजली, करो न एहवां काम ॥ २ ॥ चलीमार जवें चरकलां, पापी जे मारंत ॥ मोर चकोर कोकिल सुआ, पीनस तेणे धरंत ॥ ३ ॥ यक्ष राक्षस ने किंपुरुष, जूत प्रेत गंधर्व ॥ पिशाच महोरग किन्नरा, ए

य होय, कर्म पाखें हो मागे ते जीख के ॥ पूज्य० ॥
॥ ३ ॥ अगजंग हुवे जेहनें, उठीनें हो वेगानी न
श्राय के ॥ पाप जनम पूरव तणां, मुज तेहनां हो
सुणवा उजमाय के ॥ पूज्य० ॥ ४ ॥ चैत्यजंग करे
पाहिने, अधमाधम हो करे प्रतिमा जंग के ॥ तेणे
कर्में करी पामियो, परजव नर हो थाये अंग जंग के
॥पूज्य० ॥ ५ ॥ वड घोर लींबु जेवडा, मसा मोहोटे
हो होये आखे कीस के ॥ रसोली ठोटी वडी, वदनें व
ली हो थाये आखे खीस के ॥ पूज्य० ॥ ६ ॥ करणि
कोण ते आदरी, ते दाखो हो गुरुजी गुणखाण के ॥
गाढे घायें ढोरने, खर श्वानने हो मारे पाषाण के ॥
पूज्य० ॥ ७ ॥ गड गुमड न टले कदा,कान हेठल हो
थाये करणक मूल के ॥ गुति अरुऊ चांदी होये, कोण
तेहने हो करम प्रतिकूल के ॥ पूज्य० ॥ ८ ॥ वाडी अ
ति रलीयामणी, देखीने हो हरखे सहु लोक के ॥
थोरे फल फूल तेहनां, गुंधडानो हो पामे ते शोक
के ॥ पूज्य० ॥ ए ॥ पग फाटी थाये वीरीयां, खस
खूलस हो अगें थाये दाड के ॥ उपचारें उरसे नहीं, उ
ख देखे हो कोण करम प्रसाद के ॥ पूज्य० ॥ १० ।
पासें पहेंद ऊपजे, उमासें हो वरसें थहु रोग के ॥

उनाले ले आतापना रे ॥ सु० ॥ शीयाले सहे शीत रे सु० ॥ फांस मसानां दुःख सहे ॥ सु० ॥ शत्रु मित्र स मचित्त रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ मुनिवर समता रस भस्यो ॥ सु० ॥ कांचन उपल समान रे ॥ सु० ॥ दुक्कर तप सं जम धरे ॥ सु० ॥ न करे तासु निदान रे ॥ सु० ॥८॥ हसे थुंके हेला करे रे ॥ सु० ॥ मलमलीन तनु देख रे ॥ सु० ॥ ए दुर्गंध दोभागीया ॥ सु० ॥ ॥ करे घणो विद्वेष रे ॥ सु० ॥ ए ॥ रूप मदें मोह्यो थको रे ॥ सु० ॥ धर्मबुद्धि उवेख रे ॥ सु० ॥ कर्म उदय सब ते हुवे ॥ सु० ॥ थाय कुरूप विशेष रे ॥ सु० ॥१०॥ आदरशुं ढाल आठमी ॥ सु० ॥ सुणतां होय आणंद रे ॥ सु० ॥ देवचंद वाचक तणो ॥ सु० ॥ शिष्य क हे वीरचंद रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुःखे आंख रहि रहि, तेहनुं कहो कुण पाप॥प रगुण देखी नवि शके, तेहथी आंख अदाप ॥ १ ॥ शि र कर कंपे जेहना, गात्रें थाय प्रस्वेद॥ अंग सघलां शू नां होये, कवण कर्म संवेद ॥ २ ॥ मारगमांहे हींक तां, शस्त्र हाथमां होय॥ वाहे जिहां तिहां काम विण, कंपरोग तेणें जोय ॥ ३ ॥ पक्षाघात पराभवें, कवण क्र

कोण कर्मे सर्व ॥४॥ जलमांहे बूडी मरे, परवत चडी पडंत॥अग्नि सर्प विष शस्त्र मृत,व्यंतर ए सवि हुत ॥५॥
॥ ढाल आठमी ॥ मनमोहन लाल ॥ ए देशी ॥
॥ कुत्सित रूप वीहामणुं ॥ कहो केवली लाल ॥ माथु मोहु ठीब रे ॥ कहो केवली लाल ॥ कपिल केश आंख चीपडी ॥ कहो० ॥ वचनकटुक जिम नींब रे ॥कहो० ॥ १॥ नाक वेढु कान सूपडा ॥कहो०॥ लां या होठ हसकंत रे ॥ कहो० ॥ श्याम वदन दंत वंकडा ॥कहो०॥ खर जेम आडुकत रे ॥कहो०॥२॥ केहनें वी ढुं नवि गमे ॥ कहो० ॥ गर्दभ मुह जाणे पूठ रे ॥ क हो० ॥ महिष कंध मातो घणो ॥ कहो० ॥ सूरवाल दाढी मूठ रे ॥ कहो० ॥ ३ ॥ कुंण करम कीधां तेणें ॥ कहो० ॥ जेहथी एहवुं कुरूप रे ॥ कहो० ॥ उप गारी सोहम कहे ॥ कहो० ॥ तेहनु सर्व सरूप रे ॥ कहो० ॥ ४ ॥ पंचमहामत सूधां धरे ॥ कहो० ॥ सौम्यवदन सुकमाल रे ॥ सुणो धारणी नंद ॥ करे रक्षा छकायनी ॥ सुणो० ॥ जेम पाले माय बाल रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ ममता माया नवि करे ॥ सुणो॰ टाले दूषण बायाल रे ॥ सु० ॥ चारित्रथी चूके नहि ॥ सु० ॥ परिसह वेरवी जयाल रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

उनाले ले आतापना रे ॥ सु० ॥ शीयाले सहे शीत रे सु० ॥ फांस मसानां दुःख सहे ॥ सु० ॥ शत्रु मित्र स मचित्त रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ मुनिवर समता रस जस्यो ॥ सु० ॥ कांचन उपल समान रे ॥ सु० ॥ दुक्कर तप सं जम धरे ॥ सु० ॥ न करे तासु निदान रे ॥ सु० ॥७॥ हसे थुंके हेला करे रे ॥ सु० ॥ मलमलीन तनु देख रे ॥ सु० ॥ ए दुर्गंध दोन्नागीया ॥ सु० ॥ ॥ करे घणो विद्वेष रे ॥ सु० ॥ ए ॥ रूप मदें मोह्यो थको रे ॥ सु० ॥ धर्मबुद्धि उवेख रे ॥ सु० ॥ कर्म उदय सव ते हुवे ॥ सु० ॥ थाय कुरूप विशेष रे ॥ सु० ॥१०॥ आदरशुं ढाल आठमी ॥ सु० ॥ सुणतां होय आणंद रे ॥ सु० ॥ देवचंद वाचक तणो ॥ सु० ॥ शिष्य क हे वीरचंद रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुःखे आंख रहि रहि, तेहनुं कहो कुण पाप ॥ प रगुण देखी नवि शके, तेहथी आंख अदाप ॥ १ ॥ शि र कर कंपे जेहना, गात्रें थाय प्रस्वेद ॥ अंग सघलां शू नां होये, कवण कर्म संवेद ॥ २ ॥ मारगमांहे हींम तां, शस्त्र हाथमां होय ॥ वाहे जिहां तिहां काम विण, कंपरोग तेणें जोय ॥ ३ ॥ पक्षाघात पराभवें, कवण क्र

रम संयोग॥हाये स्त्री हत्या करे,अर्ध अग दुखे रोग॥४॥
॥ ढाल नवमी ॥ नदी जमुनाके तीर, उडें दोय
पंखिया ॥ ए देशी ॥

॥ व्रण थाहे नासूर, क्रूर मुख कीलमें ॥ पवित्रपणु नही होय, रहे कुचीलमें ॥ कवण कर्म तेणें कीध, सि रू नही औषधे ॥ गिरुआ गुणह निधान, कहो करु णा बुधे ॥ १ ॥ कान नाक विंधीने, परोइ दोरडां ॥ कौतक कारणे कान, कापे कठोरडा॥ पशु पंखी प्रत्यें ए म, पीडे जे पापीया ॥ नासुरें करी तेह, होय संतापीया ॥२॥ रक्त पित्तनो रोग, लहे जे जीवडा ॥ गले अंग उ पांग,पडे मांहे जीवडा ॥ भवांतरें तेणें पाप, कीधां प्रभु केहवां ॥ मनुष्य तणो भव पामी, पामे दुःख एहवां ॥३॥महिष महिषी ने छाग,छागीनें वधदीया॥फासुं घा ली तास,गले मारे पापिया॥ मरी नरकमांहे आय,महा अहमी दलें ॥ करे खरो खरू,पारानी परें मिले ॥४॥ जो कदाच वळि ते, मनुष्यमांहि अवतरे॥पामे बहुला दुःख, गलित कोढें मरे ॥ हरस रोगें करी जेह,आतुर होये आतमा ॥ पाप तेहनां कोण, कहो पुण्यातमा ॥५॥ फोडे सरोवर पाळ, नदी द्रह शोषवे ॥ जलविण सहु जल जंतु, घणा दुःखीया होवे॥ तेह कर्मनें पाप,

पीडा होवे हरसनी ॥ चित्तें दया नवि कीध, थावरने त्रसनी ॥६ कुटुंब तणी होये हाण, के जेहने सरवथा ॥ तेह तणां जे पाप, कहो जे होये यथा ॥ माछीनें नवें आवी, मारे जे माछलां ॥ तेणे कुटुंबनो नाश, जाणो कृत पाछलां ॥ ७ ॥ रातें नवि दीसंत, दीहें आंख निर्मली ॥ रातअंधो केणें पाप, कहो मुज केवली ॥ अरुणोदय मध्यान्ह, संध्यायें जे जमे ॥ खाय पीये मध्य रात्रि, रात्यंधो तसु दमे ॥ ८ ॥ रांघण वायनी पीड, हाथे पगें आकरी ॥ कीधां कहेवां कर्म, कहो करुणा करी ॥ घोडा घोडी उंट, फेरे जे डुर्मति ॥ रांघण तेहने पाप, जाणो होये छती ॥ए॥ वली नगंदरनो व्याधि, राध निकले घणी ॥ असुख आठे पोहोर, थाय जे रेवणी ॥ फोडे कूकड इंरु, पीये रस रसें करी ॥ तेह पापनें रोग, होये नगंदरी ॥ १० ॥ एहवुं जाणी प्राणी, जे दूषण टालशे ॥ श्रीजिनवरनी आण, सूधी जे पालशे ॥ ते लेहेशे शिवसुख, डुःख नहिं ले कदा॥ नवमी ढालें वीर, लहे सुखसंपदा ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बेठां फिरतां बोलतां, जिहां तिहां अंतराल ॥ वाइ आवे डुःख दीये, कवण कर्मनी चाल ॥ १ ॥ जइ

रम संयोग॥हाथे स्त्री हत्या करे,अर्ध अग हुवे रोग॥४॥
॥ ढाल नवमी ॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखियां ॥ ए देशी ॥

॥ भण वाढे नासूर, क्रूर मुख मीसमें ॥ पवित्रपण नही होय, रहे कुचीसमें ॥ कवण कर्म तेणें कीध, सिऊ नही औषधें ॥ गिरुआ गुणह निधान, कहो करुणा बुद्धे ॥ १ ॥ कान नाक विंधीने, परोइ दोरडां ॥ कौतक कारणे कान, कापे कठोरडा॥ पशु पखी प्रत्यें एम, पीडे जे पापीया ॥ नासुरें करी तेह, होय संतापीया ॥२॥ रक्त पित्तनो रोग, सहे जे जीवडा ॥ गले अंग उपांग,पडे मांहे जीवडा ॥ भवांतरें तेणें पाप, कीधां प्रज्ञु केहवां ॥ मनुष्य तणो भव पामी, पामे दुःख एहवां ॥३॥मदिप मदिरा ने ठाग,ठागीनें वखदीया॥फासु घासी तास,गले मारे पापिया॥ मरी नरकमांहे जाय,महा अहमी दलें ॥ करे खरो खरू, पारानी परें मिले ॥४॥ जो कवाच वलि ते, मनुष्यमांहि अवतरे॥पामे बहुला दुःख, गलित कोढें मरे ॥ हरस रोगें करी जेह,आतुर होये आतमा ॥ पाप तेहनां कोण, कहो पुण्यातमा ॥५॥ फोडे सरोवर पाल, नदी द्रह शोषवे ॥ जलविण सल जल जंतु, घणा दुःखीया होवे॥ तेह कर्मेनें पाप,

नें रे, थाये लोही ठाण ॥ नाखे मलमूत्र आगमां रे, ए तसु कर्म निदान ॥ सो० ॥ ६ ॥ भा० ॥ जे थाये नर कूबडो रे, हींके बेवड होय ॥ कोण कर्म कीधां तेणें रे, जगवन् जांखो सोय ॥ सो० ॥ ७॥ ना०॥ ऊंट बलद जैंसा ठालकां रे, घाठां तेहनां चर्म ॥ लोभें जार घणा जस्या रे, कीधां एह कुकर्म ॥ सो० ॥ ८ ॥ ॥ ना० ॥ नपुंसक पणुं जे लहे रे, कोण करणी करि हीन ॥ पुरुष नहि नारी नहि रे, माणसमांहे दीन ॥ सो० ॥ ए ॥ ना० ॥ माणस घोटक ढोरने रे, समारे सुख काम ॥ कुमति गलकंबल ठेदनें रे, वेद नपुंसक पाम ॥ सो० ॥ १० ॥ ना० ॥ नरकें जाये जीवडा रे, पामे बहुलां फुःख ॥ अनंत शीत ताप वेदना रे, अनंती सहे तृष जूख ॥ सो० ॥ ११ ॥ ना० ॥ तेणें जीवें कोण कीधला रे, कर्मना बंध कठोर ॥ सुरवेदना खेत्रवेदना रे, जे पामे फुःख रोर ॥ सो० ॥ १२ ॥ ना० ॥ महारंज महामूर्छना रे, असत चोरी परदार ॥ पंचेंड्रियवध फल जखे रे, नरक लहे अवतार ॥ सो० ॥ १३ ॥ ना० ॥ दोष टाले जो एहवा रे, जविय ण हैडे आण ॥ दशमी ढाल पूरी थइ रे, वीर तणी ए वाण ॥ सो० ॥ १४ ॥ ना० ॥

शिकारें जीवने, मारे विण अपराध ॥ तेह कर्मउदयें हुये, तम मरगीनी व्याध ॥२॥ संघे भारटखे नहिं, करणी केही कीध ॥ स्वामी अर्थ साधे नहिं, आप स्वार्थमें लीध ॥ ३ ॥ काढी मूठ होये नहिं, पांपणना जाये वाल ॥ मारे जे भाणेजने, हुये कन्यानो काल ॥

॥ ढाल दशमी ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे॥

॥ ए देशी ॥

॥ हाड गंभीर हिया होडी रे,मोहोटा रोग कहा य ॥ जेहने आवी ऊपजे रे, कवण कर्म सहाय ॥ सो भागी सोहम, भाखो कर्मनी वात ॥ जे केवली विण न कहात ॥ सोभागी सोहम ॥भा०॥१॥ ए आंकणी॥ बा लक परनां लेहने रे, वेचे परदेशें जाय ॥ महिमाहना मोहथी रे, हाम गंभीर तस थाय ॥ सो० ॥२॥ भा०॥ धन पाम्युं थिर नवि रहे रे, जिहां तिहांथी जाय॥ज न्मांतरना लेहना रे, कवण कर्म उपाय सो० ॥ ३ ॥ भा० ॥ संन्यासी योगी जती रे, अथवा लिंगी कोय ॥ द्रव्य संच्यां खाये एही रे, पामे धन नही सोय॥ ॥ सो० ॥ ४ ॥ भा० ॥ जो कदाच धन संपजे रे, अग्नि चोर अन्याय ॥ नृप सघलु लूंटी लीये रे, अंतें खे रु थाय ॥ सो० ॥ ५ ॥ भा० ॥ अतिसार होये जेह

प्रश्न० ॥ ३ ॥ जणे गुणे कहो गुण किश्यो, एम कही वंदे प्राणी रे ॥ अजगरमांहे ऊपजे, मूरख मनुष्य निशाणी रे ॥ प्रश्न० ॥ ४ ॥ रहे सदाये बीहतो, थोडे घणे कडाके रे ॥ पशु पंखीने त्रासवे,बंधुक मेहेली जडाके रे ॥प्र०॥५॥ पामे दास दासीपणुं, आदर न लहे रेख रे ॥ निसूंछे सहु तेहने, कवण कर्मना लेख रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जाति मदें मातो फरे, विनय नही तसु पास रे ॥ दानादिक पामे नही, हाडविक्रयी थाय दास रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वाला जेहने नीकले, एक बे त्रण चार पंच रे ॥ पामे वेदन अति घणी, कवण कर्मनो संच रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ अणगल जल जे वावरे, गली संखारो नाखे रे ॥ गलतां ढुंपो जे दीये, ए वालानी साख रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ नीच जातिमां ऊपजे, कुण करणीथी तेह रे ॥ अनाचार रातो सदा, निरख सरखमां रेह रे ॥प्र०॥ १० ॥ कूडां तोल कूडां मापले, अधिकुं लेइ उंबुं आपे रे ॥ क्रियाहीन कोइ नवी लहे, नीच जाति तेणे पापें रे ॥ प्र० ॥११॥ श्लोक ॥ यत्र यत्र क्रिया श्रेष्टा, तत्र तत्र नरोत्तमाः ॥ यत्र यत्र क्रिया नास्ति,तत्र तत्र नराधमाः ॥ १ ॥ क्रिया बलवती लोके, सर्व धर्मानुसारिणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिर्यंचमांहे ऊपजे, जीव सहे दुःख जोर ॥ ते ॥ सं संच्यां पूरवें, केहा कर्म कठोर ॥ १ ॥ आप का जें जी जी करे, परनें कामें अपूठ ॥ मननो पार न को सहे, मुख मीठु चित्त दुठ ॥२॥ जे धूतारे लो कनें, हेये होय रोमांच ॥ कर्म करे जे एहवां, पुरव नव तिर्यंच ॥ ३ ॥ पुरुष वेद तजी स्त्रीपणुं, कोव पामें पामंत ॥ कूड कपट छल चपलता, मायायें म हिला हुंत ॥ ४ ॥ जोग न पामे ते रति, छती वस्तु न खवाय ॥ करे अतराय आपे नहि, जोग रहित ते थाय ॥ ५ ॥ रीशें भड हडतो मरे, भासो मान विशेष ॥ लोभ क्षेद्रेरमां काल करी, कुगति करे प्रवेश ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ चरणाली चामुंडा रण चढे ॥ ए देशी ॥

॥ वाघ सिंह क्रोधें होय, मानें गर्दभ श्वान रे ॥ नोल साप होय लोजथी, काणो केपें निदान रे ॥ १ ॥ प्रश्न उत्तर गुरुजी कहे, सांजलजो सहु कोय रे ॥ पांति भेदना पापथी, आंखे काणो होय रे ॥ प्र० ॥ ॥ २ ॥ अजगर केपें कर्मे होये, पेट घसंतो चाले रे ॥ मिथ्यामद अति घणो करे, कोइने अक्षर नाखे रे ॥

प्रश्न० ॥ ३ ॥ जणे गुणे कह्यो गुण किश्यो, एम क
ही वंदे प्राणी रे ॥ अजगरमांहे ऊपजे, मूरख मनु
ष्य निशाणी रे ॥ प्रश्न० ॥ ४ ॥ रहे सदाये बीहतो,
थोडे घणे कडाके रे ॥ पशु पंखीने त्रासवे,बंधुक मेहे
ली जडाके रे ॥प्र०॥५॥ पामे दास दासीपणुं, आद
र न लहे रेख रे ॥ निर्जूंठे सहु तेहने, कवण कर्म
ना लेख रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जाति मदें मातो फरे, विन
य नही तसु पास रे ॥ दानादिक पामे नही, हाड
विक्रयी थाय दास रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वाला जेहने नी
कले, एक बे त्रण चार पंच रे ॥ पामे वेदन अति
घणी, कवण कर्मनो संच रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ अणगल
जल जे वावरे, गली संखारो नाखे रे ॥ गलतां डुंपो
जे दीये, ए वालानी साख रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ नीच जा
तिमां ऊपजे, कुण करणीथी तेह रे ॥ अनाचार रा
तो सदा, निरख सरखमां रेह रे ॥प्र०॥ १० ॥ कूडां
तोल कूंडां मापले, अधिकुं लेइ ऊंबुं आपे रे ॥ क्रि
याहीन कोइ नवी लहे, नीच जाति तेणे पापें रे ॥
प्र० ॥११॥ श्लोक ॥ यत्र यत्र क्रिया श्रेष्टा, तत्र तत्र
नरोत्तमाः ॥ यत्र यत्र क्रिया नास्ति,तत्र तत्र नराधमाः
॥ १ ॥ क्रिया बलवती लोके, सर्व धर्मानुसारिणी ॥

श्रद्धा दया क्षमा लज्जा, शांतिमेधाप्रवर्द्धिनी ॥१॥ क्रिया सत्संगति सिद्धि, सेवा व्रतगतिर्धृति ॥ एता स्रयोदशापत्या, धर्मस्य ब्रह्मचारिण ॥३॥ढाल॥ ढाल सोहे अग्यारमी, सांभलतां सुखदाय रे ॥ कारण पा प तणां तजे, वीर सुखी ते थाय रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए फल भांख्यां पापनां,हवे कहुं पुन्य विपाक ॥ सुकृत संच्यां सुख होय, आंबे न थाये आक ॥ १ ॥ जीव लहे भव मनुष्यनो, किणे पुण्ये करी पूज्य ॥ सो हम बोले शुभ परें, जंबु एम तुं बूज ॥ २ ॥ सरस चित्त सुकुमाल पणुं, नहिं मन क्रोध लगार ॥ जीव तणी जयणा करे, न्यायें वणिज व्यापार ॥ ३ ॥ सा त खेत्र धन वावरे, पूजे जिनवर देव ॥ साधु तणी सेवा करे, लहे नरजन ततखेव ॥ ४ ॥ नारी मरी न र नीपजे, सुकृत कलियें तास ॥ सत्य शील संतोष दृढ, विनय पुरुष विलास ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ दीठा देव अनेक, हांजी दीठा देव अनेक, न कोइ मन वसे रे ॥

न कोइ० ॥ ए देशी ॥

॥ स्वर्गे लहे सुख सार ॥ हां जी० ॥ स्व० ॥ अनु

पम सुरवरा रे ॥ अ० ॥ थइ थइ रंग रसाल ॥ हां० ॥
नाचे वहु अपछरा रे ॥ ना० ॥ गर्ज नहीं सुख सेज
॥ हां० ॥ तिहां ऊपजे सदा रे ॥ ति० ॥ आणंदे स
हु देव ॥ हां० ॥ कहे जय जय तदा रे ॥ क० ॥ १ ॥
मन मान्यां करे रूप ॥ हां० ॥ स्वरूप विविध परें रे
॥स्वा०॥ जरा न व्यापे बाल ॥हां०॥ के स्वेद नहिं शि
रें रे ॥ के० ॥ कहो स्वामी शे पुण्य ॥ हां० ॥ के किहां
कीधां मुदा रे के ॥ कि० ॥ २ ॥ तजी घरना व्यापार
॥ हां० ॥ के पंचेंद्रिय दमे रे ॥ के पंचें० ॥ दुक्कर
तप बार भेद ॥ हां० ॥ सत्तर भेद संजमें रे ॥ स० ॥
भावें भद्रक चित्त ॥ हां० ॥ आणा जिननी वहे रे ॥
॥ आ० ॥ दान दया दाक्षिण्य ॥ हां० ॥ अमर पद-
वी लहे रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ नानाविधना भोग ॥ हां० ॥
भला जे भोगवे रे ॥ भ० ॥ दुःख नहीं लव लेश ॥
हां० ॥ दीर्घ आयु जोगवे रे ॥ दी० ॥ सोभागी शिर
दार ॥ हां० ॥ सहु माने घणुं रे ॥ कें स० ॥ जगगुरु
भाखो तेह ॥ हां० ॥ कारण कोण पुण्यनुं रे ॥ का० ॥
॥ ४ ॥ वस्त्र पात्र अन्न पान ॥ हां० ॥ शय्या मुनिने
दीये रे ॥ श० ॥ अभय दान दातार ॥ हां० ॥ जीवदया

हीये रे के जी० ॥ ॥ लोपे नही गुरुआण ॥ हां० ॥ मीठु मुख उचरे रे ॥ मी० ॥ जोग संयोग सौजा ग्य ॥ हां० ॥ आयु घणु ते धरे रे ॥ आयु० ॥ ५ ॥ केणे पुण्ये बहु बुद्धि ॥ हां० ॥ चतुरता अति घणी रे ॥ च० ॥ जणे गणे सिद्धांत ॥ हां० ॥ जणावे सहु जणी रे ॥ ज० ॥ देवगुरुना गुण गाय ॥ हां० ॥ जक्ति गुरुनी करे रे ॥ ज० ॥ तेणें पुण्ये करी तेह ॥ हां० ॥ पंमित होय शिरें रे ॥ प० ॥ ६ ॥ लखमी रहे स्थिरवास ॥ हां० ॥ कोडी विणसे नही रे ॥ को० ॥ परजव तेणें पुण्य ॥ हां० ॥ कर्यां कोण उ म्मही रे ॥ क० ॥ देइ दान शुजपात्र ॥ हां० ॥ पढता घो नवि धरे रे ॥ प० ॥ तस घर ऋद्धि समृद्धि ॥ हां० ॥ सवा वासो करे रे ॥ स० ॥ ७ ॥ पौत्र पु त्र प्रधान ॥ हां० ॥ होय जेहनें घरे रे ॥ के हो० ॥ नारी होय सुपात्र ॥ हां० ॥ केणें पुण्ये अनुसरे रे ॥ के० ॥ जीवदया मन शुद्ध ॥ हां० ॥ पाले नही कारिमी रे ॥ पा० ॥ वीर कल्याणनी कोडि ॥ हां० ॥ लहे दास धारमी रे ॥ ल० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केणे सकर्णे रात्री होये, केणे सकर्णे क्रिजे

जात ॥ वैश्य केणे लक्षणें होय, केम होये शूद्रजात ॥ १ ॥ संग्रामें शूरो होय, पाछो पग नवि देय ॥ शरणें राखे अवरने, क्षत्री जाणो तेह ॥ २ ॥ जनम जातिथी शुद्र होय, संस्कारें द्विज जाण ॥ वेद अभ्यासें विप्र होय, ब्राह्मण होय गुण खाण ॥ ३ ॥ दान दयाने सत्य तप, शौच संयम संपन्न ॥ ब्रह्म विनय विद्या निपुण, ते ब्राह्मण गण धन्न ॥ ४ ॥ कांकर कनक समान मति, तजे शूद्रनुं दान ॥ करे शुश्रूषा धर्मनी, विप्र तणां एंधाण ॥ ५ ॥ दया दान उपकार मति, असत्य तणो परिहार ॥ बोले वचन विमासिने, वैश्य तणो व्यवहार ॥ ६ ॥ हीनाचारी क्रोध युत, धर्म रहित जे होय ॥ श्रद्धा दया न जे हनें, शूद्र गणीजें सोय ॥ ७ ॥ प्रश्न जे जे पूछिया, भांख्या सोहम सूरि ॥ ते चित्त धरो एक मनें, दुरिय पणासे दूर ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सुणजो जंबु पृछा भवियण, इह परभव हित कारी ॥ एह सांभलतां कर्म निर्जरा, होय सही सुखकारी ॥ १ ॥ सुणजो० ॥ सोहम स्वामी जंबु तिका री, जंबु पर उपगारी ॥ बारह परखदा बेठा पूछे, प्रश्न

सर्व सुविचारी ॥ २ ॥ सुण० ॥ सज्जन जन ए सुण तो हरखे, दुर्जन चित्त विकारी ॥ ए ऊपर प्रतीति न आवे, जाणो ते बहुल संसारी ॥३॥सु०॥ श्रीपासचंद सूरीसर पाटें, समरचंद गुणधारी ॥ तेने पाटें श्री राजचंद सूरि, सुरती सोहे सारी ॥ ४ ॥ सु० ॥ शिष्य शिरोमणि तेहना कहियें, पंचम काल आहारी ॥ देव चंद बणारसी दीपे, प्रागवश शिणगारी ॥ ५ ॥ सु० ॥ जंबूपृछा प्रणशे गुणशे, सुणशे जे नर नारी ॥ मानव भव ते सफल करीने, थाशे सुर अवतारी ॥६॥ सु० ॥ संवत सत्तर अठावीशे, पाटण नगर मोझारी ॥ जंबूपृछा सुतरंगें, वीरजी मुनि सुखकारी ॥ ७ ॥ सुण० ॥

इति श्रीवीरजी मुनिकृत जंबुपृछा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

[illegible] पृछानी चोपाई प्रारंभ ॥

[illegible] रष पूरवे, चोवीशमो जिण [illegible] देखे परमानंद ॥१॥ सम [illegible] ॥ पद्मासन [illegible] ॥ वेग मुनिवर के

(Left margin fragments: मे, गर, के, रे, स, म, ॥, रहे, को, म्मर, वो न, हां० ॥, त्र प्रधान, नारी होय, ॥ के० ॥ जीव, कारिमी रे ॥ पा, सहे डास वारमी, ॥ केणे सदणों)

वी, बेठी परखद बार ॥ ३ ॥ तव गोयम मन चिंतवे, जीवितनो ए सार ॥ जे कांई आपणथकी, कीजें पर उपकार ॥ ४ ॥ गोयम हियडे जाणतो, आणी पर उपकार ॥ सन्ना सहुको सांनले, पूछे इश्यो विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइ ॥

॥ पहेला वीरजिणेसर पाय, प्रणमी गोयम गणहर राय ॥ कर जोडीनें आगल रहे, सुललित नाषा एणी परें कहे ॥ ६ ॥ तुं जिन नक्ति मुक्ति दातार, तुज गुण कोइ न पामे पार ॥ में नेट्यो त्रिनुवननो देव, पुण्य पाप फल पूछुं हेव ॥ ७ ॥ नलतुं बोले वीर जिणंद, गोयम तुं आणे आणंद ॥ पूछे पृछा जे तुज गमे, तस हुं उत्तर आपीश तिमे ॥ ८ ॥ आगें मयगलनें मद नस्यो, एक पंचायणनें पाखस्यो ॥ आगें गोयमनुं जग वान, लाधुं वीर तणुं वली मान ॥ ॥९॥ नवियण नाव नलेरो धरी, अंग तणी आलस परहरी ॥ सुणजो हर्ष हिये उल्लसी, गोयमपृछा पूछे किसी ॥ १० ॥ नगवन् ! जीव नरक शें जाय, ते हज अमर नुवन सुर थाय ॥ तिरियमांहे ते दुःख केम सहे, किशे कर्में मानव नव लहे ॥ ११ ॥

सर्य सुविचारी ॥ २ ॥ सुण० ॥ सज्जन जन ए सुण तो हरखे, डुर्जन चित्त विकारी॥ ए ऊपर प्रतीति न आवे, जाणो ते बहुल ससारी ॥३॥सु०॥ श्रीपासचद्र सूरीसर पाटें, समरचद गुणधारी ॥ तेने पाटें श्री राजचद सूरि, सुरती सोहे सारी ॥ ४ ॥ सु० ॥ शिष्य शिरोमणि तेहना कहियें, पंचम काल आहारी ॥ देव चंद वणारसी दीपे, प्रागवश शिणगारी ॥ ५ ॥ सु० ॥ जबूपृछा जणशे गुणशे, सुणशे जे नर नारी ॥ मानव जव ते सफल करीने, थाशे सुर अवतारी ॥६॥सु०॥ संवत सत्तर अठावीशे, पाटण नगर मोझारी॥ जंबुपृछा रची मनरगें, वीरजी मुनि सुखकारी ॥ ७ ॥ सुण० ॥

॥ इति श्रीवीरजी मुनिकृत जबुपृछा संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीगौतमप्टछानी चोपाई प्रारंज ॥

॥ दोहा ॥ सकल मनोरथ पूरवे, चोवीशमो जिण चद ॥ सोवनवान सोहे सदा, पेखे परमानंद ॥१॥ सम वसरण देवें मली, रचीयुं उत्तम ठाम ॥ पद्मासन पूरी करी, वेठा त्रिज्जुवन स्वाम ॥ २ ॥ वेठा मुनिवर के वली, गणहर वर अगियार ॥ सुर नर किन्नर मान

नर केम थाये कुरूप ॥ २० ॥ किशें कर्में वेदना अ नंत, वेदन विण केम थाये जंत ॥ ठांमी तन पंचेंद्रि य तणुं, केम पामे एकेंद्रियपणुं ॥ २१ ॥ शीपरें था ये थिर संसार, केम पामे वहेलो ञवपार ॥ शे सं सार सोहेलो तरी, पुण्यवंत पामे शिवपुरी ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव सवे जगत्ती तणा, तुं तस बंधु समान ॥ ञाव मनोगत सवी लहे, होय अनंतु ज्ञान ॥ २३ ॥ पुहवी पदारथ जे अछे, ते देखे मुनि देव ॥ कृपा क री ञगवन् कहो, कर्म फलाफल हेव ॥ २४ ॥ गुण गिरुउं गणधर ञलो, हर्षें जोडी हाथ ॥ सफल करो मुज विनति, जतिय ञणी जगनाथ ॥ २५ ॥ गोयम गणहर वीनव्यो, एणी परें वीरजिणंद ॥ नमे निरं तर पय कमल, जेहना चोशठ इंद ॥ २६ ॥ वीतराग वलतुं वदे, वाणी सरस अपार ॥ सुण गोयम गण धार तुं, पूछ्या तणो विचार ॥ २७ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ गोयमपूछा पूछी रहे, वलतुं वीर जिनेसर क हे ॥ सावधान सवि परषद हुइ, निसुणे निज ञाषा जूजूइ ॥ २७ ॥ वरसे स्वामि वचन विलास, पोहोचे

तेहिज पुरुष पणे संसार, कीशे कर्में ते थाये नार ॥ कह्यो जिनवर पूरो मन रसी, तेह्ज किशे नपुसक थसी ॥ १२ ॥ थोड्ड आयु होय तेह तणु, किशे क र्में होये ते घणु ॥ भोग रति शे नवि जोगवे, तेहि ज भोग भला भोगवे ॥ १३ ॥ किशे कर्में सोजागी होय, किशे कर्में दोजागी जोय ॥ तेहिज बुद्धि तणो भंमार, किशे कर्में नवि बुद्धि लगार ॥ १४ ॥ तेहि ज पण्डितमांहे प्रधान, शे कर्में थाये अज्ञान ॥ भी रु धीरु कोण कर्में सोय, विद्या सफल नि फल केम होय ॥ १५ ॥ नासे धन वाधे थिर थाय, जन्म्या पु त्र न जीवे काय ॥ पौढा पुत्र घणा शे स्वामि, बहि रपणुं शे कर्में विराम ॥ १६ ॥ जात्यधो नर शें अ वतरे, के कर्में भोजन नवि जरे ॥ किशे कर्में कोढी कूबडो, दासपणु पामे धापडो ॥ १७ ॥ किशे कर्में दारिद्रि जत, किशे कर्में तेह्ज धनवंत ॥ रोगें पीड्यो पाडे रीव, रोग रहित शें थाये जीव ॥ १८ ॥ गोय म पूछे कह्यो जिनवीर, शे कर्में होये हीन शरीर ॥ तसु परजव शु पडीयो चूक, जे पणे भवें थाये ते मूक ॥ १९ ॥ किशे कर्में लूलो पांगलो, किशे कर्में रूपें आगलो ॥ विकट कर्मनु कह्यो स्वरूप, तेहिज

नर केम थाये कुरूप ॥ २० ॥ किशें कर्में वेदना अ नंत, वेदन विण केम थाये जंत ॥ गांमी तन पंचेंद्रि य तणुं, केम पामे एकेंद्रियपणुं ॥ २१ ॥ शीपरें था ये थिर संसार, केम पामे वहेलो जवपार ॥ शे सं सार सोहेलो तरी, पुण्यवंत पामे शिवपुरी ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव सवे जगती तणा, तुं तस बंधु समान ॥ जाव मनोगत सवी लहे, होय अनंतु ज्ञान ॥ २३ ॥ पुहवी पदारथ जे अछे, ते देखे मुनि देव ॥ कृपा क री जगवन् कहो, कर्म फलाफल हेव ॥ २४ ॥ गुण गिरुउ गणधर जलो, हर्षें जोडी हाथ ॥ सफल करो मुज विनति, जतिय जणी जगनाथ ॥ २५ ॥ गोयम गणहर वीनव्यो, एणी परें वीरजिणंद ॥ नमे निरं तर पय कमल, जेहना चोशठ इंद ॥ २६ ॥ वीतराग वलतुं वदे, वाणी सरस अपार ॥ सुण गोयम गण धार तुं, पूछ्या तणो विचार ॥ २७ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ गोयमपृछा पूछी रहे, वलतुं वीर जिनेसर क हे ॥ सावधान सवि परषद हुइ, निसुणे निज जाषा जूजूइ ॥ २७ ॥ वरसे स्वामि वचन विलास, पोहोंचे

भविपण जन मन श्राश ॥ आपाढो सासाढो मेह,
करी गाजीनें आन्यो एह ॥२९॥ तेणे अवसर नाठी
तृष भूख, नाठा दुरियसरीसां दुःख ॥ मधुरी वाणी
सुणी जब कान, मधुर पण नहि कहेने मान ॥३०॥
सरस कवण कहीयें सूखडी, जेणे खाधे भांगे भूख
डी ॥ जिनवर वाणी निसुणी जाम, ते विपरीत व
खाणे ताम ॥ ३१ ॥ जे शेखडी सरस रस वडी, ते
पण कहेनें चित्तें नवि चडी ॥ जाति अने ठजाति दे
खवे, गोख खांड खारी लेखवे ॥ ३२ ॥ सुधा सुधा
सवि कहे मन थाय, साकर कांकर सम तोलाय ॥ नी
ली द्राख न गमे सराख, एकज मीठी जिननी भाख
॥ ३३ ॥ इसी वाणी जिन मुखें उच्चरी, गोयम पो
छाव्यो हित करी, एकज जीव कहे दुःख घणां,सुण
गोयम कारण तेह तणां ॥ ३४ ॥ जीव विणासे जपे
अली, जे नर परधन चोरे वली ॥ परनारीशुं रंगें रमे,
पाप परिग्रह काळो गमे ॥ ३५ ॥ रात्रि दिवस रीसें
धडहडे, अभिमानें मानवनें नडे ॥ कोष तणो आणे
आकार,नीचा नमणा नहि लगार ॥३६॥ सुखमीठो
मन माया करे, कहो ते किम भवसागर तरे॥ हियडे
निठुरो वयण कठोर,पापी पाप करे अति घोर ॥३७॥

जोवे छिद्र कुमतिनो धणी, मनमां मूर्छा धरे अति घ
णी ॥ जे अधमाधम विण अपराध, गोठें वेठो निंदे
साध ॥ ३८ ॥ जे मानवनें एहवो ढाल, प्रायें दीये
अणहुंतां आल ॥ एवी मति जस पोतें हती, गुण की
धो नवि जाणे रति ॥ ३९ ॥ वीर जणे सुण गोयम वा
त, इस्यां कर्म जे करे निघात ॥ दोहिलां दुःखमांहे तड
फडे, ते नर मरी नरकें रडवडे ॥ ४० ॥ तप संयम
दानें चोशाल, जावें जद्रक अनें दयाल ॥ शीषे वहे
सद्गुरुनी आण, ते नर पामे अमर विमान ॥ ४१ ॥
मानव सरसी मांके प्रीत, काज आपणुं चाले चित्त ॥
वांछित काज सर्युं ततकाल, वेहेली प्रीति करे विसरा
ल ॥ ४२ ॥ जोतां दरिसण क्रूर अपार, कोइ न पा
मे मननो पार ॥ कीधां कर्म जीवशुं करे, तिहांथी म
री तिरिय अवतरे ॥ ४३ ॥ सरल चित्त मुकुमाल अपा
र, क्रोध लोज मन गहीय लगार ॥ जीव तणी नि
त्य जयणा करे, साते खेत्रें धन वावरे ॥ ४४ ॥ वोहो
रे विणजे न्यायें करी, मूके पोतुं पुण्यें जरी ॥ साधु त
णा पाय सेवे घणुं, लहे जीव ते मानव पणुं ॥ ४५ ॥
संतोषी विनयें गुण वहे, सरल चित्त शीलें दृढ रहे
॥ सत्य वचन जे बोले नार, थाये पुरुष मरी संसार

॥ ४६ ॥ चपल पणे धूतारे लोक, मूरख पातक थां वे फोक ॥ कूड कपट मायायें बहु, लगा सर्णीजां व ल्वे सहु ॥ ४७ ॥ मन विश्वास नहीं केइ तणो, वी र जणे गोयम तुमें सुणो ॥ एहवा कर्म करे नर जे ह, परजव महिला थाये तेह ॥ ४८ ॥ मानव तुरी समारे ढोर, वींधे नाक परोवे दोर ॥ गल कंबल ठे दे अज्ञान, कौतुक कारण कापे कान ॥ ४९ ॥ इस्यां कर्म जे करे नवीन, सविहु माणसमांहि हीन ॥ न वि नारी ते नहि नरमांय, गोयम सोय नपुंसक था य ॥ ५० ॥ जीव विणासे निठुरजपणे, जे परलोक न माने गणे ॥ चित्तमांहे जस घणो कलेश, ते नर आयु लहे लवलेश ॥ ५१ ॥ राखे जीवदया नर थई, अजयदान ऊपर मति रही ॥ काळु आयु लहे नर ते ह, गोयम ए तुं स धर संदेह ॥ ५२ ॥ ठगुं अन्न देवा मांके व्याप, देइने मनें करे संताप ॥ मुजने पडियो व रांसो घणो, आप्यो अर्थ शोक आपणो ॥ ५३ ॥ आपणने मति देवा टली, बीजा देतां वारे वली ॥ गोयम एहवे कर्में जोय, जोग रहित जव पूरे सोय ॥ ५४ ॥ थारु वस्त्र पाटो पाटला, जात पात्रनें पाणी जला ॥ ऋषिनें दे हियडे गहगही, परजव जोग ल

उवेखे मूरख पणे ॥ कर्म तणी गति विषमी जोय, ते परन्नव जात्यंधो होय ॥ ७३ ॥ निखर अन्न ने वि रुठे वारि ॥ साधुनें दीये जे नर नारि ॥ मन जाणि कृपणायें करे, परन्नव तस न्नोजन नवि जरे ॥ ॥ ७४ ॥ पाडे मध जे दव दीये वेड, तेहनी दैव करे शी केड ॥ पाप तणी मन नाणे शंक, जे नर जीव प्रत्यें दिये अंक ॥ ७५ ॥ बालां कुलां नीलां हरी, खांतें खुंटे लीलां करी ॥ कीधां कर्म जीवशुं करे, मरी पुरुष कोढी अवतरे ॥ ७६ ॥ उंट बलद न्नेंसा ढालकां, न्नारें पीडे लोन्नी थकां ॥ इम पापें पूराये घडो, ते परन्नव थाये कूबडो ॥ ७७ ॥ जातिमदें मद मातो फिरे, जीव तणो जे विक्रय करे ॥ जे कृतघ्न अ वगुण आवास, ते नर परन्नव थाये दास ॥ ७८ ॥ वि नय हीन वर्जित चारित्र, दान तणा गुण नहिय प वित्र ॥ मनसादिक जे नवि संवरे, ए नर दारिद्री अ वतरे ॥ ७९ ॥ विनयवंत दानें उल्लसे, चारित्रना गुण वासें वसे ॥ लोकमांहे तस कीर्त्ति घणी, महोटी रु द्धि तणो ते धणी ॥ ८० ॥ विश्वासी पाडे संताप, सूधे मन न आलोवे पाप॥गोयम इसे कर्में मन नडे, ते नर रोगें पीड्यो रडे ॥ ८१ ॥ विश्वासी राखे हित

आणे भरी, बीकण होये सदा ते मरी ॥ ६४ ॥ जीव
सवि ऊपर हित सदा, जय न करे न करावे कदा॥
पीड पराइ वर्जे जेह, गोयम धीर होवे नर तेह ॥
॥ ६५ ॥ लीये चारु विद्या विज्ञान, कूडो विनय करे
अज्ञान ॥ विद्यागुरुनें अपमाने बहु, तेहनुं जण्यु नि
फल होय सहु ॥ ६६ ॥ विद्यागुरुनी जक्तियें जख्यो,
माने विनय गुणें परिवस्यो ॥ एणी परें जे जे विद्या
जणी, सघली सफल होवे तेह तणी ॥ ६७ ॥ देई
दान हीये न समाइ, मन चिंते में दीधुं कांइ ॥ तस
घर लक्ष्मी वहेली मले, गय्या दिवसमांहे पण टले
॥ ६८ ॥ थोडे धन नित्य वाधे ज्याह, दीये देवरावे
जे पर प्राह ॥ पुण्यथकी परजव रंगरोल, तसु घर क
मला करे कल्लोल ॥ ६९ ॥ जे जेहनें मनगमतुं होय,
जाव सहित रुचिनें दिये सोय ॥ देई मन उचाट न
जास, तस घर लक्ष्मी रहे थिरवास ॥ ७० ॥ पशु पं
खी माणसनां बाल, जे पापी पीडे विकराल ॥ तस
घर गोरु न होये थिरे, जो होये सो निश्चय मरे ॥
॥ ७१ ॥ जेह तणे मन दया प्रधान, गोयम तस घर
बहु संतान ॥ अणसांजल्युं सुण्यु कहे जेह ॥ परजव
बहेरो थाये तेह ॥ ७२ ॥ अणदीठानें दीठुं जणे, धर्म

सोय ॥ ए० ॥ मन वांकडो करे नित्य पाप, होशें जीव विराधे आप ॥ जेहनें देवगुरुशुं खेश, रूप न पामे ते लवलेश ॥ ए१ ॥ यंत्र तंत्रनें नाडी दोर, खडूं कुतें करी कठोर ॥ जे पापी पीडे पर जंत, ते पामे वेदना अनंत ॥ ए२ ॥ प्राणी संकट पड्यो अचिंत, वंधन मरणें थयो नयनीत ॥ दया करी मूकावे कोय, तसु शिर वेदन निखर नवि होय ॥ ए३ ॥ हियडे नेहने निविड परिणाम, अति अज्ञान महानय जाम ॥ कर्म आशातावेदनी घणुं, तव पामे एकेंद्रिय पणुं ॥ ए४ ॥ पुण्य पाप पर लोक न आज, त्रिनुवन को नथी ऋषिराज ॥ जे नर माने ईश्यो विचार, गोयम तेहनें थिर संसार ॥ एए ॥ पुण्य पाप ठे लोक मकार, ठे जिन सेवित सुगुरु नर नार ॥ महिमंरुल मुनिवर ठे सही, माने ते संसारी नही ॥ए६॥ निर्मल ज्ञान अठे चारित्र, दर्शन नूषित देह पवित्र ॥ ते नर मरी तरी संसार, थाये शिवपुर तणो शिणगार ॥ए७॥

॥ दोहा ॥ जं जं गोयम पूछियुं, वीरजिणेसर पास ॥ तं कहियुं त्रिनुवन गुरें, गिरुआ वचन विलास ॥ ए८ ॥ नविक लोक तुमें सांनली, वाणी बहुत विचार ॥ पुण्य पापफल प्रगटवे, प्रीछो हृदय मकार ॥ एए ॥

करी, आलोयण आलोये खरी ॥ परजव तसु महि
मा ए वडो, रोग न आवे घर ढूंकडो ॥ ७२ ॥ करे
जे लघु लाघव केटला, हु जाणु नर नहीं ते जला ॥
कूडे तोलें करे कुंसाट, अधिक लेइनें आपे घाट ॥७३॥
प्रत्यक्ष पुरुष न वीहे पाप, वली वरांसे पाडे माप ॥
लोजे लेखा हिंके बहु, नखर क्रियाणुं वेचे सहु ॥७४॥
जेह तणो मन अति अनिमान, माने अवरने तृण स
मान ॥ लेइ आपतां करे जे खांच, मुख बोलतां नहिं
खल खांच ॥ ७५ ॥ पाप बहुल मांजे विवसाय, इस्या
अवर जे करे उपाय ॥ ते नर परजव डुखियो दी
न, सघलां अंग हुवे तसु हीन ॥ ७६ ॥ संयम स
हित गुणें गहगहे, जे सुसाधु शीलें दृढ रहे ॥ तास
पूठ करवे पडवडो, ते परजव थाये बोबडो ॥ ७७ ॥
जेहनें धर्म तणी नहीं आंख, ठेदे पंखी जातिनी
पांख ॥ तेहनु जब आयुखु पते, थाये नूठो जव आ
वते ॥ ७८ ॥ दया रहित कहे दिन रात, पशु कुमा
री प्रत्यें कुजाति ॥ गाये घाय करे गलगलो,
परजव ते थाये पांगुलो ॥ ७९ ॥ सरल स्वजाव
धर्म अहिठाण, जीव जतन जे करे सुजाण ।
जिन गुरु पाय जक्ती नित्य होय, रूपें मदन सरीखो

सोय ॥ ए० ॥ मन वांकडो करे नित्य पाप, होशें जीव विराधे आप ॥ जेहनें देवगुरुशुं खेश, रूप न पामे ते लवलेश ॥ ए१ ॥ यंत्र तंत्रनें नाडी दोर, खडूं कुंतें करी कठोर ॥ जे पापी पीडे पर जंत, ते पामे वेदना अनंत ॥ ए२ ॥ प्राणी संकट पड्यो अचिंत, बंधन मरणें थयो जयजीत ॥ दया करी मूकावे कोय, तसु शिर वेदन निखर नवि होय ॥ ए३ ॥ हियडे नेहने निविड परिणाम, अति अज्ञान महाजय जाम ॥ कर्म आशातावेदनी घणुं, तव पामे एकेंड्रिय पणुं ॥ ए४ ॥ पुण्य पाप पर लोक न आज, त्रिजुवन को नथी ऋषिराज ॥ जे नर माने ईश्यो विचार, गोयम तेहनें थिर संसार ॥ एए ॥ पुण्य पाप छे लोक मझार, छे जिन सेवित सुगुरु नर नार ॥ महिमंरूल मुनिवर छे सही, माने ते संसारी नही ॥ए६॥ निर्मल ज्ञान अछे चारित्र, दर्शन जूषित देह पवित्र ॥ ते नर मरी तरी संसार, थाये शिवपुर तणो शिणगार ॥ए७॥

॥ दोहा ॥ जं जं गोयम पूछियुं, वीरजिणेसर पास ॥ तं कहियुं त्रिजुवन गुरें, गिरुआ वचन विलास ॥ ए८ ॥ जविक लोक तुमें सांजली, वाणी बहुत विचार ॥ पुण्य पापफल प्रगटवे, प्रीछो हृदय मझार ॥ एए ॥

पृछा उत्तर वेहु मली, अडचालीश प्रमाण ॥ अरथ
घढुष तुमें जाणजो, जग जयवंता जाण ॥ १०० ॥
पढ्या गुण्या प्रीछ्या तणो, कवि कहे एहज मर्म ॥ द
या सहित आदर करी, कीजें जिनवर धर्म ॥ १०१॥

॥ चोपाइ ॥

॥ वीरविमल केवलनु गेह, भांज्या जविक तणा
संदेह ॥ हरख्यो तव गोयम गणधार, सजा सहु जंपे
जयकार ॥ १०२ ॥ समयरस जयवंत मुणीश, एम
जंपे जग सेहनो शिष्य ॥ सुणजो वर्णाविर्ण अढार,
ठति सारु करजो उपकार ॥ १०३ ॥ सहे अरथ
गोयम गणधार, तो पण आणी पर उपकार ॥ वीर
कन्हे बहु पृछा कीध, जविक प्रत्यें प्रतिबोधज दीध
॥ १०४ ॥ एम जाणी कवि करे विचार, जूठं एह सं
सार असार ॥ पुत्र कलत्र पोढां घरवार, रहेशे सो
वन धन शणगार ॥ १०५ ॥ जातां जीव न लागे वा
र, काया कूटी कीजें ठार ॥ जनमतणु एहिज फल
सार, कीजें कांइ पर उपकार ॥ १०६ ॥ हियडे अवर
म धरजो जर्म, ते उपकार कहीजें धर्म ॥ पुण्य पाप
साथें आवशे, सहु आपणें काज लागशे ॥ १०७ ॥
कवि कहे हुं शु बोलुं बहु, जिणवर तो जाणे ठे सहु॥

पुण्यकाज करशो एक ससा, शिवसुख लेहशो वीरो व
सा ॥१०८॥ श्रीमुख गौतम पूछा करे, वीर सरीखा सं
शय हरे ॥ वेहुनी वाणी अमृत समान, अमृत वाणी
एहनुं अभिधान ॥१०९॥ एह चोपाइ रची चौशाल,
कोण संवतनें केहो काल ॥ वरस मास कहिशुं दिन
वार, जोई लेजो जाण विचार ॥११०॥ पहेली तिथिनी
संख्या आण, संवत जाणो एणे अहिनाण ॥ बाण वे
द जो वांचो वाम, जाणो वरष तणुं ते नाम ॥१११॥
वासुपूज्य जिनवर जे नमो, चैत्रथकी मासज तेत
मो ॥ अजूआली अगीयारस सार, तिहां सुरगुरु गिरु
उं गुरुवार ॥११२॥ इहा सवे बाणुं चोपाइ, एक जप
माला पूरी थाइ ॥ ऊपर अधिको पाठ वखाण, ते संख्या
ना मणिया जाण ॥ ११३ ॥ एम गणतां जे आवे दो
य, सहस लाखनी संख्या होय ॥ एक रहे सविहुकोनो
वतु, ते ऊपर फरके फूमतुं ॥ ११४॥ उं जपमाली एक
गुण वहे, एहना गुण कोइ पार न लहे ॥ पगपग विंड
हुये वली तिहां, गणतां छिद्र नही वली जिहां॥११५
॥ जोतां गुण दीसे अति घणा, वारु वर्ण अछे तेह
तणा ॥ पढतां गुणतां सुणतां सार, सविहुं ऊपर सुख
दातार ॥ ११६ ॥ मानव मन माया परिहरो, मेली

काया निर्मल करो ॥ आ जपमाली हीयडे धरो, मु
क्ति वधू जिम लीलायें वरो ॥ ११७ ॥ ध्यान धरीनें
आप उद्धरो, कूडी कुबुद्धि ते परिहरो ॥ मोह मूको ना
णो अभिमान ॥ एक मना ध्याउं धर्म ध्यान ॥ आ
श अन्याय्यान परिहरो, रयणी भोजन ते मत करो
॥ ११८ ॥ श्रीसमकेतशु धारे मन, भाग्यवंत पाले प
वित्त ॥ अतीत अनागतनें वर्त्तमान, ए त्रण काल
करे जिन ध्यान ॥ ११९ ॥ कीधां कर्म जो बूटे तोय,
दान शील तप भक्ति जो होय ॥ मन शुद्धि
विण सहु ए आल, जेम जो जाणो होय इन्द्रजाल
॥ १२० ॥ कर्म करे जीव काया सहे, हीये विचारी
जोइ ते लहे ॥ एक मना समरो नवकार, पूरव चौ
दमांहे जे सार ॥ १२१ ॥ ए संसार असारह अछे,
विगर्ते जाणेशो तमे पछें ॥ आ जपमाली हियडे धरो,
मुक्तिवधु जेम लीला वरो ॥ १२२ ॥ जपमालीशु सं
ख्या कही, को जाणे को जाणे नही ॥ कवि कहे कुणही
मकरशो रीश, सर्वे मलीनें होये एकवीश ॥ १२३ ॥ आण
जाणतां कांइ होये अलि, अविकु छंडु खमजो वली ॥
मुनि लावण्यसमय कहे इस्युं, धन्य मन जे जिन वचनें
वस्युं ॥ १२४ ॥ इतिश्री गौतमपृछा चोपाइ संपूर्ण ॥
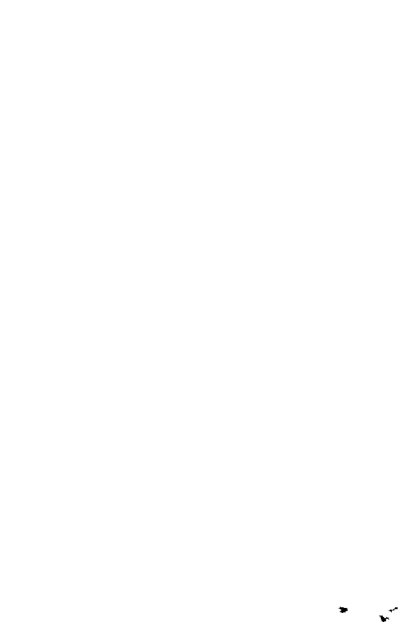
ॐ

॥ श्री गौतम गुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ श्रीअंजनासतीनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शियल समोवरु कोइ नहीं, शीयल सबल आधार ॥ शिवसुख पामे शियलशुं, पामे भवनो पार ॥ १ ॥ जीव जगतमां ऊरूया, जेहनुं अविचल नाम ॥ शियलवती अंजनातणो, रास भणुं अभिराम ॥२॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ तो जीहो पहलेने करुवे हो पाय नमुं, भव दुःख भंजन जे भगवंत तो ॥ कर्म काया तणां कापशुं, परभव पापनो आणशुं अंत तो ॥ रास भणुं सती अंजना, दान दया गुण शियल संतोष तो ॥ विरहिणी वली रे वैरागिणी, संयम साधीने गइ सुरलोक तो ॥ तो जीहो सती रे शिरोमणि अंजना ॥ १ ॥ तो जीहो सती रे शिरोमणि गायशुं, उपनी वंश विद्याधर मांय तो ॥ नामेंहो नव निधि संपजे, एनुं भजन करतां भवदुःख जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ ब्राह्मीने सुंदरी वंदियें, राजा हो ऋष

न तणे घरे चीयतो ॥ बालपणे तप वन गइ, काम भोग न वांछा जेह तो ॥ सती रे वंदू सुलोचना, मे घ सेनापतिने घरे नार तो ॥ अजना सती रे सीता भली, तारा न चूकी रे शील लगार तो॥ तो०॥स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ पांचशे किसन कुमारिका, इण बाल कुमारीने लागुजी पाय तो ॥ जादव जान जाणी क री, द्वारिका दाझा देखी तप वन जाय तो ॥ हरि तणी अगना वंदीये, जेणे राग छोडी मन धरियो वैराग्य तो ॥ राजिमती पाय पूजीयें, जोणें घोर सं सारनो कीधो छे त्यागतो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥ तो० ॥ चंदन बाला हो चिरंजीवो, जेणे आहार दीधो म हावीर तो ॥ बाल कुमारी रे साधवी, अनशन सा धी पामी भव तीर तो ॥दमयंतीये बहु दुःख सह्यां, सतीय पणे रही ते वनमांय तो ॥ माता मदालसा वंदिये, ते तो कुटुंब तारि करी शिवपुर जाय तो ॥ तो०॥स०॥ ५ ॥ तो० ॥ मयणरेहा रति सुंदरी, जेणे नयण काढी दीयां राख्युं छे शील तो॥ छपन्न सहस सार्थे तप वन गइ, मेहली मंदोदरी लंकानी लील तो ॥ शील उपदेश शास्त्रें करी, (हवे) जुइ जुइ कथा छे घम अनेक तो ॥ तेह वांदू सरवे साधवी,

रूडी अंजनाना गुण केटला कहिश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ वंश वस्रो रे रलियामणो, राज करे त्यां रावण जगपाल तो ॥ अंजनाना गुण सांन्न ली, ए कथा उपरे अति घणो ख्याल तो ॥ चित्त व सी रंग रायने, तेवारें सन्नामां पूछे वारोवार तो ॥ कविजन रास प्रकाश जो, अक्षर आणजो अतिघणा सार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ महेंद्र पुरी रे जग जाणीयें, राजा हो महेंद्र वसे तिण गाम तो ॥ तस पटराणी छे रूअमी, मनोवेगा छे तेह तणुं नाम तो ॥ पुत्र सो रायना निर्मला, रूपें ते रूडाने दर्शन काम तो ॥ केडेथी जाइ एक कुंअरी, अंजना सुंदरी तेह तणुं नाम तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ८ ॥ तो० ॥ बा पने वाहाली रे बालिका,मायने जीव थकी घणुं हेत तो ॥ सो बंधव वचें एक बेनडी, लाडकी नानमी गुणतणी गेह तो ॥ सर्व विद्या न्नणी सुंदरी, चाले जेम गजगति गेल तो ॥ स्वजन सहुने सोहामणी, दिन दिन वाधे जाणे चंपक वेल तो ॥तो०॥स०॥ए॥

॥ दोहा ॥

॥ नर जोबनमां ते थइ, कुंअरी चतुर सुजाण ॥ जैन मार्गमां दीपती, बोले मधुरी वाण ॥ १ ॥ एक

समे शणगार करी, पुहति पितानी पास ॥ पुत्री देखी राजवी, भर जोवन सुविलास ॥ २ ॥ ए बेटी मुऊ वल्लइई, केने परणावु जोय ॥ घर वर सरखु जो मले, तो जगमां यश होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तो जीहो रायें प्रधान तेडाविया, अजना वरतणो करो रे विचार तो ॥ एक कहे रावणने दीजीयें, बीजो कहे दीजीयें मेघ कुमार तो ॥ वर ठे हो प्रभुजी रूअडो, जोबन भरते साधशे जोग तो ॥ व र्षे अढारमें तप करी, वर्षे ठव्वीशमां पामशे मोक्ष तो ॥ ते वारें कन्याने सुख नहीं, शरीरें उपजे अति घणु डुःख तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ रतन पुरी तणो राजीयो, राय प्रल्हाद विद्याधर जाण तो ॥ तस घर पुत्र ठे दीपतो, पवनजी लग्न कीधु रे प्र माण तो ॥ अजनाना गुण सांजली, देश विदेशे वा धी ठे विख्यात तो ॥ पवनजी मित्रने एम कहे, आ पणे रूप जोई अइ जलि जात तो ॥ तो० ॥ स० ॥२॥ तो० ॥ पवनजी लाग्यो रे निरखवा, पुरोहित नीची घाली रह्यो दृष्ट तो ॥ निरखतां तृप्ति पामे नहीं, ना री नदीठी मूतख हेठ तो ॥ दरिसण जाणु रे देवां

गना, बोलतां बोले छे सुललित वाण तो ॥ चंपक व
रणी हो सुंदरी, एहनां नयन जाणे मृगतणां बाण
तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ बेठी सिंहासनें अं
जना, बेहु पासें सोहे सखी तणां वृंद तो ॥ वस्त्र आ
नरण अंगें धर्यां, तारामां शोन्ने जेम पूनम चंद तो
॥ वसंतमाला एम उच्चरे, बाइ योग्य जोडुं मल्युं
एणे संसार तो ॥ जेहवा हो पवनजी जाणीयें, ते
हवी हो पामी छे अंजना नारतो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥
तो० ॥ बीजी सहियर एम उच्चरे, बाइ पेहलो वर
मन चिंतव्यो जेह तो ॥ तेवो हो पवनजी वर नहीं,
वर्ष अढारमां तप करशे तेह तो ॥ पांच इंद्रिय ति
हां जीपशे, वर्ष छव्वीशमां पामशे मोक्ष तो ॥ ते
णे करी विवाह वर्जियो,कन्याने होवे वर तणुं दुःख
तो ॥ तो०॥ स० ॥५॥तो०॥ अंजना आनंदें एम उच्च
रे, बाइ धन धन ते नरनो अवतार तो ॥ कर्म का
यातणां कापशे, वेहेलो पामशे नव तणो पार तो ॥
पाय वंदूं ते पूज्यना, बे कर जोडीने नामुं हु शीश
तो ॥ पवनजी कोपें रे धरु हडयो, मनमां आणी छे
अति घणी रीश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ पवनजी
कोपें रे परजल्यो, धनुष्य चढावीने साध्युं छे बाण

तो ॥ मारा रे अवगुण बोलती, पर पुरुषनां करे रे वखाण तो ॥ मन्त्रीयें आवीनें वाहे धस्यो,जोरें नारीने नर नवि घाले रे घाय तो ॥ पाये लागी करी प्रीछ व्यो, ओरणे घालीने मार्गे लेइ जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ पवनजी मन मांहे चिंतवे, एतो रूपें रूडीनें दर्शनें काल तो ॥ मनमांहे मेलीरे पाप णी, पनु चित्त चोखुं नहीं कर्म चंमाल तो ॥ पुरुष परायाशु मन रमे, पवनजी चिंते एसो रे उपाय तो॥ मेहलु तो एहने रे वर घणा, परणीने परिहरु ए सम नहीं कोइ दाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ८ ॥ तो० ॥ लगन तणो दिन आवियो, ढोल दवामाने घूरे नि शाण तो ॥ राय राणा हो सर्वे मल्या, हवे व्यापियुं तिमिरने आथम्यो भाण तो ॥ महेंद्रराय आव्यो सामइ ए, पवनजी देखीने आनंद थाय तो ॥ धवल मंगल गावे गोरडी, हवे अजनानो वर जोवाने जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ तोरणें वरराय आ वियो, अंजना उपरें अति रे अजाव तो ॥ सांजल तां शिश चटको चढे, नाम लेतां चढे हुरु हुरु ताव तो ॥ धवल मगल गावे गोरडी, पोंखणां सासु करे बहु जावतो ॥ वरने विमासण अति घणी, जाणे यं

धन शालामां देइ जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ रूपा तणो रे मंडप रच्यो, सोनाना कलश सोना तणी वेल तो ॥ सोवन पाट मोती जड्या, अंजना पवनजी बेठां बेहु हेल तो ॥ हाथ मेलो तिहां संचरे, नयणें निहाले विद्याधरी नार तो ॥ अंतर पट पाछो करी, जाणीयें कर मांहे ग्रह्यो रे अंगार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ११ ॥ तो० ॥ परणी पसटी ऊतस्यां, करे पहेरामणी अंजनानो तात तो ॥ गज रथ आप्या रे अति घणा,ताजा तुरंगम देश विख्यात तो ॥ धन कंचन मोती रे आपीयां, आपी छे रयण तणी बहु क्रोड तो ॥ वसंत माला रे आदें करी, पांचशे साहेली पूरें छे जोड तो ॥ तो० ॥ स० ॥१२॥ तो०॥ रतन पुरी मांहे संचस्या,साहामो हो आव्यो छे राय प्रल्हाद तो ॥ अंजना पाय पूजी करी, सकल मनोरथ मुज फळ्या आज तो ॥ सासुनां पाय तिण पूजीया,आप्यां छे आभरण रयण अमूल्य तो॥पांचशे गाम राये दीयां,ए वहू अर मारी जीवन तुल्य तो ॥तो०॥१३

॥ दोहा ॥

॥ परणी मेली पदमिणी, मूकी महोल मोझार ॥ अहिनी कांचलीनी परें, फरी न पूछी सार ॥१॥ अं

तर हेत हुवे नहीं, तों नयणा नेह न होय ॥ नेहवि हूणी तेहनी, वात गमे नहीं कोय ॥ २ ॥

॥ ढाल श्रीजी ॥

॥ तो० महोटांरे मंदिर मालियां, आपी वहूने हो एम कहे राय तो ॥ कुलवहू लीला इहां करो, सुख संयोग विलसो घणे ठाय तो ॥ पवनजी सार पूछे नहीं, अजना आर्ति हैये न समाय तो ॥ कहोनें कारण किशुं वेहेनकी, सुध न सार कीधी अम तणी नाह तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ पीयरथी आवी रे सुखकी, वसंत माला कर मोकली सोय तो ॥ खइ करी स्वामी आगल धरी, गावंता गांधर्वने दीधी ठे तेह तो ॥ वस्त्र आभरण जे मोकल्यां, जाणुं महारा स्वामीने शोभशे अंग तो ॥ वस्त्र फाडीने कटका करी, आभरण लेइ आप्या ठे मतग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वसंत माला रे विलखी थइ,आवीने अजनाने कही ठे वात तो ॥ जे वस्तु स्वामी ने मोकली, आपण उपर किध्यो रे अन्नाव तो ॥ अजनाने आंखे आंसु करे,शुं चूकी ठे भक्ति अनेकतो॥ए नर दीसे ठे निर्मलो,कांइक आपणा कर्म विशेक तो०॥३

॥ दोहा ॥

॥ बोल कुबोल न वीसरे, शल्य समा सालंत ॥ क्षिण एक रति नवि उपजे, आरति घणि आणंत ॥ १ ॥ नजर न मेले नाहलो, उपजे अति उच्चाट ॥ आवटणुं लागे घणुं, विरहज वांकी वाट ॥ २ ॥ मा तपितानी लाडकी, सासु ससरा शुज्ञदिठ ॥ कंत मया विण कामिनी, उंठो देखे नीट ॥ ३ ॥ पवनजीनी पद मिणी, परम महासुखकार ॥ नाह नेह नीपट नहीं, मेली माथे ज्ञार ॥ ४ ॥ प्रीतम मन मेल्यो परखे, आ दर न करे उंर ॥ दोष गाठोरि दाखवे, सासु सस रा जोर ॥ ५ ॥ आदर विण दिन अंजना, काढे करी घणे कलेश ॥ मात पिता मन मूऊवे, विण अपराध विशेष ॥ ६ ॥ दिन पलट्यो पलट्यां सजन, ज्ञांगी हे यानी हाम ॥ जेना करती उबरा, ते नवि ले मुज ना म ॥ ७ ॥ प्रीतम विण विलखी फरे, जलविन नागर वेल ॥ वणफारानी पोठ ज्युं, गयो धुखंती मेल ॥ ७ ॥ बोले अंजना सुंदरी, नागरि चतुर सुजाण ॥ प्रीतम विण विलखी फरे, गुण विण लाला कबाण ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ तो० अंजना बेठीरे मालीये, पवनजी तुरिय

खेलावन जाय तो ॥ आवतो जावतो निरखती, तेम
तेम हरख वाधे हैयामांय तो ॥ पवनजी कोपे रे प
रजल्यो, अंजना आणे छे अति घणी प्रीत तो ॥ जा
णे रे नारी निराखशे, तेवारें गोंख आडी करावी
भींत तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ पांचशें गाम
पोतें लीधां, राय राणी बेउ वरजे छे पुत्र तो ॥ अज
ना सती रे सुखकरणी, ए वहूने सोंपीयें निज घर
सूत्र तो ॥ मह्योटा रे कुलतणी उपनी, राजा हो म
हेंद्रतणी बहुलाज तो ॥ अजना आदर कीजीए, ए
म कहे केतुमतीने राय प्रस्ताव तो ॥ तो० ॥ स०
॥ २ ॥ तो० ॥ आणां घणां पाठां वाळीयां, पणे रे
आपे आव्यो वरो वीर तो ॥ अजना कहे रे नवि
आविर्यें, अन्यआजूपण मोकल्यां चीर तो ॥ स्वामी
रे मन मान्यां नहीं, हुं तो पियरें आवीने शु करु
वात तो ॥ बंधव पाठो रे वाळीयो, मात पिता दुःख धरे
दिन रात तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ बारवरस
वच्चें वहि गयां, इण कथा उपर एटलो संबंध-तो
॥ रावण वरुण बेहु कटक करी, मांहोमांहे उपन्यो
छे अति घणो रूडतो ॥ गज रथ घोडा पाखर्या,पा
ळाने बखतर शोभे शरीर तो ॥ शूराने सुजट शण

गारिया, हवे जोतस्या रथ वाजे रणझेर तो ॥ तो० ॥स०॥४॥तो०॥ तेकुं विद्याधरने मोकल्युं, एक तेकुं आ व्युं राय प्रल्हाद तो ॥ जेटले राय सान्निध्य करे, प वनजी कहे स्वामी अमतणुं काम तो ॥ आयुध शा लामांहे संचस्यो, करमांहे धनुष्य लीधां जइ वाण तो ॥ तमें घेर वेठा लीला करो, पुत्रजाया तणुं ए ठे प्रमाण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ पवनजी चा ल्यो रे कटकमां, स्वामियें कीधी न अम तणी सार तो ॥ दूर थकी पाये लागशुं, जाव कुजाव जोशुं ए कवार तो ॥ वसंतमाला माहारी वेनमी, शुरू शीख दिये मुऊ हेव तो ॥ दहिनो रे डवो जरी करी, मा रगमां उन्नी अंजना देव तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ कनक कचोलुं रे दहिए जस्युं, शकुन मिशे मही लेइ जाय तो ॥ कटकें जातां पियु वांदशे, त्यारें नमण करी लागिश पाय तो ॥ जाणशे अंजनाने आ दरी, राजजवनमां देखशे लोक तो ॥ ज्यां लगें स्वा मी आवे नहीं, त्यां लगें मनमांहे करुं रे संतोष तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ गयंद बेसी संचस्यो, मात पितानें नामियुं शीश तो ॥ सज्जन सहुने सं तोषिया, अंजना उपरे अति घणी रीस तो ॥ दूर

थकी रे दृष्टें पमी, चतुर चितारानुं जुर्ज चित्राम तो ॥ पूतली खरी रे रंभा जिसी, चतुर चितारानुं जा चु ए नाम तो ॥ तो०॥ स०॥ ७ ॥ तो० ॥ मंत्रीकहे नहिं पूतली, जीव ठंडगे ठे अजना नार तो ॥ सां जली राय रातो थयो, मार्ग जातां स्वामी मली अ ठार तो ॥ दूर ठेली ते अलगी पडी, मारग मेलीने चाल्यो ठे साथ तो ॥ वसंतमाला मोडे करुका, वा इ मूरख दीसे ठे तम तणो नाथ तो ॥ तो० ॥ स० ॥७॥तो०॥थांइ साहीने वेठी करी, ठरडे चालीने घर माह्य तो ॥ कटक चाल्युं हो रावण तणुं, ठीकतां चा ल्यो ठे माहरो नाह तो ॥ जीवने जोखम अति घणुं, पहोच्युं ठे माहरे अति घणु पाप तो ॥ वेली रे गा ल न दीजियें, कटकें चालतां केम दीनो ठे शाप तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ अंजना कहे सुण सुंदरी, दुःख मांहे दुःख मुज उपन्युं आजतो ॥ पा णीपीपणकरी पालली, ससरा वच्चें मारी निगमी लाज तो ॥ सासुने मुख केम दाखवुं, घर वेसी जिनतणुं नाम जपीश तो ॥ चरित्र मनमांहे चिंतवुं, अवसर आणीने संयम लेइश तो ॥ तो०॥ स०॥११॥तो०॥ नगर थकी दूर दीधुं मेलाण तो ॥ चकवो ने चकवी त्या टलव

से, व्याप्युं तिमिरने आथम्यो जाण तो ॥ पवनजी मंत्रीने एम कहे, नारी तणुं नहिं लीजीयें नाम तो ॥ पुरुष परायशुं मन रमे, एने चकवीनी पेरें मूकी में गाम तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १२ ॥ तो० ॥ मंत्री कहे सुणो विनति, एवमो कांइ आणो हैयडे जर्म तो ॥ महासती मांहेरे मूलगी, अहोनिश सेवती जिन तणो धर्म तो ॥ पुरुष परायो वांछे नही, वचन वरांसे कांइ करो रीश तो ॥ शीयल सरोवरें झीलती, एणें मोक्ष गामी जाणी नाम्युं शीश तो ॥तो०॥स०॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणि मंत्री तणां, कोमल जयो निज चित्त ॥ पवनजी मंत्रीने कहे, सुणो हमारा मित्त ॥१॥ खोटुं कारज ए में कस्युं, संतापी निज नार ॥ वचन वरांसे डुहवी, करवो कवण विचार ॥२॥ मो मनमें प्यारी वसे, जाणुं मलियें जाय ॥ लोकें लाज रहे नहिं, मनही मनमें मूंझाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ तो० पवनजी मित्रने पीछवे, कटकें चालुं तो नारी मास्यानुं पाप तो ॥ पाछो वलुं तो प्रजा हसे, महोलमां लाजशे मुज तणो बाप तो ॥ मित्र कहे

ठानारे जायशु, तेढी सेनापतिने दीधी ठे शीख तो ॥ जात्रा करी श्रमें श्रावशु, त्यां लगे कटकनो करजो प्रेख तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो ॥ प्रहस्र गर्से त्यां श्रावीया, श्रावीने श्रजनानां ठोक्यां कमाड तो ॥ वसतमाला चोगल देइ करी, पवन ज्ञतावला बोल ती गाल तो ॥ शूरारे पुरुष कटकें गया, संपट लोक रह्या ठे रखवाल तो ॥ श्र्हाणें डुं रायने वीनवी, तेह तणी रे कढावीश लाख तो ॥ तो० ॥ स०॥२॥ तो०॥ पुरोहित मंत्री एम उच्चरे, माह ए ठे राय प्रल्हाद ना नद तो ॥ श्रजना केरोरे शिर धणी, वंश विद्या धर उपन्यो चद तो ॥ वसंतमाला श्रावी ठंलरूया, नयणें निहाले तो श्रापणो स्वाम तो ॥ सती रे सा मायिकें क्यां लगें, त्यां लगे राय रहो इणे ठाम तो॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ धर्म क्रिया करि श्रंजना, श्रावीने पवनजी बोले ठे मर्म तो ॥ माहा सतीमांहे रे मूलगी, श्रहोनिश सेवती जिन तणो धर्म तो ॥ पवन वरांसें में डुहवी, में मुने कीधो श्रजाव श्रगा ध तो ॥ हाथ जोडीनें नीचो नम्यो, खमो खमो श्रं जना मारो श्रपराध तो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥ तो० ॥ श्रंजना श्रावीने पाये नमे, एवा हुखमा कांबोलो उ

ञ्चार तो ॥ जेवी रे पग तणी मोजमी, तेहवी होवे रे पुरुष तणी नार तो ॥ हाथ जोमीने आगल रही, व चन सोहामणां बोले ठे दीन तो ॥ प्राप्ति विना केम पामिए, एणें पत्थर फोडीने कीधो ठे मीण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ त्रण दिवस तेहने घरे रह्या, खट रस जोजन पिरसे पक्वान्न तो ॥ विंऊणे वायु बेठी करे, बीमां वालि वालि आपे ठे पान तो ॥ नाटक नाचीने रीझवे, वीणा वजाइ गावे जिन गीत तो ॥ पवनजी आनंद पामी रह्या, अंजना हर्युं ठे राय तणुं चित्त तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ प्रछन्न गतें जिम तुमें आवीया, रायराणीने करजो जाण तो ॥ आशा पहोंचे सहु अम तणी, बाहानुं आजरण दीधुं सहि नाण तो ॥ वसंतमाला रे तेडी करी, अंजना महारे चिंतामणिरत्न तो ॥ दांतने जीज शी जलाववी, रात दिवस एनुं करजो जतन तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ वसंतमाला रे बोलावीने, राजा हो पवनजी कीधो जुहार तो ॥ धण कंचण मोती रे आपीयां, हवे कुंची सहित आप्या ठे जंडार तो ॥ पुरोहित मंत्रीने एम कहे, रणमांहे राजानी राखजो देह तो ॥ वेहेला ते घेर पधारजो, वाट जो

ठ जाणे श्रावण मेह तो ॥ तो० ॥ स० ॥ण॥ तो० ॥ शीख वीर्ठ अजना चालीए, रणमां जाइ देखाम्जो भुज सो ॥ पुत्र सो श्रावशे वरुणना, ते श्रागल रखे देखाम्रो पूठतो ॥ डुर्जन कटक ठे वरुणनुं, वोहतणा स्यां पडशे श्रंगार तो ॥ सहियर वचन ए हवां कह्यां, मरण जल्लु पण नहीं जली हार तो ॥तो०॥ स०॥ए॥

॥ दोहा ॥

॥ राय पराया गोरमें, मत जागो राज कुमार ॥ खंठण लागे दो कुलें, मरवुं एकज वार ॥ १ ॥तो० ॥ पोलथकी रे पाठी वली, नयणे वठूटी ठे जलतणी धार तो ॥ कठिन वचन कह्यां कलने, मुख ढांकी रुए ठे वारो वार तो ॥ वसंतमाला श्रावी धीरज दीए, वाइ हमणां श्राव्यो सामायिक काल तो पद मिणी पमिक्कमणुं करो, चठदे नियमनी करो शुद्ध निहाल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ शुद्ध सा मायिक उच्चरे, करे ध्यान धर्मनु धर्मी दोइ वार तो ॥ पांचे पर्वी तप उच्चरे, वारे हो व्रत पच्यां ति ण वार तो ॥ सांजे वेसीने सद्भाय करे, जावना धार चिंतवे मनमांय तो ॥ पाठली रातें तो पठे गुणे एणी पेरें श्रंजनाना दिन जाय तो ॥ तो०॥स०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सेनाए करी परिवस्थां, लंका नयरी जाय ॥
नूप नली परे नेटिया, अति रलियायत थाय ॥ १ ॥
रावणनो आदेश लइ, शुनवेला सुविचार ॥ वरुण
उपर ततक्षण चढ्यो, दल सबल अनुसार ॥ २ ॥ ह
वे ते अंजना सुंदरी, गर्न रह्यो ते रात ॥ गुप्तपणानुं
काम छे, कोइ न जाणे वात ॥ ३ ॥ गर्न तणे शुन
लक्षणें, गर्न जणाणो जाम ॥ केतु मती सासू कहे,
केवुं कर्युं ए काम ॥४॥ पवनजी तो परदेशमें, वहू ए
वधार्युं पेट॥हुं जाणती एमज होशे,सोइ होयुं नेट॥५

॥ ढाल छठी ॥

॥ तो० उदर उंधान जाणी करी, बिहु जणें
मांडी छे दाननी शाल तो ॥ साध वेला नित्य साच
वे, दुःखीया दोहिलानी करे छे संनाल तो ॥ नित्य
पात्रने पोखती, शेरीयें शेरीयें मांड्यों सत्रुकार तो ॥
नाव नवे मनें उलटें, दिन दिन दीसे छे चरुतो प्र
ताप तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ राणीजी रा
यने वीनवे,सांनलो स्वामि मुज वीनति आज तो ॥
अंजना करे रे उमावणा, धुर लगें धणीयें न कीधी
सार तो ॥ घर फोफीनें वित्त वावरे, कटकें जातां एनुं

मरश्यु ठे मान तो ॥ घरे जाइ करी नहि प्रीठवुं, नहीं तो करशु पहनु अपमान तो ॥ तो० ॥ स०॥२॥ तो० ॥ शीख मार्गरि स्वामी कने, पालखीयें बेठी आरोगे ठे पान तो ॥ आगल पात्र नचावती, जाचक जोइ जोइ आपे ठे दान तो ॥ सार्थे रे सहीयर अति घणी, सरखे सादें गांधर्व गीत गाय तो ॥ आगें थकी जण मोकल्यो, हवे सासु वहू तणे घेर जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ शेरी शेरीयें सुरतरु पाथस्या, आंगणे पटोळांने पाथस्या पाट तो ॥ फुलना पगर उपर धस्या, जाणे सासुजी आवशे पणी वाट तो ॥ साहामी आवीने पाये नमी, वरिसण दीठे दारिद्र जाय तो ॥ वेणीना वाल ठोडी करी, तेणे करी लूवे ठे सासुना पाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ पालखी आगें पाली चले, सासुनी चक्ति करे मन थीर तो ॥ सुवर्ण पाट वेसाडीया, चरण पखालीने पीये ठे नीर तो ॥ पाय पुजी दीये प्रदक्षिणा, सासरे पीयरें मुज वाधी ठे लाज तो ॥ सकल मनोरथ मुज फल्या, माणस मांहे महोटी करी आज तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वहूजीना नेह देखी करी, केतुमती राणीये मन धरी रीश तो ॥

अंगनां चिन्ह फरी गयां, कहे वहू तारुं रूप केवुंआ दीस तो ॥ महोटा रे कुलतणी उपनी, वंश विद्याधर ज्योति हे नार तो ॥ साचो अक्षर मुजने कहे, ता हरे उदरें उधानके विकार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो०॥आजरण मेली पाये,नमी कुअर तमारे मुज की धी हे सार तो ॥ विरहिणी जाणी पाछा वल्या, मुज घेर आविया रयणी मोझार तो ॥ त्रण दिवस मुज घेर रह्या, तुम पुत्रथी मुऊ पूगी हे आशतो ॥ जेम आव्या तेम पाछा वल्या, तेणे करी माहारे हे सात मो मास तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूठ म बोल तुं पापिणी, मोहोटे कुलें कुनार॥ एह अनर्थज तें कस्यो, तेणे तुऊने धिक्कार ॥ १ ॥ अकार्य मोटुं तें कस्युं, लोपी कुलनी लाज ॥ तुं कुल खंपण उपनी,प्रत्यक्ष दीठी आज ॥२॥ तारुं मुख दीठां थकां, लागे अमने पाप ॥ उलटां कर्म समाचस्यां, उपजाव्यो संताप ॥ ३ ॥ वात सुणी सासु तणी,मूर्छा णी तव नार ॥ उठे जल जिम माछली, करती दुःख अपार ॥ ४ ॥ सुण सासू मुऊ वीनति, में नवि कीधुं कर्म॥आ सहिनाणी जोइ ल्यो, राखो मारी शर्म॥५॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ तो० यदूना रे वचन कानें सुणी, केतुमती मन धरियो रे रोष तो ॥ परणीने तुजने हो परिह री, तुज मुज पुत्रनो किस्यो रे संतोष तो ॥ आज लगी रे अलखामणी, चोख्यां आचरणशु निर्मली तो ॥ वंध्यु रे दूध शु कीजीयें, सहियर सार्थे पीयर तु जाय तो ॥ सो० ॥ स० ॥ १ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पियर जारे पापिणी, नहीं राखु एक रात ॥ दूर जा तु देशातरें, जेमही विगले वात ॥ १ ॥ फा ब्यु कुध शा कामनु, विणठा माननो त्याग ॥ करवं सही उतावला, न गणतु लगपण लाग ॥ २ ॥ कच न तणी बुरी होये, पण पेटें मारी न जाय ॥ मेंतें तुजने परिहरी, जोइ अवगुण समुदाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तो० सासुना वचन कानें सुणी, अजना उ पर पड्यो घणो दाह तो ॥ बाइजी पुत्र तमारो पाठो वले, त्या लगें मने राखो घरमांह तो ॥ सासुने सस रा हो तम तणी, अहिया रहीने पठज खाउ तो ॥ चरण कमलने ग्रहि रहु, कलंक लइ केम पियर जा

ळं तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ केतुमती राणी जी हठ चढी, पगें करी क्रोधशुं ठेलीयुं शीश तो ॥ अंग मोमीने ऊनी थइ, थर थर ध्रुजे मनमां घणी रीश तो ॥ आंख थकी रे अलगी करो, जिहां लगें माहारा नगरनी सीम तो ॥ जिहां लगें अंजना इहां रहे, तिहां लगें अन्न पाणी तणुं नीम तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वसंतमालाने ऊाली करी, बांधी ठे बंधनें दीधो ठे मार तो ॥ चोस्यां आनरण मारा पुत्रनां, चोर देखाडो कां मारशुं गार तो ॥ तेर घडी रे टेरी रही, वागे ठे ताजणाने बूटे ठे सेड तो ॥ वलती हो सहीयर एम कहे, चोर तो पवनजी सही हतो तेह तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ कालो रे रथ अणावियो, काला तुरंगम जोड्या ठे रे दोय तो ॥ कालां रे वस्त्र पहेरावियां, काली धोंसरी दीधी ठे सोय तो ॥ काली रे मस्तकें राखमी, काला हो बाजुबंध बांध्या ठे दोय तो ॥ अंजना पियरें हो चालीयां, जो जो नाइ कर्मतणां फल एह तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ जुहार करी रथ संचस्यो, सहीयरशुं बेठी ठे अंजना देव[1] तो ॥ पवनवेगें रथ चा

---

१ सहियरशुं बेठी ठे अजना एह तो एवो पण पाठ ठे.

लीधो, थापनी चूमिका आवी ततखेव तो ॥ हर्ष
धवल घर देखिया, सारथी बोल्यो वे ततखेव तो।
पेट फोडीने पथरा नरु, में वनमा मेल्लु तु अजन
देव तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूल दूषण माहरु नहीं, जोर न मुज कइम
य ॥ कथन कर्युं नृपकामिनी, क्रोध थकी विलसाय
॥ १ ॥ पगें लागी पाठो वल्यो, दीन वचन मुख वेण
॥ दिन आथमियो पटले, थई अधारी रेण ॥ २ ।
दूषणको केनु नहिं, संच्या कर्मज सोय ॥ थध शुज
शुज आपणा, अब रोयां शु होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तो० सांज पमी दिन आथम्यो, रयण वि
हामणी घोर अधार सो ॥ नाम जपुं रे जगनाथनु
आणी वेला मुजनें एह आधार तो ॥ हाथो रे हाथ
सूफे नहीं, केम करी निर्गमशु डुःख नरी रात तो
॥ शुद्ध सामायिक उच्चरे, पटले सूरज उग्यो थयो
प्रजात तो ॥ सो० ॥ स० ॥१॥ तो०॥ अजना कहे सु
ण सुंदरी, माइ मारे हैयडे घणो रे संताप तो ॥ वृ
डां रे कलंक चढावियां, मुख केम दाखवुं एम तणें

बाप तो ॥ माता हो मन केम मेलशे, जाइ जोजाइ शुं केम वधशे नेह तो ॥ जिहां लगें स्वामी आवे नही, तिहां लगें केम करि निर्गमशुं दीह तो ॥तो० ॥ स० ॥१॥ तो० ॥ वसंतमाला वलती कहे, जिहां लगें निर्मल उज्ज्वल आप तो ॥ तिहां लगें सज्जन सोहामणा, हर्षे बोलावशे तम तणो बाप तो ॥ माता रे मनोरथ पूरशे, जाइ जोजाइ मलशे जर उमंग तो ॥ ज्यां लगें पवनजी आव्या नही, त्यांलगे पियरे पोषजो अंग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनुक्रमें वाटे चालतां, चरण थया चय चोल ॥ मन संकोचती पद्मिणी, आवि नगरनी पोल ॥१॥ नगरमांहे पेठी तिहां, लज्जा अतिहि मन्न ॥ शेरी मारग संचरी, कंपति झोले तन्न ॥ २ ॥ मनमां शोचे पग पगे, केम करि दाखुं मूख ॥ कालो वेश न शोजतो, दीठे आवे दुःख ॥३॥ पीयरनी आशा घणी, पुत्रीने तो होय ॥ जो ते मन खंची रहे, उंठो जोवे सोय ॥४॥ वसंतमाला धीरज दिये, आणे मन विश्वास ॥ चाली आवे शहेरमां, आणी पियरनी आश ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ तो० नगरमाहे शेरीयें सचर्यां, आडो घूंघट ने नीची छे दृष्टि तो ॥ हंस मयगल गतियें चालती, नगर तणा सहु जुवे छे शेठ तो ॥ राजविछोड कोड कामिनी, नाथ विहूणी दिसे निटोल तो ॥ पाछल प्रजा हो परवरी, पणी पेरें पहोंची छे वापनी पोल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ पोलीयो जची रा खी पूछवा गयो, मोहोलमा जइने वीनव्यो राय तो ॥ हाथ जोडीने नीचो नम्यो, वाहार आवी छे अ जना धीय तो ॥ साजली राय राजी थयो, नगर शणगारो ने तोरण वांधे तो ॥ साहामी रे मेलो जी पालखी, तेडाव्यो साथ महेंद्रनाथ तो ॥ तो० ॥स० ॥ २ ॥ तो० ॥ कानमा जइ करी विनति, अंजना सासरे परिहरी जेह तो ॥ साजली राय कांखो थयो, मूर्छा आवीने हुर्ठ रे अचेत तो ॥ वाहे साहीने वे ठो कर्यो, निर्मल वंशे कीधो अनाचार तो ॥ मत्सर चढावी राय बोलियो, पापिणी परिहरो पोलनी वा हार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ पोलीए आ वीनें ठगाडया, वाइ तने रूठ्यो विद्याधर राय ॥ तो वांहे झालीने वेठी करी, मनमाय चिंतवे आणीप

माय तो ॥ अंजना मार्गे संचरयां, शरीर शूनुं थयु शुद्ध न सार तो ॥ आघाने पग पाछा पडे, एणी परें पहोची छे मातने द्वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ मंदिरमांहे माता रमे, सोवर्ण हिंमोले हिंचे छे खाट तो ॥ घुमरी घाले रे कामिनी, माणकमोती हीरे जड्या पाट तो ॥ फूलनो परिमल महमहे, चंदन घसी घसी चर्चे छे अंग तो ॥ कोट वाली करी निरखीयुं,आंगणे दीठी छे अंजना चंग तो ॥ तो०॥ स० ॥५॥ तो० ॥ होठ सुका रे खमी पडे, जीन्न शूकी नहीं तालवे नीर तो ॥ एणी पेरे चालती बालिका, ढीचण पग तणे फाट्युं छे चीर तो ॥ कालो रे वेश शोत्ने नही, नयणें झरे जाणे मोतीनां वृंद तो ॥ मुख करमायुं रे कामिनी, जाणे राहु ग्रह्यो जिम चंद तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ मंदिरमांहे माता गइ, सरले सादें हो रोवे छे माय तो ॥ हुं कां न सरजी रे वांझणी, एणें कलंक चढाव्युं छे महारा कुलमांय तो ॥ रायने मुख केम दाखवुं, लइ कटारीने वोधशुं कूख ता ॥ तेणें कुखें अंजना जपनी, माराकुलने लगाड्यो एणे दोष तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ राणीनुं रुदन सुणी करी, चार चेटी मली आ

वे ठे पास तो ॥ आदर विहूणी केम जची रही, तुं कोरे जची ठे अजना नार तो ॥ससराने सासु लजा वियां, लजव्यां पियरने माय मोशाल तो ॥ वश वि गोवणी जपनी, थाइ तारु मुख देखतां लागे ठे आल तो ॥ सो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेटी चार मली करी, आवी अंजना पास ॥ वचन अतुल कह्या अति, बोले सघली दास ॥ १ ॥ लाज विहूणी पापिणी, कीधो जङ्गल हीण ॥ कुलने कलंक चडावियु, बोले एवां वेण ॥ २ ॥ जाति ल जावी मायनी, कुल लजाव्यु तात ॥ कुल खापण तु जपनी, हवे तु परही जात ॥ ३ ॥ वलती आवी गो रुमी, जेम तेम बोलण हार ॥ मुख नवि देखु तारुं, तुजने पमो धिक्कार ॥ ४ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ तो० वसंतमाला रे वलती इम कहे, एवा कांइ बोलो ठो हलवा रे बोल तो ॥जे वारें पवनजी आवशे, सासरे पियरें मुख पमशे धूल तो ॥ संजम साधी हो तप करे, हजीय लगे ठे गर्जनो पाश तो ॥ काया हो कामिनी नवि धरे, हजीय ठे पवनजी

पुरुषनी आश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ वल
ती हो बेहु जाणी संचरी, ज्येष्ठ नाइ तणे घेर जाय
तो ॥ बांधव घरमां बेसी रह्यो, आंगणे आवी ठे ते
तणी नास्य तो ॥ आवी नोजाइ सामी मली, मन
विहूणी तेणें आपी ठे बांह तो ॥ अंगुली दश दांते
धरे, नात्नी अन्न दीठे थया दिन दश तो ॥ तो० ॥
स० ॥ २ ॥ तो० ॥ एम अंजना घरोघर हिंमती,पग
कुंकुम वरण कमल सम देह तो ॥ खूंचे ते कांटा ने
कांकरा, तेणें रंगें नूमि राती थइ तेह तो ॥ दीन व
चन मुखें बोलती, नयणे ऊरे जाणे श्रावण मेह तो
॥ नूख तृषायें करी व्याकुली, नात्नी दीठां हुवां वर
स दस दोय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ वल
ती नोजाइ इम कहे, सामी रही रही बोले ठे बोल
तो ॥ धुर थकी रे डाह्यां हतां, एहवुं कां कर्म कर्युं
निटोल तो ॥ अमें अबला रे शुं कीजीयें, आंगणे
आवो रखे घरमांय तो ॥ अम घेर आव्यां जो जा
णशे, तम तणा वीरनुं फेडशे ठाम तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ४ ॥ तो० ॥ आश मूकीनें ऊनी थइ, बंधव बीजा
तणे घेर जाय तो ॥ पाठली रातें पहोरो जेम फरे,
घेर घेर हिंडे ठे अंजना धाय तो ॥ बंधव केणे नहीं

पुठीसु, सज्ञान कोणे नव कीधी ठे सार तो ॥ दीठी रे अजना जावती, पुरोहित प्रधानें देवाड्या ठे वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ आंगणे रमती रे बालिका, मेडीयें चढी चढी जूवे ठे लोक तो ॥ जिहां अजना संचरे, तिहां तिहां उपजे अति घणो शोक तो ॥ कूडां रें वयण काने सुणी, जाणे वागे ठे ख झनी धार तो ॥ छु खमां छुःख साले घणु, कहे कवि जेहनी वठी ठे व्हार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ अजना तरपें रे टलवले, जब लइ आव्यो कोइ ब्राह्मण वीर तो ॥ पद्मिणी पाणी रे वावरो, शीतल चरीसु ठे आमां नीर तो ॥ पाणी हो बांधव शु करु, नगरमांहे हुतो नही पीयु नीर तो ॥ पोल बाहेर पाणी वावरु,पोलमांहे मारा बापनी आण तो॥तो॥स०॥७॥

॥ दोहा ॥

॥सज्ञान नेह आणे नहीं, बोले मसकु मोस ॥ सज्ञान आदर नवि दिये, मनमा न आवे रोष ॥ १ ॥ पाणी साथ जेम माठली,साचो स्नेह सुजाण ॥ जो कीजें जलथीजुआ, तो क्षणमां ठोडे प्राण ॥२॥ डुंगर केरा वोकला, ओठा तणो सनेह ॥ व्हेतां वहे ताउतावला, फट देखाडे ठेह ॥ ३ ॥ माता पीयर सज्ञाना, धरतां

चहुली प्रीत ॥ ठेडे ठेह वताविये, ओठांकी ए रीत ॥ ४ ॥ सज्जन कीजें आंवसें, अवगुण गुणकरि देत ॥ ओ ततक्षण पत्थर हणे, ओ ततक्षण फल देत ॥५॥ सज्जन एसा कीजियें, जेसा चोल मजीठ ॥ आप रंगें पर रंगवे, दीठी करे अदिठ ॥ ५ ॥ आंवा जंबु करमदां, चोथा कहीयें वोर ॥ उपर नरम दिसे घणां, मांहे कठिनने कठोर ॥७॥ आण देवरावी नगरने, सुणलो जोशी वीर ॥ नीर मले जो शहेरमां, हुं नवि पीयुं नीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ तो० नगर वाहेर जल वावरुं, वसंतमाला वनमां मुनि लेइ जाय तो ॥ उज्ज्वल अटवीरे आगलें, उचा रे पर्वत विषम घणाय तो ॥ सूरज किरण नवि संचरे, जेणे वन तरुवर ठांय अपार तो ॥ माणस मुखदीसे नही, तेणे वने बाइ मने लेइ संचार्या तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ आश मेली रे पियर तणी, सिंह तणी पेरें मन कीधुं ठे धीर तो ॥ शूरा क्षत्री जेम वण चढे, शरीर संभालीने साचव्यां चीर तो ॥ उजरू वनमांहे संचर्यां, दीठ ठे पर्वत अचल उत्तंग तो ॥ स्कंधे चढावी रे कामिनी, लइ

चढी तेणे पर्वत शृंग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ अजना वनमांहे संचरया,लोक पियरने देवे छे गाल तो ॥ नगरनां लोक फूरे घणा, पहचो रायने उपज्यो स्याल तो ॥ आण देवरावी रे घर घरें, एह तुं कर्म न करे चकाल तो ॥ पेटनी पुत्रीने परहरी, वनमांहे काढी छे अजना नार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ मातायें साहेली मोकली, जइ जूओ अजना रही कोण गाम तो ॥ साहेली कहे ते तो वन गइ, हा हा ! ! दैव शुं कीधु ए काम तो ॥ माहारी रे कुखें ए उपनी, बालपणे वेटी पर अति घणो राग तो ॥ वनमाही वाघ विदारशे, रात दिवस बले पेटमां आग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वनमांहे गइ अजना, एह वचन सुणी माय ॥ कुमरी माहारी लाडकी, वसी जइ वनमांय ॥ १ ॥ मनवेगा मन चिंतवे, करे आरति बहु शोक ॥ इह लोके निंदा हुइ विणसायो परलोक ॥ २ ॥ नारी तणी मति पाछली, न कस्यो कोइ विचार ॥ काम पस्यो वगछ्या यका, शोच करे रे अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ तो जीहो नित्य न्नोजन करती बापपें, न्नाइ न्नोजाइनें न आपती न्नाग तो ॥ उत्संगें रमती रे अम तणे, ते केम सहेशे लूह जाल अंग तो ॥ अन्न पाणी केम पामशे, में जाएयुं कोइ राखशे वीर तो॥ माता रे मूर्छा वश थइ, शरीर संन्नालीने साचव्यां चीर तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ राजा आवी राणीने प्रीछवे, राज संबंध न जाएयो रे न्नेद तो ॥ कटकथी पवनजी आवशे, नासिका कर्ण तणो करशे छेद तो ॥ केम करी लोकने प्रीछवुं, केम करी राखशुं देशनी कार तो ॥ जो घर आणुं रे अंजना, नगर नर नारी हिंडे अनाचार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वसंतमाला एम उच्चरे, बाइ तारो बाप छे कर्म चंडालतो ॥ मूर्ख माता रे तम तणी, बंधवें कीधुं छे कर्म विकराल तो ॥ आंगणे राखी न अध घमी, कलंक चढावीने दीधुं छे आल तो ॥ वसंतमाला वली एम कहे ,बाइ तारुं पीयर पड्युं रसाताल तो ॥तो०॥ स० ॥३॥तो०॥ अंजना कहे बाप माहरो निर्मलो,एणे कोइने नवि दीधुं आल तो॥माता छे महारी माहासती, पतिव्रता धर्म तणी प्रतिपाल तो ॥ बंधव न्नकतो

ठे थापना, एमने कोइने नव दीजियें दोष तो ॥ पूर्वें पुण्य कीधा नहीं, ए सहु आपणा कर्मनो दोष तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ गिरि गुफा सती रे निहालती, तिहां दीठा ठे मुनिवर ध्यानें धीर तो ॥ पंच महाव्रत पालता, तप जप संयम सोहे शरीर तो ॥अवधि ज्ञाने करी आगला,जाइ करी अंजना वांद्या ठे चरण तो ॥ अति दुःख माहे आनंद हुओ, जवो जव होजो रे तम तणु शरण तो ॥तो०॥स०॥५॥तो०॥

॥ दोहा ॥

॥ देइ प्रदक्षिणा जावशु, वंदण विधिशु करंत ॥ सुखें बेठा पूठे सती, अधिको हर्ष धरंत ॥ १ ॥ पूठे चारण रुषि-जणी, वसततिलका नाम ॥ कोण कर्म दोपवी, साचू जंखु स्वाम ॥ २ ॥ रुषि जाखे शुज जावशु, कर्मकथा नहिं पार ॥ थोमामा जाखु घणु, सुणजो एह विचार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ तो० ध्यान दीपावी रुषि बोलीया, सुखी ठो अंजना महेंद्रनी धीय तो ॥ सुखें स्वामीजी तमने लह्या, सासरे मुफ दीधो ठे ठेह तो ॥ कोण कर्मे स्वामी हु रुवरुली, कोण कर्मे महारी तूटी ठे आश

तो ॥ कोण कर्मै माता ए परहरी, कोण कर्मै मारो वनमांहे वास तो ॥ तो० ॥ स० ॥१॥ तो० ॥ ऋषि कहे तमें सांजलो, शोक्य तणे जवें कीधुं ठे कर्म तो ॥ तूं हती धर्मनी द्वेषिणी, अहोनिश करती जिन धर्मनो द्वेष तो ॥ साधु तणो ठंघो चोरीयो, तेर घडी रा ख्यो पाडोसणें एम तो ॥ जिहां लगें साधु वोहोरे नहीं, तिहां लगे अन्न पाणी तणो मुऊ नेम तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ साधवी आवी तमनें कहे, ताहरे मन वसियो वैराग तो ॥ आपी ठंघो ने पाये नम्या, मांहो मांहे उपन्यो धर्मनो राग तो ॥ संयम साधीने तप कस्युं, आलोयणा विण हुवो एटलो फेर तो ॥ कीधां रे कर्म नवि छूटियें, तेर घडीनां हुवां वर्ष तेर तो ॥ तो० ॥ स०॥ ३ ॥ तो० ॥ तिहां थकी चवि तमें सुर थयां, स्वर्गथकी हुआं राज कुमारी तो ॥ साथें पाडोसण दुःख सहे, कूखें तमारे ठे पु ण्यवंत जीव तो ॥ शूरवीर सोहामणो, आगल होशे ते धर्म आधार तो ॥ पवनजी वरुणशुं रण जडे, घर आवी कुशलें मलशे अनुहार तो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥ तो० ॥ एटलुं कही ऋषि संचस्या, एटले गाज्यो गु फा मांहे सिंह तो ॥ त्रास पाम्यां सरवे सावजां, जा

गेके श्रापाढो गाज्यो ठे मेह तो ॥ अजना कहे अ
ह्लगी रहे, वसंतमाला कहे मरण वियो माय तो ॥
जाणशे पियु परदेशे गया, ए संदेह टालजो श्रम त
णो जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वसंतमा
ला रे वृक्षे चढी, अजना श्रासन दृढ करी गाय तो
॥ नाम जपे जगदीशनु, जाणे के ध्याने चढ्यो मुनि
राय तो ॥ चिहुं गति जीव खमावती, चारे हो शर
णां चिंतवे मन माय तो ॥ केशरी रूठो रे शु करे,
मुऊ तणो धर्म न लेइ शके कांय तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ६ ॥ तो० ॥ वसंतमाला वृक्षे टलवले, धाउं धाउं
अजना ठे निरधार तो ॥ वृम पाडे ने वरका करे,
धाउं शियल तणा प्रतिपाल तो ॥ धाउं धाउं सज्जन
जे हुवे, धाउं धाउं वनतणा वनपाल तो ॥ कुंवरीने
वाघ विदारशे, धाउं धाउं जिन धर्म तणा रखवाल
तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ तेणे वने व्यतर य
क्ष रहे, चार जोजन तणो रखवाल तो ॥ यक्षणी
यक्षने एम कहे, श्रापणे शरणे श्रावी ठे वे बाल तो
॥ शार्दूल रूप यक्षे करि, नखें करी केसरी ठेद्यो ठे
देह तो ॥ शार्दूलें सिंह पराजव्यो, दोडीने काढ्यो
ठे वन तजी ठेह तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ८ ॥ देवता

सहायशीदें हुए, आनंदें शीयल तणा गुण गायतो ॥ नारी सर्वेमांहे निर्मली, बेकर जोमी देवलाग्यो छे पाय तो ॥ शीयलें हो शिवसुख संपजे, शीयलथी म लशे तमारो कंथ तो ॥ शीयलें हो मामोजी आव शे, तिहां लगे नारी रहो निश्चिंत तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ देवता सहाय शीयलें हुउं, वनमांहे अबला रहे अबीह तो ॥ वनफल वावरी वन रहे, जिनतणा धर्मनी लोपे न लीह तो ॥ अखंम पणे व्रत बारह धरे, धुर लगें धर्मनी सकल सुजाण तो ॥ शुरू सामायिक उच्चरे, अविचल दान दया गुण खाण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ चैत्र मास वदि अष्टमी, पुष्प नक्त्र ने सोमवार तो ॥ पाछलो पहोर छे रयणिनो, अंजना जायो छे हनुमंत कुमार तो ॥ जाणे के सूरज प्रगटियो, स्वर्गथी सुर कहे ज यजयकार तो ॥ राक्स रोलण उपन्यो, रामनो सेव क धर्मनो धार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ११ ॥ तो० ॥ स हीयरें पुत्र पखालीयो, निऊरणामांहे पखालीयां चीर तो ॥ पुत्र पोढाड्यो रे पाथरे, सीतानो वारु हनुमंत तो ॥ निरखतां तृप्ति पामे नहीं, मांहो मांहे बेहु स खी एम करे वात तो ॥ जन्म महोत्सव कोण करे,

कटकें चाल्यो ठे कुअरनो तात तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १२ ॥ सो० ॥ चांदनी रात पूनम तणी, अंजना वे ठी ठे पुत्र कर धरंत तो ॥ चचल चपल सोहामणी, अति रलीयामणो बहुगुणवंत तो॥ हर्षे बोलावे रे माव सी, कुवर तणो ठे लघु वर वेश तो ॥ ताराने ताके रे बालुओ,जाणे के चांदलो ऊरूपीने लेश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १३ ॥ तो० ॥ मामो अजनानो तिण समे, शूरसेन राजा ठे तेहनु नाम तो ॥ यात्रा करीने पा ठो वल्यो, आवी विमान थऱ्यु तेणें ठाम तो ॥ वन माहे दीठी वे बालिका, अचरिज पामीनें मोकली नार तो ॥ मामीयें अजनानें ठलखी, नयणें वबूटी जलतणी धार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १४ ॥ तो० ॥ को टें वलगी रे बेलु आरडे, पटले मामोजी आव्या तत् खेव तो ॥ आवी जाणेजी साथे मल्यो, अति ङुःख आणे ठे अजना देव तो ॥ कंठ थकी रें वूटे नहीं, बालकनी परें धरी रही सास तो ॥ खोले बेसाडीने धीरवे, बाइ हमणां पूरु सारा मननी आश तो॥तो० ॥ स० ॥ १५ ॥ तो० ॥ बांह्य टूटी जब बापनी, आण देवडावी ठामोठाम तो ॥ त्यारे ठठी अमे घन गया, त्यारें सुइ के जीवती न लीधी सार तो ॥ पूरवें प्री

ति हती घणी, जाइ जोजाइ केणे न कीधी सार तो ॥ मामाजी पाप पोहोते घणो, करुणा न आवी कोइनें लगार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १६ ॥ तो० ॥ विमान बेसाणी रे संचस्यां, अंजनाने उत्संगें हनुमान कुमार तो ॥ दीठां जब मोतीनां ऊमखां, उछली चंचल दीधी छे फाल तो ॥ त्रोणी मोतीने भूमि पड्यो, अंजना मूर्छित शुद्ध नहि सार तो ॥ मामोजी पुत्र लेइ पाछो वल्यो, आप्यो अंजनाने तेणी वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥१७॥ तो० ॥ बांहे साहीने बेठी करी, पुत्र परीक्षानो महिमा तुं जोय तो ॥ देश विदेशे हो हुं जम्यो, एहवो सबलो न दीठो रे कोय तो ॥ सघले शरीरें प्राये जलो, कारणिक पुरुष कोइ अवतस्यो शूर तो ॥ फाल जांगी रे महा वृक्षनी, पथ्थर जांगीने कीधो चक चूर तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूर्ण पराक्रमी प्रगटियो, कपि कुल राखण माम ॥ द्युतिये शशि सम दीपतो, थयो बज्रंगी नाम ॥१॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ तो० हनु पाटण मांहे संचस्या, तरियां तोरण बांध्यां बे बार तो ॥ याचक दान देवरावियां, जन्म

महोत्सव कीधा छे सार तो ॥ सोवनपाट बेसारिया,
भुवने पधराव्या उत्तम ठार तो ॥ पाछे मलीने प्रका
शियो, हण्यो पापाण नथी हनुमंत कुमार तो ॥
सो० ॥ स० ॥ १ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुतना मुखने निरखती, फरि फरि अति अ
फोस॥ सास सारीखा सा खहे, जे शिर चढ्या कुबोल
॥ १ ॥ ते दिन क्यारे आवशे, घरे आवशे भरतार॥
सोकमांहि मने उछाखी, कब करशे किरतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोखमी ॥

॥ सो० अंजना हनुमंत तिहां रहे, पवनजी कट
के पहोता छे सनूर तो ॥ जइ करी रावणने मल्या,
फाल्यु बीडुने भाल्यो छे शूर तो ॥ साथे हो सेना
ते अति घणी, मेघपुरी जइ करीयु मेलाण तो ॥ बां
ध्या खर दूषण छोडावजो, तिहां मनावजो महारी
आण तो ॥ वरुण राजा तिहां आवियो, चउरंगी
सेनाने बखबख पूर तो ॥ सो० ॥ स० ॥ १ ॥ सो०॥
मेघपुरी वल संचर्खु, सामा हो वरसे छे बाणना मे
हतो ॥ पवन जी पाय न पातरे, मांहो मांहे सुभट
जूके छे तेह तो ॥ बरस दिवस फघमो हुर्ठ, मांहो

मांहे बेहु जणे कीधो ठे मेल तो ॥ बांध्या हो खर दूषण ठोडव्या, तिहां रे मनावी रावण तणी आण तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ कटक आव्युं लंका न णी, राजा हो रावणे कीधो जूहार तो ॥ वस्त्र ने वा घा बहु आपियां, शोनता आप्या शरीरे शणगार तो ॥ मास बे चार राखी करी, मोहोलमां आघे ते ड्यो विद्याधर साथ तो ॥ ज्यारें तेडावुं त्यारें आव जो, तुमें वेहेला विद्याधरनाथ तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ तो० ॥ कटकथी कुंवरजी आविया, मात पि ता तणे लागो ठे पाय तो ॥ जेटले माता नोजन क रे, तेटले अंजनाने घेर जाय तो ॥ शूनांरे मंदिर दे खियां, शूनांरे मंदिर कलकले काग तो ॥ पूरव वात कानें सुणी, तेटले पवनजीने शिर चढी आग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ केडेथी माता टलवले; आवीने पवनजीनी झाली ठे बांहि तो ॥ पाठा वलो पुत्र नोजन करो, पियरेंथी वहूने तेमावशुं आंहि तो ॥ धरणी सामुं रे देखी रह्यो, बोले न चाले न लीये मायनुं नाम तो ॥ माताजी खोला रे पाय रे, बांहि नाखी चाल्यो महेंद्रने गाम तो ॥ तो० ॥ स० ॥५॥ तो० ॥ माता रोवे मुख ढांकीने, मेंतो वात विमासी

न कीधु काम तो ॥ दस जणी जण नहि मोकल्यो, तिहा सर्गें पहूनें न राखी रे ठाम तो ॥ पाछली बुद्धि नारी तणी, वातें विचारी न कीधु रे यतन्न तो ॥ केतुमती करे क्रूरणा, रांकने हाथथी गयु रे रतन्न तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ पवनजी मंत्रीने एम कहे, राय राणीने केम करू रे प्रणाम तो ॥ माता ए स्त्रीने परहरी, सासरा पच्चें माहारी निर्गमी माम तो ॥ वरस दिवस झगडो हुर्ड, राजा हो वरुणाछु पयोजी मुझ तो ॥ बाध्या खर दूषण छोराविया, तेह तणी ते आगल केम करशु गुह्म तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ मंत्री कहे सती निर्मली, अवगुण आपणा घर छे सोय तो ॥ गुण तो परतणा शिर वहे, एहवी नारी नव दीठी कोय तो ॥ पहेला रे मंदिर किम जाइयें, आगलथकी कहेवरावो जुहार तो ॥ पवनजी आवे रे आवियो, अंजना पीयरें पठ्यो रे पोकार तो ॥ तो० ॥ स० ॥८॥ तो० ॥ मित्रनां वचन सुणी करी, पवनजी चाल्या छे मह्रोटे मंडाण तो ॥ मित्र प्रधान सार्थे लीया, नगरने गोंदरे दीधु छे मेलाण तो ॥ पवनजीए दूतज मोकल्यो,आगलथकी रे कहेजो जूहार तो ॥ पवनजी

आणे रे आवियो, महेंद्र राजा सुणी करे रे विचार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ महेंद्र कहे हुं मा हा पापियो, में तो कर्म कसाइनुं कीधुं ए जाण तो ॥ हाजिया लोक माहारे छे घणा, डाह्यो नर नहीं कोइ दीठो प्रमाण तो ॥ शीखनी वात न कोणे क ही, मनमांहे माहारे उपनी छे रीश तो ॥ नरक नि याणुं में बांधीयुं, केम करी कर्म छुटीश जगदीश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ पवनजी आणे रे आ विया, सांजली मातानें उर पमी फाल तो ॥ पेट कू टे दोय हाथशुं, उदरउधान तु किहां गइ बाल तो ॥ उन्नां थकां शिर आफले, जाणे बल जस्यां लागे छे वाण तो ॥ माता रे मनमांहे चिंतवे, केम देखाकुं जमाइने मुख जाण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ११ ॥ ता० ॥ सेना मेहेली करी संचस्या, ससरो जमाइनी सा हामोरे जाय तो ॥ अति डुःख रायने सांजरे, मनमां हे पुत्रीनो अति घणो दाह तो ॥ पुरोहित पवनजी आविया, कालुं मुख करी मलियो नरेश तो ॥ पवन जी इहां पधारिया, महेंद्र कहे हुं केवो उत्तर देश तो ॥ तो० ॥स०॥१२॥ तो० ॥ नगरमांहे पधराविया, मर्दनिया मर्दे छे तेल चंपेल तो ॥ निर्मलनीरें अंघो

लिया,वेसणे वेठा ठे बे जणा वेस तो ॥विध विध भो जन पिरसिया, थाल पीरसी करी मूक्यो ठे पाट तो ॥ पवनजी हाथ खेंची रह्यो, चउदिशे जुवे ठे अंज नानी वाट तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १३ ॥ तो० ॥ अंज ना जोइ दीकरी, पुत्र जायो हुसे तो वधामणी खाय तो ॥ मसंतमाला नवि देखियें, ते पण किहां रही ठे तुपाय तो ॥ सासूने घेर पग्यु पीटणुं, मांहोमांहे वे जणा एम करे वात तो ॥ अंजना सासूए डुहवी, पीयरें आवी कीधो आपघात तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ॥१४॥ तो०॥ साला तणी सुता न्हानडी, लेइ उत्संगें वेसारी बाल तो ॥ कहे तारी फुइ रे शु करे तेणारे रुदन करी बोली ततकाल तो ॥ मातपितायें पणे वधवें, पापीये कीधु ठे कर्म चकाल तो ॥ आंगणे न राखी रे अध घडी, कलंक चडावीने दीधु ठे आल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १५ ॥ तो० ॥ बालिका वचन सुणी करी, माथापर फेरवी नास्यो ठे थाल तो ॥ महेंडराय आवी पाय नमे, पुरोहित कहे तुं तो क मे चकाल तो ॥ उठो स्वामी शु वेसी रह्या, मूइ के जीवतीनी कीजीयें खोज तो ॥ सासू रे आवी आ डी फरी, तुम मुख दीठा मुज लगे ठे लाज तो ॥

तो० ॥ स० ॥ १६ ॥ तो०॥ वनमांहे कुंवरी टलवले, किहां गइ दान दया तणी वेल तो ॥ किहां गइ धर्मनी धोंसरी, किहां गइ शीयल संतोषनी वेल तो ॥ आवोने नारी आगल रहो, जेम जोउं तुम तणा मुखनुं स्वरूप तो ॥ कटकेथी कुशलो हुं आवियो, एम कही रुदन करे बहु नूप तो ॥ तो० ॥ स० ॥१७॥ तो० ॥ महेंद्रराजा तिहां आवियो, नारी सहित आव्यो राय प्रल्हाद तो ॥ आवी पवनजीने बांहे धरी, कांरे कायर तें मूक्यो आल तो ॥ कर्मशुं बलियो रे कोइ नहीं, पेट बलुरती आवी अंजनानी माय तो ॥ राजा वरुणशुं रण जड्यो, अति दुःख करतां रे उपरे घाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १७ ॥ तो० ॥ अनेक विमान लंबावियां, ए पलाण्या केइ करे तुरंग असवार तो ॥ केटलाक नर पाला फरे, सांढिया दोरुव्या दिशोदिश गार तो ॥ ए सती दीसे तो जीववुं, नहिंतर खड्ग मारी करुं काल तो ॥ देशविदेशे जोवतां, अंजना उमटी बे माय मोसाल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ए ॥ तो० ॥ आगलथी पवनजी जालिया, पूठेथी आव्यो बे सघलो साथ तो ॥ आवतो सहियरें उलख्यो, ए कहिए स्वामिनी तुमतणो नाथ तो

॥ अजना आवी हो पाये नमी, खोखे वेसाड्यो े हनुरे कुमार तो ॥ क्षण एक पुत्र सामु जूए, क्षण एक जूए े अजना नार तो ॥ पवनजी आनंद पामी रह्या, जाड एहवा सुख नही रे संसार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २० ॥ तो० ॥ वसंतमाला रे पाये नमी, उच्छले घाली लही हैया मजार तो ॥ कहे वाइ तमें दुःख केम लह्या, केम करी सह्यो मारी मायनो मार तो ॥ केम करी वनफल वीणियां, केम करी पर्वत रह्यां निराधार तो ॥ अजनाए केम पुत्र जनमीयो, केम करी दुःख भरी निर्गम्यो काल तो ॥ तो० ॥ स०॥२१॥ तो०॥ ज्यारे स्वामी तमे सैन्ये गया, त्यारे सासरे पियरे दीधो े छेह तो ॥ त्यारे उठी अमे वन गयां, वनफल आवरी राख्यो े देह तो ॥ वनमाहे मुनिवर भेटिया, देवताये कीधी े अम तणी सार तो ॥ रात्रि दिवस धर्म ध्यावतां, अजना गुण तणो नवि लहु पार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साची उतरी से सती, जबें आव्या भरतार ॥
कलंक टल्युं कामिनी तणुं, जलोज निकल्यो तार॥१॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ तो० धन्य मुख दीठुं हो तुम तणुं, बेउ सबी
बोले छे मधुरी वाण तो ॥ केम करी सेना मांहे सं
चस्या, केम करी झाल्यां राजा वरुणनां बाण तो ॥
बांध्या खर दूषण छोडाविया, सामा हो सुभटना स
ह्या घणा घाय तो ॥ जुझ करी अति उगस्या, अति
सुख उलट अंग न माय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥
तो० ॥ अंजना साहामी रे संचरी, जइ करी सस
राने लागी रे पाय तो ॥ ससराने आंखे आंसु झरे,
तने वहू कहुं के माहरी माय तो ॥ सतीने में कलंक
चढावियुं, पछी सासूने जइ लागी छे पाय तो ॥ में
वहु वगोवणमें तुझ करुं, सासु कहे खमजो मारो
अपराध तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ मात पि
ता आवीने मल्यां, भाइ भोजाइ अति घणो नेह
तो ॥ पीयरियां मुख ढांकी रुवे, वस्त्र पाछां करी नि
रखे छे देह तो ॥ आवोने बाइ सघली मली, मन
मांहे माहरी मत आणो लाज तो ॥ कर्म माहारे हुं
वन गइ, हर्ष वचन थइ सहु बोलावो आज तो ॥
तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दादा दादी देखी पोतरो,हनुमत निजकुल ही
र ॥ ए सहि होशे एहवो, वंश विद्याधर वीर ॥१॥
जक्ति युक्ति बहु जावशु, मामे करि मनुहार ॥ स
ज्जन सहु संतोपिया, पवनजीने अति प्यार ॥ २ ॥
पांच सात दिन प्रीतिथी, रह्मा घणे रस रंग ॥ शी
ख मागी पोहोच्या सहु, निज निज घर उछरंग॥३॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ तो० हनु रे पाटणथकी संचरया, अजनाने
आपी छे अति घणी आथतो ॥ मामोजी आव्यो व
लावणों, रत्नपुरी लगें आव्यो सहु साथ तो ॥ प्रजा
रे होपरघरी,हवे पधराव्या लई उत्तम गाय तो॥पव
नजी पाटें खेलाईने, राय राणी वेठ तपवन जाय
तो ॥ तो० ॥ सती० ॥ १ ॥ तो० ॥ पवनजी पाटें बे
सारीया, अजना राय वेठ अति अजिराम तो ॥
हनुमंत कुवर विद्या जणे,वानरविद्या पाम्या छे जली
जात तो ॥ बीजी हो विद्या अति जणयो, देशवि
देशे सघी छे विख्यात तो ॥ पवनजी पृथ्वी रे जोग
वे, वसंतमालाने पूठीकरे छे वात तो ॥ तो०॥सती०
॥ २ ॥ तो० ॥ वरुण लंकेसर उपन्यो, वरुथ वेगो

वजडावे वाजिंत्रतो ॥ पुत्र सो देखी रे आपणा, पर
तणी सेना न आवेरे चित्त तो ॥ लंका नणी जण
मोकल्यो, जोतांरे जूऊ करवा तणो नावतो ॥ बी
जा सुन्नट बहु मोकले, एक वार मुख जोवाने आ
व तो ॥ तो० ॥ सती० ॥ ३ ॥ तो० ॥ रावणे सेना
मेली घणी, एक तेऊंु मोकल्युं पवनजी रायतो ॥ ह
नुमंतकहे अमें जाईशुं, तात कहे तारी लघुवर का
यतो ॥ अंजनायें ठंऊं आलोचियुं, मनमांहे उपन्यो
अति घणो शोचतो ॥ राजा जाय तो रण रहे, कुंव
र मारो नहीं वरुणनी तोल तो ॥ तो० ॥ सती० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरुण प्रत्यें रावण वली, मेले कटक अपार ॥
प्रति सूर्यने पवन नृपटबोल्या तेणी वार ॥ १ ॥ दो
ई नूपति चालता, निःखेदें हनुमान ॥ चाल्यो आडं
बर घणे, तव रीजयो राजान ॥ २ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥

॥ तो० हनुमंत हठ करी चालीयो, महेंद्रपू
री जई दीधुं मेहेलाण तो ॥ त्रण पहोर दल आफ
ल्युं, बंधणें बाध्यां ठे मायने बापतो ॥ मामायें आवी
ठेडावीया, ठेडी बंधन ने कस्यो ठे प्रणाम तो ॥

॥ मारी माताने वेला पन्नी, तेवारे कोणे नव दीधु रे गाम तो ॥ तो०॥स०॥२॥ तो० ॥ हनुमंत चाल्यो व का जणी, सादमों श्राव्यो ठे रावण भूजाण तो॥ जाली वीडुं ने पाठो वल्यो, मेघपुरे जई कीधु मेहेला णतो ॥ साहामा हो सुजट ते श्राविया, खेंचे ठे ध नुष्य ने मुके ठे वाण तो ॥ रोष नरवारण श्राकचे, एवा सुजट पाडे रणमा जाण तो ॥ तो० ॥ सती० ॥ २ ॥ तो० ॥ रावण सेना देखी करी, पुत्र सो वरु णना रण चम्पा सोय तो ॥ आगना जकेरे अगारि या, लोहना वाण तिहां श्राफले दोय तो ॥ जाल शु जाल बांधी चरे मनुष्य वीसे जाणे कुंभाकार तो ॥ रावण सेना नासी गई, श्रागल जचो ठे हनु रे कुमार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥वजरंगी वरुण सुत कहे, वालक तारो वेश ॥ कोण पिता तुम कुयरजी, कोण तमारो देश ॥ १ ॥ वदे तेजें दीपतो, पवन कपिसुज नाम ॥ लघुवेशे हुं नानमो, देखो मारा काम ॥ २ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ तो० मातारे वेरण तम तणी, वापने श्रल

खामणो नानको बालतो ॥ जो मुख आव्यो रे वरु णने, ईण दिन खूट्यो छे तम तणो काल तो ॥ वलतो हनुमंत बोलियो, बंधव सो मली आव्या रे साथ तो ॥ बोल सही करी मानजो, जाणशुं रण मांहे वावरशो हाथ तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० वानरी विद्या साधी करी, वानर रूप कीधुं तेणिवार तो ॥ हाक करी दल हरावीयुं, जोजन, बारलगे वा जे घुकार तो ॥ हाकें सेना सहुथरहरे, वृक्ष उखे ळीने नाखे छे घाय तो ॥ पूंछे फरी कस्या एकठा, वरुणना पुत्र बांधी नाख्या रणमांय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वरुण राय तिहां आवीयो, आ वीने हनुमंतने दीधीछे हाक तो ॥ वानरी विद्या मे ली करी, मूलगे रूपें रह्यो रणमांय तो ॥ कोप चढ्यो कर वावरे, लागठ बाण मूके ततकाल तो ॥ वरुण राजाय विमाशियुं, ए बालक दीसे छे जुझनी जाल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ रथथकी राजा रे उतस्यो, आवीने हनुमंतने दीधी छे बाथ तो ॥ वे णीना वाल ते कर ग्रह्या, मूठीना प्रहार वाजे छे हा थ तो ॥ चपल चपेटा रे वावरे, केडेथी आवीयो रा वण धाइ तो ॥ आवी हनुमंतने उपर कस्यो, बांधी

वरुणने नाल्यो रथमाहि तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥
तो० ॥ बंधन ठोस्या हो वरुणना, आवीने रावणने
कीधो जुहार तो ॥ वलतो वरुण राय बोलियो, मा
शीश नमे जगदाधार तो ॥ संयम सेवा हो संचस्यो,
आपणा धर्म तणुं करे काज तो॥सेना हो वरुण वखा
णियो, तेहना पुत्रने वेसास्यो राज तो ॥तो०॥स०॥५॥

॥ दोहा ॥

॥ जीत्यो वरुण विशेषथी, नृपने करे जुहार ॥
थाप्यो स्थानक तेहने, अब नहीं खुनस लगार ॥१॥
वरुण घरे ठे कन्यका, सत्यवती तस नाम ॥ परणा
वी हनुमतने, जाणी वर अभिराम ॥ २ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ तो० रावणें हनुमत प्रशंसियो, शूरपणेथी
हो लघुवर काय तो ॥ मोटप आणी मनाविया, प
राक्रम देखीने कस्यो पसाय तो॥ काननां कुरुख आ
पीया, वली आप्या ठे अति घणा देश तो ॥ दीधी
ठे भाणेजी आपणी, परणयो ठे पद्मिणीने आप्या ठे
देश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ वली रे वरी
विद्याधरी, सहस्र कन्या वरी हनुमत वीर तो ॥ वे
टी परणी ठे सुग्रीव तणी, तेह पीयु चपरें अति घ

णो राग तो ॥ ससराने घेर कारण पड्युं, मांहो मांहे उपज्यो अति घणो धंध तो ॥ सुग्रीव हनुमंत रामनी, ए कथा चालशे रामायण मध्य तो ॥ तो० ॥ स० ॥२॥

॥ दोहा ॥

॥ पुत्री स्वरूप अनंग तणी, अनंग कुसुमा नाम ॥ हनुमंतने व्याहे सही, रावण जाणी सकाम ॥१॥ अन्नेरी विद्याधरी, पुत्री एक हजार ॥ परणावी हनु मंतने, धर्म सदा जयकार ॥ २ ॥ रावणनो आ देश लइ, परणी नार उमेद ॥ हनुमंत आव्यो निज घरे, मात पिता आणंद ॥ ३ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तो० पवनजी पृथ्वी रे जोगवे, बेठा सिंहा सन छत्र धरंत तो ॥ हनुमंत कुंवर छे दीपतो, जे ज णी डुर्जन दूर नासंत तो ॥ परजा सहु सुख जोगवे हवे दान पुण्य धर्मनी वाट तो ॥ याचकने दान दे वाम्यिां, एणी पेरें पवनजी जोगवे पाट तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ मृगमद चंदन महकता, सुगंध अतिशय चरचे छे अंग तो ॥ नित्य नाटक निरखि यां, फलने पान तंबोलनो रंग तो ॥ सहस वहूअर रे सेवा करे, पांच इंद्रिय तणा जोगवे जोग तो ॥

अंजना मनमांहे चिंतवे, धन्य धन्य ते नर शिर वहे जोग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ पाछलो पहोर ते रयणनो, धर्म चिंता करे अजनादेव तो ॥ पा रिअ मनमांहे चिंतवे, पवनजीने पाये लागी ततखेव तो ॥ जन्म मरण दुख दोहिलां, रोगवियोग संसार कलेश तो ॥ विपयना सुख पूरा हुआं, शिख थो स्वामी हुं संयमलेश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ पवनजीवलतारे एम कहे, घेर वेगा वेवि क रजो धर्म तो ॥ हजीयवालपणु नाहानडा, संयम ले जो हो चोथे आश्रम तो ॥ तुम साथे अमे पण आवशु, दान देवा तणी करजो हो चाल तो ॥ अ जना थई रे उतावली, विलवशु करो थोडो रखो काल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ विलंब स्वा मीजी जे करे, जेहने मरण तणो नहिं त्रास तो ॥ विलव स्वामीजी हु केम करु, मरण आयाकिहां जायशु नाशि तो ॥ कर्म क्रिया विणनवि टले, ते भणी लेइशु सजम भार तो ॥ काची रे काया का रमी, पणसंतां नवि लागे हो वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वचन सुणी राय रीझियो, मन संवे गीने आण्यो वेराग तो ॥ हनुमन कुंवर तेडावियो,

तेहने राय उपर घणो राग तो ॥ मातानां चरण ध
री रह्यो, अंजना उपरे अति घणो मोह तो ॥ सह
स वहू रे सेवा करे, पुत्र न छोडे माता तणो मोह
तो ॥ तो०॥ स० ॥६॥ तो० ॥ पुत्रने माता रे प्रीछ
यो, अथिर आउखानो नथी विश्वास तो ॥ धन
कण जोवन कारिमुं, मूरख जे जाणे आणे रे आश
तो ॥ मात पिता परिवारनें, मारुं मारुं करे सहु को
य तो ॥ वाउला जे नर बापडा, अंतकालें केम कर
शे सोय तो ॥ तो० ॥ ७ ॥ तो० ॥ तिलक करीनें
त्यांथी संचस्या, अंजना राय खमावती सोय तो ॥
छेहको छेम्की करी संचस्यां, हम तम लेवुं देवुं नहिं
कोय तो ॥ राय खमावी संयम लियो, तप करी पा
मशे शिवपुर ठाम तो ॥ अंजना गुरुणि पासें गइ,
वसंतमाला पण साथे थइ ताम तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ८ ॥ तो० ॥ काननां कुंडल परिहस्यां, नासिका
नकवेशर हार तो ॥ केरु तणी कटिमेखला, चूआ
चंदनने सर्व शरणगार तो ॥ पगतणा झांझर परिह
स्यां, बांहे सोनातणी परहरी छे चूम्कि तो ॥ लोच क
री त्यांथी चालियां, कर्म तणी बहु तोडे छे कोडि तो
॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ खोले घाली सुत सं

अजना मनमांहे चिंतवे, धन्य धन्य ते नर शिर वहे जोग तो ॥ तो० ॥ सं० ॥ २ ॥ तो० ॥ पाछलो पहोर छे रयणनो, धर्म चिंता करे अजनादेव तो ॥ धा रिश्र मनमांहे चिंतवे, पवनजीने पाये लागी ततखेव तो ॥ जन्म मरण दुख दोहिलां, रोगवियोग संसार कलेश तो ॥ विषयनां सुख पूरा हुआं, शिख थो स्वामी हुं संयमलेश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ पवनजीवलतारे एम कहे, घेर बेठां देवि क रजो धर्म तो ॥ हजीयबालपणु नाहानडा, संयम छे जो हो चोथे आश्रम तो ॥ तुम साथे अमे पण आवशु, दान देवा तणी करजो हो चाल तो ॥ अ जना थई रे उतावली, विलवशु करो थोमो रखो काल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ विलंब स्वा मीजी जे करे, जेहने मरण तणो नहिं त्रास तो ॥ विलब स्वामीजी हु केम करु, मरण आव्याकिहां जायशु नाशि तो ॥ कर्म क्रिया विणनवि टले, ते भणी लेइशु सजम भार तो ॥ काची रे काया का रमी, वणसंतां नवि लागे हो वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वचन सुणी राय रीझियो, मन संवे गीने आण्यो वैराग तो ॥ हनुमंत कुंवर तेडावियो,

खी पातक टले, एहनुं भजन करतां भव दुःख छेह तो ॥ तो० ॥ स० ॥१३॥ तो० ॥ अधिकुं ओछुं जे में कह्युं, मिछामि दुक्कड होजो मुज तेह तो ॥ शीयल तणा गुण वर्णव्या, सती साधवीअंजना जेह तो ॥ एह संबंध पूरो थयो,आगल चालशे सीता आख्याय तो ॥ विरहिणी वली रे वैरागिणी, रामनी भार्या जगत्रयनी माय तो ॥ तो० ॥स०॥१४॥ तो० ॥इति॥

॥ इति श्री अंजना सतीनो रास समाप्त ॥

॥ अथ हरीआली ॥

॥ बांभणानें कुल उतपनीरे नवि जग वालकुंआरी ॥ अतिथि वेला पाय पखाली, चंडाली घेर दीधी ॥१॥ हुं तुम पूछुं पंडिता पंडित, पहेलुं पुरुषके नारी ॥ ए आंकणी॥ ब्रह्मा विष्णु महेसरु रे, ए त्रणे में जाया ॥ तेह तणी घेरणी भणीजें, जेह भणीयें मोरी माया॥ हुं० ॥ २ ॥ शालिखांडतां जनम गयो रे, चावल दांते न लागो ॥ सासु सुसरा हुं वहुयारी, अवगुण अंग न लागो ॥ हुं० ॥ ३ ॥ उंचेरे आसन बेठी अछुंरे, सही ए में कौतुक दीठे ॥ चार बेटा कुंआरीयें जाया, पुरुष न आंखें दीठे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ जइ रे मोरो पिता हिंडणु रे, माता कान्ह कुंआरी ॥ तेहिं

चर्यो, अजना आजरण शिर तणा वाल तो ॥ घरे जइ करी पूजशु, एम करी निर्गमशु आपणो काल तो ॥ अति दु ख आणे जूरे घणु, मात पिता तणी परहरी आश तो ॥ बेटी सुग्रीवनी एम कहे, केशरी केम रहे धाण्या पास तो ॥ तो० ॥ स० ॥१०॥ तो० ॥ मास मास करे पारणु, शरीर सूकाणुं ने कीधु नि काम तो ॥ शीत शीयालानी शिर वहे, ज्येष्ठना तावना शिर पडे ताम तो ॥ हाडने नस दीसे जूजवां, (पार्टांतर) द्वादश मास ते तप करे, समस्त जीव तणी प्रतिपाल तो ॥ मांस, ने लोही सुकी गयां, लील री चरम दीसे नसा जाल तो ॥तो०॥स०॥११॥ तो० ॥ पृथ्वी पूजी करे साथरो, अनशन लीधु छे अज ना माय तो ॥ चोगति जीव खमावती, चार हो शर यां चिंते मनमांय तो ॥ नारीनुं लिंग छेदी करी, आ गल पामशे, पुरुषनो वेश तो, दीक्षा लइ मुगतें रे जायशे, एम कहे शीयल प्रथ उपदेश तो ॥ तो० स० ॥ १२ ॥ तो० ॥ शीयल सतोष गुणें आगली वान दया उपशमनी खाण तो ॥ सयम साधीने सुर थयां, रास सती अजना आण तो ॥ वंशे विद्याधर उपनी, नामें हो नव निधि संपजे तेह तो ॥ दर्शन वे

॥ श्रीशांतिनाथाय नमोनमः ॥

॥ अथ श्रीदेवकीजीना षट्पुत्रनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नेमजिणंद समोसर्या, त्रण्ये कालना जाण ॥ भविक जीवनें तारवा, प्रभु बोल्या अमृत वाण ॥ १ ॥ वाणी सुणी श्रीनेमनी, बूझ्या छए कुमार ॥ मात पिताने पूछीनें, लीधो संयम भार ॥ २ ॥ वैराग्यें संयम लीउं, धर्म सामग्री नीव ॥ छठ छठने पारणे, प्रभु कर दीउंजावजीव ॥ ३ ॥ निरंतर तपस्या करे, छए महोटा अणगार ॥ आज्ञा लेइ भगवंतनी, करे आतम उद्धार ॥४॥ नेमजिणंद समोसर्या, द्वारिका नगरी मझार ॥ एक दिन छठने पारणे, वयरागी अणगार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देशी ॥

॥ आगना लेइ भगवंतनी जी, छए ते बंधव सार ॥ गोचरी करवाने नीकल्या जी, द्वारिका नगरी मझार ॥ साधुजी भलें रे पधारिया जी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनेकसेन आदे करी जी, छए सरिखा अ

गार ॥ रूप सुंदर अति शोभता जी, नल कुबेर अनु हार ॥ सा० ॥ २ ॥ अष्ट संघाडे करी संचर्या जी, मुनिवर माहा गुणधार ॥ ईरिया समितियें चालतां जी, षट कायने हितकार ॥ सा० ॥ ३ ॥ पाडे पाडे फिरतां थका जी, गोचरीयें मुनिराय ॥ मुनिवर दो य तिहां आविया जी, वसुदेवजीना घरमांय ॥ सा० ॥ ४ ॥ देवकी देखी राजी हुइ जी, भलें पधार्या मु निराय ॥ सात आठ पग साहमा जइ जी, वली व ली लागे जी पाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ हाथ जोडीने वंद न करे जी, तरण तारण मुनिराय ॥ दरिसण दीठा स्वामी तुम तणां जी, भव भवनां दुःख जाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ आज भली रे जागी दिशा जी, धन्य दिवस माहरो आज ॥ मुनिवर अम घर आविया जी, तर ण तारण जहाज ॥ सा० ॥ ७ ॥ मुह माग्या पासा ढल्या जी, दूधडे वूठा मेह ॥ आज कृतारथ हुं थइ जी, आणी घणो धरम सनेह ॥ सा० ॥ ८ ॥ मोद क थाल भरी करी जी, वहोराव्या उलट भाव ॥ कु ल जिमण तणा लाभीनें जी, देवकी हर्षित थाय ॥ सा० ॥ ९ ॥ जाताने वली पोहोंचाडीयां जी, मुनि वर गया पोल बार ॥ थोडीसी वार ॥ हुइ जिसें जी,

वली आव्या दोय अणगार ॥ सा० ॥ १० ॥ देवकी
राणी मन चिंतवे जी, भूली गया छे अणगार ॥ व
डीय पुण्याइ छे माहरी जी, भूलें आव्यां दुसरी वार
॥ सा० ॥ ११ ॥ सात आठ पग सामी जाइने जी,
लली लली लागेजी पाय ॥ आज कृतारथ हु थइजी,
मुनिवर धस्या घर पाय ॥ सा० ॥ १२ ॥ मोदक थाल
भरी करी जी, वहोराव्या दूसरी वार ॥ कृक्ष जिमण
तणा लावीने जी, हैयडे हरष अपार ॥ सा० ॥ १३ ॥
जाता नें वली पोहोंचाविया जी, मुनिवर रूप अगा
ध ॥ थोडीसी वार हुइ जिसें जी, त्रीजे संघाडे आ
व्या साध ॥ सा० ॥ १४ ॥ देवकी तव राजी हुइ जी,
मन मांहे उपनो विचार ॥ आहार नवी मल्यो एह
ने जी, के भूलें आव्या अणगार ॥ सा० ॥ १५ ॥ भू
ल्यानुं तो कारण ए नहीं जी, दीसंता महोटा अण
गार ॥ तीसरी वार ए आवीया जी, नहीं ए तो सा
धु आचार ॥ सा० ॥ १६ ॥ रूपकला गुणे आगला
जी, दीसंता सम आकार॥ पहेलां जो एहने पुछशुं
जी, तो नही ले अम घर आहार ॥ सा० ॥ १७ ॥
मोदक थाल भरी करी जी, वहोराव्या तीसरी वा
र ॥ कुक्ष [illegible] तणा लावीनें जी, देवकी

भाव उदार ॥ सा० ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि प्रत्यें प्रतिलाभिनें, निरखी मुनि दीदार ॥ मनमा संशय उपनो, ते सुणजो सुविचार ॥ १ ॥ वात ए अचरज सारखी, मुखथी कही न जाय ॥ क्षा विण स्वाद न नीपजे, विण कर्युं केम रहेवाय ॥ २ ॥ देवकी एम मन चिंतवी, प्रणमी वे कर जोडी ॥ साधु प्रत्यें पूछती हवी, आलस अळगु छोडी॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग गोडी ॥ मृगापुत्रनी देशी ॥

॥ मुनिवर नगरी द्वारिका जी रे, बार जोयणनें मान॥ कृष्ण नरेसर राजीयो जी रे, जेहनी त्रण खंड आण ॥ मुनिसर एक करु अरदाश ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बहोतेर क्रोड घर बाहेर छे जी रे, माहे छे सात करोड ॥ लोक बहु सुखीया वसे जी रे, मांहे राम कृष्णनी जोड ॥ मु० ॥ २ ॥ लाख क्रोडांरा धणी वसे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ माहरे पुण्य तणे उदयें जी रे, मुनिवर आव्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥ ३ ॥ बीय पुण्याह छे ताहरी जी रे, एम बोल्या मुनिराय ॥ देवकी मनमां जाणीयुं जी रे, एहने खबर न कांय

॥मु० ॥४॥ हुं पूछुं इण कारणे जी रे, साधां न लीधो आहार॥ माहरे पुण्य तणे उदय जी रे, मुनिवर आव्या त्रीजी वार॥मु०॥५॥ मुनिवर उत्तर एम कहे जी रे, नयरीमां बहु दातार॥ त्रण संघाडाशुं निकल्या जी रे, अमें छए अणगार॥ मु०॥६॥वलतो मुनिवर एम कहे जी रे, तुं शंका मत आण॥ ताहरे पहेला वहोरी गया जी रे, ते मुनिवर डुजा जाण॥देवकी लोभ नहीं छे कांय॥ ए आंकणी॥७॥ देवकी मन अचरिज थयुं जी रे, ए किण मायें जाया रे पूत॥ रूप सुंदर अति शोभता जी रे, मुनिवर का कंरूी भूत॥मु०॥८॥आडी करीनें एम कहे जी रे, सांभलजो मुनिराय॥उत्पत्ति तुमारी किहां अछे जी रे, ते दिउ मुज बताय॥मु०॥ए॥ कोण नयरीथी कल्या जी रे, तुमे वसता कोण ग्राम॥ केहना छो ने दीकरा जी रे, कहेजो तेहनुं नाम॥मु०॥१०॥ ग शेठना अमे दीकरा जी रे, सुलसा अमारी माय भद्दिलपुरना वासिया जी रे, संयम लीधो छए भा॥मु०॥ ११॥ बत्रीशें रंभा तजी जी रे, बत्रीश व ।श दाय॥ कुटुंब मेल्यो अमे रोवतो जी रे, विल वि करती माय॥ मु०॥ १२॥ सर्वगाथा ॥३८॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि वचन श्रवणे सुणी, चिंते चीत मजार ॥ एहवो परिवार तजी करी, लीधो संयम भार ॥१॥ हाथ जोडीने वीनवे, सांभलजो मुनिराय ॥ किस्या दुःखथी तुमे निकस्या, ते दियो मुज बताय ॥२॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ खम खम मुज अपराध ॥ ए देशी ॥

॥ जातो काल न जाणतां, सांभल रे बाइ ॥ रहेतां महोल मकार ॥ दास दासी परिवारशु जी, वली बत्रीश बत्रीश नार ॥ सांभल रे बाई, म करीश मन उचाट ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ भगवंत नेम पधारिया ॥ सां० ॥ साधुनें परिवार ॥ अमें भगवंतने वांदिया जी, वली सुणीयो धर्म विचार ॥ सां० ॥ म० ॥ २ ॥ वाणी सुणी वैरागनी ॥ सां० ॥ जाण्यो अथिर संसार ॥ सुख जाण्यां सहु कारमां जी, अमें लीधो संयम भार ॥ सां० ॥ म० ॥ ३ ॥ चार महाव्रत आदर्या ॥ सां० ॥ चारे मेरु समान ॥ त्यजी संसार संयम लीयो जी, दीधो छकायनें अजयदान ॥ सां० ॥ म० ॥४॥ माता मेली अमे झूरती ॥ सां० ॥ तजी बत्रीने नार ॥ सघला वलवलतां रह्या जी, में तो छोड

दीयो संसार ॥ सां० ॥ म० ॥ ॥५॥ छठ छठनें पारणे ॥ सां० ॥ जाव जीव निरधार ॥ अंतर हमारेको न हीं जी, छे ए तप तणो विचार ॥ सां० ॥ म० ॥ ६ ॥ आज छठनें पारणे ॥ सां० ॥ आव्या नयरी मफार॥ दोय दोय मुनिवर जूजूआ जी, एम आव्या त्रीजी वार ॥ सां० ॥ म० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि वलि कीधी वीनति, तुमे महोटा मुनिराय ॥ घरमां त्रोटो श्यो पड्यो, ते दियो मुज बताय ॥ १ ॥ वलता मुनिवर बोलिया, तुमे सुणो मोरी माय ॥ घरमां त्रोटो जे पड्यो, ते देउं तुज बताय ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए देशी ॥

॥ ऊंचा महोल सोहामणा, रचिया विविध प्रकार रे माई ॥ तद्वद् रूपें सारखी, परणावी बत्रीशे नार रे माई ॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ परणीनें जब घर आवीयां, सासुने लागी पाय रे माई ॥ तव वहूने ऋद्धि घणी जे, आपी ते मुज माय रे माई ॥ पुण्य० ॥ २ ॥ बत्रीश क्रोड सोनैया जाणो, बत्रीश रुपैया सार रे माई ॥ बत्रीश बऊ

नाटकना टोला ऋद्धि तणो नहीं पार रे माई ॥पुण्य०
॥ ३ ॥ बत्रीश मुगट मुगट परवारु, हेम कुंडलनें हा
र रे माई ॥ एकावली मुक्तावली जाणो, कनक रयण
वली सार रे माई ॥ पुण्य० ॥ ४ ॥ बत्रीश हार मोती
तणा, बत्रीश रतन तणा जाण रे माई ॥ तीसरा चौ
सरा हार अने वली, एम कडगने तुडीय जाण रे
माई ॥ पुण्य० ॥ ५ ॥ बत्रीश सोनाना डोलीया, बत्री
श रूपाना जाण रे माई ॥ बत्रीश सिंहासन सोना
ना, इमहिंज कुलश वखाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥
बत्रीश सोनानी कथरोटी, बत्रीश रूपानी जाण रे मा
ई ॥ बत्रीशे वली तवा सोनाना, तिमहिंज थाल व
खाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ हय गय रथ दासनें
दासी, बत्रीश गोकुल जाण रे माई ॥ बत्रीश सोना
रूपाना दीवा, वली आरीसा वखाण रे माई ॥ पुण्य०
॥ ८ ॥ बत्रीश पीठ सोना रूपाना, इमहिंज घरेणा अ
मूल्य रे माई ॥ पर्गे पडतां सासुयें दीधां, एकशो बाण
बोल रे माई ॥ पुण्य० ॥ ९ ॥ एम छए बबवनी मली ना
री, एकशो बाणुं जाण रे माई ॥ एकशो बाणुने ऋद्धि
अपाणी, आगम वचन प्रमाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ १० ॥
एणी परें अमे सुख जोगवता, निर्गमता दिन रात रें

माई ॥ त्रोटो तो अमने कांइ न हूंतो, ए अमे ठए
त्रात रे माई ॥ पुण्य० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वारंवार एम वीनवे, तुमे महोटा मुनिराय ॥
वैराग पाम्या किण विधें, तेदीठं मुज बताय ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥
नेम जिणंदनी में वाणी सांजली, जाण्यो अथिर सं
सारो जी ॥ काया मायारे जाणी कारिमी, कारिमो
कुटुंब परिवारो जी ॥ १ ॥ मुनिवर जांखे तुं शंका
मत करे ॥ ए आंकणी ॥ लाख चोराशीरे जीवायो
निमां, जमीयो अनंती वारो जी ॥ जन्म मरण क
रीने घणुं फरसियो, न रही मणा लगारो जी ॥ मुनि०
॥ २ ॥ करम नचावेरे तेम ए नाचीयो, विविध ब
नावी वेशो जी ॥ पातक कीधांरे जीवें अति घणां,
(पाठांतरे ॥ जन्म मरणे करी बहु वेदन सही,) न
वि सुण्यो धर्मोपदेशो जी ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ एहवी दे
शना अमे सांजली, जाणी सर्व असारो जी ॥ ठए
बंधव ततखण बूझीया, लीधो संयम जारो जी ॥
मुनि० ॥ ४ ॥ जोगेरे नरजव पामीया, लेइ

धर्मनी आयो जी ॥ ए सुख जाण्या रे अमेतो कारि मां, कीधो सुगतिनो साथो जी ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ ए हवा वयणां रे मुनिनां सांजली, देवकी करे विचारो जी ॥ बालक वयमां रे संयम आदर्यो, धन्य एहनो अवतारो जी ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ छप्पन कोडी रे माहे री साहेबी, साडात्रण कोड कुमारो जी ॥ दीठा स घला रे माहारा राज्यमां, कोइ नहीं इणे अनुहारो जी ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ इणेइण वयमां रे संयम आदर्यो, पाले निरतिचारो जी ॥ धन्य धन्य माता रे ताहरी कुखनें, जाया रत्न अमुलक सारो जी ॥ साधुजीना दरिसण दीठां राणी देवकी ॥ ए आंकणी ॥ ८ ॥ अग उपांग रे सघला सुंदरू, सौम्य वदन सुखदीशो जी ॥ जोली पातरां लीधां हाथमां, तनु सुकुमाल मुनि शो जी ॥ साधु० ॥ ९ ॥ गज जेम चाले रे मुनिवर मलपता, बोले वचन विचारो जी ॥ राजकुमरनी रे दीजें उपमां, जाणे कोइ देव कुमारो जी ॥ साधु० ॥ १० ॥ धन्य धन्य माता रे जेणे ए जनमिया, वर शणे दोलत थाय जी ॥ नाम लीधाथी रे नवनिधि सपजे, पातक दूर पलाय जी " ....

॥ दोहा ॥

॥आडी फरि फरि निरखिया, धन्य एहनो अवतार ॥छए सहोदर सारिखा, नही देखुं एहने अनुहार ॥१॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ धारणी मनावे रे मेघ कुमारनें रे ॥ ए आंकणी ॥ नयणे निहाले रे राणी देवकी रे, मुनिवर रूप रसाल ॥ लक्षणं गुणें करीनें शोजता रे, वाणी जेहनी विशाल ॥ नय० ॥ १ ॥ जिणे घरथी ए पुत्र नीकल्या रे, शुं रह्यो होसे लार ॥ दीसंता दीसे घणु सोहामणा रे, नल कुबेर अनुहार ॥ नय० ॥ २ ॥ एणे अनुहारे रे माहरा राजमां रे, अवर न दीसे कोय ॥ जो छे तो एक माहरो कृष्ण छे रे, एम मन अचरिज होय ॥ नय० ॥ ३ ॥ सीधुं सग पण कोइ दीसे नहीं रे, माहरुं हवणां जेम ॥ सूधी खबरज कोइ न वी पडे रे, एम किम जाग्यो माहारो प्रेम ॥ नय० ॥ ४ ॥ श्रावकनो साधुने उपरें रे, होवे छे धरम सनेह ॥ में घणा दीठा साधु पूरवें रे, छ शुं जाग्यो केम पूरव नेह ॥ नय० ॥ ५ ॥ जातां दीठां राणी देवकी रे, घणु थइ दिलगीर ॥ हियडुं फाटे तेहनु अति घणु रे, नयणे विछूटे नीर ॥ नय० ॥ ६ ॥ स० ॥ ७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ बालपणे थोस्यो हतो, अइमंतो अणगार ॥ आठ जणीस थाइ देवकी, बीजी नहीं भरत मझार ॥ १ ॥ एकवा पुत्र जनम्या विना, केम थाये आनंद ॥ माहरे संशय छे घणो, ते भांगे नेम जिणंद ॥ २ ॥ देवकी मन सासो थयो, जइ पूछु शणी वार ॥ केवल ज्ञानी मन तणा, संशय भांगण हार ॥ ३ ॥ एम चिंतवी राणी देवकी, वदण श्रीजिनराय ॥ सा मग्री सर्व सजी करी, हरष धरी मन मांय ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हांरे लाल शीयल सुरंगा मानवी ॥ ए देशी ॥ हांरे लाल थाकर पुरुष तेडावीनें, देवकी राणी बोले वाण रे लाल ॥ क्षिप्पामेव भो देवाणुप्पिया, तु रथ वेगो जोतराय रे लाल ॥ नेम वंदणनें जायशुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हांरे लाल थाकर सुणी हर्षित थयो, गयो जिहां यानशाल रे लाल ॥ तिहां जइनें सज्ज कर्यों, रथ रूडो विसराल रे लाल ॥ नेम० ॥ २ ॥ ॥ हां० ॥ चार छतावली अति घणी, वली उपगरण एसवा जाण रे लाल ॥ बाहिरली उवठाण शालमें, रथ ऊभो राख्यो आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ३ ॥ हां०

॥ धोलानें माता घणां, वली ठोटी सींघडीआ जाण रे लाल ॥ दीसे घणुं ए सोहामणा, एहवा वृषञ्च तुं आ ण रे लाल ॥ नेम० ॥ ४ हां० ॥ सरिखाने चांदी नही, जोवा सरखी बलदनी जोड रे लाल ॥ चाले चाल उतावली, जेहनें शिंगें पुंठे नही खोड रेलाल ॥ नेम०॥५॥ हां० ॥ बलदनें जूलां शोञ्चती, वली सो नानी नाथ रसाल रे लाल ॥ सोनानी ञली शिंगडी, वली गले ते घूघर माल रे लाल ॥नेम०॥६॥ हां० ॥ खेंचित सोनानी रासडी, वली सोना पट्टाला जोत्र रे लाल ॥ माथे ते घाल्यो सेहरो, तुं एणीपरें कर उद्यो त रे लाल ॥ नेम०॥७॥हां०॥ वली ते रथ शणगारीयो, ते सूत्रें ठे विस्तार रे लाल ॥ बलद जुगतशुं जोतरी, लाव्यो उवठाण शाला मझार रे लाल ॥ नेम० ॥८॥ हां०॥ न्हाइ धोइ मज्जन करी, वली पहेस्या नव नवा वेश रे लाल ॥ माणिक मोती मुद्रिका, वली घरेणा हार विशेष रे लाल ॥ नेम० ॥ ए ॥ हां० ॥ आडंबर क री अतिघणो, आवी बेठा रथ मांय रे लाल ॥ आग ल बांधी शीकरी, रथ बेठी दृढ थाय रे लाल ॥ नेम० ॥ १० ॥ हां० ॥ साथें ते लीधी साहेलीयां, वली चाल्या ते मध्य ञ ॰ रे लाल ॥ चतुर ते बेठोसांथ

॥ दोहा ॥

॥ बालपणे बोल्यो हतो, अइमंतो अणगार ॥ आठ जणीस बाइ देवकी, बीजी नहीं भरत मझार ॥ १ ॥ एहवा पुत्र जनम्या विना, केम थाये आवं द ॥ माहरे संशय छे घणो, ते भांगे नेम जिणंद ॥ २ ॥ देवकी मन सांसो थयो, जइ पूछुं इणी वार ॥ केवल ज्ञानी मन तणा, संशय भांगण हार ॥ ३ ॥ एम चिंतवी राणी देवकी, वदण श्रीजिनराय ॥ सामग्री सर्व सजी करी, हरष धरी मन मांय ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हांरे लाल शीयल सुरंगा मानवी ॥ ए देशी॥ हांरे लाल चाकर पुरुष तेडावीनें, देवकी राणी बोले वाण रे लाल ॥ खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया, तु रथ वेगो जोतराय रे लाल ॥ नेम वंदणनें जायशु ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हांरे लाल चाकर सुणी हर्षित थयो, गयो जिहां यानशाल रे लाल ॥ तिहां जइनें सज्ज कर्यो, रथ रूडो विसराल रे लाल ॥ नेम० ॥ २ ॥ ॥ हां० ॥ चार उताबली अति घणी, बली उपगरण इलवां जाण रे लाल ॥ बाहिरली उवठाण शालमें, रथ उभो राखी आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ३ ॥ हां०

ण तारण जहाज ॥ मनना मनोरथ हो प्रभुजी मा
हरा रे देखी रे, रह्या छो महाराज ॥ सांसो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देइ प्रदक्षिणा वांदता, बोल्या श्री जिनराय ॥
जिण कारण तुमें आवियां, ते सुणजो चित्त लाय
॥ १ नेम कहे सुणो देवकी, सांसो उपनो तुज्झ ॥
छए मुनिवर देखीनें, तुं पुछण आवी मुज्झ ॥ २ ॥
तहत्ति कहे तव देवकी, जोडी दोनुं हाथ ॥ हा स्वा
मी सांसो पड्यो, ते भांगो जगनाथ ॥ ३ ॥ ए छए
ताहरा दीकरा तुं शंका म करे कांय ॥ छए वोरण
जे आवीया, तेहनी तुं छेमाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ रूडे रूपरे पुत्र तुमारा राणी देवकी ॥ ए आं
कणी ॥ तीन संघाडे तुम घर मुनिवर, आव्या त्रीजी
वार ॥ ते देखीनें सांसो पडीयो, छए एकण अनुहार
॥ रूडे० ॥ १ ॥ नागशेठ सुलसा घर वधिया, मकरो
शंका लगार ॥ देवकी राणीताहरा जनम्या, नल कु
बेर अनुहार ॥ रूडे० ॥ २ ॥ नही निश्चें सुलसाना
जाया, मानो वात अमारी ॥ उदर तमारे ए आला
व्या, नही कोइ मात अनेरी ॥ रूडे ॥ ३ ॥ किण

डी, ए गृहस्थानो आचार रे लाल ॥ नेम० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगर मध्ये थइ नीकळ्या, साथें बहु परिवार ॥ नेमजिणंद जिहां समोसर्या, चाल्या तिण हिज ठार॥१॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ धजाने पताका हो दीठा राणी देवकी रे, प्रभु अतिशयनी वात॥ विनयतो आदरी हो उत्तम साधुनो रे, एतो जगत विख्यात ॥ १ ॥ सांसो निवारो हो प्रभु नेमजी रे ॥ ए आंकणी ॥ रथने उपरथी हो हेठे उतरी रे, दासीयोनें परिवार ॥ पायनें अणु आवे हो राणी देवकी रे, साचवी अभिगम सार ॥ सांसो० ॥ २ ॥ देइ प्रदक्षिणा हो वांद्या नेमजी रें, पांचे अंग नमाय ॥ दो गुडा दो विंधण हो भूतलें थापीनें रे, मस्तक भूइ लगाय ॥ सांसो० ॥ ३ ॥ उए मुनि देखी हो संशय ऊपनो रे, हुं एम थइ रे उदास ॥ सांसो तो निवारण हो कारण आवीया रे, नेम जिणेसर पास ॥ सांसो० ॥ ४ ॥ गुण अनंता हो प्रभुजी तुम तणा रे, जो होये जीभडी अनेक ॥ राग द्वेष वेहुनें हो स्वामी निवारीया रे, सहु माथे मन एक ॥ सांसो० ॥ ५ ॥ धन्य दिवस हो धन्य वेला घडी रे, भेट्या तर

॥ दोहा ॥

॥ तिण कालें ने तिण समे, नद्दिल पुर छे गाम ॥ नागशेठ ते तिहां वसे, सुलसाघरणी नाम ॥ १ ॥ धणकण कंचणछे घणो, रुद्धितणो नहीं पार ॥ पण मृतवछा ते सही, शोचे हृदयमझार ॥ २ ॥ तव ते छेरु कारणें, हरिणगमेषी देव ॥ आराधे ते एक मने, नित्य नित्य करती सेव ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ केटले कालें सेवा करतां, तूठो देव तिहां आय रे माइ ॥ किण कारण तुं मुजने सेवे, शानी छे तुज चाय रे माइ ॥ १ ॥ पुण्य तणांफल मीठां रे जाणो ॥ ए आंकणी ॥ वलती सुलसा एणी परें बोले, जोडी दोनी हाथ हो देवा ॥ जिण कारण में तुजनें आराध्यो, ते सुणजो तुमे नाथ हो देवा ॥ पुण्य० ॥ २ ॥ धनतो माहरे नरिया नंमारा, तेहनी गरज न कांय हो देवा ॥ मुवा बालक जीवता थाय, ते मुज आपो वाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ वलतो देवता एणीपरें बोले, तुं सांजल मोरी वाय रे माइ ॥ मूवा बालक जीवता होवे, ते मुज शक्ति न कांय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ४ ॥ वलती सुलसा एणीपरें बोले, सांजल

विध पुत्र अमारा प्रभुजी, जोडी दोनु हाथ ॥ ए जा यानुं मरम न जाणुं ते जाखो जगनाथ ॥ रूडे० ॥ ॥ ४ ॥ जीवतसा ताहरी जोजाइ, घोली ते अण वि मासी ॥ अइमतो रुषि आवतो देखी, तेहनी कीधी हासी ॥ रूडे० ॥ ५ ॥ धन जोबनने मदनी माती, बोली ते खोटी रीत ॥ आवोनें अइमंता मुनिवर, म लीने गाइयें गीत ॥ रूडे० ॥ ६ ॥ सुरखडी गीतानी मानी, खबर पडे शी थारी ॥ देवकी गरज जे सातमो थाशे, ते तुज कुलक्षय कारी ॥ रूडे० ॥ ७ ॥ जरा संघनी तु थइ पुत्री, कस तणी भणीयाणी ॥ मारु बोल्युं पाछुं न फरे तें ते वात न जाणी ॥ रूडे० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणीनें काने, कसनें जाइ पुका री ॥ अइमंते रुषियें वचन कह्यां जे, ते तुजनें छु ख कारी ॥ रूडे० ॥ ९ ॥ तेह वयण सुणीनें कसें, की धो एक उपाय ॥ वसुदेव पासे बोलज लीधो, देवकी गर्भ जे थाय ॥ रूडे० ॥ १० ॥ ते बालक तो अमघ र थावे, तव माने वसुदेव ॥ कंसराय तिहां राजी हु उ, सुख जोगवे निस्य मेव ॥ रूडे० ॥ ११ ॥ जे जे गर्भ धरे छे देवकी, तव तिहां ते कंसराय ॥ सात चो की ते उपर मूकी, कपटें सेवे दाय ॥ रूडे० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण कालें ने तिण समे, नद्दिल पुर ठे गाम ॥ नागशेठ ते तिहां वसे, सुलसाघरणी नाम ॥ १ ॥ धणकण कंचणठे घणो, ऋद्धितणो नहीं पार ॥ पण मृतवछा ते सही, शोचे हृदयमझार ॥ २ ॥ तव ते ठेरु कारणें, हरिणगमेषी देव ॥ आराधे ते एक मने, नित्य नित्य करती सेव ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ केटले कालें सेवा करतां, तूठो देव तिहां आय रे माइ ॥ किण कारण तुं मुजने सेवे, शानी ठे तुज चाय रे माइ ॥ १ ॥ पुण्य तणांफल मीठां रे जाणो ॥ ए आंकणी ॥ वलती सुलसा एणी परें बोले, जोडी दोनी हाथ हो देवा ॥ जिण कारण में तुजनें आराध्यो, ते सुणजो तुमे नाथ हो देवा ॥ पुण्य० ॥२॥ धनतो माहरे नरिया नंमारा, तेहनी गरज न कांय हो देवा ॥ मुवा बालक जीवता थाय, ते मुज आपो वाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ वलतो देवता एणीपरें बोले, तुं सांनल मोरी वाय रे माइ ॥ मूवा बालक जीवता होवे, ते मुज शक्ति न कांय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ४ ॥ सुलसा एणीपरें बोले, सांनल

मोरा न्हाय हो देवा ॥ मूवा बालक जो तुजथी न जीवे, तो थो अवर उपाय हो देवा ॥ पुण्य ० ॥ ५ कोथलीमां जे नाणु घाले, तेटलु ते निकलाय रे माइ ॥ पूरव पुण्यना संचजो होवे, तो सवि वातु थाय रे माई ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥ वलती सुलसा पणी परेंबो ले, सांजल तुं चित्त लाय हो देवा ॥ तूंगे पण अण तूठासरखो , माहारी गरज सरी नही कांयहो देवा ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ वलतो देवता पणी परें बोले, तुमें सुणजो चित्त ठाय रे माइ ॥ ततकालना जे बालक जनमे, ते तुजने देउं लाय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ८ ॥ वलती सुलसा पणी परें बोले, सांभल तु सुखदाय हो देवा ॥ हुं शु जाणुं तुं केहना लावे, ते मुजनें न सुहाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ए ॥ कंसराय जे मारण माग्या, देवकी केरा नंद रे माइ ॥ ते तुजने हुं आपी देइश, करी देशां आनंद रे माइ ॥ पुण्य०॥१०॥ सुलसा सुणीने राजी हुइ, देव गयो निज ठायरे माइ अवधिज्ञानें विचारी जोवे, अनुकपामन आण रे माइ ॥ पु० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकीनें सुलसा तणा, गर्भ समकालें कीध ॥

जनम समय जाणी करी, तुज कुमरां तेणें लीध ॥१॥ ते लेइ सुलसानें दीया, कुमर अति सुकुमाल ॥ मृत क बालक सुलसा तणां, ते देव लीये ततकाल ॥२॥ ते लेइ तुज पासें ठव्या, ठए एणी परें जोय ॥ निद्रा मूकी गर्भ पालट्या, ते नवी जाणे कोय ॥ ३ ॥ मृत क बालक कंसें लीया, ते जाणे सहु कोय ॥ ठए कुम र महोटा थया, जणी गणी पंमित होय ॥ ४ ॥ बत्रि श बत्रिश कन्या वस्या, एक लगन सुखकार ॥ पंच विषय सुख जोगवे, दोगंदक अनुहार ॥ ५ ॥ वांणी सुणी वैरागथी, ठयें लियो संयम जार ॥ ए ठये पुत्र ठे ताहरा, तुं शंका म कर लगार ॥ ६ ॥ तव शंका सहु ए टली, वांदी नेम जिणंद ॥ साधु समीप आ व्या सही, आणी घणो आणंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ धन्य धन्य जे मुनिवर ध्यानें रम्या जी ॥ ए देशी ॥

॥ देवकी ते आवी नंदन वांदवा जी, हैयडे उल्ल सि हरषित थाय रे ॥ निज वाठरुआने देखी करी रे, जेम नव प्रसूता गाय रे ॥ देव० ॥१॥ ए आंकणी ॥ देह प्रफूली तिहां अति घणी जी, रोम रोम उल्लसी तन सार रे ॥ त्रटके तो त्रुटी कश कंचुआ तणी रे

स्तने विछूटी दुधां केरी धार रे ॥ देव० ॥ २ ॥ बच्च हैयामांहे तो मावे नहीं रे, जोतां लोचन तृप्ति न थाय रे ॥ तन मन रोमांचित हैयडुं उल्लस्युं रे, नजर न पाछी खेंची जाय रे ॥देव०॥३ ॥ एह सहोदर वीठा सारिखा रे, देवकी तो रही लागी निहाल रे ॥ नेत्र जरियां आंसुडायकी रे, जाणे त्रूटी मोति केरी माल रे ॥ देव०॥४॥ वली नीज अगजनें निरखी करी जी उल्लस्यो अति घणो घणो नेह रे ॥ घर जातां प ग लाहामा वहे नहीं जी, फरी फरीने वांदे तेह रे ॥ देव० ॥ ५ ॥ वांदी जगवंतनें जले जावशुं जी, वीठा वेगनें उजाय रे ॥ अधन्य अपुण्य अकृत चिंतवे रे, मोहवशेंथी दुःख थाय रे ॥ देव० ॥ ६ ॥ घरें आवीने राणी देवकी जी,आर्त्तरौद्र मन ध्याय रे ॥ एह वे अवसरें कृष्णजी आविया रे, माताना वांदवा पाय रे ॥ देव० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णें दूरथी देखीया, आज खरी दिलगीर ॥ पगें लाग्यो जाण्यो नहीं, नयणे झरे तस नीर ॥ १ ॥ कहो माता किणे दुहव्या, केणे लोपी तुज कार ॥ वली वली कृष्णजी वीनवे, पण उत्तर नदीये लगार

॥२॥ हाथजोडी माधव कहे, सांजलजो मोरी माय॥
तुजने वात कह्या विना, गरज न सरशे कांय ॥ ३॥

॥ ढालबारमी ॥

॥रहो रहो राजेसरा केसरीया लाल ॥ ए देशी ॥
हुं तुज आगल सी कहुं कानैया लाल, वितक दुःख
नीवातरे ॥ गिरधारी लाल ॥ दुःखणीनारी छे घ
णी ॥ कानैया लाल ॥ पण दुखणी ताहरी मात रे
॥गि० ॥हुं०॥ ए आंकणी ॥१॥ जनम्या में तुज सारि
खा ॥ का० एकणनालें सातरे ॥ गि०॥ एके हुलरा
व्यो नहीं ॥ का० ॥ गोदलेइ छिण मात रे ॥ गि०॥
हुं ० ॥ २ ॥ ए छये वाध्या सुलसा घरें ॥ का०॥ हु
नजरे आवी देख रे ॥ गि० ॥ वात कही प्रजु नेमजी
॥ का० ॥ जिणमें मीन न मेष रे ॥ गि० ॥ हुं०
॥ ३ ॥ छए तो नाग घरें उछस्या ॥ का० ॥ सुलसानी
पूरी आस रे ॥ गि० ॥ राजरुद्धि छोडी करी ॥ का०
॥ दीक्षा लिधी प्रजु पास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ४ ॥छ
ए तोहवे अलगा रह्या ॥ का० ॥ एक आव्यो तुं म
हारे पास रे ॥ गि० ॥ तुजने में नवी सांचव्यो॥का०
॥ माहरे आव्यो तुं छहे मास रे ॥ गि० ॥५॥
शोल वरस अलगो रह्यो ॥ का० ॥ तुं पण यमुनानें

तीर रे ॥ गि० ॥ नंद यशोदानें घरें ॥ का० ॥ नाम धरावी श्राहीर रे ॥ गि० ॥ छु० ॥ ॥ ६ ॥ शोल वर स ठानो वध्यो ॥ का० ॥ पठी ठघर्ख्यां तहरां जा ग्य रे ॥ गि० ॥ जल यमुनामें जाइने ॥ का० ॥ सें नाथ्यो काली नाग रे ॥ गि० ॥ छु० ॥ ७ ॥ बालपणा नाबोलडा ॥ का० ॥ में एके न पूरी श्राश रे ॥ गि०॥ श्राशा विलूठी हु रही ॥ का० ॥ जारें मुइ नवा न व मास रे ॥ गि० ॥ छुं० ॥ ० ॥ हलक न दीधो हा लरो ॥ का० ॥ पालणीयें पोढाय रे ॥ गि० ॥ हाल रुया गावा तणी ॥ का० ॥ माहरी होंश रही मन मांय रे ॥ गि० ॥ छु० ॥ ए ॥ जगमां मोहटी मोह नी ॥ का० ॥ ठदय थइ माहरे श्राज रे ॥ गि० ॥ ते जीव जाणे माहरो ॥ का० ॥ के जाणे जिनराज रे ॥ गि० ॥ छुं० ॥ १० ॥ श्रांगणीयें न करी घडी ॥ का० ॥ श्रांगलीयें वलगाय रे ॥ गि० ॥ साही सा ही ना मिल्यो ॥ का० ॥ हु आवण केम कराय रे ॥ गि० ॥ छुं ॥ ११ ॥कीधां याव श्रावे नहीं ॥ का०॥ में केइ करम कठोर रे ॥ गि० ॥ जवांतरें कीधां हशे ॥ का० ॥ मेंकिहां पाप श्रघोररे ॥ गि० ॥छु०॥१२॥ के पंखी माला ग्रोडीया ॥ का० ॥ के बाल विठो

हा कीध रे ॥ गि० ॥ जीव जयणा कीधी नहीं ॥ का०॥ के कूडा आलमें दीध रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १३ ॥ में जीवाणी ढोलीयां ॥ का० ॥ के में मारी जू लीख रे ॥ गि० ॥ तडके जीव में शेकीया ॥ का० ॥ बहु जीव कीधो संहार रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १४ ॥ कठिन कर्म ते में कीयां ॥ का० ॥ के तोडी सरोवर पाल रे ॥ गि० ॥ डांणे विंठी चांपीया ॥ का० ॥ न करी में शील संभाल रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १५ ॥ पांति भेदज में कीया ॥ का० ॥ ईर्षा निंदा शराप रे ॥ गि० ॥ का मनी गर्भज गालीया ॥ का० ॥ के में कीधां मोटां पा प रे ॥ गि० ॥ हुं॥ १६ ॥ अणगल नीर में वावर्यां ॥ का० ॥ के में पाड्या अंतराय रे ॥ गि० ॥ के सा धुनें संतापीया ॥ का० ॥ ते फल आव्या धाय रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ १६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माता वयण श्रवणें सुणी, तव ते यादव राय ॥ हाथ जोडी विनयें करी, बोले मधुरी वाय ॥ १ ॥ पूर्व संबंधी देवता, तेडावुं मोरी माय ॥ ताहरा मनो रथ पूरवा, करीस हुं एह उपाय ॥ २ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चंद्राउलानी देशी ॥ वलता कृष्णजी एम कहे हो, माजी म करो चिंता लगार ॥ जेम तुम नंदन थायशे हो,तिम हुं करीश विचार॥ तिम हुं करीश विचार रे माइ, मनमें चिंता म करो कांइ ॥ देजो मुजने वलीय वधाइ, जब जनमे माहारो न्हानो भाइ ॥ जीउं माताजी जीउं॥ १॥ माता चरण नमी करी हो,आव्यो पोषध शाल ॥ हरि णिगमेषी देवता हो, मन समरयो त तकाल ॥ मन समरयो ततकाल मुरारी, अठम भकज चित्तमें धारी॥ देवता आवी कहे तिण वारी,एहवो क ष्ट किउं केम भारी॥ जीउं कानाजी जीउं॥२॥देव कहे कृष्णजी प्रते हो, केम तेडाव्यो मुज ॥ कारज कहो मुजने सही हो, जे करवु होये तुज ॥ जे करवुं होये तुज काम भारी, अमे छउं तुजने उपगारी ॥ आदेश थो अमने सुखकारी, काम कहोने ते शुभसारी ॥ जीउं कानाजी जीउं ॥ ३ ॥ देव प्रत्ये कृष्णजी कहे हो, सुणो तुमे चित्त धार ॥ लघु बांधव माग़ु सही हो, कृपा करो हरिणगमेषी सार॥ कृपा करो हरिण गमेषी सारी, होवे बालक लीलाकारी ॥ सुख पामे ज्यु मात अमारी, जादव कुलमांहे जयजय कारी ॥

जीउदेवाजी जीउं ॥ ४ ॥ देवकी नंदन आठमो हो, जेम थाये तेम जेम॥ इण कारण तुम समरियो हो, उंर नहीं कोइ प्रेम ॥ उंर नहीं कोइ प्रेम हमारे, बालकनी लीला चित्तमें धारे ॥ एह स्त्रीने होये जग आधारे, पुत्रने देखे माता जिवारे ॥ जीउं देवाजी जीउं ॥ ५ ॥ अवधिज्ञानें प्रयुंजीनें हो, देव कहे तेणी वार ॥ देव लोकथी चवी करी हो, देवकी कुखें अवतार ॥ देवकी कुखें अवतारज थाशे, सवा नवमास जेवारें जाशे ॥ पुत्र जनम्याथी सुख पाशे, दरिसण जेहनो सहुने सुहाशे ॥ जीउं कानाजी जीउं ॥ ६ ॥ जरजोबन वय पामशे हो, पुत्र होशे महा महोटो ॥ पण दीक्षा लेशे सही हो, वचन नहीं अम खोटो ॥ वचन अमारो खोटो न थाइ, मातानें आवी दीध वधाइ ॥ माता हीयडे हर्ष न मावे, कृस्नजी मनमां आनंद पावे ॥ जीउं माताजी जीउं ॥ ७ ॥ वलता कृस्नजी एम कहे हो, सांजलजो मोरी माइ ॥ देवरूप कुंवर होशे हो, देजो मुज वधाइ ॥ देजो मुज वधाइरे माता, पुत्र होशे, तुम जगत विख्याता ॥ मनमां राखो तमें सुखशाता, माताजी थाशे मुज लघु ज्राता ॥ जीउं माताजी [illegible] ॥ ८ ॥ वयण सुणी कृस्नजी

हो, उपन्यो मन आणंद ॥ वलती देवकी एम कहे
हो, तुं सो मुजकुलचंद ॥ तुंतो मुजकुलचंद रे जाइ,
माहरी चिंता दूर गमाइ ॥ रुसे संतोषी निज माइ,
पठी सुख विलसे आवासें जाइ॥ जीहो कानाजी जी
ठं ॥ ए ॥ एणे अवसर देवथी चवी हो, देवकी
उदर उपन्न ॥ सिंह सुपन देखी करी हो, मनमां
हुइ सुप्रसन्न ॥ मनमा हुइ सुप्रसन्न सोजागी, जाइ पी
युने पूछवा लागी॥ पीयु कहे सुण तुं वडजागी, पुत्र
होशे तुम गुणनो रागी ॥ जीठं माताजी जीठं॥१०॥
तेह वचन देवकी सुणी हो, सुखमां गमावे काल॥
सवा नवमासें जनमियो हो, कुंअर अति सुकुमाल॥
कुंअर अति सुकुमाल देखीने, नाम दीयो गजसुकु
माल हरपीनें ॥ हरप पामे देवकी निरखीनें, रीझे
सहु कोइ गुण परखीने ॥ जीठं कुंअरजी जोठं॥११॥
हवे माता निज पुत्रशु हो,रमे रमाडे वाल ॥ मनना
मनोरथ पूरवे हो, हाथो हाथ विसाल ॥ हाथो हा
थ विसाल रे थाइ, रमाडे माता हरख नमाइ ॥ हा
लरीढा हूलरीढा गावे, दिन गमावे राजी थावे॥जी
ठं कुंअरजी जीठं ॥ १२ ॥ गजसुकुमाल महोटो थ
यो हो, वहु उछरंगे जणाय ॥ रूप विचक्षण जाणी

नैं हो, शोमलघर मनाय ॥ शोमल धर विवाह मना यो, देवकी माता आणंद पायो ॥ दिन दिन वाधे ते ज सवायो, जातो न जाणे काल गमायो ॥ जीउं कुं अरजी जीउं ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ १७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणें अवसर श्रीनेमजिन, करता उग्र विहार॥ नविक जीव प्रतिबोधता, बेडवता संसार ॥ १ ॥ ए क दिन नेम पधारिया, सोरठ देश उदार ॥ द्वारिका नयरी आविया, नंदन वनह मझार ॥ २ ॥ आज्ञा लेइ वनपालनी, उतरिया तिणे ठार ॥ संयम तपे करि नावता, बहु गुण तणा नंमार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ राणपुरो रलिआमणो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ नेमजिणंद समोसस्या रे ॥ लाल, निर्लोनी नि र्मथ रे ॥ नविकजन ॥ दरशन दीठे तेहनुं रे लाल, नव नवनां दुःख जाय रे॥ न० ॥ १ ॥ नेमजिणंद स मोसस्या रे लाल॥ए आंकणी ॥ सहस अढारें साधु जी रे लाल, साधवी चालीश हजार रे ॥ न० ॥निज आणाने मनावता रे लाल,शासनना शिरदार रे ॥ न० ॥ ने० ॥ २ ॥ चोत्रीश अतिशयें विराजता रे

पांत्रीश वाणी सार रे ॥ भ० शुभ लक्षण शोहाम
णां रे लाल, आठनें एक हजार रे ॥ भ० ॥ ने०॥३॥
प्रभु दर्शन देखी करी रे लाल, हरषे वांध्या पाय रे॥
भ० ॥ वनपालक उलासथो रे लाल, कृष्णपासें ते जा
य रे ॥ भ० ॥ ने० ॥ ४ ॥ वनपालक आवी करी रे
लाल, जोडी दोउं हाथ रे ॥ भ० ॥ कृष्णनरेसरने क
हे रे लाल, सांभलजो नरनाथ रे॥ सुगुणिजन ॥ने०
॥ ५ ॥ वरिसण जेहेनुं इच्छता रे लाल, करता मनमें
चाह रे ॥ भ० ॥ पीयरीया ठकायना रे लाल, श्रीने
मि जिनराय रे॥भ० ॥ ने० ॥ ६ ॥ नाम गोत्र सुणी
रीझता रे लाल, धरता मन अभिलाष रे ॥ भ० ॥
ते श्री नेम पधारिया रे लाल, वनपाले एम दाख रे॥
भ० ॥ ने० ॥ ७ ॥ दीजीयें देव वधामणी रे लाल, पा
मी मन आणंद रे ॥ भ० ॥ तेह वयण सुणी करीरे
लाल, तब हरख्या गोविंद रे ॥ भ० ॥ ने० ॥ ८ ॥
आसनथी तब ऊठीयो रे लाल, सात आठ पग सामो
जाय रे ॥ भ० ॥ प्रभुनें कीधी वंदना रे लाल, पछी वे
ठो निज ठाय रे ॥ भ० ने० ॥ ९ ॥ कृष्णे दीधी
वधामणी रे लाल, बोले मधुरी वाण रे ॥ सुगुणिज
न ॥ सोनैया दीधा सामटा रे लाल, साढी बारे लाख

रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १० ॥ वनपालकनें विदा करी रे ला
ल पछी चाकरनें तेडाय रे ॥ सु० ॥ कौमुदी जैर वजा
डीनें रे लाल, सांजली सहु सज्ज थाय रे ॥ सु० ॥ ने०
॥ ११ ॥ उठो रे लोको सिताबशुं रे लाल, रखे अवे
ला थाय रे ॥ सु० ॥ एक घडी दर्शन विना रे लाल,
क्षण लाखीणो जाय रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १२ ॥ कोइ
कहे दरिसण देखशुं रे लाल, कोइ कहे सुणशुं वाण
रे ॥ सु० ॥ कोइ कहे संशय छेदश्यां रे लाल, कोइ
कुतूहल जाण रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १३ ॥ स० ॥ १एद ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम विविध परें चिंतवी, बहु नारीना वृंद ॥
स्नान करी शिणगारीया, मनमां धरी आणंद ॥ १ ॥
नगर मध्यें थइ निकल्या, चढी हय रथ गयंद ॥ पंच
अजिगम साचवी, वांद्या नेमजिणंद ॥ २ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ श्रीसुपास जिनराज, तुं त्रिजुवन सिरताज ॥ एदेशी ॥
॥ सोरठ देश मफार, द्वारिका नगरी सार, आ
ज हो वसुदेव रे राजा राज्य करे तिहां जी ॥ १ ॥
जाइ दशे दसार, बलजद्र कान कुमार, आज हो दीपे
रे सोहागण राणी देवकी जी ॥ २ ॥ तसु पुत्र

रसाल, नामे गजसुकुमाल,आज हो मात पितानें वा
ल्हो कुंवर प्राणथी जी ॥३॥ सुणी आव्या नेम जिणंद,
साथें सुरनर वृंद, आज हो सेव्यां रे सुखदायक स्वा
मी समोसस्या जी ॥ ४ ॥ जादव बहु परिवार, मन
धरी हर्ष अपार, आज हो कृष्णादिक सहु उछरंगें
जस्या जी ॥ ५ ॥ करी बहु अति माम, वंदन नेमी
स्वाम, आज हो गज सुकुमाल ते सार्थे लेइनें जी॥६॥
विधिशुं वांदी जिनपाय, तव ते बेनुं जाय, आज हो
उचित थानक तिहां आवी बेठा सही जी ॥ ७ ॥
तव ते जिनहित आण, जापे मधुरी वाण, आज हो
धर्म कथा कही बहु विस्तारशुं जी ॥ ८ ॥ देशना सु
णी तेणी वार, बूझ्यां सहु नर नार, आज हो वांदी
रे व्रत यहीनें निज निज घर गया जी ॥ ए ॥ वाणी
सुणी कृष्णाराय, वांदी जिनवर पाय, आज हो जेम
आव्या तेम निज नगरें गया जी ॥ १० ॥ स० ॥ २०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, बूझ्यो गजसुकुमाल
॥ घरें आवी माता जणी, बोले वचन रसाल ॥ १ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया ॥ ए दे

शी ॥ वाणी सुणी जिनराज तणी कानें पडी ॥ रे मा
डी अंतर हैयडानी आंख माहेरी उघडी ॥ वलती मा
ता बोले हुं वारी ताहेरी ॥ रे जाया ॥ सुणी ए प्रभुजी
नी वाणि पुण्याइ पूरी ताहरी ॥ १ ॥ कही श्री जिन
राज ते साची में सईही ॥ रे माइ ॥ लागी मीठी जेम
साकर दूधनें दही ॥ दीजें अनुमति मुज संयम लेशुं
सही, न करो आज्ञानी ढील पुत्रें ऐसी कही ॥ २ ॥
आज सभामां जैनधर्म वखाण्यो जिनवरें, मुजने रु
च्यो छे तेह छेह दुःखनो करे ॥ ए संसार असार
के छार समो लख्यो, जन्म मरण दुःखकरण जल
ण जालें धख्यो ॥ ३ ॥ श्री जिनमारग छारण कार
ण उलख्यो, ए विना अवर न कोइ सकल शास्त्रें ल
ख्यो ॥ कारागार समान आगार विहार छे, तजवो को
इकवार आखर पहेलां पछे ॥ ४ ॥ एक इहां अणगा
र पणुं सुखकार छे, माता द्यो अनुमति वात न को
करवी अछे ॥ नंदन वचन सुणी एम जननी जल फ
ली, हित वाणी दुःख आणी भाखे थइ गलगली
॥ ५ ॥ वाणी अपूरव वात पुत्रनी सांभली, घणुं मू
छगित थाय ध्रसकी धरणी ढली ॥ भांगी हाथांरी चू
ड माथें केश वीखस्या, वली हुउं उछणो दूर ध्रस

की घरणी पख्या ॥ ६ ॥ मोह तणे वश आय सूरत जाखी थइ, शीतल वाय सचेत थइ बेठी जइ ॥ कुअरनां मुख साहमु रहीनें जोवती, मोह तणे वश बोले माता रोवती ॥ ७ ॥ तुज मुख माहेंथी वहमाणी ए केम पडी, माहरे छे तुजऊपर आशा अति वडी ॥ हु मुखथी तुज नाम न मेलु अब घडी, रे जाया तुं जीवन अधा लाकडी ॥ ८ ॥ चारित्र छे वत्स डुक्कर असीधारा सही, सुरगिरितोलवो बांह के तरवो जलवहि ॥ उपाडी लोह भार के गिरि चडवो वही, तुं सुवर सुकुमाल पाले केम थिर रही ॥ ए ॥ दोष बेंतालीस टाली करवी गोचरी, भमर्हुं भमरा जेम चिंतामाने लोचरी ॥ कनक कचोला छोड लेणी वत्स काचली, जाव जीव खगें वाट न जोवी पाछली ॥ १० ॥ जे इह लोके आसंस के परलोकें परमुहा, कायरनें कुपुरुपनें ए सविडुल्लहा ॥ धीर वीर गम्भीरनें शी डुक्कर कहा, मान करी ए वात वीछावो शु मुहा ॥ ११ ॥ परीसह केरी फोज आवी जब लागशे, संयम नगर सचाव कोट तव भांगशे ॥ तहारे वह तुज जोर कांइ नहीं फावशे, पुत्र अमारु ताम वचन मन आवशे ॥ १२ ॥ कोटें शुभ मनोरथ सुभट वेसाडशु,

सत्य रूप पडकोट तेमांहे समारशुं ॥ समता नालें ज्ञान गोला नरी मारशुं, परिसह केरी फोज आवंती वारशुं ॥ १३ ॥ राग द्वेष दोय चोर जोरावर लूटशे, पुण्य खजानो माल अमूलक लूंटशे ॥ कात्युं पीज्युं वत्स कपासते थायशे, मन केरी मनमांहे के होंस समायशे ॥ १४ ॥ पहेरी उत्साह सन्नाह पराक्रम धनुष ग्रही, थिरता पणछ वैराग के बाण पुंखी करी ॥ साहमांपहेली मुठें हणशुं ते सही, वीरजननी तुज नाम कहावीश ते वही ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ २२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलती माता इम कहे, जोगवो जोग संसार॥
जुक्त जोगी हुआ पछी, लेजो संयम जार ॥ १ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मांकण मूछालो ॥ ए देशी ॥ सांजल रे मोरी माता, एतो विषयारस डुःखदाता हे ॥ निज मन समजाय लो ॥ मन समजाय लो मोरी माता, एतो जनम मरण डुःख दाता हे ॥ निज० ॥ १ ॥ जेणे न कियो धर्म लगार, तेतो पहोता नरक मझार हे ॥ निज० ॥ जे जे कीधां एणे संसार, ते तेहनी आवे लार हे ॥ निज० ॥ २ ॥ इण जव पीडा पावे, तेतो मूल कोय न मि

टावे हे ॥ नि० ॥ कुटुम मिली सहु आवे, पण दुःख कोय न वेहेंचावे हे ॥ निज० ॥ ३ ॥ तो परजव कुण आसी, जीव कीधा पाप पुण्य वासी हे ॥ नी० ॥ ते एकलडो दुख पासी, बीजो आडो कोइ न थासी हे ॥ निज० ॥ ४ ॥ इण जवथी हु डरियो, लख चो राशीमां फरियो हे ॥ नि० ॥ बाल मरणे हुं मरियो, वार अनंती अवतरियो हे ॥ निज० ॥ ५ ॥ रमणी रंग पतग, नही पासे प्रीत अजंग हे ॥ नि० ॥ रमणी करावे बहु जग, तेहशु कुण करे संग हे ॥ निज० ॥ ६ ॥ एमां जे प्राणी माच्या, ते तो मूरख कहीये जाचा हे ॥ नि० ॥ इण संसाररो जगडो कूडो, मेंतो जिन मारग पायो रूडो हे ॥ निज० ॥ ७ ॥ हुं राचु न ही एमां ठंडो, जेम पांजरामांहे सूडो हे ॥ निज० ॥ ८ ॥ माताजी अनुमति दीजें, घडी एकनी ढील न कीजे हे ॥ नि० ॥ माताजी मया करीजें, जेम मुज कारज सीजे हे ॥ निज० ॥ ए ॥ श्री नेमीसर पाश, हुंतो पूरीश मननी आश हे ॥ नि० ॥ मायें जाण्यो कुंअर उदास, करे बली उत्तर तास हे ॥ नि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनादिक बहु मंत्रवी, [illegible]

॥ ते विस्तार तो छे घणो, अंतगड मांहे प्रसिद्ध ॥ १ ॥ वलती कहे राणी देवकी, रें पुत्र तुं लघुवेश ॥ संयम डुक्कर छे सही, तेतुं केम पालेस ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ लाछल दे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ वली एम कहे कुमार, आणी प्रेम अपार, आजहो अमीयरे समाणी वाणी सांजली जी ॥ १ ॥ उपनो मन वैराग, संयम उपर राग, आजहो धन सज्जन सहु दीसे कारिमो जी ॥ २ ॥ में जाण्यो सर्व असार, एकज धर्म आधार, आजहो बेकर जोडी मातानें एम वीनवे जी ॥ ३ ॥ माता पिताना पाय, प्रणमे सुत सुखदाय, आजहो अनुमति दीजें माता मुज जणी जी ॥ ४ ॥ सुण वत्सतुं लघुवेश हुं केम देउं उपदेश, आजहो सुत पाखे मावडी एकली किम रहे जी ॥ ५ ॥ वचन अपूरव एह, श्रवणे सुण्या गहगेह, आजहो जल जर नयणे बोले राणी देवकी जी ॥ ६ ॥ ते पुत्र न पाले दिख्क, पालवी सुगुरु शीख, आज हो घर घरनी जिक्षाजमंता दोहिली जी ॥ ७ ॥ जावजीव निरधार, चालवुं खंमा धार, आजहो बावीश परिसह बलवंत जीतवा जी ॥ ८ ॥ शाल दाल घृत गोल, कोण देशे

टावे हे ॥ नि० ॥ कुटुंब मिली सहु आवे, पण दुःख कोय न वेहेंचावे हे ॥ निज० ॥ ३ ॥ तो परजव कुण आसी, जीव कीधां पाप पुण्य थासी हे ॥ नी० ॥ ते एकलडो दुख पासी, बीजो आडो कोइ न थासी हे ॥ निज० ॥ ४ ॥ इण जवथी हु डरियो, लख चो राशीमां फरियो हे ॥ नि० ॥ बाल मरणे हुं मरियो, वार अनंती अवतरियो हे ॥ निज० ॥ ५ ॥ रमणी रंग पतग, नही पाले प्रीत अजंग हे ॥ नि० ॥ रमणी करावे बहु जग, तेहशु कुण करे संग हे ॥ निज० ॥ ६ ॥ एमां जे प्राणी माच्या, ते तो मूरख कहीये जाचा हे ॥ नि० ॥ इण संसाररो जगडो कूडो, मेंतो जिन मारग पायो रूडो हे ॥ निज० ॥ ७ ॥ हुं रात्तु न हीं एमां ठंडो, जेम पांजरामांहे सूडो हे ॥ निज० ॥ ८ ॥ माताजी अनुमति दीजें, घडी एकनी ढील न कीजे हे ॥ नि० ॥ माताजी मया करीजें, जेम मुज कारज सीजे हे ॥ निज० ॥ ए ॥ श्री नेमीसर पाश, हुतो पूरीश मननी आश हे ॥ नि० ॥ मायें जा ण्यो कुंअर उवास, करे वली उत्तर तास हे ॥ नि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनादिक बहु मंत्रवी, उत्तर पडुत्तर बहु कीध

रहे जी ॥ १९ ॥ तुं मुज जीवन प्राण, कीकी काजल समान, आज हो उंबर फूल परें सुणतां दोहिलो जी ॥ २० ॥ इष्ट कंत पीयु मोय, तुं मुज विसामो होय, आज हो मुज मन वाल्हो अति घणो तुं सही जी ॥ २१ ॥ तुं पुत्र नाहनो बाल, केलि गरज सुकुमाल आज हो जोग योग्य छे अवस्था ताहरी जी ॥ २२ ॥ रूप कला गुण पात्र, निरुपम निरमल गात्र, आज हो सोमलरी बेटी परणो पदमणी जी ॥ २३ ॥ मीठी प्रभु अमृत वाण, में कीधी मातप्रमाण, आज हो मायाशुं मन मोरो उतरी गयो जी ॥ २४ ॥ जाण्यो में अथिर संसार, लेशुं संयम भार, आज हो मात मया करी अनुमति मुजने आपजो जी ॥ २५ ॥ पछें लेजो संयम भार, आदरजो आचार, आज हो कन्या विचक्षण परणो लाडकी जी ॥ २६ ॥ पुत्र मुज मन हुंति चाल, जाणुं रमाडीश बाल, आज हो तुज उपर मुज आशा छे घणी जी ॥ २७ ॥ मात पितानें भाय, घणुंक मोह लपटाय, आज हो कह्युं रे न माने कुंअरसुलक्षणो जी॥२८॥ घणुं रे थइ दिलगीर, नयणे विछूटे नीर, आज हो विलाप करे छे वसुदेव देवकी जी ॥ २९ ॥ हलधर

तबोल, आजहो केशरीये वाघे रे कस कोण बांधशे जी ॥ ए ॥ नित्य नवा वस्त्र सिणगार, करवा मनोहर आहार, आजहो अरस निरस आहारनें मेलां काप दां जी० ॥ १० ॥ सहेज बिछाइ फूल सार, तोहे ना वे निंद लगार, आज हो माज संथारे सुखुं विन विन वोहिस्यु जी ॥ ११ ॥ पीवुं उनु नीर, सेहेवु दुःख शरीर, आज हो भुजायें करीनें सागर तरवो वोहिलो जी ॥ १२ ॥ वावल वेंमी वाथ, लोह चणा लेइ हाथ, आज हो मीण तणे रे दांते चावण वोहिलो जी ॥ १३ ॥ बलतो कुमर अबीह, वचन कहे जेम सिंह, आज हो कायरनुं हीयडुं रे कंपे अति घणु जी ॥ १४ ॥ हुंतो सिंह जेम शूर, पालु संयम पूर, आज हो चारित्र पाली शिवरमणी वरू जी ॥ १५ ॥ इंद्र च द नरिंद, वावण देव मुणिंद, आज हो अथिर संसारमें सबल केइ आवछे जी ॥ १६ ॥ तीर्थंकर गणधार, वासुदेव चक्री सार, आज हो एहवा थीरपणा थीर कोइ नवि रह्या जी ॥ १७ ॥ तो अवरां कुण वात एम अवधारो मात, आज हो मोह निवारण वाटं माडी मुज तणो जी ॥ १८ ॥ तो शुं अत्यत स्नेह, एक जीव दोय देह, आज हो तुज विछुणी माता केम

रहे जी ॥ १९ ॥ तुं मुज जीवन प्राण, कीकी काज ल समान, आज हो उंबर फूल परें सुणतां दोहिलो जी ॥ २० ॥ इष्ट कंत पीयु मोय, तुं मुज विसामो होय, आज हो मुज मन वाल्हो अति घणो तुं सही जी ॥ २१ ॥ तुं पुत्र नाह्नो बाल, केलि गरन सुकुमाल आज हो नोग योग्य छे अवस्था ताहरी जी ॥ २२ ॥ रूप कला गुण पात्र, निरुपम निरमल गात्र, आज हो सोमलरी बेटी परणो पदमणी जी ॥ २३ ॥ मीठी प्रनु अमृत वाण, में कीधी मात प्रमाण, आज हो मायाशुं मन मोरो उतरी गयो जी ॥ २४ ॥ जाण्यो में अथिर संसार, लेशुं संयम नार, आज हो मात मया करी अनुमति मुजने आपजो जी ॥ २५ ॥ पछें लेजो संयम नार, आदरजो आचार, आज हो कन्या विचक्षण परणो लाडकी जी ॥ २६ ॥ पुत्र मुज मन हुंति चाल, जाणुं रमाडीश बाल, आज हो तुज उपर मुज आशा छे घणी जी ॥ २७ ॥ मात पितानें नाय, घणुंक मोह लपटाय, आज हो कह्युं रे न माने कुंअर सुलक्षणो जी॥२८॥ घणुं रे थइ दिलगीर, नयणे विछूटे नीर, आज हो विलाप करे छे वसुदेव देवकी जी ॥ २९ ॥ हलधर

माधव जाय, ततक्षण विगर बुलाय, आज हो मधुर वचनशु माधव एम कहे जी ॥ ३० ॥ टालु जाइ ता हरु दु ख, विलसो मनोहर सुख, आज हो वायवि ना दु ख निवारु ताहारु जी ॥ ३१ ॥ जनम मरण वारो मोय, सुख मानी रहु तोय, आज हो दु ख ह रण सुख करण तुमें बांधवा जी ॥ ३२ ॥ देव दाण व इन्द्रराय, ए केणेंही न मिटीय, आज हो कर्म क्षय थकी सद्रुप टखे जी ॥ ३३ ॥ क्षय करवा निज कर्म, लेशु संयम धर्म, आज हो अनुमति दीजें बंधव मुज जणी जी ॥ ३४ ॥ कृष्ण कहे एम वाय, सुण सुण मोरा जाय, आज हो राजे वेसाडु द्वारामतिनु ए स ही जी ॥३५॥ वरतावुं ताहरी आण, करु हु हुकम प्रमाण, आज हो आणा वरतावु सघले ताहरी जी ॥ ३६ ॥ मौन रह्या तेणी वार, कृष्ण हरख्या निर धार, आज हो सज्जन परिवार सहु राजी हुवा जी ॥ ३७ ॥ करवा ते कृष्ण काज, सेइ वेसाड्या राज, आज हो हुकम चलावे गज सुकुमालनो जी ॥ ३८॥ कृष्ण कहे एम वाण, राय हुकम प्रमाण, आज हो हाथ जोडीने केशव एम कहे जी ॥ ३९ ॥ वरतावो माहरी आण, करो हुकम परिमाण, आज हो दीक्षा

महोत्सवरी अब तइआरी करो जी ॥ ४० ॥ खजांना
र खोलाय, तीन लाख नाणुं कढाय, आज हो वेगे
रे मंगावो रजोहरण पातरा जी ॥ ४१ ॥ नारायणें
तेमहिज कीध, आज्ञा सेवकनें दीध, आज हो सा
मग्री सरवे संयमनी सज्ज करे जी ॥ ४२ ॥ कुंअरनें
निश्चल जाण, माता अमृत वाण, आज हो आशीष
दीये छे राणी देवकी जी ॥ ४३ ॥ धन्य दाहाडो मा
हरो आज, सफल फल्यां मुज काज, आज हो चरण
ना शिष्य थाशुं श्रीनेमनाथनां जी ॥ ४४ ॥ वाजांने
नीशाण, बेसारी शिबिका आण, आज हो आणीनें
सोंप्या छे श्रीजगनाथनें जी ॥ ४५ ॥ रहेती एहनें
तंत, हुंतो इष्टनें कंत, आज हो तुमनें रे सोंपुं छुं प्रभु
जी शिष्य नणी जी ॥ ४६ ॥ प्रभुजीयें दीक्षा दीध, कुंअर
नुं कारज सीध, आज हो माता पिता रे कुंअर प्रत्यें क
हे जी ॥ ४७ ॥ धरजो मन शुभध्यान, दिन दिन चडते
वान, आज हो सिंह तणी परें संयम पालजो जी
॥ ४८ ॥ तव ते देवकी नार, कहे प्रभुने वारवार, आ
ज हो तप करतां एहने तमें वारजो जी ॥ ४९ ॥ ए
णे ए भवह मफार, दुःख नवि दीठुं लगार, आज
हो देव तणा परें सुखपणे भोगव्यां जी ॥ ५० ॥ भु

ध्यां तरुस्थानी चाह, करजो एहनी संभाल, आज हो जाळवजो एहनें रूडीपरें घणु जी ॥५१॥ माहरी हती पोथीनें आय, ते थोथी तुम हाथ, आज हो जेम जाणो तेम हवे तमे राखजो जी ॥ ५२ ॥ स० ॥२०९॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही पाठा वल्या, देवकीनें परिवार ॥ पछी कृष्ण पण वांदीने, पहोता नगर मझार ॥ १ ॥ प्रभुजीयें दीक्षा देइ, शीखव्यो सर्व आचार ॥ प्रभु पासें विनयें करी, जण्यो अग इग्यार ॥ २ ॥ इर्या स मिति शोभता, थया गज अणगार ॥ छकाय तणी रक्षा करे, पाले पंचाचार ॥ ३ ॥

॥ ढाल छंगणीशमी ॥

॥ सोरठ देश सोहामणो ॥ ए देशी ॥

॥ दीक्षा दिन प्रभु वांदीने, मशाणे संध्याकाल रे ॥ पडिमा ठाइ काउस्सग्ग रह्यां तिहां सोमल आव्यो चाल रे ॥ सोभागी शुक्ल ध्यानें चढ्यो ॥ ए आंकणी ॥१॥ मुनि देखी वेर उल्लस्यो, थयो कोपांतर काल रे॥ विण अवगुण मुज पुत्रीनो, जनम खोयो तें आल रे ॥सो०॥२॥ एम बहु रीसें परजली, बांधी माटीनी पा ल रे ॥ केसु वरणा माथे धर्या, धगधगता खेर अगा

र रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ तापें तुंबडी खदखदे, फडफड फूटे हाड रे ॥ चाम चडचडे नसा तड तडे, लोही वहे निह्वाड रे ॥ सो० ॥ ४ ॥ धीर वीर मुनिध्यानें चड्या, करे निज धर्म संजाल रे ॥ जे दाजे ते माहरुं नहीं, पण नाण्यो मने करी काल रे ॥ सो० ॥ ५ ॥ अनादि कालनो जीवडो, कस्यो प्रवृतिनो संग रे॥ पुजल रागें रीजीउ, नव नवें ते रंग रे ॥ सो० ॥ ६॥ कुमति सेनानें वश पड्यो, जीव रड्यो तुं संसार रे॥ अनादि कालनो जूली गयो, हवे करो निज विचार रे ॥ सो० ॥ ७ ॥ सुमति निवृत्ति अंगी करी, टाली अनादि उपाधि रे ॥ क्षमा नीरे आतम सिंचीयो, आणी परम समाधी रे ॥ सो० ॥ ८ ॥ अपूरव करण शुक्लध्याननो, त्रीजो पायो क्षपक श्रेण रे ॥ परम शुक्ल लेश्या वरी, तो शुं बालें अग्नि तृण क्षीण रे ॥सो०॥ ए ॥ घाति कर्म खपावियां, टाल्यो कर्म विकार रे॥ करम टाली केवल लही, पहोता मुक्ति मजार रे ॥ सो० ॥ १० ॥ केवल महोत्सव सुरें कस्यो, पछी पूछ्यो देवकी मोरार रे ॥ सुर वृत्तांत सवे कह्यो, ते सूत्रें छे विस्तार रे ॥ सो० ॥ ११ ॥ सात सहोदर मुक्ति गया, वांदी नेम जिणंद रे ॥ नित्य एहवा

मुनि संभारियें, लहियें परमानंद रे॥ सो० ॥१२॥ धरम दलाली कृष्णें करी, खरच्यु द्रव्य अपार रे॥ चार तीर्थनें साह्य करी वली वधामणी दीधी सार रे ॥ सो० ॥ १३ ॥ तिणे तीर्थंकर गोत्र बांधीयुं, सु णजो सहु नर नार रे ॥ त्रीजीथी निकली अमम ना में, जिन होशे जग आधार रे ॥ सो० ॥ १४ ॥ कर म खपावी केवल लही, पहोंचशे मुक्ति मझार रे ॥ एहवु जाणी जे धर्म आदरे, ते लेशे भवजल पार रे ॥ सो० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०७ ॥ समाप्त ॥

इती श्रीदेवकीजीना षट्पुत्रनो रास समाप्त ॥

॥ अथ मूर्खशतक प्रारम्भ ॥

मूर्ख जनमां आ नीचे लखेलां एकसो अपलक्षण मां हेला घणांक अपलक्षण दीठामां आवे छे, तेनां नाम

१ उद्यम करवा समर्थ छतां उद्यम न करे.
२ विद्वानोनी सभामां पोतानी प्रशंसा करे.
३ वेश्याना वचन उपर विश्वास राखे
४ पांखंडी कृत आडंबर देखी प्रतीत आणे
५ जूगार रमी धन पेदा करवानी आशा राखे

६ कर्षणथी धन पेदा करवानो संदेहथी आणे.
७ निर्बुद्धि छतां म्होटा कार्य करवानी वांछा करे.
८ वणिक छतां एकांतें कोइ छंदमां रसिक होय.
९ लहेणुं करी अणखपती वस्तु वेचाती लीये.
१० पोतें वृद्ध छतां दश वर्षनी कन्या परणे.
११ अण सांभल्या ग्रंथोनुं व्याख्यान करे.
१२ जगत्मां जे प्रत्यक्ष वस्तु होय तेने छानी ढांके.
१३ पोतानी स्त्री चपल छतां ईर्ष्या राखे.
१४ समर्थ वैरी छतां तेनाथी शंकाय नहीं.
१५ धन आपीने पछी पश्चात्ताप करे.
१६ म्होटा कवीश्वरनी साथें विवाद करे.
१७ अप्रस्तावें परवडुं बोले.
१८ बोलवाने प्रस्तावें मौन धारण करे.
१९ लाभ थवाने अवसरें कलह करवा बेसे.
२० भोजन वेलायें रोष करें.
२१ घणो लाभ थतो देखी धनने विखेरी मूके.
२२ ज्यां सामान्य भाषा बोलवी जोइयें, तिहां कठिण संस्कृत जेवी भाषा बोले.
२३ पुत्राधीन पणायें अने धने करी दयामणो थाय.
२४ स्त्रीना पीयर पक्षवाला पासें प्रार्थना करे.

२५ स्त्रीने हास्यें रीसाणो थको विवाह करे
२६ पुत्र ऊपर रीशाणो थको तेने बंधनमां घाले
२७ कामुकनी स्पर्द्धायेंकरी दातार थाय
२८ देणदारनी प्रशंसाथी अहंकार करे
२९ बुद्धिना गर्वेकरीने हितनां वचन न सांजले
३० कुलने मदें करी कोइनी चाकरी न करे.
३१ कामीथको घणु दुर्लभ एवुं द्रव्य वीये
३२ द्रव्य वगेरे उधारे देइने पाछुं मागे नही
३३ लोजी राजानी पासेंथी लाजनी वांछा करे
३४ दुष्ट राजा छतां तेनी पासें न्यायनी इछा करे
३५ आप मतलबी सायें स्नेहनी आशा राखे
३६ दुष्ट मित्र छते पोतें निर्जयपणें रहे
३७ कृतघ्ननो उपकार करवा माटे प्रयास करे.
३८ नीरसमाणसने अर्थे पोताना गुण वेचे
३९ पोताने समाधि छतां वैद्य औषध करे
४० पोतें रोगी थको कुपथ्य करवा जाय
४१ लोजें करी पोताना स्वजननो त्याग करे
४२ वचनेकरी पोताना मित्रने दुहवे
४३ लाजनी वेलायें आलस करे.
४४ ऋद्धिवंत छतां प्रिय सायें कलह करे.

४५ ज्योतिषि निमित्तियाना कहेवाथी राज्यने वांछे.
४६ मूर्ख साथें एकांत करवामां आदर करे.
४७ दुर्बलजनने पीडवा शूरवीर थाय.
४८ प्रत्यक्ष दोषवाली स्त्री साथें राचे रतिसुख करे.
४९ गुणनो अभ्यास करवामां क्षणेक रागी न होय.
५० द्रव्यादि संचय करीने पारके हाथे व्यय करावे.
५१ राजानी प्रशंसा करवा मौन धारण करे.
५२ लोकोनी आगल राजादिकनी निंदा करे.
५३ दुःख पडे थके दयामणो थाय.
५४ सुखमां वर्त्ततो छतो दुःख दारिद्रने वीसारी मूके.
५५ अल्प वस्तुनुं रक्षण करवामाटे घणो व्यय करे.
५६ वस्तुनी परीक्षा करवाने अर्थें विष खाय.
५७ धातुवादें करी कमाववा माटे धननो नाश करे.
५८ क्षयरोगी थको रसायणनो रसीयो थाय.
५९ पोताना मुखें पोतानी महोटाइ करतो फरे.
६० रीशें करी आपघात करवानी इछा करे.
६१ निरर्थक फेरा खाय व्यर्थ भमतो फरे.
६२ तीर वागे तो पण उभो उभो युद्ध जोया करे.
६३ शक्तिमान साथें विरोध करी निश्चिंत सूवे.
६४ स्वल्प धन होय तोपण घणो आडंबर करे.

६५ दु पमित हुं एम चिंतवतो वाचाल थाय
६६ हुं सुभट छु एवा गर्वथी निर्भय थको रहे
६७ अतिस्तुतियें वखाण्यो थको उचाट आणे
६८ थडवाडना वचन बोलतो मर्म प्रकाशे
६९ जे दारीद्री निर्धन होय तेना हाथमां धन आपे
७० जे कार्य सिद्ध थवानो संदेह होय तेवा कार्यम धनव्यय करे.
७१ धननो व्यय करी नामु करती वेलायें लेखु जो तां संदेह आणे जे अटलु द्रव्य केम खरचाइ गयुं!
७२ जे दैव करशे ते थाशे एवी आशा करी वेशी रहे परंतु पुरुषार्थ कांइपण करे नहिं
७३ दरीद्री छतो जणजणनी पासें वेसे वाचाल थाय
७४ वीजायें वार्यो थको जमवुं वीसारी मूके
७५ गुणहीण छतो आपणा कुलने प्रशंसे
७६ सभामां वेगो थको अरूचयें ऊठी जाय
७७ दूत थइ जाय अने संदेशो वीसारी मूके
७८ उपरसनो व्याधि होयने चोरी करवा चाले प्रवर्त्ते
७९ कीर्त्तिने अर्थे महोटो भोजननो वरो करे.
८० पोतानी प्रशंसा माटे बोहु जमे भूख सहे
८१ स्त्रीना भयथी याचकने आवता वारे.

७२ कृपणताने लीधे अपयश उपार्जन करे.

७३ प्रत्यक्ष दोषवाला माणसनां वखाण करे.

७४ साद घोघरो छतां गीत गावा बेसे.

७५ थोडुं जमे अने जमवानुं अतिरसयुक्त करे.

७६ चाटुक वचन बोलतो साहामानुं निराकरण करे.

७७ वेश्यानो जे यार तेनी साथें कलह करे.

७८ बे जण मंत्र आलोच करतां होय तिहां तेमनी पासें जइ वचमां उन्नो रहे.

७९ राजानो प्रसाद पामे छते जाणे जे ए प्रसाद म्हारे निरंतर निश्चें रहेशे.

८० अन्याय करीने महोटाइनी वांछा करे.

८१ धन हीण छतो जेजे कार्य धनथी थता होय तेवा तेवा कार्यों करवानी वांछा करे.

८२ लोकोनी आगल पोतानुं तथा पारकुं गुह्य प्रकाश करतो फरे.

८३ कीर्त्तिने अर्थें अजाण्या माणसनो हामी थाय.

८४ जे हितशिक्षा करे, तेनी ऊपर मत्सर आणे.

८५ सर्व कोइनो विश्वास करे एटले जेटलुं धोलुं तेटलुं सर्वें दूधज छे, एम जाणे.

८६ लोक व्यवहार लोकाचारनी वात न जाणे.

९७ पोतें जीखारी छतां छन्तु जमवा बांठे
९८ पोतें गुरु होय, पूज्य होय, मह्होटो होय, तेम छता
क्रियामां शिथिल थाय, परंतु सक्रियपणे न चाले
९९ कुकर्म करी निर्लज्ज थाय, लोक लाज न करे.
१०० पोतेंज वात करे अने पोतेंज हसे
ए उपर लखेला लक्षणें करी जे युक्त होय ते मूर्ख
जाणवो ए मूर्खना सो लक्षण कह्या
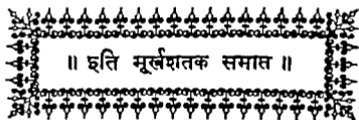
९७ पोतें जीखारी छतां छन्दु जमवा वाठे
९८ पोतें गुरु होय,पूज्य होय,महोटो होय, तेम छतां
क्रियामां शिथिल थाय, परंतु सक्रियपणे न थाबे
९९ कुकर्म करी निर्लज्ज थाय, लोक लाज न करे.
१०० पोतेंज वात करे अने पोतेंज हसे
ए उपर लखेला लक्षणें करी जे युक्त होय ते मूर्ख
जाणवो ए मूर्खनां सो लक्षण कह्या
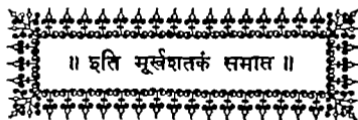
॥ इति मूर्खशतकं समाप्त ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीधर्मबुद्धि अने पापबुद्धिनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन सरस्वती संतने, प्रणमुं तजी प्रमाद ॥ पाप बुद्धि धर्मबुद्धिनो, सुविधें कहुं संवाद ॥ १ ॥ हीर रतन सूरि सांनिध्यें, सद्गुरुने सुपसाय ॥ रास रचुं र लियामणो, जेहथी पातक जाय ॥ २ ॥ श्रोताजन सु णजो सहु, विकथा वर्जी वात ॥ तन मन वाचा नय णनें, थिर करी तजी व्याघात ॥ ३ ॥ वक्ता वचना मृत जरि, श्रोता ऊखर खेत ॥ बीज वाव्युं जाये बली, तिहां केम उपजे हेत ॥ ४ ॥ श्रोता जीहां रस वे लडी, वक्ता वाणी नीर ॥ सुमतिनीके करी सींचतां, थाये गहेर गंभीर ॥ ५ ॥ रसीया सहुको रासना, र सनी न लहे रीत ॥ नवरसना जे अति निपुण, पामे ते सुणि प्रीत ॥ ६ ॥ श्रोता वक्ता बे जिहां, सरखा होय सुजाण ॥ कवि चतुराई तो लहे, प्रगटे रसनी खाण ॥ ७ ॥ धर्मथकी जस विस्तरे, धर्में लहे शिव श्रेणि ॥ धर्में होय सुख संपदा, धर्म करो सहु तेणी ॥

॥०॥ सुरतरु सुरमणि सुरलता, जे सुरधेनु समान
साधो ते सूधे मनें, धर्म सदा धीमान ॥ ए ॥
॥ ढाल पहेली ॥ आछेलालनी देशी ॥
॥ श्रीपुरनगर सुधान, जितारि राजान, आ
लाल मंत्री तेहने मति सागरु ॥ महोटा द्विज सम
न, नही कोइ तेह समान ॥ आ० ॥ उत्तमगुणनो श
गरु ॥ १ ॥ एकदिन जांखे राय, पापतणा महिमा
॥ आ० ॥ राजाधिक ऋद्धि पामीयें ॥ मंत्री कहे मार
राज, ए शुं बोल्या आज, आ० ॥ विपरीत मति ए घ
मीयें ॥ २ ॥ वाहालाशु होय वियोग, शत्रुना साथे
योग, आ० ॥ सुख न हुए माय धापनां ॥ कुशम
माये सज्जन, घृत विण लहे जोजन, आ० ॥ प्रीछ
ए फल पापनां ॥ ३ ॥ धर्मे धन सुख होय, जीज
करे सहुकोय, आ० ॥ जे जे मनमां कामीयें ॥ तुर
पदारथ तेह, लहीयें नही संदेह, आ० ॥ पुण्यें मह
फल पामीयें ॥ ४ ॥ यत ॥ न देवतर्थिने पराग्र
मेण, न मत्रतत्रैर्न सुवर्णदानै ॥ न सेवया नैव सु
द्धुमाथे., विना खपुण्यैरिह वांछितार्था ॥ १ ॥ पूर्व
ढाल ॥ वाद वदंतां आम, पापबुद्धि सेणें ठाम, आ० ।
नाम थयुं ते धापनुं ॥ प्रधाननुं प्रधान, धर्मबुद्धि अभि

धान, आ० ॥ आपगुणें तव जपनुं ॥ ५ ॥ सदा स
न्नामां सोय, वाद वदे एम दोय, आ० ॥ पाप अने पु
ण्यना मति ॥ लजवी केता लोक, नृपनें नाखे टोक,
आ० ॥ तोपण नृप न वली रति ॥ ६ ॥ अवनीपति
एक दिन्न, मंत्री ने कहे वचन्न, आ० ॥ जो तुं माने
छे धर्मनें ॥ तो लखमी छे लवलेश, जो माने मुज उप
देश, आ० ॥ तो पामे सर्व शर्मनें ॥ ७ ॥ राज्यादिक
माहाऋद्धि, तो छे माहारे नवनिधि, आ० ॥ जो हुं मा
नुं बुं पापनें ॥ धर्माधर्म फल बेह, प्रगट पेख तुं एह,
आ० ॥ जो धर्मं धरेछेतुं आपनें ॥ ८ ॥ तो तुं तजी
धन गेह, एकाकी ससनेह, आ० ॥ परदेशे जइ पुण्य
थी ॥ आथ उपाई अछेह, जो तुं लावे गुणगेह,
आ० ॥ तोधर्मं छेडुं हुं मन्नथी ॥ ए ॥ मंत्री कहे मही
नाथ, सत्य कही ए वात, आ० ॥ माहरा पण मनमा
वसी ॥ जोतां ए दृष्टांत, भांगशे मननी भ्रांत, आ० ॥
पुण्यनी गति परखी इसी ॥ १० ॥ अवनीपति आ
देश, प्रधान ते परदेश, आ० ॥ चोंप धरीनें चालीयो ॥
उदयरतन कही एम, पहेली ढाले प्रेम, आ० ॥ पर
मारथ प्रीछी लियो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥अटन करतो एकदा,रातमां राक्स एक॥ जेव्यो महा भूखाकूलो, खाउ खाउ करतो छेक ॥१॥ मंत्री कहे तमने हुवं, मामा मुज प्रणाम॥ मामा कहे मूक नहीं, फरी राखस कहे ताम ॥२॥ सर्वगाथा॥२१॥

॥ ढाल बीजी ॥ हमीरानी देशी ॥

॥तव मंत्री कहे तेहने, करवा कारज एक मामा जी॥जाउं हुं तेणे जीवतो, मेहेलो मुने सुविवेक मा माजी ॥ तव० ॥ १ ॥ कारज तेह करी पाछो, फरी आवु इणे ठार ॥ मा० ॥ खाउं तव खोरी वही, मुजनें तमें निरधार ॥ मा० ॥ त० ॥ २ ॥ काला मायानां मानवी, तेहनो शो विशवास ॥ जाणेजा ॥ राखस कहे मरवा फरी, तु केम आवे मुज पास ॥ जाणेजा॥ तव राखस कहे तेहने॥ ३ ॥ परनर साथें परवरि, गर्भ गलावे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मुने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ तव० ॥ ४ ॥ आगलथी व्रत उचरी, मललतां विराधे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ५ ॥ मावित्रनें जे अवगणि, गुरुनें छेलवे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥मा०॥

॥ त० ॥ ६ ॥ विशवासघात करे वली, पांतें वंचो करे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ७ ॥ संखारो जे सूकवि, दव लगाडे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ८ ॥ पाप स्थानकने आचरे, अढार नेदें जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मनें, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ॥ ए ॥ नाइ हणे नगिनी प्रत्यें, मुनि हत्या करे जेह ॥ ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ ॥ मा० ॥ त० ॥ १० ॥ साते व्यसनने सेवतां, अनरथ उपजे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ११ ॥ बाल धेनु स्त्री वंननें, जगमां मारे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १२ ॥ गोत्र गमन करे गेलशुं, जू लीख मारे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ ॥ त० ॥ १३ ॥ रोकी मारग धर्मनो, अछता कर करे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १४ ॥ धर्मी थई धूरत पणे, लोकने धूते जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पा

तक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १५ ॥ कीधो गुण जाणे नहीं, कुपथ चलावे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ॥ १६ ॥ गुरु देवनु द्रव्य वावरे, पूज्यने पराभवे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लाग जो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १७ ॥ इत्यादिक करी अ गेला, राक्षसनी लइ शीख॥श्रोताजी ॥ मन्त्री मन मोदें करी, आगें चरी तेणे वीख॥श्रोताजी ॥ त० ॥ १८ ॥ उदयरतन एम उच्चरे, बोली ए बीजी ढाल ॥ श्रो०॥कु यलिहारी तेहनी, पणनां जे प्रतिपाल ॥ श्रोताजी॥ ॥ त० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोंपशुं आगल चालतां, कोइक नगर नजीक॥ देवल रुषभजिणंदनुं, दीतुं अति रमणीक ॥ १ ॥अ तिशय आनंद ऊपनो, पेखी ते प्रासाद ॥ भावेंशुं भग वंतनें, एम दे स्तवे आल्हाद॥ २ ॥ यत ॥ न याति दास्यं न दरिद्रभावं, नप्रेष्यतां नैवच हीनयोनि ॥ न चापि वैकल्यमथेंद्रियाणां, योऽकारयन्मार्गजिनेंद्रपूजां ॥१॥ दोहा॥इत्यादि स्तवना सुणी, कपर्दीनामा यक्ष॥ रक्षक ते जिनचैत्यनो, प्रीतें थइ प्रत्यक्ष ॥३॥ मन्त्री अ

रनें कामघट, आप्यो जेह डुलंज ॥ सचिव कहे हुं शुं करुं, किहां थापुं ए कुंज ॥ ४ ॥ कुंज शोहे शिर नारिने, पुरुषनें लागे लाज ॥ तेमाटे ए कामघट, कहो आवे शे काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ शोरठीरागें चाल ॥

॥ तव देव कहे घट एह, अदृश्य पणे गुणगेह ॥ तुज पूंठे वहेशे वहेलो, गुरुनी पूंठें जेम चेलो ॥१॥ तिहारे मंत्रीये मानी वाण, कुंजशुं कीधुं प्रयाण ॥ गेलें आवंतो निज गेह, वचमां आव्युं वन तेह ॥२॥ मांडजे कहेवानो मामो, ते राखस आवी साहामो ॥ ॥ ३ ॥ मंत्री तव बोल्यो वाणी, ते पणमां न जेदे पाणी ॥ सापुरुषें बोल्या बोल जेह, प्राणांतें न बदले तेह ॥४॥ पण सांजलो एक विचार, मुज तनु ए अशुचि अपार ॥ रस लोही मांसनें मेद, अस्थि मज्जा शुक्र अमेध्य ॥५॥ मलमूत्र तणो जंडार, केम कीजें तेहनो आहार ॥ रसालनी पाउं रसोई, स्वादे जिमो तमे सोई ॥६॥ तव राक्षस कहे थइ राजी, तुं आप रसोई ते ताजी ॥ तेणे राखस कुंज पसायें, जिमाड्यो यथेष्ट उछाहें ॥ ७ ॥ तव तेह रीजी मनमांथी, कहे रसोइ आपी ए किहांथी ॥ मंत्री कांइ अलिक न बोल,

तक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १५ ॥ कीधो गुण जाणे नही, कुपथ चलावे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ॥ १६ ॥ गुरु देवनु द्रव्य वावरे, पूज्यने पराजवे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लाग जो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १७ ॥ इत्यादिक करी थ गेला,राक्षसनी सह शीख॥श्रोताजी ॥ मन्त्री मन मोदें करी, आगें चरी तेणे वीख॥श्रोताजी ॥ त० ॥ १८ ॥ उदयरतन एम उच्चरे, चोथी ए बीजी ढाल ॥ श्रो०॥हुं बलिहारी तेहनी, वचनां जे प्रतिपाल ॥ श्रोताजी॥ ॥ त० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोंपशु आगल चालतां, कोइक नगर नजीक॥ देवल ऋषजजिर्णदनु, दीठुं अति रमणीक ॥ १ ॥अ तिशय आनंद ऊपनो, पेखी ते प्रासाद ॥ जावेंशु जग वंतनें, एम ते स्तवे आल्हाद ॥ २ ॥ यत ॥ न याति दास्य न दरिद्रजावं, नप्रेष्यता नैवच हीनयोनिं ॥ न चापि वैकल्यमथेंद्रियाणां,योऽकारयन्मार्गे जिनेंद्रपूजां ॥१॥ दोहा॥इत्यादि स्तवना सुणी, कपर्दीनामा यक्ष॥ रक्षक ते जिनबिंबनो, प्रीतें थइ प्रत्यक्ष ॥३॥ मन्त्रीश्व

करुं हुं तहकीक ॥ तवमंत्री कहे कामघट, आणो ते रमणीक ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नटीआणीनी देशी ॥ आज नें उमंगें हो रंगें मज्जन आदरे ॥ ए देशी॥

॥ हा हुं आणीश तेह, इम कहीनें नजपंथें हो सं चरीयो दंडते नेगशुं ॥ पलाद पासें जइ तास, मुहकम मारीनें हो जांजी बारनें वेगशुं॥१॥तुरत लेइ घट ते ह, मंत्रीश्वर समीपें हो मोद जरें आव्यो वही ॥पूछे तव परधान,कुंजनें पेखीनें हो मनशुं महाशाता ल ही ॥२॥ तिहां तुजने हूती समाधि, एम सुणिनें घ ट जंपे हो जे तेनें सोंपी मुनें ॥ पापी नरनें हाथ,तो समाधि मुनें किहांथी हो साचुं हुं जांखुं तुनें ॥३॥ धर्मी नर हुवे जेह, तेहनें समीपें हो रहेतां हुं सुखी यो सदा॥ अधर्मीनें आश्रम, अर्द्धघडी पण वसतां हो मुजनें रति न होवे कदा ॥४॥ कुंज पसायें तेह, जोजन करीनें मंत्री हो वलतो आगें चालीयो ॥ जा तां मारगमांहें,एक गाम समीपें हो कोइक संग निहा लीयो ॥५॥ शेत्रुंजी गिरनार, तीरथ जइनें हो पाछो ते वलीओ जिसे ॥ आवंता पंथ विचाल, मंत्रीश्वर म हापुण्य हो,साहामो तिहां मलीयो तिसें ॥ ६ ॥ सम

सत्य गुह्य हैयातु खोल ॥ ८ ॥ कामकुंभ पसायें कामी, रसोई पूरी में स्वामी ॥ तब राक्स कहे काम कुंभ, मुजनें ए आपो अविलंब ॥ ए ॥ यह कोली स धारण काम, केम आपु मत्री कहे ताम ॥ जो तुं आपे कुंभ करारे, तो हु हिंसा नकरु क्यारे ॥ १० ॥ पसाय कहे तें पुण्य, तुजनें होशे अगण्य ॥ हुं मानीश तुज उपकार, थली सांजल एक विचार ॥ ११ ॥ हुं पण तु जनें निरधार, रिपु शस्त्र निवारण हार ॥ साधीजें अ रथ अखरू, ते आपीश माहारो दंड ॥ १२ ॥ जो आपु ए तुजने उल्लासें, तो पण मुज हिंसक पासें ॥ कुंभ न रहे मत्रीसर जासे, तेणे पत्थो हुं हु सासे ॥१३॥ उ दयपदे श्रीजी ढाल,श्रोता सुणजो उजमाल ॥ धर्म कर शे जे धसमशिया, वरसे ते शिववधू रसीया ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ राखीश हुं रूडी परें, राक्स कहे धरी राग॥ इम सुणीनें आप्यो घणो, मंत्रीश्वरें लही लाग ॥ १ ॥ दंम ग्रहीनें दिव्य ते,पचे थयो प्रधान ॥ बीजे दिन घू स्यो थयो, मत्रीते मतिमान ॥ २ ॥ सोखावी कहे यं रनें, जोजन दे तुं आज ॥ ते कहे हुं समरथ नथी, क रवा ए तुम काज ॥३॥ काम को बीजु जो कहो, ते

करुं हुं तहकीक ॥ तवमंत्री कहे कामघट, आणो ते रमणीक ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नटीआणीनी देशी ॥ आज नें उमंगें हो रंगें मज्ञान आदरे ॥ ए देशी॥

॥ हा हुं आणीश तेह, इम कहीनें नन्नपंथें हो संचरीयो दंडते नेगशुं ॥ पलाद पासें जइ तास, मुहकम मारीनें हो नांजी बारनें वेगशुं ॥१॥ तुरत लेइ घट तेह, मंत्रीश्वर समीपें हो मोद नरें आव्यो वही ॥ पूछे तव परधान, कुंननें पेखीनें हो मनशुं महाशाता लही ॥२॥ तिहां तुजने हूती समाधि, एम सुणिनें घट जंपे हो जे तेनें सोंपी मुनें ॥ पापी नरनें हाथ, तो समाधि मुनें किहांथी हो साचुं हुं नांखुं तुनें ॥३॥ धर्मी नर हुवे जेह, तेहनें समीपें हो रहेतां हुं सुखीयो सदा ॥ अधर्मीनें आश्रम, अर्द्धघडी पण वसतां हो मुजनें रति न होवे कदा ॥४॥ कुंन पसायें तेह, नोजन करीनें मंत्री हो वलतो आगें चालीयो ॥ जातां मारगमांहें, एक गाम समीपें हो कोइक संग निहालीयो ॥५॥ शेत्रुंजी गिरनार, तीरथ जइनें हो पाछो ते वलीयो जिसे ॥ आवंता पंथ विचाल, मंत्रीश्वर महापुण्य हो, साहामो तिहां मलीयो तिसें ॥ ६ ॥ सम

य सहीनें संघ, सधिवें ते सघलो हो अमण काजें नो तस्यो॥तेहनें असंखल देखी, रसोइ करवानो हो उद्यम सहु संघें कस्यो ॥७॥ नरी एक जलनो कुंन,संघ वालुनें चूले हो सघले जल रेली तदा ॥ कहे मत रांधशो कोय, मुज पामरनें करो पावन हो मन्त्री इम नांखे मुदा ॥ ८ ॥ असमंजस अवदात, अवलोकी संघ पालू हो मनमांहे चिंते इस्युं ॥अशन पखुं रहो दूर, पोतानुं पण नोजन हो आज न करी शकीयें किशुं ॥ ॥ ए ॥ सहु मली संघनां लोक, मांहोमांहे आलोचे हो हवे शुं करशुं अहे ॥ पोतानु नरवा पेट,समरथ प नहीं हो फोकट वयण महोटां वदें ॥१०॥ कहे कवि उदयरतन, चतुरनर सहु सुणजो हो कहुं हुं चोथी ढालमां ॥ सुपुरुष साचा होय, आडंबर देखाडी हो कुपुरुष पाडे जालमां ॥११॥ सर्वगाथा ॥ ७५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ एकदिन एकपरदेशीयो ॥
ए देशी ॥ अथवा नमो नमो मनक महामुनि
॥ ए देशी ॥ अथवा चरणाली चामुंड रण
चढे ॥ ए देशी ॥

॥ जोजनवेलानें समे, मंत्री कोट नमावी रे ॥सं
घपति सहु लोकनें, तेडां करे तिहां आवी रे ॥जोज०॥
॥ १ ॥ संदेह हिंडोलें चड्यो, वनमांहे संघ वालू रे॥
तेहनी पूंठे परिवस्यो, अति आतुर उजमालू रे ॥
॥ जो० ॥ २ ॥ आगल जातां अनुक्रमे, पटकुलमें वि
स्तारो रे ॥ मनोहर दीठो मांडवो, ऊपनो हर्ष अपारो
रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ विस्मय पामी सहुजना, पूछे मांहो
मांहे रे ॥ ए साचूं के स्वपनुं सही, के मृगतृष्णा प्राहें
रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ के ए नर छे कारिमो, के दीसे इंद्र
जालो रे ॥ आपण पाड्या पाशमां, रखे वधे जंजालो
रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ हाथें फरसे मांडवो, पासें जइ जन
केता रे ॥ परगट पेखी पारखूं, सहु थया हर्ष समेता
रे ॥ जो० ॥ ६ ॥ ते कामकुंज तणे बलें, मांड्या सो
वन थालो रे ॥ पांतें चाल्या पीसणां, दीसे झाक ज
मालो रे ॥ जो० ॥ ७ ॥ अष्टोत्तरशत अंगना, विध
विध पहेरी वेशो रे ॥ पिरसे प्रेमें रसवती,जपे रूप अ

शेपो रे ॥ जो० ॥ ८ ॥ अन्योन्यें एम उच्चरे,अहो र
सोइ एहथी रे ॥ कहो केणे दीठी किहां, अमर आ
रोगे तेहथी रे ॥ जो० ॥ ए ॥ अशनांतें आजूषणे, वि
विध वसनें धारू रे ॥ सघलो संघ पहिरावीयो,मंत्रीयें
मनोहारु रे ॥ जो० ॥ १० ॥ पूछे अचरिज पामीनें,
मन्त्रीनें श्रीसंघो रे ॥ कहो एवडो केहनें बलें,पूरो पच्यो
उछरगो रे ॥ जो० ॥ ११ ॥ कामकुंनें सहु कामना,
पूरी ते कहे एहो रे ॥ संघवी घट याचे सदा, लोनें क
रीनें तेहो रे ॥ जो० ॥ १२ ॥ जो तु आपे ए मुनें, तो
हुं करु शुज रीतें रे ॥ साहामीवात्सख सर्वदा, तुज
सानिध्यें प्रीतें रे ॥ जो० ॥ १३ ॥ तु धर्मी दीसे अछे,
चमर युगम तुज आपु रे ॥ विप रोग शस्त्र निवारणु,
मित्र करी वली थापुं रे ॥ जो० ॥ १४ ॥ कुंजसाटे ले
तुं वली, चमर युगलए चाही रे ॥ पांचमी ढालें उ
दय वदे, एम कहे तेह उमाही रे ॥ जो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मन्त्री कहे मया करी,देवें दीधो जास ॥ कुंज रहे
ए ले कनें, अवरां न पूरे आश ॥ १ ॥ स्वारथवशें स
घवी कहे,तुं तो आपने एह ॥ जेम तेम करीनें राखशुं,
अमें अमारे गेह ॥ २ ॥ कुंज चमर साटा करी स

चिव संघवी सोय ॥ निजनिज पंथें परवस्या, हीये हर्षित होय ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ ए५ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ वृषजानजुवन गइ दूती ॥ ए देशी ॥

॥ बीजे दिन ऊूखे जरायो, तव मंत्रीयें दंरू प गायो ॥ घटलेवा घणे उत्साहें, जइनें तेणे संघमाहे ॥ ॥ १ ॥ पासें शुजट हता बहु जेह, सहु त्रास पमा ड्या तेह ॥ नांजी खड्ग खेरूां हथीयार, कामकुंज ग्रही सकरार ॥२॥ पाठो फरी मंत्री पासें, आव्यो फरी लकुट उल्हासें ॥ तवदंरूना पराक्रम जोइ, घणुं मु दित थयो मनसोइ ॥ ३ ॥ कुंज दंड चमर ए त्रण्य, देइ वस्तु मूलें अगण्य ॥ निजनगरीयें पोहोतो जे हवे, तेणे दिवसें तिहां तेहवें ॥ ४ ॥ प्रगट करवा धर्म परीक्षा, सेवकनें देइ बहु शिक्षा ॥ घाली रत्न बीजोरां मांहे, सवालाख टकानुं रायें ॥ ५ ॥ आ पीनें कहे अनुचरनें, शाक विक्रय करे ते नरनें ॥ सोंपी ए फल सुविवेक, वली सांजल कहुं वात एक ॥ ६ ॥ जिहां लगें कोण लेतां लगें, तिहां ठानो र हेंजे तुं वगें ॥ जे कोइ लीये तेह रागें, नाम तेहनुं कहीयें मुज आगें ॥ ७ ॥ सेवकें ते सगलुं सीधुं,

जेम रायें कह्युं तेम कीधु ॥ मत्रीघरें आव्या पछी, सु
दरी शाक लेवा गछी ॥ ८ ॥ बीजोरुं लेई ते बाला,
घरे आवी घणु उजमाला ॥ ते जाणी चिंते नृप तेह,
अहो धर्मनो महिमा एह ॥ ए ॥ उदयरत्न वदे
इम वाणी, एतो ढाली ढाल प्रमाणी ॥ धर्म करशे जे ध
र्मधोरी, ते कापशे कर्मनी दोरी ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रंगेशु एक रात्रमां, सोवनमय आवास ॥ नी
पाव्या मत्रीश्वरें, कुत्त पसायें खास ॥ १ ॥ शोभित
सोवन रयणमें, गोखकोशीशां धंज ॥ निरुपम थाये
नवनवां, मध्ये नाटारंभ ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ हवे श्रीपाल कुमार, वि
धिपूर्वक मज्जनकरे जी ॥ ए देशी ॥

॥ नाटकना सुणी नाद, देखी आडंबर गेहनोजी
॥ विस्मय पाम्यो वसुधेश, पापें राचे मन जेहनो
जी ॥ १ ॥ मंत्री हवे परजात, शृगारें तनु पाहा
वीनें जी ॥ रत्ने भरी सोवन थाल, भेटे नृपनें आ
वीनेंजी ॥ २ ॥ पूछे तव महिपाल, रत्न ए किहांथी
पामीयोजी ॥ मंत्री कहे धर्मपसाय, सहु फली मन
कामीयोजी ॥ ३ ॥ निरुपम नाटक दिव्य, कनक

आवास छे तुमणेजी ॥ एम वली पूछे राय, हा प्र
त्तु छे मंत्री जणेजी ॥ ४ ॥ आवास जोवा तेह, रा
जा कहे मंत्री प्रतेंजी ॥ थोडा जनशुं एक वार, ज
माड तुं मुजनें हेतेंजी ॥ ५ ॥ मंत्री कहे महाराज
तमने गमे जन जेटला जी ॥ मेलावोमेली मुजगेह,
आवजो तेडी तेटलाजी ॥ ६ ॥ स्वामी शक्ति प्रमा
ण, जक्ति करीश जावें मुदाजी ॥ रखेराखो मनज्रां
त, अधिक न जांखुं हुं कदा जी ॥ ७ ॥ अवनीप
ति चिंते एम, अहो ए साहसपणुं बकेजी, मुज परि
करनें जगमांहें, पाणी पण कोण पाइ शकेजी ॥ ८ ॥
तो जोजन पूरे कोण, कुंजर कीडीनें घरेंजी ॥ जाय
प्राहुणो जेम, ए पण जाणवो एणी परें जी ॥ ए ॥
रोषें करीनें राय, देश मेलावो मेली बहु जी ॥ मा
णस मंत्रीगेह, मेल्युं शुद्धि लेवा सहुजी ॥ १० ॥
जोजननो समुदाय, मेल्यो छे केतो एणे जी ॥ जो
इ आवो तेह, जइने तस घर आंगणेजी ॥ ११ ॥ उ
दयरतन कहे एम, सातमी ढालें समय लहीजी ॥
जींत विहूणो जार, मेलतां मन मानें नहीं जी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सेवकजइ मंत्रीघरें, जोइ रसोइ साज ॥ पण कि

हांए देखे नही, मुठी मात्र अनाज ॥ १ ॥ सचित्र सामायिक धरी, सातमी भूमें समाध ॥ नेहेंशु नव पद जपे, सोहे जाणे साध ॥ २ ॥ नृपनें कह्यो जइ सेवकें, ते सघलो विरतत ॥ व्यतिकर ते श्रवणे सुणी एम चिंते भू कत ॥ ३ ॥ गहेलो थइ ए दूटशे, मा थे पडशे मोय ॥ शुकरशुं नृप चिंतवे, दिगमूढ थइ इ म सोय ॥ ४ ॥ मंत्रि कहे आवी तिसें, नृपनें मस्त क नाम ॥ शीतल थाये रसवती, वेगें पधारो स्वाम ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १२४ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥विनति अवधारो रे, पूरमांहे पधारो रे॥ ए देशी॥

॥ रोषारुण भूपो रे, थई जम रूपो रे, करी रूप कुरूप चिंते एहवुं रे ॥ १ ॥ इम चिंतवी राजा रे, लेई शुभटसु साजा रे, सह नरशु तगाजा करतो स चस्यो रे ॥ आडबर घरनो रे, जोइ मंत्रीसरनो रे, स्वामीसे पुरनो मनशुं गहचस्यो रे ॥ २ ॥ शु ए सुर धाम रे ॥ दीसे अभिराम रे, दिलशुं ते ठाम देखीनें करे रे ॥ मानवगति नांहि रे, आव्यातुं क्यांहि रे, सहु जन मनमांहे इम सांसो धरे रे ॥ ३ ॥ इंद्रजाल अलेखे रे, कोइकाज विशेखें रे, मंत्री मनरूपें दे

खाडे अठे रे ॥ के होशे साचूं रे, पण लागे काचूं रे, जेम सोनुं जाचूं मूढ महेली गछे रे ॥ ४ ॥ इम संशय आयो रे, नृपभ्रांतें जरायो रे, मनमां अकुलायो आघो न संचरे रे ॥ मंत्रीसर त्यारें रे, तेडी शुज ठारें रे, जोजननें बेसारे सहु सपरिकरें रे ॥५॥ फलनें पक्वान्न रे, पेखी असमान रे ॥ सहु कहे तेणें थान अन्योअन्य उल्लसी रे ॥ जोजननी सजाई रे, केणे किहां जाई रे, दीठी रसदाई जगमां ए जिसी रे ॥ ६ ॥ तव सहु कहे नाना रे, मंत्रीयें जमवाना रे, करी जाजा वानां जक्त जुंजावीयां रे ॥ चूआ चंदन लाइ रे, केशर छटकाइ रे, तंबोल देवाइ अधिक उपावीया रे ॥ ७ ॥ पामरीने चीरा रे, मणि माणक हीरा रे, पटकूल दक्षिणरा बहु पहेरावीया रे ॥ जूपतिनें जजतां रे, जूषण मनगमतां रे, जेट धरीनें नमतां सहु नमावीया रे ॥ ८ ॥ उदय वदे वाणी रे, सुणजो जवि प्राणी रे, मींज जेहनी जेदाणी श्रीजिन वाणीयें रे ॥ ते आठमी ढालें रे, करशे उजमालें रे, जिनधर्म सुचालें, युगतें जाणीयें रे ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछ्युं अचरिज पामीनें, तव मंत्रीनें राय ॥ जी

माव्या पता जणा, कहे ते कुण सुपसाय ॥१॥ कुंन पसार्ये ते कहे, तव फरी बोल्यो राय ॥ मुजनें आप ते कामघट, जेम थुरूं सुख थाय ॥ २ ॥ कटक मेला यो बहु मले, रणभूमें ए कुंच ॥ भोजन आपे भाव तां, जिहां जन मले सुलच ॥३॥ तेमाटे तुं सर्वथा, आप मुनें निरधार ॥ जन्म लगें थली जाणजे, मानी श तुज उपगार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ १३७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ मुनिवर मारग चालतां ॥ ए देशी ॥

॥ मंत्री कहे महाराजनें,पापीनें गेहे ॥ घट न रहे ए सर्वथा, तव नृप कहे नेहे ॥ म० ॥ १ ॥ विलंब तजी बीसे थसा, आपे तुं एकवार ॥ यतन करी जो पें पछी, अमें राखशुं गार ॥ २ ॥ महिपति कहे म त्री प्रतें॥मंत्रीयें महिपतिनें तदा, घट आप्यो तेह ॥ यके मूक्यो जालथी, नृपें जिहां निजगेह ॥ ३ ॥ जु ठे जुठे पुण्यपटतरो॥ए आंकणी॥ सुघट सवे मांहे स ही, शिरोमणि शुरा ॥ रखवाला ते राखीया, आपी आयुरू पूरां ॥ जु० ॥ ४ ॥ प्रथ दिवस लगें तुमें, रहेजो सावधान ॥ रक्षा करजो कुंजनी, कहे एम रा जान ॥ जु० ॥ ५ ॥ दिन बीजे देखाडवा, धर्मनो महिमाय ॥ घट महुवा दंड पाठव्यो, मंत्रीयें तेणे

गाय ॥ जु० ॥ ६ ॥ लकुटें सुनट ताड्या तिसा, मुखें वमता लोही ॥ नूमें पड्या नूपदेखतां, सघला शुद्धि खोई ॥ जु० ॥ ७ ॥ घट लेइ मंत्रीघरें, दंरू पोहोतो दोडी ॥ वसुधापति विलखो थयो, पतहारी पोढी ॥ जु० ॥ ८ ॥ मंत्रीनें जइ महिपति, कहे कह्युं ताहारुं ॥ सत्य थयुं संशय विना, मन मान्युं माहारुं ॥ जु० ॥ ए ॥ पण एक अनरथ ऊपनो, सघला मुज सुनट ॥ पड्या बे पुहवी तलें, जीवाड तुं सुघट ॥ जु० ॥ १० ॥ चमर युगम सुनटा शिरें, मंत्री जई ढाले ॥ तव ते सघला सज थया, नरपति निहाले ॥ जु० ॥ ११ ॥ मंत्री कहे मुज धर्मनो, प्रनाव ए पेखो ॥ मूआ सुनट जीवाड्या, दील खोली देखो ॥ जु० ॥ १२ ॥ मनशुं मान्युं महिपतें, धर्में थाये श्रेय ॥ पापें थाये पाहुउं, तेमां नहीं संदेह ॥ जु० ॥ १३ ॥ पुरलोकें पण प्रीबीयुं, सत्य धर्म सदाय ॥ जुउं जुउं अहो जगती तलें, जेथी वंबित थाय ॥ जु० ॥ १४ ॥ नवमीढालें निरधारीनें, उदय एम बोले ॥ केवलिनाषित धर्मने, कोण आवे तोले ॥ जु० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दिन केताएक नरवरें, मान्या धर्म महिमाय

वली मन्त्रीनें एकदा, भांखे ते माहाराय ॥१॥ घूणा दूर न्यायें फस्यो, जयम तुज एकवार ॥ पण नहीं धर्म प्रभाव ए, सुण मन्त्री सुविचार ॥ २ ॥ बीजी वार जो तु जइ, प्रेमदा सहित परदेश ॥ धन अर्जी आवे बहु, तो सहुं धर्म विशेष ॥ ३ ॥ नहीं तो म हिमा धर्मनो, नहीं मानुं निरधार ॥ ते पण तव मान्युं तेणें, आणी पर उपगार ॥ ४ ॥ घर जलावी भूपनें, मंत्री महिला लेह ॥ चाल्यो वली देशांतरें, सबल पुण्य अछेह ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १५७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ तेतरिया रे भाइ ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ मतिसागर मंत्री मतिदरीउं, जगती अनुक्रमें जोतो रे ॥ एकदा गजीरपुरें उपवितटें,प्रमदाशु ते पो होतो रे ॥ म० ॥ १ ॥ पुरने परिसरें तिहां वाडीमा, श्रीजिनमदिर पेखी रे ॥ वंदे तेहवे जलनिधि तीरें, लोक मल्यां बहु देखी रे ॥ म० ॥ २ ॥ जायानें मेली जिनभुवनें, समुद्र तटें गयो तेहो रे ॥ श्रीपतिनामें तिहां व्यवहारी, दीये दान अछेहो रे ॥ म० ॥ ३ ॥ वाहाणे चढ्यो आवा परद्वीपें, मंत्री पण जलमांहि रे ॥ दानकाजें जइ भूमि केति, नाव चढी तव त्यांहिं

रे ॥ म० ॥ ४ ॥ शेठ समीपथी दान लेइनें, पाछो वली ते जेहवे रे ॥ तोयनिधिमां तरतां दूरें, प्रवहण पोहोतां तेहवे रे ॥ म० ॥ ५ ॥ जिहां जूए तिहां जल एक दीसे,बीजुं न दीसे कांई रे॥तव पाछो फरी वाहणमां पोहोतो,मनशुं ते अकुलाई रे॥म०॥६॥ तव व्यवहारी पूछे तेहनें, देखुं तुं कांइ लहे रे ॥ हा स्वामी जाणुं बुं सर्वें, उत्तर ते एम कहे रे ॥ म० ॥ ७ ॥ तो वाणोतर था तुं माहारो, हा मानी परधानें रे, वणिकें ते वाणोतर राख्यो, सुणो श्रोता एकताने रें ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ उदयरतन कहे दशमी ढालें, पुण्योदय प्रजावें रे ॥ सुखें समाधें रहे तिहां मंत्री, नवपद नित्यें ध्यावे रे ॥ म० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकुलें जे सुंदरी, विजयसुंदरी नाम ॥ मूकी हूती मंत्रीसरे, वाट जूवे सा ताम ॥ १ ॥ शे मुज स्वामी नावीउं, दिवस थके घडी दोय ॥ गोधण ले गोवालीया, वल्या नही वन कोय ॥ २ ॥ हियडुं अति हे जालूउं तो हुं जाणुं तुज्ऊ ॥ पीयु विरहे एक पलक मां, जो तुं फाटे अज्ऊ ॥ ३ ॥ साजन विण साजो रही, कां तुं लजवे मुज्ऊ ॥ आरति उल्हाये सवे, जो

घाघ विछूरे तुज्ज ॥ ४ ॥ ॥ सर्वगाथा ॥ १७० ॥
॥ ढाल अगीयारमी ॥ जिहां हरि वेसतां रे,
तिहां मुने धरती खावा धाय ॥ ए देशी ॥
॥ अबला एकली रे, वनमांहे ते विविध करती विलाप ॥ दुःखें दाधी थकी रे, जूरे घणुं देवनें देती शराप ॥१॥ पोढां पूरवें रे, कीधां हशे पातक में ल ख कोड ॥ तेणें मुज नाहलो रे, गयो मुनें मारगमांहे छोड ॥ २ ॥ वनना पंखीया रे, चारो करी आव्या निजनिज गाम ॥ वाटकी वढेसी रही रे, हा हा मा हारो सोपण नाव्यो स्वाम ॥ ३ ॥ मायनें मह्यां वा छरू रे, जलहलि घर घर दीपक ज्योति ॥ निशाचर गहगह्या रे, उग्यो वली शशिहरनो उद्योत ॥ ४ ॥ सोहागण नारीनां रे, मनमांहे प्रगट्यो आनंदपूर ॥ हा हा चकवी परें रे, वालो माहारो जइ वसियो अ ति दूर ॥ ५ ॥ किहां रह्यु सासरु रे, वली मा हारी किहां रही पीयर वाट ॥ जिहां जिहां नयणां ठवुं रे, पीयु विण तिहां तिहा लागे उजाड ॥ ६ ॥ सूरति मुनें सांजरे रे, वाहाला ताहरी घणीय घणीनें नेह ॥ आंसुडां ऊलट्यां रे, ए न जाणे वरसे आ षाढो मेह ॥ ७ ॥ कोण परदेशमां रे, अहो मुनें आ

ज आपे आश्रम ॥ हवे हुं शुं करुं रे, अहो माहा रो केम रहेशे कुलधर्म ॥ ८ ॥ अग्यारमी ढालमां रे, समय लही उदयरतन कहे एम ॥ धन्य ते नारिनें रे, डुःख पडे जे धरे शीलशुं प्रेम ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिहां तिहां जोतां नवि जडी, जब स्वामीनी शुद्धि ॥ कुंजकारनें मंदिरें, तव सा पोहोती मुद्ध ॥ ॥ १ ॥ वीरा सांजल वीनति, हुं परदेशणी नारि ॥ बहिन करीने त्रेवडे, तो रहुं तुज घरबार ॥ २ ॥ कं तविबूटी एकली, आवी बुं तुज गेह ॥ पीयु मुजनें मले जिहां लगें, तिहां लगें आश्रम देह ॥ ३ ॥ शी लश्रृंगारें शोजती, पवित्र लही गुणगेह ॥ कुंजारें पु त्री करी, रुडी परें राखी तेह ॥ ४ ॥ यतः ॥ लज्जा दयादमोधैर्य्यं, पुरुषालापवर्ज्जनं ॥ एकाकित्वपरित्या गो, नारीणां शीलरक्षणे ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १८४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ लाई लाई हे जावज माहरी लाई हे जात ॥ ए देशी ॥

॥ तव मंत्री हो ते व्यवहारी साथें, सुखें सम धें रत्नद्वीपें गयो ॥ तिहां सुरपुर नामें हो नगर उदार पुरंदर नामें नरेसर तिहां लह्यो ॥ १ ॥ प्रवहणथर्व

थाय विसूरे तुज्झ ॥ ४ ॥ ॥ सर्वगाथा ॥ १७० ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ जिहां हरि वेसतां रे,
तिहां मुने धरती खावा धाय ॥ ए देशी ॥

॥ अबला एकली रे, वनमांहे ते विविध करती विलाप ॥ दुःखें दाधी थकी रे, जूरे घणुं देवनें देती शराप ॥१॥ पोतां पूरवें रे, कीधां हशे पातक में ल ख कोड ॥ तेथी मुज नाहलो रे, गयो मुनें मारगमांहे छोड ॥ २ ॥ वनना पंखीया रे, चारो करी आव्या निजनिज ठाम ॥ वाटडी चहेती रही रे, हा हा मा हारो तोपण नाव्यो स्वाम ॥ ३ ॥ मायनें मळ्यां वा छरू रे, जलहलि घर घर दीपक ज्योति ॥ निशाचर गहगद्या रे, छव्यो वली शशिहरनो उद्योत ॥ ४ ॥ सोहागण नारीनां रे, मनमांहे प्रगट्यो आनंदपूर ॥ हा हा चकवी परें रे, वालो माहारो जइ वसियो अ ति दूर ॥ ५ ॥ किहां रह्यु सासरु रे, वली मा हारी किहां रही पीयर वाट ॥ जिहां जिहां नयणा ठवुं रे, पीयु विण तिहां तिहां लागे उजाड ॥ ६ ॥ सूरति मुनें सांभरे रे, वाहाला ताहरी घणीय घणीनें ठेह ॥ आंसुडां ऊलव्यां रे, ए न जाणे वरसे आ षाढो मेह ॥ ७ ॥ कोण परदेशमां रे, अहो मुनें आ

॥ दोहा ॥

॥ एकदिन तेह पण्यागना, चित्तमां चिंते एम ॥ वाणोतर जो एहनो,अम घर आवे प्रेम ॥ १ ॥ बहु धन आपे तो सही, कर्त्ता हर्त्ता तेह ॥ निहाल करे निश्चय सही, नवल जो बाजे नेह ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ १९४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ बेम्हवे नार घणो छे राज,
वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ एकदिन तेणे एहवुं आलोची, रूप बनाव्यो रूडो ॥ अतिसुंदर भूषण धरी अंगें, करें खलकावती चूडो ॥ १ ॥ पोतें मोह धरी मनमांहे, आवी मंत्री पासें ॥ ए आंकणी ॥ कणयरी कांब तणीपरें लल की, जीणो केडनो लंक ॥ वासग नाग हरायो वेणें, मुखें जीत्यो मयंक ॥ पो० ॥ २ ॥ अंजित बे लोच न अणियालां, जाणे कामनां बाण ॥ भमरी मिशें बे धनुष्य चढावी, पुरुषना वींधे प्राण ॥ पो० ॥ ३ ॥ सोवन रेखा दंते सोहे, नाके निर्मल मोती ॥ मुख मरम्हीनें अंगूठीमां जोपें फरी फरी जोती ॥ पो० ॥ ॥ ४ ॥ कर्ण भूषणनी कांतें झंपी, गंम्हस्थलनां रूप ॥ दामणीयां दीपे दोय पासें, शिर सेंथो अनूप ॥ पो० ॥ ॥ ५ ॥ पीनपयोधर भारें नमती, सुरतरु शाखा जे

हो वस्तु उतारी सर्व, पुरमा वखारें जरी मन हेजशुं॥ मंत्रीनें हो सोंपीनें व्यवसाय, शेठ ते नगरमां सुखवो वेशशुं ॥ २ ॥ धन यौवन हो अने वीजो अधिकार, वली विशेषें जाणो अविवेकता॥ एह एकेक हो अन रथकारी अत्यंत, तो चारे मले स्यां शी कहुं वारता ॥ ३ ॥ नित्य नवला हो वेश्याशुं विलसे जोग, मग न थयो श्रीपति व्यवहारीयो ॥ केही विसे हो ऊगे आथमे जाण, न लहे मन महिलारसें हारीयो ॥४॥ युवतीना हो पासमां पडीया जेह, तन मन धन यौ वन ते सवे गमे ॥ अपकीर्त्ति हो आरति अलछि पर्यंत, वली दुर्जान पग पग तेहने दमे ॥ ५ ॥ लीला मां हो आपे लाख पसाय, वली जे जे गणिका मुखें उच्चरें॥ ते सघलां हो काज करे ततखेव, शीखामण किसी कानें नवि धरे ॥ ६ ॥ अबलाने हो जेह थया आधीन, कुलवटनी ते माजा नवि गणे ॥ विषयें क री हो परवश थाये प्राण, अमलीनी परें एम आगम भणे ॥ ७ ॥ हवे श्रीपति हो व्यवहारी ते रोज, म ननी मोजें तिहां धन बहु वावरे ॥ गणिकानो हो सं ग न करशो कोय, वारमी ढालें उदय इम उच्चरे ॥ ८ ॥

तो पण हुं नवि राचुं ॥ बो० ॥ २ ॥ साते धातु तणो ए संचो, ऊपरे मढीउं चर्म ॥ दश छिद्र जस्यां छु र्गंधें, अशुचितणो आश्रम ॥ बो० ॥ ३ ॥ ते तनने काजें कोण तरसे, वरसे जे बहु विष्टा ॥ जे फरसे ते आखरें पामे, निश्चय नरक अनिष्टा ॥ बो० ॥ ४ ॥ महिला रूपें पास मांरुयो छे, केवल ए किरतारें ॥ जाण अजाण बंधाये जेहमां, सहु नर जिहां संसारें ॥ बो० ॥ ५ ॥ मदिरानी परें उन्मत्त दीसे, इहलोकनें परलोक ॥ जोयामांहे जे विणसाडे, जे बोले ते फोक ॥ ॥ बो० ॥ ६ ॥ तजे छे धर्मी तेमाटे, परदारा परसंग ॥ एकवीश वार जे नरकनें आपे, सही करतां एक संग ॥ ॥ बो० ॥ ७ ॥ परस्त्रीगमन करे जे पापी, देवनो दाम जे खाय ॥ सात वार श्रीवीर कहे ते, सातमी नरकें जाय ॥ बो० ॥ ८ ॥ यतः ॥ जरकणे देवदवस्स, परइछी गमणेण च ॥ सत्तमं नरयं जंति, सत्तवारा य गोयमा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ क्लीब कुरोगी इंद्रियहीणो, कोई नाम न लेवे ॥ छुःशीलने दोजागी थाय, ने परदारा सेवे ॥ बो० ॥ ९ ॥ चौदमी ढालें उत्तर चोखो, गणिकानें तेणे गेलें ॥ उदयरतन कहे इणी परें आप्यो, जे कोइ वयण न ठेले ॥ बो० ॥ १० ॥

म ॥ हीये नवसर हार विराजे, पग पग दाखती प्रेम ॥ पो० ॥ ६ ॥ ऊंमी नाजीनें पातलपेटी, जंजर नें जमकारें ॥ पाणी वखमां पुरुषनें पाडे, सुंदरी जे संसारे ॥ पो० ॥ ७ ॥ एहवुं रूप सजीनें अद्भुत, तेरमी हाथें तेह ॥ उदयरतन कहे प्रेमें पोहोती, गणिका मंत्री गेह ॥ पो० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हावजाव विभ्रमविषें, करती कोडि विलास ॥ प्रधाननें मोह पमाडवा, मेहेले मुख निसास ॥ १ ॥ अधुर रुसे कचुक कसे, आलस मरडे अंग ॥ वेणि समारे वली वली, आतुर थइ उमग ॥ २ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥ छेडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ मतिसागर मंत्री गुणआगर, वदने वदे इम वाणी ॥ गणिका तुं कां थई छे घेली, इहां तुजनें केणे आणी ॥ १ ॥ घोलीशमां जो, विरूआं लागे तुज वयणां ॥ घो० ॥ जहेरें जस्यां तुज नयणां ॥ ॥ घो० ॥ हुंतो नावुं ताहारे हाथें ॥ घो० ॥ हुंतो नहीं बोलुं तुज साथें ॥ घो० ॥ मां जो मां जो मां जो ॥ ॥ घो० ॥ ए आंकणी ॥ अणतेडी शाने आवी छे, सांजल गणिका साचुं ॥ लाख सोनानी जो तुं थाये,

ठे धन दायिका हो लाल ॥ अ० ॥ तेहने तलें कोडी बार, सोनईया ठे सही हो लाल ॥ सो० ॥ ऊपर पच्चास लाख, तेमां संदेह नही हो लाल ॥ ते० ॥ ४ ॥ अचरिज लही सहु कोइ, नांखे तव एहवुं हो लाल ॥ नां० ॥ चालो जइयें ते गाम, मले ठे केहवुं हो लाल ॥ म० ॥ सहुजन लेइ साथ. जइ नृपें ते थलें हो लाल ॥ ज० ॥ पत्रामां लखीयुं तेम, कह्युं तव नीकले हो लाल ॥ क० ॥ ५ ॥ साढीबारह कोडी, सोनैया सुंदरू हो लाल ॥ सो० ॥ देखी हर्ष्या लोक, रीज्यो राजेसरू हो लाल ॥ री० ॥ मंत्रीतणां वखाण, करे सहुको मली हो लाल ॥ क० ॥ आपी अर्धुं राज्य, राजायें मन रली हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ सौनाग्यसुंदरी नामें, परणावी अंगजा हो लाल ॥ प० ॥ सुख विलसे तसु संगें, मंत्री मननी रजा हो लाल ॥ मं० ॥ कहे कवि उदयरतन्न, ए पंनरमी ढालमां हो लाल ॥ ए० ॥ पुण्यनां फल सुणी एह, थजो सहु चालमां हो लाल ॥ थ० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे केताएक दिन पढी, श्रीपति श्रेष्ठी तेह ॥
वणज सलूजी पूरीयां, वाहण जावा गेह ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

वेश्या ते विलखी थई, गइ पोताने गेह ॥ पुर मांहे परधाननो, पसर्यो सुजश अछेह ॥ १ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ करमर वरसे मेह, झबुके वीजली हो लाल ॥ क० ॥ ए देशी ॥

॥ सरोवर तिहां नरनाथ,खणावे एकदा हो लाल॥ खणावे एकदा ॥ त्रांबानां पत्रां ताम, खणंतां शर मुदा हो लाल ॥ ख० ॥ प्रगट्या पेखी ते लोक, सोंपे नृपने जइ हो लाल ॥ सों० ॥ पण्डित तेडी भूप,वचावे ऊमही हो लाल॥ वं० ॥ १ ॥ लिपि भेदें ते वर्ण,वां ची कोइ नवि शके हो लाल ॥ वां० ॥ तव वजडावे भूप,ढंढेरो कौतुकें हो लाल ॥ ढ० ॥ए अक्षर वांचे जेह, तेहनें नृप नदनी हो लाल ॥ ते० ॥ अर्द्धराज्य समेत, आपे आनदनी हो लाल॥ आ०॥२॥ पडहो प्रधानें तेह, छ्यो तदनंतरें हो लाल ॥ ठ० ॥ सहु गया नृपनी पास, सेवक सर्जातरे लाल ॥ से० ॥ मंत्री वांची ते लेख,कहे नृपनें तिसें हो लाल ॥ क०॥ जिहांथी ए प्रगट्या पत्र, तिहांथी पूरव दिशें हो ला ल ॥ ति० ॥ ३ ॥ एक हाथ तजी खणीयें, केड लगें भूमिका हो लाल॥के० ॥ तिहां एक शिला दीर्घ, अ

त्री मुखथकी, चाह धरीनें करे ते चाकरी जी ॥ ३ ॥
जूजूवे वाहाणे होजी वसतां आपणे, कहो केम बाजे
पूरी प्रीतडी जी ॥ जो मुज नावें होजी आवी वसो
तमे, तिहारें जणाये प्रीतनी रीतडी जी ॥ ४ ॥ सरल स्व
भावें होजी मंत्री तेहनें, प्रहवण पोहोतो मनना मो
दशुं जी ॥ एकदिन भांखे होजी तव ते शेठीयो, वा
हाणनी कोरें बेठो विनोदशुंजी ॥ ५ ॥ आवोजी अ
रहां होजी मित्रजी मन रली, समुद्रनी शोभा आप
ण जोइयें जी ॥ कपटीनुं कह्युं होजी तव कस्युं तेणे,
भावी फलनें कहो किम खोइयेंजी ॥ ६ ॥ कपटें क
रीनें होजी पोतें ते पापीयें, नीरधिमांहे मंत्री नाखी
यो जी ॥ पडतां पुण्य होजी नवपद ध्यानथी, देव
संयोगें फलक ते पामीयुं जी ॥ ७ ॥ शोलमी ढालें
होजी उदयरतन कहे, परख्या विण परशुं प्रीत न
कीजीयें जी ॥ वली विदेशें होजी जइजें तेहशुं, ज
टक मलीनें दिल नवि दीजियेंजी ॥ ८ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ बहुली पाडे बूंब, कोलाहल करि कारिमो ॥ ल
लना लखमी लूंब, पामी हरख्यो पापी ते ॥ १ ॥ शि
र कूटे धरी शोक, लोकपतिजण लंठ ते ॥ पोढी मे

मन्त्रीनें मन मोवशु, समय जणावा सोय ॥ माणस मेहेल्यु तेडवा, सहुदेशी पणु जोय ॥ २ ॥ शीख ल ही ससरा कनें, सौजाग्यसुंदरी नारि ॥ साथें खेई स ज्ञ थयो, मंत्रीसर तेणीवार ॥ ३ ॥ मूल्य करी अर्द्ध राज्यनुं, आप्यां प्रवहण आठ ॥ मणि सोवन रयणें ज्नरी, ससरे सघखे ठाठ ॥ ४ ॥ जवधि तट खगें आवीयो, ससरो परिकर खेइ ॥ वोखावी पाठो वख्यो, जल जरते नयणेह ॥ ५ ॥ तव मंत्रीनें शेठ ते, वाहण हकारी वेग ॥ समुद्रमांहे ते संचस्था, निज मने भरता नेग ॥ ६ ॥ सर्वगाथा ॥ २१० ॥

॥ ढाल शोखमी ॥ जिम तरुआखें हो
जी, वसतो वानरो ॥ ए देशी ॥

॥ रतनें ज्नरीयां होजी वाहाण विखोकीनें, सुरव घू सरखी निरखी सुंदरीजी ॥ खोजें लुब्धो हो जी श्री पति शेठ ते, चित्तमांहे चिंते इम कपटें करी जी ॥ १ ॥ जलनिधिमांहे होजी नाखुं जो एहनें, तो मुज हाथें आवे ए अंगना जी ॥ नाव पण निश्चें होजी थाय ए माहरां, अहो ज्नवि जोजो ज्नाव अनंगना जी ॥ २ ॥ एम आखोची होजी प्रीति प्रधानशुं, कपटें करीनें मांमी आकरी जी ॥ जे जे जंपे हो जी म

॥ ४ ॥ मननां हो माहारा मननां मनोरथ रूप, रस
ऊरी हो तेंतो रसऊरिसुरतरु रोपीयो ॥ वेगें हो वली
वेगेंउनमूल्यो तेह, इमकिम हो मुजशुं इम किम दैव
तुं कोपीयो ॥ ५ ॥ वारू हो पीयु वारू न कीधुं एह, बट
कीहो पीयु बटकी बेह मुजने दीयुं ॥ अबला हो पीयु
अबला हुं ऊन्नी मेहेली, इमशुं हो पीया इमशुं पियाणो
ए कीयुं ॥ ६ ॥ देशो हो पीयु देशो दिलासो कोण,मुजनें
हो पीयु मुजनें हवे परदेशमां ॥ केम करी हो पीयु
केम करी राखुं आप,बाला हो पीयु बाला हुं बाली
वेशमां ॥ ७ ॥ चोरी हो पीयु चोरी मांहे सहु साख,
वचन हो पीयु वचन दीधुं हतुं तें मुने ॥ जमणे हो प्रज्ञु
जमणे हाथें जेह, ते किम हो पीयु ते किम वीसरी गयुं
तुनें ॥ ८ ॥ मलीनें हो पीयु मलीनें इणे मुज माटे, ङु
शमण हो पीयु ङुशमण ए दीधो दगो ॥ माहारे हो
पीयु माहारे हवे जगमांहे, तुम विण हो पीयु तुमविण
कोण कहोने सगो ॥ ए ॥ रोई हो श्रोता रोईते सारी
रात, सत्तरमी हो श्रोता सत्तरमी ढालें ते सुंदरी ॥ उद
यहो श्रोता उदय रतन कहे एम, उदय हो वली उद
य होसे पुण्ये करी ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ २५१ ॥

देखे पोक, फोकट प्रीति फुलावतो ॥ २ ॥ तरी जा
णो सहु तेह, आयो इहां छतावला, साहेब मुज सस
नेह,सहसा पड्यो समुद्रमां॥३॥राज सुतामें रंग, जईने
जपे इश्युं॥जडे सुख बहु भंग, भावे मुजशु भोगवो॥४॥
भवछणे भरतार,दुखजाग तुज हुं थयो ॥ भामिनी में घ
र भार, सोंप्यो हवे तुजनें सही ॥५॥ सर्वगाथा॥२४१॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥सीता हो प्रिया सी
तारा प्रजात ॥ ए देशी ॥

॥ समजी हो श्रोता समजी सुंदरी तेह, सायरे
हो पीयु सायरें इणें पाड्यो सही ॥ जूठो हो ए जू
ठो करे छे सोर, पहेलो हो पीयु पहेलो ए पापी प्री
छ्यो नही ॥ १ ॥ तज्या हो सहु तज्या तेणे शणगा
र, चाला हो तेतो चाला बहु दुःखें भरी ॥ श्रोढी हो
ते तो श्रोढी शिरना केश, हीयुं हो वली हीयु हणे हाथें
करी॥२॥ विधविध हो तेतो विधविध करे विलाप,
रोतां हो तेणे रोतां सहु रोवरावीया॥पूरव हो कहे पूर
व भवनां पाप, उदय हो आज उदय सघलां आवीया
॥३॥ में स्यो हो कहेने में स्यो कस्यो अपराध, दैवनें
हो एम दैवनें दे ठंलभडो ॥ खेह हो माहारो खेह लाख
अकाल, दीधो हो मुजनें दीधो जे दुःख तें एवडो ॥

मां कमारूज बेह ॥ शीलें सुरनर माने आण, शीलें थाये कोम कल्याण ॥ ६ ॥ शीलें पावक थाये पाणी, उदयरतन इम जांखी वाणी ॥ अढारमी ढालें जे शील पाले, आपें बे जव ते अजुआले ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्मबुद्धि मंत्री हवे, पामी फलकाधार ॥ नवप द मंत्र प्रजावथी, पाम्यो उदधि पार ॥ १ ॥ तरणे ताप संयोगथी, ताती वेलू संग ॥ मंत्री पाम्यो चेत ना, अरति मटी सहु अंग ॥ २ ॥ अरहुं परहुं जोतां थकां, शून्य नगर तिहां एक ॥ परधानें तव पेखीयुं, जेह जयंकर ठेक ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ २६४ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ सुगुण नर सुणजो रे ॥ ए देशी ॥

॥ शनिशनि पुरने पेखतो रे, पोहोतो राज्य आ वास ॥ चड्यो सातमी जूमिका रे, तिल नवि पामे त्रास ॥ १ ॥ मंत्रीसर पोहोतो मोहलमांरे, अचरज जोतो त्यांहिं ॥ मं० ॥ मनशुं बीहे नांहि ॥ मं० ॥ ए आंकणी ॥ खाट ऊपर एक उंटडी रे, पासें कुंपी दो य ॥ काला धोला अंजन तणी रे, देखी अचरज हो य ॥ मं० ॥ २ ॥ श्वेतांजनें तव कौतुकें रे, आंख्यो आंजी तास ॥ उंठडी मटी थइ अंगनां रे, तेहनें प्र

॥ दोहा ॥

॥ प्रभातें हुवे श्रीपति, वली व्यवहारी तेह ॥ आवी कहे अबला प्रत्यें, नयणे धरतो नेह ॥ १ ॥ स्वामा शोक तजो तमें, शोल सजो शणगार ॥ २ ॥ जावेंशुं मुजनें भजो, इम कहे वारंवार ॥ ३ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ करति अरजी जे जमवारि ॥ ए देशी ॥

॥ एहवा तसु वयण सुणी श्रवणेह, शील रखोपूं करवा सनेह ॥ तकजोईने तवते तरुणी, उत्तर इम आपे मनहरणी ॥ १ ॥ शेठजी सांजलो माहरी वाणी, हुमणातो सु हुं डुःखखाणी ॥ पुरें पोहोता पछी धैर्य धराशे, जे कहेशो ते तिहारें जणाशे ॥ २ ॥ इम सांजलीनें श्रीपतिशेठें, चित्तशु विचारी सांथी हठें॥ स्वस्थ कर्युं निजमन तेणे वेला, अनुक्रमें निजपुरी पोहोतो हेला ॥ ३ ॥ विप्रहपणे जव ते व्यवहारी, करियाणां धरे गेह मजारी ॥ पासें देउल देखी तेणे नारी, तव सा पेठी तेह मजारी ॥ ४ ॥ कमाड जडी कहे शील राखेवा, समरी मनशुं शासन देवा ॥ जो मुज शीलप्रभाव छे साचो, जिम जलहलतो हीरो जाचो ॥ ५ ॥ तो मुज ऊघाड्या विण एह, उघडशो

मां कमारूज वेह ॥ शीलें सुरनर माने आण, शीलें थाये कोम कल्याण ॥ ६ ॥ शीलें पावक थाये पाणी, उदयरतन इम जांखी वाणी ॥ अढारमी ढालें जे शील पाले, आपें वे जव ते अजुआले ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्मबुद्धि मंत्री हवे, पामी फलकाधार ॥ नवप द मंत्र प्रजावथी, पाम्यो उदधि पार ॥ १ ॥ तरणे ताप संयोगथी, ताती वेलू संग ॥ मंत्री पाम्यो चेत ना, अरति मटी सहु अंग ॥ २ ॥ अरहुं परहुं जोतां थकां, शून्य नगर तिहां एक ॥ परधानें तव पेखीयुं, जेह जयंकर ठेक ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ २६४ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ सुगुण नर सुणजो रे ॥ ए देशी ॥

॥ शनिशनि पुरने पेखतो रे, पोहोतो राज्य आ वास ॥ चढ्यो सातमी जूमिका रे, तिल नवि पामे त्रास ॥ १ ॥ मंत्रीसर पोहोतो मोहलमां रे, अचरज जोतो त्यांहिं ॥ मं० ॥ मनशुं बीहे नांहि ॥ मं० ॥ ए आंकणी ॥ खाट ऊपर एक उंटडी रे, पासें कुंपी दो य ॥ काला धोला अंजन तणी रे, देखी अचरज हो य ॥ मं० ॥ २ ॥ श्वेतांजनें तव कौतुकें रे, आंख्यो आंजी तास ॥ उंटडी मटी थइ अंगनां रे, तेहनें प्र

जावें स्वास ॥ म० ॥ ३ ॥ जब आसन आप्युं तेवे रे, तब तिहां वेशी प्रधान ॥ पूछे पुरनी वारता रे, सा कहे थइ सावधान ॥ ४ ॥ विदेशी सांजलो मा हरी वात, नगरतणो अवदात ॥ मांमीकहुं सुविख्या त ॥ वि० ॥ ए आंकणी ॥ एक दिवस इहां आवीयो रे, तपसी एक महंत ॥ ते मुज तातें नोतर्यो रे, भो जन काजें खंत ॥ वि० ॥ ५ ॥ आपी मुजनें आग ना रे, राजायें मनरंग ॥ पीरसो पुत्री प्रेमशुं रे, अश न एहनें बहु जग ॥ वि० ॥ ६ ॥ जबहुं गइ तस पीरसवा रे, तव देखी मुज रूप ॥ विषयरसें वाह्यो थको रे, प ड्यो मोहनें कूप ॥ वि० ॥ ७ ॥ निशि मुज पासें आ वतां रे, रक्कें जाली तेह ॥ सोंप्यो नृपनें प्रहसमे रे, कही अपराध अछेह ॥ वि० ॥ ८ ॥ शूलीयें देव रावीयो रे, रोषभरें राजन्न ॥ आरति ध्यानें ते मरी रे, पाम्यो राक्षस तन्न ॥ वि० ॥ ए ॥ नगर सेवे ऊ जाडीनें रे, वैरें वांधी राजान ॥ मुजनें मोहें करी ठं टकी रे, थापी एणे थान ॥ वि० ॥ १० ॥ रोज आ वे छे राक्षसी रे, इहां करवा मुज सार ॥ तेहनें कहु में एकदा रे, मात सुणो सुविचार ॥ वि० ॥ ११ ॥ अरण्यमांहे हुं एकली रे, किम रहुं तव कहे तेह ॥ पो

ग्य वर मलशे यदा रे, तव परणावशुं नेह ॥ वि० ॥ ॥ १२ ॥ आरति तजीनें इहां रे, वली कहुं सुण वछ वात ॥ सुखें रहे तुं तिहां लगें रे, जिहां लगें न मले नाथ ॥ वि० ॥ १३ ॥ आव्यानो अवसर थयो रे, हमणा आवशे तेह ॥ तुमनें जो आपे मुनें रे, तो तुमें याचजो एह ॥ वि० ॥ १४ ॥ एक उमणने खाटली रे, राती धोली बे कंब ॥ कणयरनी बे क र्त्तिमा रे, मागजो ते अविलंब ॥ वि० ॥ १५ ॥ गर थ बहुल बे गांठडी रे, दिव्य रतननी दोय ॥ कर मूकावणने समें रे, मागी लेजो सोय ॥ वि० ॥ १६ ॥ गुप्त रहो तमें तिहां लगेंरे, मंत्री रह्यो तव तेम ॥ उगणी शमी ए ढालमां रे, उदयरतन कहे एम ॥ वि० ॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ आवती देखी राखसी, कन्या तजी निज रू प ॥ अंजनयोगें उंटडी, ततक्षण थइ तद्रुप ॥ १ ॥ परस्पर करतां वारता, वर याचे सा बाल ॥ तव राक्षी कहे तेहनें, सुण वत्से सुकुमाल ॥ २ ॥ जग तीमां जोतां थकां, तुजनें वरवा योग्य ॥ वर कोइ मलतो नथी, कोइक जावि जोग ॥ ३ ॥ कुमरी कहे जो मात हुं, देखाडुं वरराज ॥ तव तेहनें कहे रा

खसी, तो परणावुं आज॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ १०५ ॥
॥ ढाल वीशमी ॥ इजर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी॥
॥ तव पूरव संकेतथी रे, प्रगट थयो परधान ॥
राक्षसीयें राजी थई रे, दीधु कन्या दान ॥ १ ॥ ज
विकजन जो जो पुण्य प्रजाव ॥ ए आंकणी ॥ मागी
लीधा मंत्रीसरें रे, पंच पदारथ तेह ॥ खटवाविक
खातें करी रे, कुमरीयें कह्या जेह ॥ जवि० ॥ २ ॥
रमवा गई ते राक्षसी रे, कोइक वनमां जाम ॥ तव
कुमरी कहे कंतनें रे, आपण जइयें गाम ॥ जवि०॥
॥ ३ ॥ निजपुरनी मंत्री कहे रे, हुं नवि जाणुं वा
ट ॥ तो किहां जइयें कामिनी रे, ए मोहोटो उचा
ट ॥ जवि० ॥ ४ ॥ स्वेसकवे कहे सुंदरी रे, जवमा
रीजें खाट ॥ मनमाने मेहेले पुरें रे, तव थाये गह
गाट ॥ ज० ॥ ५ ॥ पूठें आवे जो राक्षसी रे, तो
राती आंखे तेह ॥ इणजो जेम जाये गली रे, मीठु
जेम बूठे मेह ॥ ज० ॥ ६ ॥ जाशे तव पाछी फरी रे,
निजस्पर्शे थइ निस्तेज ॥ आपणे आपण थानकें रे,
आणु मननें हेज ॥ ज० ॥ ७ ॥ समुदाय सघलो ले
इनें रे, बेशी खाटली मांहें ॥ कथे इणी तव संचरी
रे, आकाशें उल्लाहें ॥ ज० ॥ ८ ॥ ते गगनें गळ्या

पळी रे, राखसी आवी त्यांय ॥ निजथल शून्य नि हालीनें रे, धवधव पूंठे धाय ॥ ज० ॥ ए ॥ जइ मली तव मंत्रीयें रे, राती कांबें जोर ॥ ताडी तव पाछी फरी रे, पोहोती पोतानें ठोर ॥ ज० ॥ १० ॥ उद यरतन कहे ए बनी रे, वारू वीशमी ढाल ॥ पुण्यबलें अफल्यां फले रे, सुख लहीये रसाल ॥ ज० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे गंन्नीरपुर पाटणे, जिहां छे पहेली त्रीय दो य ॥ ते पुरनां उद्यानमां, मंत्री पोहोता सोय ॥ १ ॥ सुंदरी सर्व समुदायशुं, मेहेली तेणे ठाम ॥ पुरमां मंत्री परवस्यो, थानक जोवा काम ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ४ए७ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नां रे प्रन्नु नहीं मानुं ॥ ए देशी ॥

॥ तव एक वेश्या वाही ते वनथी, समुदायशुं निजगेहेंरे ॥ लेइ गइ लंपट ललचावी, ते नवल वधू नें नेहें ॥ १ ॥ श्रोतारस चाखोने, अहो शील सदा फल अंब, रूडीपरें राखोनें ॥ ए आंकणी ॥ आचर ण गणिकानां अवलोकी, युगति सवे तस जोई रे ॥ सुंदरी निज शील राखवा काजें, चित्तमां विचारे सो इ ॥ श्रो० ॥ २ ॥ सा गुणउंरी एक उंरामांहे, पेठी कमा ड जडीनें रे ॥ शील प्रन्नावें ते उघडी नही, अनेक

गया अहीनें ॥ श्रो० ॥ ३ ॥ पहेला पण ते पुरमां प्रेमदा, विजयसिरिनामें जेहो रे॥ कोइक राजकुमरें करी हांसी, तव नासीने तेहो ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ तेप ण शील रखोपा काजें, कोइक देउल माहे रे ॥ पेठी कमाड जडीनें पोतें, तेणे अवसर त्यांहें ॥ श्रो० ॥ ॥ ५ ॥ व्यतिकर ते जाणी वसुधेशें, निजपुर अनरथ जीतें रे ॥ कोटवालने कह्यी पुरमांहे, पडह्यो वजडा व्यो प्रीतें ॥ श्रो० ॥ ६ ॥ कमाड जे ए त्रणे उघाडे, बोलावी त्रण नारी रे ॥ अर्द्धराज आपी नृप तेहनें, परणावे सकुमारी ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ पडह्यो ते त्यांलवी प्रधानें, बोलावी ते वाली रे ॥ पूरव रहस्य कहीनें त्रणे, सुपरेंशुं समजावी ॥ श्रो० ॥ ८ ॥ कामनी त्रणे कमाड उघाडी, पीयुनें पाये लागी रे॥ अर्द्ध राज्यशुं अंगजा आपी, राजा थई गुणरागी ॥ श्रो० ॥ ९ ॥ श्री पतिने वेश्या संबंधि, तव मंत्रीयें संबध रे ॥ मांडीने कह्यो महिपति आगें, ते सुणी कोप्यो नरिंद ॥ श्रो०॥ ॥ १० ॥ ते बेहुनें तेडीनें पुछे मन्त्रीनुं जे कांइ रे ॥ ते सरवे सोंपो संभाली ॥ दोरा दशी तांइ ॥ श्रो० ॥ ॥ ११ दंडीनें दीधो देसूटो, ते वणिक अने वेश्या नें रे ॥ कीधां कर्म न छूटे कोइ, जे पाप खसाणां पा

नें ॥ श्रो० ॥ १२ ॥ एकवीशमी ढालें एम बोले, उद यरतन मुनि श्रापें रे ॥ धर्म त्यजीने धंधें लागा, रखे कोइ राचो पापें ॥ श्रो० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रर्द्धराज्यनी संपदा, चतुर त्रीया लेइ चार ॥ श्रीपुर नगरें संचस्यो, तव मंत्री तक धार ॥ १ ॥ ह यवर बहुला हूंकलें, गयवर गाजे न्नूरि ॥ रथ पयद लशुं परवस्यो, जाणे जलनिधि पूर ॥ २ ॥ पापबुद्धि नृप ऊपरें, चाल्यो चित्तधरी चूंप॥ परदल श्राव्युं जा णीनें, नय पाम्यो ते न्नूप ॥ ३ ॥ पेठो गढ रोहो करी, पोल जडी पुर मांय ॥ पुरजन सघलां खलन्न ल्यां, आकुल व्याकुल थाय ॥ ४ ॥ मंत्रीसरें तव मो कल्यो, दिन श्राथमते दूत ॥ जितारि नृपनें जइ, श्राखे एम अदन्नुत ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३१६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हल्या सुणरे सुण महाकाल ॥ ए देशी ॥

॥ मुज स्वामी महा मत्सराल, चालती छे जूजनी जाल ॥ महीयले कोइ सामी न मंके, बलीयो जे छी कतां दंके ॥ १ ॥ दिन दिन छे तेज सवायो, जननी कोइ एहवो न जायो ॥ एहनें जे उत्तर वाले, हीमनी

परें नीर्क्तायासे ॥२॥ जग एहवो न ठे कोण योध, खमे जे एहनो क्रोध ॥ जेणे मुज स्वामीशुं ताणी, ते हर्नां ऊतारया पाणी ॥ ३ ॥ कोण एहवो मूढ कहावे, जेह कालशुं याय भरावे ॥ तक सघली साधी तूठो, पण रूठो ते नही रूठो ॥ ४ ॥ एम कहाव्युं ठे मुज नार्ये, जो युद्ध करे मुज सार्थे ॥ तो रणनी भूमें वहेला, श्रावजे रवि उग्यां पहेलो ॥ ५ ॥ नही तो वर्ते त रणा खेड़, नीकसे पुरनें पुंठि देइ ॥ जो जोइश पार्छु फेरी, तो नासीश हुं नस घेरी ॥ ६ ॥ एवां दूतनां सांजली वयणां, खसार्टे चढावी नयणां ॥ बोल्यो श्री पुरनो महाराजा, क्षत्रीधर्मनी राखवा माजा ॥ ७ ॥ श्रख्या मरवुं ठे एक वार, श्राखर सहुनें निर्धार ॥ कोण न्हानोनें कोण महोटो, जोतां ठे जखनो परपोटो ॥ ८ ॥ तुज स्वामीनां ए ढंग, जेम दीवे पडे प तंग ॥ जोरावर यशनो श्चर्थी, इहां श्राव्यो ठे निज पुरथी ॥ ए ॥ तो हुंपण साहामो यार्ठ, मरु पण नाशी न जाठं ॥ जा कहेजे वहुवलपूरें, युद्ध करशुं ऊगते सूरें ॥ १० ॥ यामिनी माटे वरवाजा, जस्या ठे राखवा माजा ॥ परजातें पोहोत्यो ठघाडी, वहथुं र णतूर वजाडी ॥ ११ ॥ मंत्रीनें जइ दूत जांखे, एवो

युद्ध तणी होंश राखे ॥ ढाल उदयवदे मन खोली, बावीशमी एणी परें बोली ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रातः समें बहुपरें सजी, सेन सबल चतुरंग॥ पापबुद्धि नृप पुरथकी, नीसरीयो मनरंग ॥ १ ॥ अ पशुकन थाते थके, राजा ते रण खेत ॥ पोहोतो ब हुदल पूरशुं, सूरगुणें उपेत ॥ २ ॥ साहामे साहामां दल बे मळ्यां, रोपीनें रणथंत्न ॥ रणनां वाजां वा जते, मांड्यो युद्धारंत्न ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३४५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ शुं करीयें जो मूलज कूडुं ए ॥ देशी ॥

॥ हाथीशुं त्नडे तिहां हाथी, घोडाचढ घोडाचढ साथी ॥ वाणीयें बाणीनें पालाशुं पाला, रथीशुं वढे रथ वाला ॥ १ ॥ नालें नाल मूके तिहां बहुली, घूआडे थइ रविछबी फुहुली ॥ गाज तणी परें मयगल गाजे, त रवारने मीसे वीज विराजे ॥ २ ॥ बाणमिसें वरसे जलधार, जलनी परें वहे लोही अपार ॥ धडपडतां थाये धुसूका, जवासानी परें कायर सूका ॥ ३ ॥ तुं ब तणीपरें शिर तणाय, रक्ते रणनी त्नूमि सींचाय ॥ रजपूरें गगनांतर छायो, एन जाणे वरसालो आ

यो ॥ ४ ॥ शुजट तणा सिंहनाद तिहां थाय, तेणे करी काने पब्नु न सुणाय ॥ अपत्सरा बहु बेशी विमानें, आवी तिहां वरवा शुजटानें ॥ ५ ॥ रोषजरें पडतां इणी रीतें, मतिसागर मंत्रीसर जीतें ॥ पाप बुद्धि नृप बांधी रणमां, ऊचो राखी शुजटनां गणमां ॥ ६ ॥ मंत्रीसर पूछे महाराज, मुजनें तमें उंलखो छो आज ॥ सूर्यनीपरें मुजनें स्वाम, कोण नवि जाणे नृप कहे ताम ॥ ७ ॥ ते कहे एम नथी पूछता अमे, पण मुजनें उंलखो छो तमें ॥ तब नरेसर जा खेनाना, सचिव कहे सुणो नाथ प्रजाना ॥ ८ ॥ धर्मबुद्धि छु तुम प्रधान, धर्मनुं फल सुमने राजान ॥ देखाडवा आव्यो हुं दोडी, मही मंत्रीसर कहे कर जोडी ॥ ए ॥ छे अथवा नथी कहे देव, धर्म सदा फल दायक देव ॥लखमी लखनां लील विलास, ध र्मथकी मुज पोहोती आस ॥ १० ॥ धर्मनुं फल दे खाडी धर्में, बाल्यो जूप मंत्रीयें मर्में ॥ पापनुं पाशु तजी अवनीशे, श्रीजिन आण धरी निज शिर्सें ॥ ॥ ११ ॥ मंत्रीयें मूक्यो महाराजा, वाज्यां तिहारें यशनां वाज्यां ॥ बेहुने प्रीति थनी बहु जंगें, श्रीजिन धर्म करे एकरंगें ॥ १२ ॥ उदयरत्न कहे कमल आ

णी, जे नर सुणशे श्रीजिनवाणी ॥ त्रेवीशमी ढालें ते तरशे, नरक तणा दुःख दूरें करशे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महीपतिनें मंत्री बेहु, रंगेंशुं करे राज ॥ ते नगरें तरतीबशुं, करे वली धर्मनो काज ॥ १ ॥ केतेक कालें केवली, आव्या तिहां उद्यान ॥ वनपालकना मुखथकी, सांजली ते राजान ॥ २ ॥ बहु परिवारें परवस्यो, सचिवनें लेइ साथ ॥ वन जइ वंदे साधुनें, जावें ते जूनाथ ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३४७ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ काठबानी ॥ ए देशी ॥

॥ केवलज्ञानी ताम, एम उपदेशे हो अहो जवि धारजो ॥ जिनवाणी सुख धाम, श्रवणे सुणिनें हो सांसो निवारजो ॥ १ ॥ मेहेली मिथ्यामति जर्म, समकेत पामी हो शुद्ध आराधजो ॥ देव गुरुनें धर्म, सुविधें सेवि हो शिवसुख साधजो ॥२॥ वर्जी विषय विकार, अणुव्रत आदें हो व्रत तमें आदरो ॥ जे छे श्रावकनां बार, मुगतिपुरीनो हो पंथ ए पाधरो ॥३॥ पंच महाव्रत जार, प्रेमें करीनें हो प्राणी जे धरे ॥ पामे ते जवपार, उत्तमगतिमां हो अथवा अवतरे ॥ ॥ ४ ॥ दुविध धर्म कह्यो एह, जयलीलानें हो पामे

सहु जेहथी ॥ आर्ति दुःख अठेह, पापें पामे हो विरमो तेहथी ॥ ५ ॥ पापना रागी जेह, ते नर आखर हो अधमगति संचरे॥ पावे दुःखनु गेह, काल अनंतो हो नवमांहे फरे ॥ ६ ॥ धर्मनुपाशो धीर,पुरुष जे करशे हो प्रेमेशु परखीनें ॥ ते खेहेशे नवतीर, शिववधू तेहने हो वरसे हरखीनें ॥ ७ ॥ धर्म ते धन सुख मूल, धर्मे पामें हो सुरनी संपदा ॥ आराधो अनुकूल, धर्मधरामां हो सार जाणी सदा ॥८॥ चोवीशमी ए ढाल,रसीया प्राणी हो जे धरशे हदे,संपति सुख सुरसाल,तेहज खेहेशे हो उदय रतनवदे॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ वीधी धर्मनी देशनां, केवलीयें इणि नांत ॥ तव पूछे तक पामीनें, महीपति ते मन खांत ॥ १ ॥ कहो नगवन् करुणा करो, में पूरव नव मांहिं ॥ करणी एहवी शी करी, जे पाप रुच्युं मुज प्राहिं ॥ २ ॥ पुण्य प्रधानें शु कर्युं, जे एणे नवें एह ॥ ऋद्धि पाम्यो रसीयामणी, धर्मशुं धरतो नेह ॥ ३ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥ घरें आवोजी आ
घों मोरीउं ॥ ए देशी ॥

॥ तव कहे करुणानिधि केवली, तमें पूरवलें न

वे बेह ॥ विजयपुरें व्यवहारीनां, नंदन हूंता गुणगे
ह ॥ १ ॥ इम कहे करुणानिधि केवली ॥ ए आंक
णी ॥ हांजी रूप पुरंदर सुंदरा, सुंदर पुरंदर नाम ॥
हांजी बांधव बे वधता तिहां, यौवन पाम्या अभि
राम ॥ इम० ॥ २ ॥ हांजी कोइक कर्म कल्लोलथी,
सुंदर मिथ्यामति संग ॥ हांजी घर तजी ने तापस थयो,
अज्ञानें दमि बहु अंग ॥ इम० ॥ ३ ॥ हांजी धूणी
पाणी गणनें. वनफल माटी विभूति ॥ हांजी अहो
निशि तेहनें अभ्यसी, जटाधर ते अवधूत ॥इम०॥
॥४॥ हांजी उर्ध्वबाहु उंचे मुखें, पंचाग्नि साधे सो
य ॥ मौनमुखें बोले नही, नख केश वधारे दोय ॥
॥ इम० ॥ ५ ॥ हांजी कंद भखी काया कसी, खांतें
हणे खटकाय ॥ हांजी दया दिलमां नविधरे,शौचध
र्मे धरे सदाय ॥ इम० ॥ ६ ॥ हांजी अनुक्रमें पूरी
आउखुं, तिहांथी मरीनें आंहिं ॥ हांजी अज्ञान क
ष्ट प्रतापथी, तुं पापबुद्धि थयो राय ॥ इम० ॥ ७ ॥
हांजी उदयरतन एम उच्चरे, पचीशमी ढालें जोय॥
हांजी समरथ नही कोइ तारवा, जैनधर्मविना जग
कोय ॥ इम० ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ३६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरंदर साधु प्रसंगथी, श्रावक थयो सुजाण ॥ जीवाजीव पुण्यपापने, प्रीछे बुद्धि प्रमाण ॥ १ ॥ ध र्मप्रजावें धन घणुं, पुरदर पाम्यो तेह ॥ जलनिधिनां जलनी परें, जेहनो नावे छेह ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ३६९ ॥

॥ ढाल उवीशमी ॥ बूगदलपादल हो ॥ ए देशी ॥ अथवा ते सुत पांचेहोके प ठन करे नही ॥ ए देशी ॥

॥ एकदा ते पुरंदरहोके, श्रीजिननो धारू ॥ प्रासा द करावेहो, पुरमां वीवारू ॥ १ ॥ जिनजुवनसे जिहां रे हो, श्रीजा भाग तणु, धर्यु समर्पितेहो, पुरदर तेह जणु ॥ २ ॥ बहुधन खरचीने हो, जिनहर में जूठं ॥ महोटो मगाव्यो हो, लखमी व्यय क्रूठं ॥ ३ ॥ ए नी पायातुं हो, फल मुजनें कांइ, होशेके नही हूए हो, के जाणे सांई ॥ ४ ॥ आदि अंतने मध्ये हो, इम सं शय आणी ॥ पोसें ते भांज्यो हो, सम्यक्फल जा णी ॥ ५ ॥ हाहा शु एमें हो, अधिक चिंत्युं एहवुं ॥ फल छे सही एहनुं हो, मुगति आपे तेहवुं ॥ ६ ॥ श्रीजिनवर केरा हो, बहु प्रासाद करी ॥ बहु बिंब भ राव्यां हो, मनशुं हर्ष धरी ॥ ७ ॥ तीर्थ यात्रा तप

हो, गुरु साहामी देव ॥ सामायिक पोसह हो, सेवी नित्य मेव ॥ ७ ॥ तिहांथी ते मरीनें हो, मतिसागर नामें ॥ मंत्री थयो ताहरो हो, धर्मनें जे कामें ॥ ए॥ कीधा हता जेणे हो, धर्मकर्म जेहवां, प्रगटफल तेणे हो, इहां पाम्यां तेहवां ॥ १ ॥ छवीशमी ढालें हो, इणी परें उदय कहे ॥ जगमां धन्य तेहनें हो, जिन मत जेह लहे ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ३७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीक्षा लेइ तपतपी, पामी केवलज्ञान ॥ मुक्ति जाशो तमे बे जणा, सांजल तुं राजान ॥ १ ॥ रोग शोग दोहग हरे, आपे परमानंद ॥ धर्मकरो ते धस मसी, फेडे जे जवफंद ॥ २ ॥ परमप्रजुता पद सवे, सुरपद शिव सोजाग ॥ पुण्यपसायें, पामीयें, जूपतिसुण महाजाग ॥ ३ ॥ इम केवलियें उपदिश्यो, पूरव जव विरतंत॥ महीपति मंत्री बे जणे, सद्दह्यो ते तंत ॥ ४ ॥ वंदी सहु मंदिर वल्युं, केवली कीध विहार ॥ महीपतिनें मत्री घरें, वर्त्यो जयजयकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामा जीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ जयजयकार धर्मफल जाणी, आठे पोहोर आ

॥ दोहा ॥

॥ पुरंदर साधु प्रसंगथी, श्रावक थयो सुजाण ॥ जीवाजीव पुण्यपापने, प्रीछे बुद्धि प्रमाण ॥ १ ॥ ध र्मप्रभावें धन बहु, पुरंदर पाम्यो तेह ॥ जलनिधिनी जलनी परें, जेहनो नावे छेह ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ३६७ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ बूठादलभाइल हो ॥ ए देशी ॥ अथवा ते सुत पांचेहोके प ठन करे नही ॥ ए देशी ॥

॥ एकदा ते पुरंदरहोके, श्रीजिननो चारू ॥ प्रासाद करावेहो, पुरमां दीवारू ॥ १ ॥ जिनभुवनते जिर्ह्ण रे हो, श्रीजा जाग तणु, थयुं तवचिंतेहो, पुरंदर तेह घणुं ॥ २ ॥ बहुधन खरचीने हो, जिनहर में जूठं ॥ महोटो मनाव्यो हो, खलमी व्यय छूठं ॥ ३ ॥ ए नी पायानुं हो, फल भुजनें कांइ, होशेके नही भूप हो, के जाणे सांई ॥ ४ ॥ आवि अतने मध्ये हो, इम सं शय आणी ॥ पोतें ते भांज्यो हो, सम्यक् फल जा णी ॥ ५ ॥ हादा शु एमें हो, अधिक चिंत्युं पहवुं ॥ फल छे सही पहनुं हो, मुगति आपे तेहवुं ॥ ६ ॥ श्रीजिनवर केरा हो, बहु प्रासाद करी ॥ बहु बिंब भ राव्यां हो, मनशु हर्ष धरी ॥ ७ ॥ तीर्थ यात्रा तप

हो, गुरु साहामी देव ॥ सामायिक पोसह हो, सेवी नित्य मेव ॥ ७ ॥ तिहांथी ते मरीनें हो, मतिसागर नामें ॥ मंत्री थयो ताहरो हो, धर्मनें जे कामें ॥ ए॥ कीधा हता जेणे हो, धर्मकर्म जेहवां, प्रगटफल तेणे हो, इहां पाम्यां तेहवां ॥ १ ॥ छवीशमी ढालें हो, इणी परें उदय कहे ॥ जगमां धन्य तेहनें हो, जिन मत जेह लहे ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ३७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीक्षा लेइ तपतपी, पामी केवलज्ञान ॥ मुक्ति जाशो तमे बे जणा, सांजल तुं राजान ॥ १ ॥ रोग शोग दोहग हरे, आपे परमानंद ॥धर्मकरो ते धस मसी, फेडे जे जवफंद ॥ २ ॥ परमप्रजुता पद सवे, सुरपद शिव सोजाग ॥ पुण्यपसायें, पामीयें, जूपतिसुण महाजाग ॥ ३ ॥ इम केवलियें उपदिश्यो, पूरव जव विरतंत॥ महीपति मंत्री बे जणे, सद्दह्यो ते तंत ॥ ४ ॥ वंदी सहु मंदिर वल्युं, केवली कीध विहार ॥ महीपतिनें मत्री घरें, वर्त्यो जयजयकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामा जीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ जयजयकार धर्मफल जाणी, आठे पोहोर आ

राधो ॥ पापतणी मति पाछी ठेली, शिवमारगनें सा
धो रे ॥ १ ॥ भवि धर्म सदा शुरूधारो ॥ श्रीजिन
भाषित जगजन तारक, वारक दुरित विकारो रे ॥
॥ भवि० ॥ २ ॥ संक्षेपें ए चरित्र प्रमाणे, रहस्यक
थानु दाख्युं ॥ मिछामिदुक्कड ते मुने होजो, अधिकु
ओछुं जे भाख्यु रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ तपगछ मरुय
तिलक समोवड, श्रीराजविजय सूरि राजें ॥ तसुपा
टें श्रीरत्नविजय सूरि, रत्नसरिखो गाजे रे ॥ भवि०॥
॥ ४ ॥ श्रीहीररत्न सूरि तसु पाटें, श्रीजयरत्नसूरिंद
॥ सांप्रत भावरत्नसूरि भेटो, अधिकधरी आणंदो
रे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ श्रीहीररत्नसूरिश्वर केरा, चारु
शिष्य सोहाया ॥ पंडितलब्धिरत्न तस विनयी, सिद्धि
रत्न उवझाया रे ॥ भवि० ॥ ६ ॥ गणिवर मेघरत्न
गुणवरीयो, अमररत्न तसु शिष्य ॥ शिवरत्न तसु शिष्य
शोहावे, मुज गुरु महुल जगीश रे ॥ भवि० ॥ ७ ॥
सिद्धिरस मुनि इन्दुसमयें (१७६८) एकादशी अ
जुआली ॥ मागशिरनी रविदिन शिवयोगें, नक्षत्र अ
श्विनी भाली रे ॥ भवि० ॥ ८ ॥ ए में रास रच्यो
अति रूडो, मनोहर पाटण मांहे ॥ पचासर प्रभु
पास पसायें, दुःख सवि दूरें पलाये रे ॥ भवि० ॥ ९ ॥

मंगलवेलि फली आज माहारे, रास ए जे सुणे रंगें ॥ तस घर जयकमला करे वासो, उत्तमगुण वसे अंगे रे ॥ १० ॥ सत्तावीशमी एह शोहावी, उदयर तन कही ढाल ॥ धन्याश्री रागे श्रीसंघनें, नित्य हुउ मंगलमाल रे ॥ नवि० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०६ ॥

॥ इति पंमित श्रीउदयरत्नजी महाराज कृत पापबुद्धिराजा अने धर्मबुद्धि मंत्रीश्वरनो रास संपूर्ण ॥

॥ अथ॥

॥ श्रीसज्जन विषे प्रस्ताविक दोहा ॥

॥ सज्जन सरसो नेहडो, म करिश मूढ गमार॥ त्रिठआं डुख देषी परें, जिम करवतनी धार ॥ ॥ १ ॥ सज्जन माणस जव मिले, तो नवि कीजे लाज ॥ समाचार हियातणां, सारीजे सवि काज ॥ २ ॥ नयणह् अतर कूगरां, मन अतरे न कोय ॥ सज्जनसु मेलावडो, जो विहि करे तो होय ॥ ३ ॥ कारण किमपि न जाणिए, सज्जण हुआ सरोस ॥ के डुज्जण भंभेरिया, केइ हमारो दोस ॥ ४ ॥ तुऊसु मिलवा टलवले, सज्जन मारु मन्न ॥ पण मिलवु परवश थयुं, सुणजे तूहि सज्जन ॥ ५ ॥ सज्जन तुम्म वियोगडे, जे मुऊ मन अति डुरूक ॥ ते डुख जगदीश्वर लहे, में न कहाये मुरूक ॥६॥ मुऊ ऊपर माया नथी, जाणन थारो थार॥ई तुऊ ऊपर आवट्, ते जाणे किरतार ॥ ७ ॥ जिण दीठे मन उल्लसे, जिण दीठे सुख होय ॥ ते सज्जण दीसे नहि, अवर घणेरां होय ॥ ८ ॥ सज्जण संदेसो मोकले, दैवठं किसुं विठोह ॥ तुम्हें परदेशें रही, खबर न पूठो मोह ॥ ए ॥ सज्जण तेवा मित्र करे, जेवा फोफल पंग ॥ आप

करावे कडकडा, परह चडावे रंग ॥ १० ॥ सारसडां मोती चुणे, चुणे तु विरमे कोय ॥ सज्जण माणस जो मिले, मिले तु विहडे कोय ॥ ११ ॥ सज्जण सरिसी गोठडी, साजणशुं संयोग ॥ पुण्य विना नवि पामियें, केनो कीजे सोग ॥ १२ ॥ मास वरिस निशि दिन सफल, घडिअज लेखे सोय ॥ साजणशुं मेलावडो, जिणवेला मुझ होय ॥ १३ ॥ तुझ गुण मुझ हियडे वश्या, अवर न बेशे चित्त ॥ चिंतामणि जिणि सेवि उं, काच न ते राचंत ॥ १४ ॥ घडी होय मासह सम्मी, वरस समा दिन जाय ॥ तुझ वियोग जव सांज रे, तव जोजन विषथाय ॥१५॥ कहतां दीशे कारमुं, तुझशुं प्रेम अपार ॥ घडिए अंतर जाणिए, दीशे वली किवार ॥ १६ ॥ हियडा जीतर दवबले, बाहिर धूम न होय ॥ करतां कीधो नेहडो, किम पालीशे सोय ॥ १७ ॥ सज्जण किमे न वीसरे, देश विदेश गयांइ ॥ जिम जिम सज्जण संजरे, तिम तिम नय न झरांइ ॥ १८ ॥ सज्जण सहजें दूबला, जण जा णे सीदाय ॥ जस हियडे करवत वहे, ते किम मा तो थाय ॥ १९ ॥ सज्जन बिहुं परें वीसरे, हियडां मांहिथवांइ ॥ के सूतां घण नींदजर, के पुण पठे

मुयांइ ॥ २० ॥ सज्जन वोलावी वल्या, लोचन कुआ निरास ॥ मन मोरु साथें गयु, ते नवि मेले आस ॥ २१ ॥ जीभे वयण न ऊपजे, पग आघो न भराय ॥ सज्जन मेली चालतां, बोल न कह्यो जाय ॥ २२ ॥

आर्या

॥ पिय विरहे जं दुक्ख, अहवा मिलिएण ज हवइ सुक्ख॥सोचेव तं वियाणे, अहवा जाणेइ सवन्नू॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ रस पाने रस फोफलें, अति रस चूने होइ ॥ सब रस जोइ मिल्हिआ, पिय रससमो न कोइ ॥ ॥ २४ ॥ साजनिआं सहु को करे, अमे न करशु कोइ॥ जेसा सुख सनेहको, तेसा फिर दुख होइ ॥ ॥ २५ ॥ सज्जन गुण अंगार हुआ, हियरूं धूके तेण॥ अवगुण नीर न संपजे, वीसारीजे जेण ॥ २६ ॥ आवे साजन नीडडी, सुहणां पामु सोइ ॥ सुहणे सज्जन आवशे, अवर न दूजा कोइ ॥ २७ ॥ लागुं चित्त सुजाणशुं, वरजे लोक अजाण ॥ तेशु तोडे किमसरे, जेशुं जीव पराण ॥ २८ ॥ सज्जनने सज्जन मिल्यां, सामी थाये प्रीति ॥ दूधमांहि शाकर भली, एहज रूडी रीति ॥ २९ ॥ किं किज्ञ तिण स

जाणे, जीड न जडे जेण ॥ अजाह कंठ पयोहरा, दूध न पाणी तेण ॥ ३० ॥ गाम नगरमें जोइआ, सुजन जलेरा होय ॥ जिहशुं मन वाध्युं रहे, तेवो न मिले कोय ॥ ३१ ॥ सज्जन तुफ विरहानलें, मुफ मन वले अपार ॥ सोम दृष्टि जल सींचतां, कर जो अमारि सार ॥ ३२ ॥ जे जड फमी सुसज्जाणे, रेही नेह अपार ॥ ते फड किमे न नीसरे, मिले जु लख्क लुहार ॥ ३३ ॥

॥ आर्या ॥

॥ चित्तं तुह पासढं, तुह गुण सवणेण सवण संतोसो ॥ जीहा नाम ग्गहणे, एगा दिठी तडप्फडइ ॥ ३४ ॥

सोरठा

॥ अगर तणे अनुसार, ठेदंतां परिमल करे ॥ ते सज्जाण संसार, जोया पण दीशे नहीं ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंदा चंदन केलि वन, पवन निरंतर नीर ॥ सज्जन तारे रूसणे, पंचे दहे शरीर ॥ ३६ ॥ सहिए सुपुरिस सेविए, जो घर रिद्धि न होय ॥ सूकां चंदन काठ जिम, गंध न छंडे तोय ॥ ३७ ॥ जिण दीठे मन उल्लसे, नयणे अमिय फरंत ॥ ते सज्जन किम वीसरे,

जो शिर सध्य पढत ॥ ३८ ॥ मरुडुं एहज चीतडी, जे सुकली सुजणेण ॥ जूआ अस्कर वांचतां, छड मां की नयणेण ॥ ३९ ॥ गिरुआ सहजें गुण करे, कारण किंपि न जाण ॥ करसण सींचे सर भरे, मेह न मागेदाण ॥ ४० ॥ सज्जन तणां संदेसडा, सुणतां हुए अपार ॥ जिम जिम वचि वलि पूछिए, तिम तिम आवे पार ॥ ४१ ॥ सजन सेरि सामा मिल्या, किम करिसां ए लेसि ॥ शिर नामिस कहां मिसें, नयणे साहे देसि ॥४२॥ चदो चदन पवन जल, चारे जो वि मिलंत ॥ तो पिय माणस बाहिरा, निश्चय ताप करंत ॥४३॥ सज्जन सकलहि लोकमें, ता समानसो एक ॥ विहिने अनन्य यह कियो, नांहिन किये अनेक॥४४॥ नींद रूस अणयारणां, सज्जन मिलियां जाह ॥ आधी करी निवालुली, साइ दीजें तांह ॥ ४५ ॥ सज्जन वोलावी चल्या, लोचन हुआ निरास ॥ मन मोरुं सहें गयु, ते नवि मेले आस ॥ ४६ ॥ सज्जन ते सज्जन हुये, दुज्जन किमेन हुंति ॥ कुडडजिलें अगरनें, सोहे होय सुगध ॥ ४७ ॥ सज्जन दीठे कवण गुण, जे अंगे न मिलंत ॥ पेखइ जलहर उनमण, पिय विण तस न हरंत ॥४८॥ जीनज मीठी मुख हशे, लीसे पर

उपगार ॥ सरल चित्त बुधि आगली, ते सज्जन अव
तार ॥ ४ए ॥ सज्जन सहज तुमारडुं, खरुं धुतारुं मि
त्त ॥ देखत दूर देशांतरें, चोर्युं मारुं चित्त ॥ ५० ॥
सज्जन गुण ता अति घणा, लखतां न लहुं पार ॥
जेन लखाए तेह तो, इमज खटके सोवार ॥ ५१ ॥
सज्जन थोडा हंस जिम, उटांके दीसंति ॥ डुर्जन
काला काग जिम, घर घर घणा जमंति ॥ ५२ ॥
सज्जन थोडा डुज्जण घणा, माणस मरवा लोग ॥
नयणा करजो नींड्डी, नथी मिल्यानो योग ॥ ५३ ॥

सोरठा

॥ जो फाटो आकाश, तो किम सीवीस रे हिया ॥
जेह तणुं वीसास, ते साजण वयरी हुवा ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हियडुं तो सप्पीर जर्युं, ज्युं तारायण अप्र ॥
जाम मिलेसी सज्जणा, ताम कहेशूं सव्व ॥ ५५ ॥
अवस जे नवि आविआ, वेलें जे न पहुत ॥ ते स
ज्जण तिण देशमां, करियो राज बहुत्त ॥ ५६ ॥

सोरठा

॥ जो वालहू विचार, जूले तो जरिये किशूं ॥ अ
वगुण एक विचार, सास हिये साजण तणा ॥ ५७ ॥

जो शिर सव्य पडंत ॥ ३७ ॥ मरुढु पहुज चीठडी, जे मुकली सुजणेण ॥ जूआ अरकर वांचता, ऊढ मां क्री नयणेण ॥ ३९ ॥ गिरुआ सहजें गुण करे, कार ण किपि न जाण ॥ करसण सींचे सर भरे, मेह न मागेदाण ॥ ४० ॥ सज्जन तणां संदेसडा, सुणतां हुए अपार ॥ जिम जिम वलि वलि पूछिए, तिम तिम आवे पार ॥ ४१ ॥ सजन सेरि सामा मिल्या, किम करिसां ए खेसि ॥ शिर नामिस कहां मिसें, नयणे साहे देसि ॥४२॥ चवो चवन पवन जल, चारे जो वि मिलंत ॥ तो पिय माणस बाहिरा, निश्चय ताप करंत ॥४३॥ सज्जन सकलहि लोकमें, ता समानसो एक ॥ वि हिने अनन्य पद कियो, नांहिन [illegible]
नींव करु अवधारणां, सज्जन [illegible]
करी निषाडुकी, सांइ दीजें [illegible]
वोलावी चल्या, लोचन हु [illegible]
सबें गयु, से नवि मेले छ [illegible]
ज्ञान हुय, दुज्ञान किमेन
तोहे होय सुगंध ॥ ४७ ।
अंगे न मिलंत ॥ पेख
तस न हरंत ॥४८॥ जी

चौपाइ

[illegible] पूता, जेठ [illegible]
[illegible] न विधूता, [illegible]

उपगार ॥ सरल चित्त बुधि आगली, ते सज्जन अव
तार ॥ ४९ ॥ सज्जन सहज तुमारडुं, खरुं धुतारुं मि
त्त ॥ देखत दूर देशांतरें, चोर्युं मारुं चित्त ॥ ५० ॥
सज्जन गुण ता अति घणा, लखतां न लहुं पार ॥
जेन लखाए तेह तो, इमज खटके सोवार ॥ ५१ ॥
सज्जन थोडा हंस जिम, ऊटांके दीसंति ॥ दुर्जन
काला काग जिम, घर घर घणा भमंति ॥ ५२ ॥
सज्जन थोडा दुजण घणा, माणस मरवा लोग ॥
नयणा करजो नींदडी, नथी मिल्यानो योग ॥ ५३ ॥

सोरठा

॥ जो फाटो आकाश, [illegible] सीवीस रे हिया ॥
जेह तणुं वीसास, ते [illegible] संसार ॥ [illegible]

॥ [illegible] ॥

॥ हियडुं तो सधीर [illegible] तारायण [illegible] ॥
जाम मिलेसी सज्जणा, नाम [illegible] ॥ ५५ ॥
अवस जे नवि आविया, [illegible] न पहुत ॥ ते स
जण तिण देशमां, करियो राज बहुत ॥ ५६ ॥

सोरठा

॥ जो वालहू विचार, भूले तो भरिये किशुं ॥ [illegible]
वगुण एक विचार, सास हिये साजण तणा ॥ [illegible] ॥

ह
स
अ
ए
बु
स
गर

॥ दोहा ॥

॥ तहां न सालै साजनां, जां न सखि अहिनाण॥ गुणवंतो जाणेसही, जाणे नहीं अजाण ॥ ५८ ॥ सज्जण गुण अगार जिम, हियडुं दाजे तेण ॥ अव गुण नीर न संपजे, छंछावीजें जेण ॥ ५९ ॥ सज्जण थकि विसहर प्रघा, रूकी जीवज छेह ॥ नेह मांभि वूरें रहा, पगपग सल्ले तेह ॥ ६० ॥ छंखंचा सज्जण तणा, एह सहणा न जाय ॥ विरह विछोयां मा णसां, कहु किम केयां थाय ॥ ६१ ॥ सज्जण सो किण विसरे, ज दीधुं वेलांय ॥ मीठू जोयण डुब यण, पुणि नीसरे मुवांय ॥ ६२ ॥ तं नी बीणठ कण मरु, पोथा वंचण व्यास ॥ कण संचण कुक्कस जख ण, विण कामरु पचास ॥ ६३ ॥ हरिण हरिवु रिवु अगली, बीगड सरूकू सप्राज ॥ जं विहि करइ तं हुवे, ज्यां पासो स्यां पाठ ॥ ६४ ॥

चोपाइ

॥ बीशे त्रीशे जेहिं नवि पूता, जेठ अशाडही जे नवि सूता ॥ पोशे माहे जे न विघूता, मानव हींज्या हाहा हूता ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ किं किज्जौ वो परिगहें, तारायण वहुवेण ॥ पि रकंतां शशि गंजियें, अकल्ले राहेण ॥ ६६ ॥

चोपाइ

॥ पोथड थोथरेंहि नवि किंफू, पढिआ पंढित तिहि नवि किंफू ॥ जाव न बूफे यह मण किंफू, तावन किंज किंज नवि किंफू ॥ ६७ ॥

सोरठा

॥ हियडा हियडे रोय, काहूं लोक जणाविये ॥ जिह कारण तूं रोय, सो सज्जण परदेशडे ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तूंहिज सज्जन तूंज मन, तूं जीवी संसार ॥ हि यडा नींतर तूं वसे, सामी जाण मजाण ॥ ६९ ॥ स वि सूधां सवि उजलां, माली आण्या त्रोड॥केहा अ वगुण अमकिया, दो दो बांध्या जोड ॥७०॥ सहिए साजण चालसे, संभारूं गुण सार ॥ अमने कवण बु लावशे, दीहाडी पण वार ॥७१॥ चिंत्त टलक्युं स ज्जणा, दूधें केहो साह ॥ तुफ शिर सल्ले बेटडूं, मुफ शिर सल्ले घाह ॥ ७२ ॥ सज्जन समकोई नहीं, जगमें औ र पुमान ॥ देत करे अपकार पर, जो मागे सो निदा

न ॥७३॥ सज्जनके सद्गुण कहे, करत सदा उपकार॥ प्रति उपकार चहे नहीं, उत्तम नर संसार ॥ ७४ ॥ज गमें सज्जन ना हुते, तो उपकार न होत ॥ तिहि ने किये विचार करि, और और उद्योत ॥७५॥ सज्ज ण डुज्जण वातडी, प्राणी नेह म त्रोड ॥ कातणहारी सूत्र जिम, सांधे सांधे जोड ॥ ७६ ॥ सज्जण दीठे आपणो, पाप शरीरह जाय ॥ हियडुं विकशे कमल जिम, मन पजर नवि माय ॥ ७७ ॥ सज्जन सम जगमां नहीं, हितकारी नरतांह॥ नीड पडे बांहेधरे, भागी जावे नाह॥ ७८ ॥ सज्जण धरा समान हे, भा र धरे निजदेह ॥ अन्न ठलवी देखजे, सवा न मूके नेह॥७९॥ सज्जण किरतारें कियो, पर दुख भजण काज ॥ कज्ज बिगाडे अप्पणो, औरहि राखे ला ज ॥ ८० ॥ किरतारे सज्जन कियो, लियो लोक में लाव ॥ सज्जण विण जग चलत नहिं, ज्युं पाणीमें नाव ॥ ८१ ॥ सज्जण सज्जण सहु कहे, सज्जण री ती ओर ॥ पडेसु पोपट ओर हे, सुघडा हे बहु मोर ॥ ८२ ॥ सज्जण कर उपयार नें, फांसु करे कहेन ॥ निय मणमें अभिमाण नहिं, उवार्स न सु कहेन ॥८३॥ जिण दीठे मन रंजिए, अरणे अभिहेण ॥सो सज्जण

मुझ शांभरे, हिये थाय मुद तेण ॥ ७४ ॥ साजण लागे डुज्जणें, किया अनेरी तार ॥ आरीसा जिम ज लकता, दीहाडी शो वार ॥७५॥ वरि कस्तूरी इक्क नख, मा चंदन इक रस्स ॥ साजणसुं घडिए नली, माडुजणसुं वरस्स ॥ ७६ ॥ सहु सज्जण एकपि सु जण, किं किज्जइ बहुएण ॥ सूपलकूं कूपल लसण, वास विणठो तेण ॥ ७७ ॥

आर्या

॥ सज्जण जणाण पीइ, पीमी जंता विहूज्जाण जणे ण ॥ नारंगस्स विठल्ली, न मुइ सुक्कापि सो रंगं ॥७८॥

॥ दोहा ॥

॥ जे सज्जण ते सज्जणह, जो रूसे शो वार ॥ अंब न होए लिंबडूं, जे जाते सहकार ॥ ७९ ॥ सज्जन सरिशुं कलकडुं, कलकरू परखुं चित्त ॥ कल करतां जे नीवडुं, सो सज्जान सो मित्त ॥ ८० ॥

॥ जरावस्था वर्णन ॥ दोहा ॥

॥ बलतूटे जोवन गये, हाथ पाव थहरात ॥ मा स्यो जरा प्रहारको, तबतें उठ्यो न जात ॥ ८१ ॥ प्र जु सोंधे अरु निकट हैं, क्यूं नहि सुमरत धाइ ॥ जै से जरा प्रहारकूं, उपक्रम करै जु आइ ॥ ८२ ॥ आउ

प रच तुष्ट्ण सगो, तरुणी तुरि असवाइ ॥ वाहर कालनारदकी, जरा पहूची आइ॥ ९३॥ व्याधि चोर वाहर वइद, तन जर वर उदेराज ॥ जवतें वाहर आमकी, तसकर गए जु आज॥ ९४ ॥ रूप न देख्यो अंधरे, वहिरे न सुण्यो गीत ॥ वाको गुण कछु गय गयो, कहत उदे सुण प्रीत ॥ ९५ ॥ स्वादज रहियत जीजयें, प्राणन छू तें वास ॥ पन्डित रहिये है उदय, मूरख अवले पास ॥९६॥ साधांकी संगत उदय, करणे पा वैसोह॥होइ वहुरि अघो वुचे, मुखतें ग्रुगो होइ ॥९७॥ पेठति कही सरूप व्है, निकसति कही सरूप ॥ तनमें जीउ ऐसे उदय, ज्यूं दर्पणमें रूप ॥ ९८ ॥ ज्यूं वैसा नरकाठमें, वधिमें जैसे घीउ॥ सूरज मख उदेराज कहि, यूंतन भीतर जीउ ॥ ९९ ॥ आपणी वतिका गति रवसि, अपने रूप पुमान ॥ उदेराज कोउ किन्ही, नहिं देखे कुनिर्यान ॥१००॥ उदेराज केसू कुशुम, दे शोभा आराम ॥ अति सुवर वासां रहिस, तिण मुख कीधु साम ॥ १०१ ॥ वृद्ध अव स्यामें कहा, और करहिं उपोग ॥ ले इश्वरको नाम तुं, भोर भुक्यो अव भोग॥ १०२ ॥ वृद्ध अवस्या आ इपें, मनन भयो सव वृद्ध ॥ तृष्णा कांकणिनें भ

स्यो, कर हीरो नहि लऊ ॥ १०३ ॥ जरा अवस्थामें नरा, थरथर कांपत देह ॥ नौतो आयो कालको, तोहु न छांमत नेह ॥ १०४॥ जरा अवस्थाके पिछे, और अवस्था मर्ण ॥ तातें कछुक विचारिके, अब ही जा गुरु सर्ण ॥ १०५ ॥ करत करत उद्यम अरे, जरा लियो तव घेर ॥ नर तन तो मरि जायगो, कहा करैगो फेर ॥ १०६ ॥ जरा राक्सीने धर्यों, कंठ तोर अति दाबि ॥ प्रान लेइगी आज कल, शिव तूं सुमर सिताबि ॥ १०७ ॥ जुवानिमें केते मरत ॥ रहत सु जरा हि पाय ॥ तबहुं धर्मकों ना करै, सहज नरकमें जाय ॥ १०८ ॥ मरवो तौ है सबनकूं, तातें रूरवो न हीय ॥ साहिब नित्यहि सुमरवो, करवो धर्म सु जीय ॥ १०९ ॥ देखी जरा नरा तहूं, खरो त्नयो खर रूप ॥ किधों कहू तव कूतरा, परत मोहके कूप ॥ ॥ ११० ॥ जरा मांहि कोइ न सगो, तिय सुत नावत काम ॥ तोहु अंध चेतत नहीं, धरतन धर्म विराम ॥ १११ ॥ जरा सु पकर्यों जांहिकों, मारे बिना न जात ॥ यातें बच्यो न कोउ नर, राजा रंक हि खात ॥ ११२ ॥ जरा तो हि बंदन करों, शुद्ध मति मोकों देहु ॥ दया धर्म आवै हृदय, अंत लाव जग लेहु ॥ ११३ ॥

वात विना मुख होवही, वाचा शुद्ध न बोध ॥ श
क्ति न इन्द्रिय क्षीण सब, यथा बाल वय तोल ॥११४॥
यमकी दूती आइ यह, लोक विदित अस जानु ॥
परधन पर तियकू तजहु, भजहु सदा भगवानु ॥
॥११५॥ जरा पठाइ कालने ॥ तोहि कियो वे हाल॥
तौहू चेतत नांहि अजु, अब आवेगो काल ॥११६॥
जरा निशानी कालकी, तांहि बालकी एह ॥ भक्ति
करहु भगवानकी, जगत जालकी देह ॥ ११७ ॥ ज
रा जगाव सर्वकू, जुवानि हू हरि खेत ॥ अब क्या
करही मूढ नर, सूकि जायगो खेत ॥ ११८ ॥ जरा
आइ तबतें भयो, सकल भोगको नाश ॥ साधन स
ब सूखे भये, धरे रहे सब पास ॥११९॥ जरा दुःख
को मूल है, आवत हैं तन रोग ॥ महा विपत्ती जो
गही, जानत हैं सब लोग ॥ १२० ॥ जरा न छोरे
काहु कू, येब यह नर कोइ ॥ सबहीकों ग्रसि लेत
है, बची ना कहुं होइ ॥ १२१ ॥

॥ इति समाप्तः ॥

अथ

श्रीमानसागरगणिविरचित श्रीशीलविषयक कान्हडकठियारानो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पारसनाथ प्रणमुं सदा, त्रेविसमो जिनचंद ॥ अलियविघन दूरें हरे, आपे परमानंद ॥ १ ॥ वीणा पुस्तक धारिणी, श्रुतदाता श्रुतदेव ॥ सानिध करजो सामिनी, सेवकने नितमेव ॥ २ ॥ दान शील तप नावना, इणमें अधिकूं शील ॥ सेवे जे नवियण सदा, इणनव परनव लील ॥ ३ ॥ शीलें सुर सानिध करे, शीलें सिंह शिआल ॥ शीले सवि संकट टले, फणि धर हुवे फुल माल ॥ ४ ॥ शीलें सुखसंपद मिले, शी लें नोग रसाल ॥ कठियारा कान्हड परें, फले मनो रथ माल ॥ ५ ॥ कठियारो कान्हड हुवो, शीलवंत मां हे लीह ॥ तास तणा गुण गावतां, पावन थाये जी ह ॥ ६ ॥ गुण गाउं गुरुआ तणा, सांनलजो सहु सं त ॥ शील किसी परे पालियुं, ते दाखुं दृष्टंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ लाख जोयण जंबू परिमाण दाहिण भरत पूरव दिशि जाण ॥ नयरी अयोध्य अतिहि प्रधान, अमरपुरी केरु उपमान ॥ १ ॥ के टि गमे कोटिध्वज जाण, लखपति कोइ न आवे झा न ॥ छुदाला कुदाला साह, अवसर ले लखमीनो ला ह ॥ २ ॥ देवल दंम नहिं नरलोय, तर्कविना किहां वाद न होय ॥ वेणीबंधन नवि दीसे लाव, मार वचन लोकें नवि चाव ॥ ३ ॥ दोय जिभ्ना पटियारे जोय, नगरमांहे नवि दीसे कोय ॥ धनना कोइ न दीसे चो र, मनना चोर वसे ठे जोर ॥ ४ ॥ सोहे चोरासी चोहटा, राजभवन घूमे गजघटा ॥ वापी कूप सरोव र सार, वन वाडी नवि लाभु पार ॥ ५ ॥ जोगी भम र अठे सहु कोय, तो पण पग मांके ठे जोय ॥ पर नारीशुं न करे प्रीत, चाले उत्तम कुलनी रीत ॥ ६ ॥ षट्दर्शन मन पहिज वात, म करो परजन केरी ता त ॥ दान शील तप भावन सार, इणशु राखे नित व्यवहार ॥ ७ ॥ समकितमूल बारह व्रत धरे, परव दिवस पोसह अणुसरे ॥ तीन तत्त्व सूधां सईहे, जि णवर आण अखंमित वहे ॥ ८ ॥ राज करे कीरति

धर राय, वैरी भाज गया वडवाय ॥ न्यायवंत अकरा कर नहिं, जेहनी कीरति समुद्रें कही ॥ ए ॥ सुप्रभा राणी जेहने सही, रूपें रंभ समोवड कही ॥ राजा राणी अविहड प्रेम, दूध नीर पारेवा जेम ॥ १० ॥ पहेली ढाल कही अति सार, राजा नगर तणो अधि कार ॥ मानसागर कहे सुणजो सहु, आगल वात अचंभम कहुं ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ ग्राम नगरपुर विचरता, चउनाणी अणगार ॥ विनिता नयरी समोसर्या, साधु तणे परिवार ॥ १ ॥ कीरतिधर अवनीपति, विधिशु वांदण जाय ॥ वंदण विधिशु साचवी, आगल बेठो आय ॥ २ ॥ आगल बेठी परखदा, बेठा नगर नरेश ॥ अवसर जाणी आ पणो, द्ये मुनिवर उपदेश ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग वेराडी भूलो मन भमरा रे कांइ भम्यो ॥ ए देशी ॥ मानवनो भव पामियो, पाम्यो आरज देश ॥ श्रावकनुं कुल पामियो, पाम्यो गुरु उपदेश ॥ १ ॥ चेतनी चेतना प्राणिया, करे जिन धर्म सार ॥ दान शि यल तप भावना, चारे जग सार चे० ॥ २ ॥ का

॥ ढाल पदेसी ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ लाख जोयण जंबू परिमाण, दाहिण भरत पूरव दिशि जाण ॥ नयरी अयोध्या अतिहि प्रधान, अमरपुरी केरु उपमान ॥ १ ॥ को हि गमे कोटिध्वज जाण, लखपति कोइ न आवे ज्ञान ॥ डुवाला कुवाला साह, अवसर ले लखमीनो लाह ॥ २ ॥ देवल वंरू नहिं नरलोय, तर्कविना किहां वाद न होय ॥ वेणीबंधन नवि दीसे साव, मार वचन लोकें नवि भाव ॥ ३ ॥ वोय जिहा पटियारे जोय, नगरमांहे नवि दीसे कोय ॥ धनना कोइ न दीसे चोर, मनना चोर वसे छे जोर ॥ ४ ॥ सोहे चोरासी चोहटा, राजभवन घूमे गजघटा ॥ वापी कूप सरोवर सार, वन वाडी नवि लाभु पार ॥ ५ ॥ भोगी भमर अछे सहु कोय, तो पण पग मांके छे जोय ॥ परनारीशुं न करे प्रीत, चाले उत्तमकुलनी रीत ॥ ६ ॥ षट्दर्शन मन एहिज वात, म करो परजन केरी तात ॥ दान शील तप भावन सार, इणशु राखे नित व्यवहार ॥ ७ ॥ समकितमूल बारह व्रत धरे, परव दिवस पोसह अणुसरे ॥ तीन तत्त्व सूधां सर्दहे, जिणवर आण अखंडित वहे ॥ ८ ॥ राज करे कीरति

ल बेठो आइने, कठियारो कर जोड ॥ १ ॥ कठियारा ने मुनि कहे, किस्युं करो बो काम ॥ नारीशुं नगवा नजी, आघो काढुं आम ॥ २ ॥ एक लियो तुम आखडी, एम कहे अणगार ॥ सुगराचार वहूपरें, वध तो करो विचार ॥ ३ ॥ कठियारे मुनिवर कने, करी शीलनी कार ॥ पूनिमरे दिन पूज्य जी परनारीपरिहार ॥ ४ ॥ एटली मुऊने आखडी, सदगुरु केरी शीख ॥ परमेसर परसादथी, नली करी बे शीख ॥ ५ ॥ हवे कठियारो प्रणमिने, आयो अपणे गेह ॥ पूनम परनारी तजी, निजनारी शुं नेह ॥ ६ ॥ करे उदर आजीविका, राखे व्रतनी रेख ॥ कान्हड कठियारा तणो, जन्म कृतारथ लेख ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वादल दह दिसि उन्हम्यो ॥ ए देशी ॥ इण अवसर आयो तिहां सखी, वारु वर्षाकाल ॥ गगन धडूके मेहलो सखी, पाणी वहे पडनाल रे ॥ चिहुं दिशि जल खलक्यां खाल रे, वलि नदीय वहे असराल रे, सरपूरित फूटे पाल रे ॥ १ ॥ वर्षारुतु आइ मोहना ॥ ए आंकणी ॥ मोर झिगोरे डूंगरे सखी, झरझर दादूर सोर ॥ बपैयो पियु पियु करे सखी, ग

घो रे घट माटी तणो, ऐसी आदमि देह ॥ विणस
तां वार न लागशे, कांइ नहि रे संदेह ॥ चे० ॥ ३ ॥
अथिरज ए संसार छे, जैसो संध्यावान ॥ क्षण अणी
जल एहवो, जेहवो कुंजरकान ॥ (जेहवुं पिंपल पान)
॥ चे० ॥ ४ ॥ तीर्थे मल्यो जिम कारिमो, सगपण ए
रसग ॥ जेसो सुहणो रातको, पखी तरु संग ॥ चे०
॥ ५ ॥ मात पिता सुत बांधवा, घर महिला आथ ॥
परजव जातां जीवने, कोइ नावे रे साथ ॥ चे० ॥
॥ ६ ॥ माहारु माहारुं करतो रहे, तहारु नहिं रे स
गार ॥ कोण ताहारो तुं केहनो, जूवो हृदय विचार॥
॥ चे० ॥ ७ ॥ घणो करि धन मेलीयु, पोर्ष्यु सच
ल कुटुब ॥ धधाहिमांहे मरि गयो, वाहर हुइ नहिं
लुब ॥ चे० ॥ ८ ॥ काल आहेडी नित जमे, कर क्षासी
कयाण ॥ वनमृगला जिम जीवने, शर नाखे रे ता
ण ॥ चे० ॥ ९ ॥ धर्म सखाइ ले चलो, लेजो संबल
साथ ॥ आगलही आवर हुवे, एम कहे जगनाथ॥
चे०॥१०॥ राग वेराडी जे सुणे, बीजी ढाल वखाण ॥
मानसागर कवि एम कहे, सुख लहो निरवाण॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी मुनिवर देशना, देखी आयो दोढ ॥ आग

व्रत धारक जाण रे, नित्य पोसह करे पच्चख्काण रे ॥ व०
॥७॥ चउद नियम संभार तो सखी, श्रावककुल शण
गार ॥ ल्ये लाहो लखमीतणो सखी, जाणे सहु संसा
र रे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार रे, इम सफल करे अवता
र रे, थयुं धर्मे चित्त उजमाल रे ॥ व० ॥ ८ ॥ चंपक चा
कर शेठनो सखी, आयो उण बाजार ॥ कठियारा
कान्हड तणी सखी, भारी लिये तिण वार रे॥ हवे देइ
टका दोइ चार रे, कान्हड शिर देई भार रे, दोनुं आ
या शेठ डुवार रे ॥ व० ॥ ए ॥ चोखो चंदन बावनो
सखी, परिमल गंध रसाल ॥ गोखें बेठो शेठजी स
खी, खबर हुइ ततकाल रे॥ चंदननो गंध विसराल रे,
कठियारो कान्हड बाल रे, जइ नाख्यो चोक विचा
ल रे ॥ व० ॥ १० ॥ शेठ कहे चंपक प्रत्यें सखी, ए
हनुं मूल कहाय ॥ दोय टका दीधा अछे सखी, जो
तुम आवे दाय रे ॥ कठियारो घरमें जाय रे, हवे शेठ
कहे सम जाय रे, एहनुं मूल लीयो तुम दाय रे ॥
॥ व० ॥ ११ ॥ देइ सोनैया पांचशें सखी, शेठें कीध
जुहार ॥ त्रीजी ढालें ढलकतो सखी, मीठो रागमल्हा
र रे॥कहे मानसागर सुविचार रे, कान्हडें लह्युं द्रव्य
अपार रे, पामीजें पुण्य प्रकार रे ॥ व० ॥ १२ ॥ इति

गन करे घनघोर रे, वाध्यो तिहां मन्मथ जोर रे, वि
रहीकु कठिन कठोर रे, हियडुं न रहे इक ठोर रे॥
वर्षा० ॥ २ ॥ वीजलीयां झब झांकियो सखी, गगन
करे घडहाट रे ॥ जल थल सवि जल पूरिया सखी,
वहे नहिं कांठा घाट रे॥ जलथल सवि रुंध्या घाट
रे, दुख करषण वाहे जाट रे, जल पेठो वसुधा फाट
रे ॥ व० ॥ ३ ॥ उदरवृत्ति करवा भणी सखी, इवे क
ठियारो कान्ह ॥ रज्जु कुहाडो कर ग्रही, रडवडतो
गयो रान रे ॥ नदियां वहे असमान रे, वलिया ए त
रुवर रान रे, गणतां कोइ नावे ज्ञान रे ॥ व० ॥४॥
कटियें बांध्यो कांबलो सखी, पेठो जल भरपूर ॥
चोखुं चंदन लाकडुं सखी, आण्यु आप हजूर रे ॥ दी
से अति सबल सनूर रे, भांजी कीधुं चकचूर रे, गंध
पहोतो जिहां शशि सूर रे॥ व० ॥ ५ ॥ भारी वेचण
कारणें सखी, आयो भर बाजार ॥ काठ कुकाठ भलो
बुरो सखी, जाणे नहिं तिलभार रे॥ मूरखमां ते शिर
दार रे, नहिं विनय विवेक विचार रे, राखी तिणे मत
नी कार रे॥ व०॥६॥ इण अवसर तिण सहेरमें सखी,
श्रीपति सेठ सुजाण॥ सोवन कोडी चारनो सखी, परि
ग्रह कीध प्रमाण रे॥ श्रीजिनवर पासे आण रे, धारइ

न, ठेगनीया सोहे असमान ॥ गले सोहे मोतिनको हार, मूल्य तणो नवि लाभुं पार ॥ ५ ॥ बांहे बहेरखा सोवन चूडी, करकंकण स्त्री दीसे रूडी ॥ कुच कठिन ऊंचां असमान, सोवनकलश तणुं उपमान ॥ ६ ॥ मुखमें पान तणी छे वीडी, कंचूतणी कस अधिकी भीडी ॥ सिंहालंकी अति सुकुमाल, हंस तणी जिणे जींती चाल ॥ ७ ॥ पायें नेउर वाजे चंग, चरण कमल अलताको रंग ॥ इणपरि सोल सजी शणगार, आइ बेठी पोल डुवार ॥ ८ ॥ रूपें रंभ तणो अवतार, हाथें आप घडी किरतार ॥ ते देखीने मोहे इंद, आगें उभा तरुवर वृंद ॥ ए ॥ कामलता तियां सहामुं जोयुं, ते देखी कान्हड मन मोह्युं ॥ मुऊ पासें सोनैया सार, देइ सफल करुं अवतार ॥ १० ॥ गोलां रे कदि हुंती गाय? एम चिंतविगुं कान्हड राय ॥ लइ सोनैया हाथे दीध, सयणां हंदा बोलज कीध ॥ ११ ॥ कामलता हुइ मनराजी, काम केलिनी मांरूी बाजी ॥ तेल सुगंधा मोहोंघा कीधां, सयणांसेंती बीडां दीधां ॥ १२ ॥ चोथी ढाल कही अति चंगी, मानसागर कहे नवनव रंगी ॥ कान्हडनुं मन थयुं उछरंग, राग केदारो वधते रंग ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगर विचाले नीकल्यो, आयो गणिका वास ॥ नटखूट नर तिहा वसे, हस करि कीधी हास ॥ १ ॥ ठेलगाणो आयो इहां, मनमें महोटी खत ॥ आयो आंही जाणजो, रसिया प्रम हसंत ॥ २ ॥ कठियारो कान्हड कहे, साजल सयणां वात ॥ इणठोर्डे जे आ वशे, रहेशे दिवस ने रात ॥ ३ ॥ वेश्या आई विहस ती, नयणें अमी झरंति ॥ मुख मोडे मटका करे, न यणें नेह धरंति ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नमणी खमणी ॥ ए देशी ॥

॥ बेठी पीढो मांची विशाला, रसिया उपर मांने टाला ॥ शिर राखडियां अधिकी शोभा, माथे भ्रमर भ ली परें थोभ्या ॥ १ ॥ निलवट अधिक विराजे टीको, न यणें काजल सोहे नीको ॥ आंखडीयां सोहे अणिया ली, जमुह कमाण भ्रमर परे काली ॥ २ ॥ दीप शिखा जिम सोहे नासा, परिमल गध लिये तिहां वासा ॥ नाके उपर सोहे मोती, रात दिवस न रहे तिहां जोती ॥ ३ ॥ वदन अनोपम शारद चद, जीहा जी ह्या अमीरस कद ॥ अधुर प्रवालतणी परें राता, दत पंति विच सोहे खातां ॥ ४ ॥ सोनानी घड सोहे का

रे लाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ पहोर घडीने आंतरे, पाणी
भरि जारी साहि रे लाल ॥ उभी जोवे वाटडी कान्हड
न आयो घरमांहि रे लाल ॥ ध० ॥४॥ आब खानानी
पाखती,उभी तिहां करती हास रे लाल॥साद दिये सा
ने करि, विच करती खोंखारा खास रे ॥ लाल ॥ ध०
॥ ५ ॥ दीवो आण्यो दोडीने, तिण जोवे वेश्या वास
रे लाल ॥ खबर न लाधी कान्हनी, मूकी गयो धननी
राशि रे लाल ॥ ध० ॥ ६ ॥ रात गइ रवि उगियो,
सहु मलिया राणो राण रे लाल ॥ वात जिकां का
न्हड तणी, कहि मांभी चतुर सुजाण रे लाल ॥ ध०
॥ ७ ॥ वेश्या कहे वित्त पारकुं, हुंतो राखुं नहिं ति
ल मात रे लाल ॥ खरी कमाइ स्वादनी, महारे तो
लेवी विख्यात रे लाल ॥ ध० ॥ ८ ॥ गणिका कांइ पर
धन तणो, लेवा लीधो छे नीम रे लाल ॥ खरीय कमा
ई आपणी, तिणशुं नित्य राखे सीम रे लाल ॥ ए ॥
वेश्या सहु टोलें मली, बाली भोली यौवन वेष रे ला
ल ॥ घरढी बूढी भोकरी,जइ भेट्यो नगर नरेश रे लाल
॥ १० ॥ कामलता वेश्या घरे, कठियारो कान्हड ना
म रे लाल, सोनैया देइ पांचशें, मूकी गयो किणही का
म रे लाल ॥ ध० ॥ ११ ॥ सार न पूछी साहिबा,

॥ दोहा ॥

॥ नापित तेडी नायका, तुरत सगाय्रु लेख ॥
चाक पाक कान्हड कियो, वेश्या सुरगी रेख ॥ १ ॥
मन गमतां भोजन तणा, कीधा सरस आहार ॥ ल
विंग सोपारी एलची, मुठयानो व्यवहार ॥ २ ॥ पहे
र्यां मुखमुख धसतरां, शिर पचरगी पाघ ॥ आगें ठवा
ठेसगु, गावे नवनव राग ॥ ३ ॥ चचवार्यां दीवा कि
या, सखर बनावी सेज ॥ वेश्या आवी विहसती, जि
गाशु अधिको हेज ॥ ४ ॥ पूरो ठग्यो पाथरो, पूनम
रे दिन चद ॥ कान्हड झांखी जाखीयें, आखे दीठो
इंद ॥ ५ ॥ आज अठे मुझ आखडी, परनारी परिहा
र ॥ अवसर आवी आपणो, कदे न लोपु कार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ देशी चूनडीनी ॥ रजनी ठयो एकलो, हुये तुर
त घनावी तोत रे लाल ॥ मेदानन्ने मिस कान्हजी, ग
यो आपणो पहेरी पोत रे लाल ॥ १ ॥ धनधन कठीया
रो कान्हजी, जिणे राखी प्रसनी रेख रे लाल ॥ मेली
सोनैया पांधर्यें, वली मूक्यो परनो वेष रे लाल ॥
॥ २ ॥ ध० ॥ जरबाजारें हाटमें, सूतो निंद धुराय रे
लाल ॥ वेश्या जोवे वाटडी, आयो नहिं कान्हड राय

रे लाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ पहोर घडीने आंतरे, पाणी नरि जारी साहि रे लाल ॥ ऊन्नी जोवे वाटडी कान्हड न आयो घरमांहि रे लाल ॥ ध० ॥४॥ आव खानानी पाखती,ऊन्नी तिहां करती हास रे लाल॥साद दिये सा ने करि, विच करती खोंखारा खास रे ॥ लाल ॥ ध० ॥ ५ ॥ दीवो आण्यो दोडीने, तिण जोवे वेश्या वास रे लाल ॥ खबर न लाधी कान्हनी, मूकी गयो धननी राशि रे लाल ॥ ध० ॥ ६ ॥ रात गइ रवि ऊगियो, सहु मलिया राणो राण रे लाल ॥ वात जिकां का न्हड तणी, कहि मांझी चतुर सुजाण रे लाल ॥ ध० ॥ ७ ॥ वेश्या कहे वित्त पारकुं, हुंतो राखुं नहिं ति ल मात रे लाल ॥ खरी कमाइ स्वादनी, महारे तो लेवी विख्यात रे लाल ॥ ध० ॥ ८ ॥ गणिका कांइ पर धन तणो, लेवा लीधो छे नीम रे लाल ॥ खरीय कमा ई आपणी, तिणशुं नित्य राखे सीम रे लाल ॥ ए ॥ वेश्या सहु टोलें मली, बाली जोली यौवन वेष रे ला ल ॥ घरढी बूढी झोकरी,जइ जेट्यो नगर नरेश रे लाल ॥ १० ॥ कामलता वेश्या घरे, कठियारो कान्हड ना म रे लाल, सोनैया देइ पांचशें, मूकी गयो किणही का म रे लाल ॥ ध० ॥ ११ ॥ सार न पडी साहिबा

मोह्यु नवि सीधु काज रे लाल ॥ ए निरमाल सीधां नहि, माहरे घर एहवु राज रे लाल ॥ घ० ॥ १२ ॥ राजन रूडां राखजो, धन छुं हुं सहुनी साख रे लाल ॥ ए धन आवे रावले, एहवी लोक तणी ठे भाख रे लाल ॥ घ० ॥ १३ ॥ पांचमी ढाल सुहामणी, राजाने दीधा दाम रे लाल ॥ मानसागर कहे आगलें, हवे कुण कुण होसे काम रे लाल ॥ घ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरमें पडह वजडावीयो, लेइ सहुकोनां नाम ॥ कामलता वेस्या घरे, कुण मूकी गयो दाम ॥१॥ गलिया गलियां गुलतां, मलिया माणस थोक ॥ शेरी शेरी साजज्यो, कोइ न बोले लोक ॥ २ ॥ चहुटा विच वाजे पडह, ले सहुकोनां नाम ॥ कान्हड कठियारो कहे, ए तो महारां दाम ॥ ३ ॥ आगें छजो आयने, एह बी भाखे भाख ॥ ए दमडा ठे माहरा, एवी छुं हुं शाख ॥ ४ ॥ कठियारानो करमही, आव्यो राय हजूर ॥ अधिपति दीठो आवतो, एतो वडो मजूर ॥ ५ ॥ राय पूछे कान्हड प्रत्यें, तें जोड्यो किम दाम ॥ कठियारो कान्हड कहे, थें सुणजो मुक्त स्वाम ॥ बीतक बात

कहुं सवे, सांभलजो सहु संत ॥ कान्हड कठिया रो कहे, ते दाखु दृष्टंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ राग सोरठ ॥ यत्तनी देशी ॥ कठियारे मांभी वात रे, वातरे, ॥ भारी वेचुं दिन ने रात ॥ एक दिवस मुनिसर मलिया रे, मलिया रे, पातक सवि दूरें टलियां ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ पातक सवि दूरें टल्यां, सुणि मुनिवरनी वाणी ॥ चोथा व्रतनी आखडी, में लीधी हित आणी ॥ २ ॥ ढाल ॥ चित्तमें एक वात विचारी रे, विचारी रे, तजी पूनिम दिन परनारी ॥ निजनारीशुं नित्य नेहारे, नेहारे, पालुं हुं व्रतनी रेहा ॥ ३ ॥ त्रू० ॥ एम करतां दिन केटले, भारी वेची आण ॥ दोय टका दें ले गयो, श्रीपति सेवक जाण ॥ ढाल॥ श्रीपतिनो सेवक एह रे, एह रे, भारी ले गयो निज गेह ॥ बावना चंदननी भारी रे, भारी रे, श्रीपति मन वात विचारी ॥ ५ ॥ त्रू० ॥ वात विचारी तुरतशुं सोनइया सो पांच ॥ आण दिया एकण समे, कांइ न करी मन खंच ॥ ढाल ॥ मनमां न करी कांइ खंच रे, खंच रे, मुझ मलियो एहवो संच ॥ पांचशे सोनैया दीधां रे, दीधां रे, में खोले घाली लीधां

॥ ७ ॥ ग्रू० ॥ खेह घरने संचस्यो, गयो वेश्या वास॥ नष्टखूटनर तिहां वसे, तिहां कीधी मुज हास॥८॥ ढाल ॥ तिहां माहरी हांसी कीधी रे, कीधी रे, वे श्या मुजशुं विठ वीधी ॥ पांचशे सोनैया दीधां रे,दी धा रे, तिणें शीश चढावी लीधां॥ ए ॥ ग्रू० ॥ शिश चढावी तरत शुं, मांडी मुजशुं वात ॥ आघा आ वो अम घरे, वासो रहो एक रात ॥ १० ॥ ढाल ॥ मेडीमांहे सेज बिछाइ रे, बिछाइ रे, वेस्या विहसंति आइ ॥ पूनमदिन पूरो चंद रे, चद रे, देखी थयो अधिक आणंद ॥ ११ ॥ ग्रू० ॥ पुनम दिन परनारी शुं, ठे मुजमतनी कार ॥ एह न छाजु आखडी, नि श्चय, ने व्यवहार ॥ १२ ॥ ढाल ॥ में दान तणो मिष कीधो रे, कीधोरे, वेस्यानो हुकमज लीधो रे ॥ रजनी जइ हाटें सूतो रे, सूतो रे, वेश्यासेंती नवि खूतो ॥ १३ ॥ ग्रू० ॥ वेश्यासुं खुतो नहिं, पाली मतनी आण ॥ रात गइ हवे उगीयो, उदयाचल शिर भाण ॥ १४ ॥ ढाल ॥ उदयाचल उग्यो भाण रे, भाण रे, करतो ते सफल विहाण ॥ कान्हड कहि वातज ताजी रे, ताजी रे, सहु लोक हुवा मनराजी ॥१५॥ ॥ ग्रू० ॥ मन राजी सहुको हुवा, वात कही में आ

ज ॥ ए सोनइयां पांचशे, माहारां छे महाराज॥१६॥
॥ ढाल ॥ छठी ए ढाल विशाल रे, विशाल रे, सुण
तां कहे मान रसाल ॥ राग सोरठ यत्तिनी देशी रे,
जाणशी ते खरीय कहेशी ॥ १७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ राजी हूवो राय, लोक सहु राजी हुआं ॥ श्री
पति तेडण जाय, अधिपति केरा आदमी ॥ १ ॥ आवि
अधिपति पास, श्रीपति शेठ इस्यो कहे ॥ में दीधी धन
रासि, इण कठियारा कान्हने ॥ २ ॥ उ कठियारो का
न्ह, लायो चंदन बावनो ॥ दोय टका उनमान, दीधा
चाकर माहरे ॥ ३ ॥ में विगतावी वात, एतो चंदन
बावनो ॥ एहनुं मूल्य अख्यात, दिया सोनैया पांचशे
॥ ४ ॥ छे मुझ गुरुनी आण, अधिक न लीयुं पार
कुं ॥ ए उत्तम अहिनाण, आटा लूण तिसी परें ॥
॥ ५ ॥ अधिपति नाखे आम, ए सोनैया पांचशे ॥
कोनहि माहरे काम, सांभलजो सहुको सभा ॥६॥
सोनइया सो पंच, कान्हडने दीधा परा ॥ एहनो
एहिज संच, खरा कमायां कान्हडा ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मेरो प्यारो रे ॥ ए देशी ॥ इण अवसर आव्या

तिहां रे लाल, केवलधर अणगार ॥ सुखकारी रे ॥ राजा पूछे रंगशु रे लाल, कहो मुझ एक विचार ॥ सु० ॥ १ ॥ शील तणो महिमा सुणो रे लाल ॥ आंकणी ॥ श्रीपति शेठ वसे इहां रे लाल, कामलता इहां जाण ॥ सु० ॥ कठियारो कान्हड अछे रे लाल, लेखे मुझने आण ॥ सु० ॥ २ ॥ शी० ॥ मुनिवर आगल भाखि योरे लाल, चारे तणो अवदात ॥ सु० ॥ चारमांहे अधिको किस्यो रे लाल, महीपति पूछे वात ॥ सु० ॥ ३ ॥ शी० ॥ चारे ए महिमा निला रे लाल, चारे ए चतुर सुजाण ॥ सु० ॥ इणमें अधिको कान्हड रे ला ल, राखी व्रतनी काण ॥ सु० ॥ ४ ॥ शी० ॥ मूक्या सोनैया पांचशे रे लाल, मूक्यो गणिकाभोग ॥ सु० ॥ धन कठियारो कान्हजी रे लाल, सहुय सराहे लो क ॥ सु० ॥ ५ ॥ शी० धन धन लोक कान्हड क हे रे लाल, धन कहे नगर नरेश ॥ सु० ॥ शील त णी जिण आखडी रे लाल, पाली यौवन वेश ॥ सु० ॥ ६ ॥ शी० ॥ तीरथ शेत्रुजो वडो रे लाल, मत्र व डो नवकार ॥सु०॥ नदियामांहि मंदाकिनी रे लाल, व्रतमांहे विचार ॥ सु० ॥ ७ ॥ शी० ॥ शील तणो महिमा सुणी रे लाल, हरख्या राणो राण ॥ सु० ॥ ध

न धन जे सेवे सदा रे लाल, ते लहे सुख निरवाण ॥ सु० ॥ ८ ॥ शी० ॥ इण अवसर अवनीपति रे लाल, थाप्यो निज परधान ॥ सु० ॥ राजकाज ते सोंपी युं रे लाल, दीधुं बमणुं मान ॥ सु० ॥ ए ॥ राजन्ना र धुरंधरु रे लाल, मंत्रमें शिर नवकार ॥ सु० ॥ मन मोह्युं महाराजनुं रे लाल, वाधी बमणी लाज ॥ सु० ॥१०॥ पंचविषय सुख न्नोगवे रे लाल, न्नोगवे न्नोग रसाल ॥ सु० ॥ ले लाहो लखमी तणो रे लाल, टाले कुमति जंजाल ॥ सु० ॥११॥ शी० ॥ सातमी ढाल सोहामणी रे लाल, एम कहे कवि मान ॥ सु० ॥ शील तणा प रन्नावथी रे लाल, कान्हड थयो परधान ॥ सु० ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कान्हड सदगुरु कने, शीखे समकित न्नेद॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मशुं, इणशुं सदा उमेद ॥ १ ॥ श्रा वकनां व्रत आदस्यां, पाले निरतीचार ॥ सेव करे अ रिहंतनी, जाप जपे नवकार ॥ २ ॥ दान शीयल तप न्नावना, शिवपुर मारग चार ॥ आराधे अति न्नावशुं, जिम पामे न्नवपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी मधुकरनी ॥ इण अवसर आया इहां,

धर्मघोष अणगार ॥ जवियण ॥ कान्हड दीक्षा आ दरी, छांमी धन परिवार ॥ ज० १ ॥ धन धन शी ल सदा जलु, जे सेवे नर नार ॥ ज० ॥ इण जव सुख संपद मिले, परजव मुगति दातार ॥ ज० ॥ २ ॥ ध० ॥ पंच महाव्रत उच्चरे, पांचे मेरु समान ॥ ज० ॥ उकायनी रक्षा करे, धन कान्हड परधान ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ ध० ॥ पांच सुमति सेवे सदा, तीन गुपति धरे अग ॥ ज० ॥ अंग इग्यार जण्या सहु, वली वा रे उपग ॥ ज० ॥ ४ ॥ ध० ॥ तप किरियानो खप करे, ले मुनि शुद्ध आहार ॥ ज० ॥ भ्रमर तणी परें बहु जमे, चाले खमाभार ॥ ज० ॥ ५ ॥ ध० ॥ बावी श परिसह जींपतो, करतो कर्मनी हाण ॥ ज० ॥ दशविध यति धर्म साचवे, जीवित मरण समाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ ध० ॥ क्रोध मान माया तजी, तजी यो सघलो लोच ॥ ज० ॥ चारित्र पाले निर्मलु, वा धे जगमें शोज ॥ ज० ॥ ७ ॥ ध० ॥ कमा खडग कर साहियुं, पहेरी शील सन्नाह ॥ ज० ॥ महियल विच रें एकलो, कोय नहिं परवाह ॥ ज० ॥ ८ ॥ ध० ॥ कर्म शत्रु जींपण जणी, जाणे शार्दूलो सिंह ॥ ज० ॥ अप्रमत्त जारंम परें, कोइ न आणे बीह ॥ ज० ॥ ९ ॥

पंच तीरथ जात्रा करी, निर्मल कीधां गात्र ॥ ज० ॥ बारह जावी जावना, मुनिवर चारित्र पात्र ॥ ज० ॥ १० ॥ ध० ॥ पाप आलोयां आपणां, सदगुरु केरी साख ॥ ज० ॥ सयल जीव खमाविया, जे चोराशी लाख ॥ ज० ॥ ११ ॥ ध० ॥ अंत समय जाणी करी, करि अणसण पच्चरकाण ॥ ज० ॥ देवलोकें थया देवता, पहिले कल्पें जाण ॥ ज० ॥ १२ ॥ ध०॥ अष्ट कर्मनो क्षय करी, लहि मानव अवतार ॥ज०॥ मोक्षतणां सुख पामशे, धन कान्हड अणगार ॥ज० ॥ १३ ॥ ध० ॥ सरस ढाल ए आठमी, साधु तणो आचार ॥ ज० ॥ मान कहे सुख संपदा, जे सेवे नर नार ॥ ज० ॥ १४ ॥ ध० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वाडी फुली अति जली ॥ मन जमरा रे ॥ ए देशी ॥ कान्हड साधु शिरोमणि ॥ मन जमरा रे॥ लाधो सुर अवतार ॥ लाल मन जमरा रे ॥ शील तणा परजावथी ॥ म० ॥ लाधी ऋद्धि अपार ॥ लाल म० ॥ १ ॥ शीलें सुर सान्निध्य करे ॥ म० ॥ शीलें पामे राज ॥ लाल० ॥ शीलें संपत्त संपजे ॥म०॥ सीझे वंछित काज ॥ ला० ॥ म० ॥ २ ॥ क्षायण सा

यण व्यंतरी ॥ म० ॥ भूत प्रेत वेताल ॥ ला० ॥
शील तणा परजावथी ॥ म० ॥ आवी नमे ततकाल
॥ ला० ॥ ३ ॥ शूली सिंहासण थइ ॥ म० ॥ शेठ
सुदर्शन जोय ॥ ला० ॥ शील तणा परजावथी ॥
म० ॥ रान वेलाउल होय ॥ ला० ॥ ४ ॥ कान्हड
साधु तणी परें ॥ म० ॥ नविपण पालो शील ॥
ला० ॥ इण जव सुख संपद मिले ॥ म० ॥ पर जव
अधिकी लील ॥ ला० ॥ ५ ॥ नगर चलुं पदमावती
॥ म० ॥ मरुधर देश मकार ॥ ला० ॥ धर्मनाथ पर
सादथी ॥ म० ॥ पूजा सत्तर प्रकार ॥ ला०॥६॥ वसा
वसे व्यवहारीया ॥ म० ॥ धन करि धनद समान ॥
ला० ॥ त्यागी त्यागी बहुगुणी ॥ म० ॥ दे पट दरि
सण दान ॥ ला० ॥ ७ ॥ सत्तरेशें ठेतालीसमे ॥
म० ॥ तिहां कीधो चठ मास ॥ ला० ॥ सद्गुरुना
परसादथी ॥ म० ॥ पूगी मननी आश ॥ ला० ॥७॥
श्रीतपगठ गुरु राजीयो ॥ म० ॥ श्रीविजयप्रज सूरिं
द ॥ ला० ॥ तस गठगगन दिवाकरु ॥ म० ॥ श्री
विजयरत्न मुणिंद ॥ला०॥ए॥ तस गठमें महिमा नि
लो ॥ म० ॥ श्रीजयसागर उवज्ञाय ॥ ला० ॥ तास
शिष्य शोजाकरु ॥ म० ॥ जितसागर गणिराय ॥

ला० ॥ १० ॥ राजसागर सुख संपदा ॥ म० ॥ रचि
यो ए अधिकार ॥ ला० ॥ उंछो अधिको जाखीयो ॥
म० ॥ मिछामि डुक्कड कार ॥ ला० ॥ ११ ॥ मानसा
गर सुखसंपदा ॥ म० ॥ जितसागरगणि शिष्य ॥
ला० ॥ साधु तणा गुण गावतां ॥ म० ॥ पूगी मन
ह जगीश ॥ ला० ॥ १२ ॥ नवमी ढाल सोहामणी
॥ म० ॥ गोडी राग सुरंग ॥ ला० ॥ मान सागर क
हे सांजलो ॥ म० ॥ दिन दिन वधते रंग ॥ ला० ॥
। १३ ॥ इति श्रीशीलविषयिक मानसागरगणिविर
चित कान्हडकठियारानो रास समास ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीमयणरेहानो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूआ मांस दारु तणी, करे वेश्याशुं जोष ॥
जीवहिंसा चोरी करे, परनारीनो दोष ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ अनाथीनी वैरागी देशीमां ॥

॥ व्यसन सातमुं परनारीनुं, प्रत्यक्ष पाप दीखायुं॥
रावण पदमोत्तर मणिरथ राजा, तीनुं राज गमायुं

॥ १ ॥ राजवीयानें राज पियारो, भाइ ठेघो प्या रो ॥ ए आंकणी ॥ मणिरथराजा केरो सुणजो, यु गबाहुनें मार्यो ॥ आप मूर्खने राज गमायु, हार्थे कर्तुं अ न आयो ॥ राज० ॥२॥ रावण राजा पद्देलो हूओ, पीछें पदमोत्तर रायो॥ त्रीजी कथा मणिरथ राजानी, ते सुणजो चित्त लायो ॥ राज० ॥ ३ ॥ जम्बुद्वीप भरत खेतरमां, नगर सुदरसण भारी॥ धनधान्ये पूरण देखतां सुंदर, रैयत सुखी राजारी ॥ रा० ॥ ४ ॥ मणिरथ राजा धारणी राणि, रिद्धि तणो विस्तारो ॥ हाथी घोडा र थ पायक सेना, थाकतो चोथो आरो ॥ रा० ॥ ५॥ स्वचक्रनें परचक्रनो, विरोध नहीं तेणिवारो ॥ मणिर थराजाने युगबाहु भाइ,माहो मांहे छे प्यारो ॥ रा० ॥ ६ ॥ पचेंद्रीना भोग भोगवता, नाटिक रयणि दि हाडे ॥ विविध प्रकारनी क्रीडा करता, विषय विरूद्ध हवे पाडे ॥ ७ ॥ मणिरथ राजा राज करंतां, चढीयो मदेख उदारो तेणे अवसर मयणरेहा दीठी, युगबा हुनी नारो॥ रा० ॥ ८ ॥ रूप देखीने अचरज पाम्यो, अहो अहो रूप अपारो ॥ इण राणीने महोलमां राखु, सुख विलसुं संसारो ॥ रा० ॥ ए ॥ मणिरथ राजा क री मनसुबो, युगबाहुनें बोलायो॥ करो सजाइ आयुध

शालानी, देश लेवा हुं जायो ॥ रा० ॥ १० ॥ हाथ जोडी युगबाहु बोले, एठे थोडो काजो ॥ राज बिराजो राजसुखोमें, हुं जाउं महाराजो ॥ रा०॥११॥ मणिरथ राजा राजी हुउ, हुकुम कीयो ठे जाइ ॥ देस किलो कायम कर आजो, ले जाउ फोज सजाई ॥ रा० ॥ १२ ॥ युगबाहु उठ्यो सीताबशुं, हरख हुउ मन मांहिं ॥ देस किला कायम करी आवी, मुजरो करशुं जाइ ॥ रा० ॥ १३ ॥ लइ फोजां युगबाहु चढीयो, मजलें मजलें जायो ॥ युगबाहु तो मरम न जाणे, मणिरथ कीयो उपायो ॥ रा० ॥ १४ ॥ मणिरथराजा मयणरेहाने, जारी वस्त्र मगावे ॥ घरेणा जडाव पहेरण सारु, दासी हाथें पोहोचावे ॥ रा० ॥ १५ ॥ राजाना कहेवाथी दासी, दे राणीने जायो ॥ मणिरथराजा चोज बनायो, तिणरी खबर न कायो ॥ रा० ॥ १६ ॥ मयणरेहा मनमांहे जाण्यो, धणी चाल्यो संग्रामो ॥ मयणरेहा मन युंही विमासे, जेठ पिताने ठामो ॥ रा० ॥ १७ ॥ एम जाणीनें उंरा लीधा, वस्त्र आभूषण सारो ॥ नेह स्नेहे वस्तु मेली ने, राजा लाग्यो लारो ॥ रा० ॥ १८ ॥ मयणरेहानें रीसज आवी, दीयो दासीने जिंजकारो ॥ मुज ध

बीतो परदेश सिधाय्यो, राजा पड्यो मारी खारो ॥ रा० ॥ १९ ॥ दासी मन दलगीर हुइने, राजा पासें जायो ॥ मयणरेहातो कोप करीनें, दीनी वस्तु वगा यो ॥ रा० ॥ २० ॥ मणिरथराजा रात समयमां, म हेल माहनें आयो, दरवाजो जडीयो तेणे दीठो, हे लो मारे रायो ॥ रा० ॥ २१ ॥ मयणरेहा मनमांहे जाण्यो, मणिरथराजा आयो ॥ बीजो उपाय तो कोइ न दीसे, दीठं सासुने जगायो रा० ॥ २२ ॥ मयणरे हा तो ठानुं जइनें,वात सासुने जणायो ॥ अमलने व स मातायें जाण्यो, बेटो भूखें आयो ॥ रा०॥२३॥ एतो महेल बेटा जुगबाहुनो, मेहेल पेहलीकानी बारो॥ वचन माताना सांजली राजा, लाज्यो घणो तिणिवारो॥रा० ॥२४॥ मयणरेहा मनमाहे जाण्यो, पड्यो राजा माहा रे खारो॥ तो कासीद हुं मेलुं धणीनें, हेला आवजो ए कवारो ॥ राज० ॥ २५ ॥ बीती वात लखी कागल मां, जीवसी जाणो मानें॥ तो घर पाठा वहेला आ वजो, दगो कीठं नाह थाने ॥ राज० ॥ २६ ॥ का सीद कागद दीनो वेगो, जुगबाहुने आई ॥ कागल वाची जुगबाहुयें जाण्यो, दगो कीठं छे नाई॥ राज० ॥ २७ ॥ इमआणी जुगबाहु चलियो, ढील न कीधी

कांइ॥ मुहूर्त नही महेले जावणरो, निमित्तिये वात बताइ ॥ राज० ॥ २७ ॥ जुगबाहु देहेरो बाहिर कीधो, नगरीमां नहीं आयो ॥ मणिरथराजारो कूर जाणीनें, राणी धणीकनें जायो ॥ राज० ॥ २९॥ मयणरेहा मित्र आप धणीनी, पर पुरुष प्रीति न जाणी ॥ विरत आपणुं राखण सारु, जतन करे छे राणी ॥ राज० ॥ ३० ॥ मयणरेहा तो गइ सीतावशुं, विधिशुं वात सुणाइ॥जुगबाहु तो मनमें जाण्यो, मारशे मुझनें जाइ ॥ राज० ॥ ३१ ॥जुगबाहुने आव्यो जाणी, कूर उपनो राजा रे ॥ मणिरथ राजा करे विमासण, उमराव छे इण सारे ॥ राज० ॥ ३२ ॥ जुगबाहुने राणी कहेली, दगो करेलो जाइ॥ साथ समान छे इणरे घोडे, तो हुं पहेलां मारुं जाइ ॥राज० ॥ ३३ ॥ जाइ मारण राजा रातरो चाल्यो, चढीयो एक सखाइ॥दोडीदार चाकर पालंतां, गयो धरवाइन मांहि ॥ राज० ॥ ३४ ॥ मयणरेहा तो मनरी दाखवी, जेट ले मणिरथ आयो ॥ कहे धणीने हुउ सावधानो, मारेलो थांको जायो ॥ राज० ॥३५॥ मयण रेहातो अलगी हुइ, राजा नेडो आयो ॥ जुगबाहु तो साहामो आयो, मणिरथ घाव चलायो ॥ राज० ॥ ३६॥

जाइ मारीने पाछो वलियो, थइ घोडे असवारो ॥ सर्प पूठडीये खुर देहेथी, खाधो छे तिणिवारो ॥ राज० ॥ ३७ ॥ मणिरथ राजा हेठें पडियो, मरण पाम्यो त त्कालो ॥ खबर नहीं कोइ राजसजामें, कर्म कीधो चालो ॥ राज० ॥ ३८ ॥ मयणरेहातो धणीकनें आ इ, दुःख धरती मनमांहि ॥ मेंतो थांने कह्यो महा राजा, मारेलो थांको जाइ ॥ राज० ॥ ३९ ॥ मयण रेहा तो कहे धणीनें, करो संथारो सोइ ॥ चार शर ण थांने होजो स्वामी, नहीं छे किणरो कोइ ॥ रा ज० ॥ ४० ॥ मोरा प्रीतम थाने शु कुं, शीख हैयडा में धारो ॥ साहेब सु परदेश सिधारो, हु जातु धांधु लारो ॥ रा० ॥ ४१ ॥ मोरा प्रीतम थाने देवअरिह तो, गुरुनिग्रथ सुसाधु ॥ धरम दया केवलीको जांख्यो, समकितने आराधो ॥ रा० ॥४२॥ मो० ॥ थाने जीव मारणरो, जावजीव पच्चख्काणो ॥ सरव प्रकारें मृषा वादमे, अवत्तदानमें जाणो ॥ रा० ॥ ४३ ॥ मो० ॥ थाने मैथुन सेवणरो, नवविध प्रगट प्रमाणो ॥ मनु ष्य अने तिर्यंच संबधि, जावजीव पच्चख्काणो ॥ रा० ॥ ४४ ॥ मो० ॥ थाने नवविध,परिग्रहनो परिहारो ॥ क्रोध मान माया लोज्ञ प, चारेनो परिहारो ॥ रा०॥

॥ ४५ ॥ मो० ॥ थाने राग द्वेषह, कलहने अन्नरका
णो ॥ पैशुन्य चाडी रती अरती, परपरिवाद पचरका
णो ॥ रा० ॥४६॥ मो० ॥ मायामोसो, नही जलो कोइ
रीते ॥ मिथ्याशल्य मनथी काहाडीने, रहो समकेत
पर तीते ॥रा०॥४७॥ मो०॥ नही कोइ कहेनुं, स्वपनो
संपत जाणो ॥ परन्नवमां ए साथे चालसी, गांठे बांधो
नाणो ॥ रा० ॥४७ ॥ मो० ॥ थाने सूंस करावुं, मोमें
जीव मत घालो ॥ करी अलोयण कारज सारो, पर
न्नव सुख सोहिलारो ॥ रा० ॥ ४ए ॥ मो० ॥ इम
करो विचारो, धरम साचो करी जाणो ॥ कान्नअणीज
ल जीवित जाणो, श्रीजिनवचन प्रमाणो ॥ रा०॥५०॥
॥ मो० ॥ ए दोष करमनो, किणने दोष न दीजें ॥ कृण
वैयरतो कोइ न बूटे, बांध्या जे न्नुक्तीजे ॥ रा० ॥ ५१ ॥
मो० ॥ कुण माताने पिता, कोण कुटुंब कोण न्नाइ ॥
घरकीतो साहेब नही स्त्री, स्वारथ सरव सगाइ ॥ रा०
॥ ५२ ॥ मो० ॥ सरदहजो संथारो, चार आहार प
रिहरियो ॥ मरण सहुने साहेब इकदिन, सायतो रा
खजो हियो ॥ रा० ॥ ५३ ॥ मयणरेहा गती गाढ
करीने, कारज पतिनो सुधार्‍यो ॥ मित्र द्रोहने मरण सु
धारे, धन्य मित्र तणो नेह पार्‍यो ॥ रा० ॥५४॥ मो० ॥

मोहवशे यह मरण बिगाडे, वेरी नरकमें घावे ॥ स गा तोपण पूरव वयरी, यह छजा तिण कावे ॥ रा० ॥ ५५ ॥ मित्र होइने मरण सुधारे, ते विरला संसा रो ॥ यह सरणाने सूस कराव्या, करियो पर उपगारो ॥ रा० ॥ ५६ ॥ धन्य संसारमें मयणरेहा सती, का रज धणीनुं सुधार्युं ॥ जीव्यु तो एनुं रूडो जाणो, धन वैजव न संचार्युं ॥ रा० ॥ ५७ ॥ मो० ॥ मन समता आणो, ममता कोइ मत राखो ॥ शत्रु मित्र सहु सरखा जाणो, कोइशु शल्य म राखो ॥ ॥ रा० ॥ ५८ ॥ जुगबाहु तो सरदहो संथारो, सा ह्य दीयो ठे राणी ॥ कालमासे तो काल करीने, जइ उपना विमाणे ॥ रा० ॥ ५९ ॥ मयणरेहा सती म नमें जाण्यो, रखे पकडे मने रायो ॥ वेस बदलावी ने परि जाठ, दासी नाम धरायो ॥ रा० ॥ ६० ॥ के रामेंशु बाहिर निकली, गइ उजाडी मांयो ॥ पडी आपदा नही कोइ साथे, राणी कुंअर जायो ॥ रा० ॥ ६१ ॥ जिणजाये दसोटण हूसे, वधती राज वधा इ ॥ विषम वियोगनो कुंअर जायो, जोजो कर्म कमा इ ॥ रा० ॥ ६२ ॥ चपो पालखो राणी करपे, रखे आवे कोइ लारो ॥ इम जाणीने कुंअर जायो, दुइ

करमोने सारो ॥ रा० ॥ ६३ ॥ कोमलकाया कारण पडियो, पाय पडे नही ठायो ॥ कुंअर तो राणी नि जतो न जाएयो, बाल मेल्यो रणमांयो ॥ रा०॥६४॥ चीर बिछाइ सिला उपर सुवाड्यो, बाल विछोहो जाण्यो ॥ होणहार थारो होसे जाया, मयणरेहा दुःख आण्यो ॥ रा० ॥ ६५ ॥ घणा दासने दासी हूती, राज कुमरनी धायो ॥ दोडी पडदामांहे रहेती, राणी एकली जायो ॥ रा० ॥ ६६ ॥ कुंअर मेलीने आगें चाली, अन्न विण सुनी काया ॥ कठे सुवावड कुण मंगल गावे, कर्मे चेंन दीखाया ॥ रा० ॥ ६७ ॥ जाता जाता आगें नदी आइ, वस्त्र पाणीमें पखाल्यो ॥ स्नान करीने तीरे बेठी, दुःख करे मयणरेहाला ॥ रा० ॥ ६८ ॥ कोण वियोग पडीयोहो माने, किसे ठेकाणे आइ ॥ रणमां रोली एकली बेठी, रोवे छे विललाइ ॥ रा० ॥ ६९ ॥ किणघर जन्मी किणघर आइ, राजानी राणी कहाइ ॥ साहेब महारो मूठ मेल्यो, रण रोइमें आई ॥ रा० ॥ ७० ॥ पडियो विछोहो मात पितारो, जगवल्लभ लघु भाइ ॥ चंद्रजसाने महोलमां मेल्यो, बालक छे रणमांही ॥ रा० ॥ ७१ ॥ महेल झरोखा शोभे जाली, राजवीयां रुसनाइ ॥ झ-

द्धि सादेवकी हवी मेली छु, श्राइ वेठी वनमाहीं॥ रा०
॥ ३२ ॥ विषम हजाडी तीर नदीनो, सुख नहीं ठे
तिण रती ॥ मयणरेहा तो ड ख करी दोरी, कष्ट प
ड्यो ठे सती ॥ रा० ॥ ३३ ॥ जूरे घणीने करेय वि
लापा, ड खजर गती फाटे ॥ मयणरेहानु ड ख प्र
भु जाणे, वेठी ठे तट माटे ॥ रा० ॥ ३४ ॥ संयो
ग रूपणी श्हाड हुती, वियोगणी तिणगवाली ॥ नाथ
विहूणी ड खज करती, श्रावी रणमे राली ॥ रा०
॥ ३५ ॥ देखो सगाइ इण संसारो, थीव्हतां नहीं वा
रो ॥ इम जाणीने सदगुरु सेवो, लाहो लेजो सारो
॥ रा० ॥ ३६ ॥ तिण श्रवसरमें देवता जाण्यो, ड
ख करे ठे राणी ॥ वैक्रियरूप कर्यु हाथीनु, राम
त मांकी पाणी ॥ रा० ॥ ३७ ॥ ड ख वीसरीने वि
सम कीनो, सूंढ उगाले पाणी ॥ ड ख दोरीने हाथी
दीठो, रमत देखे राणी ॥ ३८ ॥ जियुं जियु रामत देखे
राणी, श्रचरिज मनमां धारी॥धर्म श्रंकुरो पुण्य प्रकारें
श्रावे ठे नरनारी॥ रा० ॥३९॥ जलचरी हाथी तेहने
सुरुशु,देखी राणी हगाली॥सेटले नेडो श्रावी निकल्यो,
पार्गांतर॥देवताठे कोइ परउपगारी,राणी शुंढे हगाली॥
इतरेकोइ श्राय निकल्यो, राणी विमानमें घाली ॥रा०॥

॥७०॥ विद्याधरतो राजी हूउं,रूप घणो छे नारी ॥ तरत विमान ने पाछो वाल्यो, हुं लइ जाउं घरबारी ॥रा०॥ ॥७१॥ मयणरेहा तो मनमें जाण्यो,तुरत वल्यो छे पाछो॥ कुण जाणे किण दिस लइ जावे,युंतो न दीसे आछो ॥ रा० ॥ ७२ ॥ विद्याधरने राणी पूछे,जातो किण दिसे जाइ ॥आवतो ते पाछो वलियो, किसी आइ दिल मांही ॥ रा० ॥ ७३ ॥ जगवंतना हुं दरिसण जातां, तुज सरखी मली नारी॥ इम जाणी हुं पाछो वलियो, सुख विलशुं संसारी ॥ रा० ॥७४ ॥ मयणरेहा मीठे वचनें कहे, जगवंत दरिसण जातां॥ मारग माहे तो हुं मली छुं, नफो बहु दरिसण करतां ॥ रा० ॥ ७५ ॥ तीर्थंकरना दरिसण करतां, प्रसन्न होसे थारी काया ॥ विद्याधर सुणि पाछो वलीयो, मयणरेहा मन जाया ॥ रा० ॥ ७६ ॥ समोसरणशुं नेडा आवी, विमानथी उतरिया ॥ करी वंदनाने वखाण सुणियो,कारज सती ना सरिया ॥ रा० ॥ ७७॥ जुगबाहुतो देवता हुउ, उठे छे उपम आणी ॥ करजोडी देवांगना हर्षशुं, जयजय कहे मुखवाणी ॥ ७७ ॥ इणठामे स्वामी आइ उपना, हुवा हमारा नाथो॥ कुण गुरुनी तुमे सेवा कीधी, किशो दान दीयो हाथो ॥ रा० ॥७ए॥ज्ञाने करीने दें

घतायें दीठो, पूरखप्रवनो विचारी ॥ जुगबाहु महारे
नामज हूतो, मयणरेहा महारी नारी ॥ रा० ॥ए०॥
मयण रेहाने कारण मुजने, मणीरथ भाइयें मारयो
धरम तणो मुज साजज दीधो, मयणरेहा मुने त
स्यो ॥ रा० ॥ ए१ ॥ उपगारी गुरुणी जाणीने, देव
ता दरिसन जायो ॥ देखे मयणरेहा किण थानक
बेठी समोसरण मांयो ॥ रा० ॥ ए२ ॥ ततक्षण दे
वता तिहां आवीने, प्रभुने प्रदक्षिणा दीधी ॥ साधु
साध्वी सर्व छोडीने, मयणरेहाने वंदन कीधी ॥ रा०
॥ ए३ ॥ पर्षदा देखी हसवा लागी, देवता दीसे
गहिलो ॥ स्त्रीने इणे वंदन कीधी, जीणारो प्रभु उत्त
र देलो ॥ रा० ॥ ए४ ॥ हेलो मत ने मकरो हासो
ए ठे धनी गुरुणी ॥ इम जाणीने वंदना कीधी, प
ठया प्रवनी परणी ॥ रा० ॥ ए५ ॥ जुगबाहु इणरे
नाम ज हूतो, मयणरेहा ए नारी ॥ धर्म तणो इणे
साहाजज दीनु, ए हूउं सुर अवतारी ॥ रा० ॥ए६॥
मयणरेहा रे कारण इणने, मणिरथ भाइयें मारयो
उपदेश देइ संथारो सर्दह्यो, मयणरेहायें तारयो ।
रा० ॥ ए७ ॥ मयणरेहा सती मनमांहे जाण्यो, वे
त वीशे ठे महारो ॥ इण अवसरमें संजम लेउं, प

ठी विद्याधरने सारो ॥ रा० ॥ ए८ ॥ नरी परषदामें मय
णरेहा उठी, बोले वेकर जोडी ॥ आज्ञा द्यो स्वामी
संयम लेउ, टालुं नवनी कोडी ॥ रा० ॥ एए ॥ दे
व कहे थाने आज्ञा महारी, ल्यो थें संयम नारो ॥
युगबाहू तो उरण हुउं, मयणरेहाने तास्यो ॥ रा०
॥ १०० ॥ सुजने तो विद्याधर व्यायो, परवस वात
प्रकाशी ॥ कठे विद्याधर कहे देवता, गयो विद्याधर
नासी ॥ रा० ॥ १ ॥ मयणरेहायें संयम लीनो,
ज्ञान नणे गुरुणी पासें ॥ विनय करीने आज्ञा पा
ले, समिति गुपति अहिआसे ॥ रा० ॥ २ ॥ देवतो
मनमां हर्षज पाम्यो, पूजे प्रजुना पायो ॥ साध सा
ध्वी सर्व वांदीने, आव्यो जिणदिशि जायो ॥ रा०
॥ ३ ॥ देवता आपणे ठामे पोहोतो, मयणरेहा सं
यम पाले ॥ बालक माताथें रणमां मूक्यो, आपण
पुण रखवालो ॥ रा० ॥४॥ न कोइ हिंसक जीवत्यां
आयो, नहीं कोइ पंखी आयो ॥ पुण्य एहना जोर
करीनें, राजा रणमां आयो ॥ रा० ॥ ५ ॥ मिथिला
नगरी पद्मोत्तर राजा, चढियो सिकारे सोइ ॥ पाप
करतां पड्यो पाधरो, पूरव सुकृत कोइ ॥ रा० ॥६॥
करी असवारी वनमां फिरतो, चढ्या पायक सब को

इ ॥ रणमां बालक सूतो दीठो, पद्मोत्तर राजी होइ ॥ रा० ॥ ७ ॥ बालक देखी राजा आव्यो, रूप जो इ अचरिज पायो ॥ बालकतो कोइ पुण्यवंत दीसे, राजाने मन भायो ॥ रा० ॥ ८ ॥ देखो पुण्याइ राजा केरी, भरम नही मनमांयो ॥ वस्तुप्राप्ति पुण्य प्रमाणे, कुंअर राजायें पायो ॥ रा० ॥ ए ॥ महारा राज्यमां पुत्र नही ठे, पतो सहेजे आयो ॥ इण बालकने ठंरो लइने, सोंपु राणीने जायो ॥ रा० ॥१०॥ कुमर उचाली राजा पाठो, आयो निज दरबारो ॥ पटराणी पुफचूला तेडी, पुत्र दीयो देवकुमारो ॥ रा० ॥ ११ ॥ नव मसवाडा भारे मरती, देवी पीतर मनायो ॥ आपणा पूरव पुण्ये करीने,कुमर सहेजे आयो ॥ रा० ॥ १२ ॥ आपणा राजमां पुत्र नही ठे, करो इणरी प्रतिपालो॥ राज्य लायक ठ कुअरज दीशे, होसे रैयत रखवालो ॥ रा० ॥ १३ ॥ भारी चूक वणी वइ राणीने, कुमरज खोले घाल्या ॥ पुण्यवंत कुमर घर आयो पीठे, भूम्या नमीने चाल्या ॥ रा० ॥ १४ ॥ जे भूम्याणी अतिही बीहीता, कुंअर राजा रे आयो ॥ भूम्या आवी चाकरी लागा, नमी नाम देवराव्यो ॥ रा० ॥ १५ ॥ नमी कुमरतो वधतो रा

जमें, दिनदिन चढतो होइ ॥ मात पिता बांधव वि
ठोहो, ते सुणजो सहु कोइ ॥ रा० ॥ १६ ॥ जुगबा
हुने मणिरथे मास्यो, विषयरसें लोजायो पाठो व
लतां सापें खाधो, चोथी नरकमें जायो ॥ रा०॥१७॥
बेहु राजानो मरणज हुवो, खबर हुइ नगरीमांहि ॥
मयणरेहा तो निकली नाठी, तिणरी खबर न कांइ
॥ रा० ॥ १७ ॥ दोनुं राजारो कारज कीधुं, राज चं
द्रजसाने दीयो ॥ किणने दोष न दीजें प्राणी, कर्म
आपजे कीयो ॥ रा० ॥ १ए ॥ चंद्रजसा तो राज्य
करे ठे, वरते चोथो आरो ॥ बाप तणो मन थोडो
आवे, पण डुःख ठे मातारो ॥ रा० ॥ २० ॥ नमी
कुमर तो महोटो हुंवो, बल हीण हुवो राजारो ॥
नमीकुमरने राज बेसाड्यो, सुख विलसे संसारो ॥
रा० ॥ २१ ॥ जुगबाहु तो देवता हुंउ, मयणरेहा
संयम पाले ॥ चंद्रजसाने नेमी जाइ, दोनुं राज रख
वाले ॥ रा० ॥ २२ ॥ आठ कर्म ठे महा जोरावर,
जीवमें फांटा पाडे ॥ चारुंने तो न्यारा कीधां, एक
बहु डुःख देखाडे ॥ रा० ॥ २३ ॥ दोनुं राजा राज
जोगवतां, अटवी हाथी पडियो ॥ वस्ति आपणी रा
खण सारुं, बाहिर करवा चडियो ॥ रा० ॥ २४ ॥ चं

ड्जसा तो मनमें जाण्यो, ठेलड दीसे कठारो ॥ वे खोनी महारी धरती लेसे, राजधीयां अहकारो॥रा० ॥ २५ ॥ चड्जसा फोजां लश्चढीयो, काकड सामी आयो ॥ नमी कुअर तो करी सजाइ, मनमें मगज न मायो ॥ रा० ॥ २६ ॥ चड्जसा तो कोप करीने, घोले वांकी वाणी ॥ मर्मना मोसा बोले नमीने, व ढीयो ठे इम जाणी ॥ रा० ॥ २७ ॥ तिण अवसर में मयणरेहा सती, मनमें इसडी जाणी ॥ अंगजात ठे दोनु महारा, निश्चे पुण्यवंत प्राणी ॥ रा० ॥२८॥ लाख आदमीरी घातज होसे, मरसे घणा अजाणी॥ एथी कोइ उपगारज कीजे, मयणरेहा मन आणी ॥ रा० ॥ २९ ॥ विनय करी गुरुणीने पूछे, आप क हो तो जाउ ॥ दोनुं राजरी राड मिटाउं सुं जाइ स मजाउ ॥ रा० ॥ ३० ॥ मांहोमांही कोइ न छुटशे, अगजात ठे महारा ॥ घणा जीवांरी घातज होसे, परमारथ ठे दोबारा ॥ रा० ॥ ३१ ॥ देखो पुण्याइ राजवीयारी, गुरुणी तो नही वर्ज्यो ॥ वस्तु आ पणी सेंठी करीने, पठी उपगार युं करजो ॥ रा० ॥ ३२ ॥ करी वदन मयणरेहा चाली, फरी सतीयांरो साथो ॥ चंड्जसा तो सध पीठाणे, पहेला करु नमी

शुं वातो ॥ रा० ॥ ३३ ॥ कांकडसीमां वेग ठिकाणे,
फोजां चढी छे दोइ ॥ नमिय कुमरनुं लसकर पूछी,
चाली मयणरेहा सोइ ॥ रा० ॥ ३४ ॥ राज कचेरी
में राजा बेठा, वात नही विष टालो॥ फूंफ लडाइरी
वातां राजाने, उमराव मोती मालो ॥ रा० ॥ ३५ ॥
ायणरेहा सती चरम शरीरी, आप तरी पर तारे ॥
ाज सजाशुं नेडी आवी, नजर पडी राजा रे ॥ रा०
। ३६ ॥ नमीयकुमर उठ्यो सीताबी, विनय कस्यो
ो नारी॥ सात आठ पग साहामो आयने, सतीयां
ेम पधारी ॥ रा० ॥ ३७ ॥ मयणरेहा सती कहे रा
जाने, कारण पड्यो थाशुं नारी ॥ फोजबंधी तो तें
नली कीधी, तिणखल परने विचारी ॥ रा० ॥३८ ॥
महारो हाथी अटवी पडीयो, न देवे चंमालघर जा
यो ॥ साथ सहुने भेलो करीने, तिण कारण चढी आ
यो ॥ रा० ॥ ३९ ॥ बापमास्योने माता नागी, गइ
किणारी लारे ॥ महारी धरती लेवण आयो, नीचनो
जायो त्यारे ॥ रा० ॥ ४० ॥ बेटो थें छो राजवीयां
रो, बोलो बोल विचारो ॥ थां उपरवली कुण चडी आ
सी, छेनाइ छे थारो॥ रा०॥४१॥नमीकुमरतो मनमें जा
ण्यो, माजी दीसेछे मारी ॥ लाज आणीने नीचे जो

युं, वचन कह्या में धारी ॥ रा० ॥ ४२ ॥ नेमीकुमर
सो कहे माताने, थें लीधों संयम धारो ॥ माताअ
पत्त किणविध हुइ, वात करो विस्तारो ॥ रा० ॥ ४३॥
थारा पिताने मणिरथें मारयो, हु रात्रे निकली आइ
॥ जनम थाहारो विचमांहे हूवो, में मेली दीवो रथमां
हि ॥ रा० ॥ ४४ ॥ नीरनदीरे वेठी हूती, विमान
वीद्याधरनो आयो ॥ जलचर हाथीयें मुजने उगाली,
हुं गइ समोसरण मांझो ॥ रा० ॥ ४५ ॥ पिता था
रो देवता हूवो, दरिसणे प्रभुजीने आयो ॥ आज्ञा मा
गी संयम लीनो, नेत्था प्रभुना पायो ॥ रा० ॥ ४६ ॥
दोनु राजारो जगडो सुणियो, लडशे मांहोमांहीं ॥
घणा माणसरो मरण होशे, इण कारण हुं आइ ॥
रा० ॥ ४७ ॥ नमीराजा ए वात सुणीने, चिंता फि
कर मन आई ॥ नमीय कुमरसो कहे माताने, जाइने
मिलशुं भाइ ॥ रा० ॥ ४८ ॥ ठीक नहीं छे चद्रजसा
ने, यो छे महारो भाइ ॥ नहीं विसवास छे राजवीयां
ने, तिणे मिलशुं पछेलो जाइ ॥ रा० ॥ ४ए ॥ नमी
कुमर पछेलो समजाऊ, चद्रजसा कने जायो ॥ सतीयां
नजर पडी राजा रे, विनय करी सामो आयो ॥ रा०
॥ ५० ॥ वेकर जोडी राजा बोल्यो, महासतीयो कि

म आइ ॥ काशुं कारण पडियो थारो ॥ इसडीवेला में आइ॥ रा० ॥ ५१ ॥ फोजां थारी दोनुं राजा रे, जगडो पड्यो मांह्येमांहि ॥ फोजबंधी तो थें नलीकीधी, तिणकारण हुं आइ॥ रा० ॥ ५२ ॥ बाप मास्यो मा निकली नागी, गइते किणरी लारो ॥ म्हारी धरती लेणने आयो, कही सनमुख जाइ म्हारो ॥ ५३ ॥ म्हारी धरती लेवण आयो, नीच चंडाल घर जायो ॥ साथ समान जंणे भेला कीधा, ते कारण हुं चढी आयो रा० ॥ ५४॥ बेटा छो थें राजवीयांरा, बोलो बोल विचारो ॥ जेर थांपर तो कुण चडी आसी, जे नाइ छे थारो ॥ रा० ॥५५॥ चंद्रजसा तो म्होटो मेल्यो, खबर पडी जग सारी ॥ नमी बालक न्हानो जाणीने, वात कही विस्तारी ॥ रा० ॥ ५६ ॥ वात सुणीने राजा लाज्यो, नीचे मुख करी जोहे ॥ नारी वचन कह्या माताने, राजाने नही सोहे ॥ रा० ॥५७॥ चंद्रजसायें मनमें जाण्यो, नमीय कुमर म्हारो नाइ ॥ नही स्नेह छे दोय बेटारो, तिण कारण माता आइ ॥रा०॥ ॥ ५८ ॥ चंद्रजसा तो मलवा चाल्यो, नमी कुमर साहामो आइ ॥ हरखनावशु वांह पसारी, मलीया दोनु नाइ ॥ रा० ॥ ५९ ॥ एक हाथीपर दोनु बे

टा, चन्द्रजसा नमी भाइ ॥ चन्द्रजसारा केराने दिसी, आवे हरख उमाइ ॥ रा० ॥ ६० ॥ गुरू महाइनी था, सज करता, खरता कोडाकोडी ॥ लोकां रे मन अचरिज आयो, कांइ कीयो इण मोडी ॥ रा० ॥ ॥ ६१ ॥ गुरू मटावी मेल कराव्यो, घणा लोक हूवा राजी॥घणा जणारा माथा पडतां, राख्या ठे इण माजी ॥ रा० ॥ ६२ ॥ चलो होजो इण माता केरो, जस श्रीधु जगमांहि ॥ राजा उमराव कुशलज हूवा, घरघर रंग वधाइ ॥ रा० ॥६३॥ राजकचेरीयें आवी बेठा, चन्द्रजसा नमी भाइ ॥ चन्द्रजसा मुख थयु जाणीने, वैरागें मन आइ ॥ रा० ॥ ६४ ॥ चंन्द्रजसा तो कहे नमीने, राज्य करो थें भाइ ॥ मुने तो अब दीक्षा लेणदे, प दोनुं राज्य जलाइ ॥ रा० ॥ ६५ ॥ नमी कहे मुने दीक्षा लेणद्यो, आप राज्य करो महारायो ॥ राजपाट रिद्धि सहु संपद, मेंतो थाने भलायो ॥ रा० ॥ ॥ ६६ ॥ चंन्द्रजसा सो दीक्षा लीधी, हर्ष हैये नवी मावे ॥ भाइ विहूडं डुःखनुं घडेरो, नमीय रायने आवे ॥ रा० ॥ ६७ ॥ नमीय राजातो राज्य करे ठे, राणी एकशोने आठो ॥ पछे चाटो कदहुवे कारो, दोनुं राजारो पाटो ॥ रा० ॥ ६८ ॥ दाहज्वरना योगें करीने,

लीधो संयम जारो ॥ इंद्रपरीक्षा करवा आयो, उत्त राध्ययन विस्तारो ॥ रा० ॥ ६९ ॥ दोनुं राजा रो मेल करायो, मयणरेहा पाछी आइ ॥ गुरुणीने तो पाये लागीने, विधिशुं वात सुणाइ ॥ रा० ॥ ७० ॥ दोनुं राजाशुं मेल करायो, राखी घणारी बा जी ॥ मयणरेहाना गुण जाणीने, गुरुणी हुइ छे राजी ॥ रा० ॥ ७१ ॥ छत्रीश हजार आरजांमांहे, गुरुणी चंदन बाला ॥ पुण्यतणी राय पदवी पाइ, शीखणी र तनारी माला ॥ रा० ॥ ७२ ॥ चेडा राजारी साते पुत्री, जगवंत आप वखाणी ॥ चेलणा मृगावती त्रीजी प्रजावती, चोथी शिवादेवि राणी ॥ रा० ॥ ७३ ॥ पां चमी पद्मावती छठी सुलसा, ज्येष्टा सातमी जाणी ॥ कष्ट पड्यां सती शीलज पाल्यां, दमयंती नलराणी ॥ रा० ॥ ७४ ॥ अंजना महिंद्रराजारी बेटी, विखो सह्यो वनमांही ॥ कष्ट पड्यो सती व्रतज राख्यो, जस कीरती जुगमांहि ॥ रा० ॥ ७५ ॥ सती द्रौपदी आगें हुइ, जस लीधो युगमांहि ॥ महोटा राजारो विरोध मिटायो, मयणरेहा अधिकाइ ॥ रा० ॥ ७६ ॥ संयम लइने सुकृत करजो, मनुष्य जनम मत खोइ ॥ जिन शासनमें मयणरेहा कीनो, ज्युं करजो सब कोइ ॥

रा० ॥ ७७ ॥ मयणरेहा सती दीक्षा लइने, शुद्धमन संयम पाल्यो ॥ जिनमारगमें नाम दीपायो, भवनो फेरो टाल्यो ॥ रा० ॥ ७८ ॥ मयणरेहा कुलतारक हुइ, लज्जा आपणी राखी ॥ दिखो सह्यो पण मत नवि भांज्यु, सवजुगमांहे शाखी ॥ रा० ॥ ७९ ॥ युगबाहुने मयणरेहा राणी, चंद्रयशा नमी भाइ ॥ चारेनां तो कारिज सरिया, मणिरथ नरकज माहि ॥ रा० ॥ ८० ॥ मयणरेहाने कारण मणिरथ, युगबाहु ने मार्यो ॥ पाछो वलतो सापें खाधो, एको काज न सार्यो ॥ रा० ॥८१॥ ॥ व्यसन सातमुं परनारीनुं, जीवघात घर हार्यो ॥ मणिरथराजा नरकें पहोतो, कामभोग भक्षो आप्यो ॥ रा० ॥ ८२ ॥ इम जाणी ने कामे न राचो, दुखदाइ छे अपारो ॥ उत्तम प्राणी मनमें धारो, जासो मोक्ष मझारो ॥ रा० ॥ ८३ ॥ प्रथम वीरजी दान वखाण्यो, पछी शील अधिकारो ॥ तपस्या तपीने कर्म निवारो, भाव वडो संसारो ॥ रा० ॥ ८४ ॥ एक व्यसनें मनोरथ न सीधो, दुःख पायो संसारो ॥ सात व्यसन जे सेवे प्राणी, तिणरो दुःख छे अपारो ॥ रा० ॥ ८५ ॥ विषयारस विषसम जाणीने, सतगुरु सेवा कीजे ॥ मणिरथराजानी वात

सुणीने, परनारी त्यागीजे ॥ रा० ॥ ७६ ॥ गाम कडीयें कस्यो चोमासो, संवत चौदोतेरा मांयो ॥ कथा कारण आ ढालज कीनी, हर सेवक चित्त लायो ॥ रा० ॥७७॥ साधां रे तो मुख सांजलजो, चरित्र मय णरेहारो ॥ तिण उपर कोइ अधिको उंगो, मिछाडुक्कड महारो रा०॥७८॥इति मयणरेहा चोपाइ समाप्त ॥

॥ अथ श्रीनारकीनुं ७ ढालीयुं प्रारंज ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वर्द्धमान जिनवीनवुं, साहेब साहस धीरो जी ॥ तुम दरिसण विण हुं जम्यो, चउगतिमां वडवीरो जी ॥ १ ॥ प्रजु नरक तणां डुःख दोहेलां, में सह्या काल अनंतो जी ॥ सोर कस्यां नवि को सुणे, एक विना जगवंतो जी ॥ २ ॥ प्रजु० ॥ पाप करीने प्राणीयो, पहोतो नरक मोजारो जी ॥ कठिन कुजाषा सांजली, नयण श्रवण डुखकारो जी ॥ प्रजु० ॥ ३ ॥ सीतल योनीयें उपजे, रहेवुं वली ते ठामो जी ॥ जानु प्रमाणे रुधिरनां, कीच कह्या वहु तामो जी ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥ तव मनमांहि चिंतवे, जाइयें किणदिशि नासो जी ॥ परवस पडियो प्राणीयो, करतो कोडी

विश्वासो जी ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ चन्द नही सूरज नही, घोर घटा अंधारो जी, थानक अतिश्र विहामणु,फर स जिस्यो खगाधारो जी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ नवो नरकमां उपजे, जाणे असुर तिवारो जी ॥ कोप करी आवे तिहां, हाथें धरी हथीयारो जी ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ करे कारमी वेदनी, करता खमोखम जी ॥ जीव करे तिहां किणे बहू, पामे दुःख परचरु जी ॥ प्रभु०॥८॥

॥ ढाल बीजी ॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

॥ भांजे काया भाजतो रे, मारे फेचा रे मांय ॥ उंधे माथे अगनी दीये रे, उभा बांधे पाय रे ॥ १ ॥ जिनजी सांभलो ॥ करुआ कर्मविपाक रे, प्रभुजी सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ आवे वैतरणी तटें रे, अ खमां नाखे रे पास ॥ करीए कुहाडे तरु परें रे, छेदे अधिक उल्लास रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ उंचा योजन पांचसें रे, उछाले रे आकाश ॥ श्वानरूपें करडे तिहां रे, मृ ग जिम पाडे पास रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ पनरे भेदें सु र मली रे, करवत दीये रे कपाल ॥ आरोपे सूली शिरे रे, भांजे जिम तरुडाल रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ बो ले ताता तेलमां रे, तरीकरी काढे रे ताम ॥ वली भोजनमां खेपवे रे विरुआ ते विसराम रे ॥ जिन०

॥ ५ ॥ खाल उतारे देहनी रे, अन्नख सदा दे आ हार ॥ बहु आरडडा पाडतो रे, तनु विच घाले खार रे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग मारु ॥

॥ ताप करे तिहां भूमिका रे, वन आय सीतल जाण ॥ आवी बेशे तरु गहडे रे, पडतां भांजे प्रा ण ॥ चतुर मत राखजो रे ॥ १ ॥ कडुआ करम विपाक, विरुआ विषय विलास ॥ सुख थोडा छुःख घणा जेहथी रे, लहियें नरक निवास ॥ च० ॥ २ ॥ कुंभीमां पाक करे तस देहनो रे, तिल जिम घाणी मांहि ॥ पीली पीली रस काढे तेहनो रे, महेर न आवे तास ॥ च० ॥ ३ ॥ नाठो जाय त्रीजी नरक ल गें रे, मन धरतो भय भ्रांत ॥ पूठें परमाधामी सुर पु ले रे, जेहवा काल कृतांत ॥ च० ॥ ४ ॥ दांत विचें दीये आंगुली रे, फरी फरी लागे पाय ॥ वेदन सहे तां काल थयो घणो रे, हवे मुऊ सह्यो न जाय ॥ च० ॥ ५ ॥ ज्यां जाय त्यां उठे मारवा रे, कोइ न पूठे सार ॥ छुःखभर रोवे सोर करे घणो रे, निपट हैये निरधार ॥ च० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीयें ॥ देशी ॥

॥ परमाधामी सुर कहे, सांजल तु जाइ ॥ कहो क्यो दोष कुमारडो, निज देखो कमाइ ॥ परमा०॥१॥ पाप तमे कीधां घणां, बहु जीव विणास्या, पीड न जाणी पर तणी, कुडा मुख जांख्या ॥ पर० ॥ २ ॥ चोरी लाव्यां धन पारकां, सेवी परनारी॥आरंज कीधा अतिघणा रे, परिग्रह नवि मारी ॥ पर० ॥ ३ ॥ मात पिता गुरु ठेलव्या, कीधो क्रोध अपार ॥ मान माया लोज मन धस्यो, मतिहीन गमार ॥ पर० ॥ ४ ॥ निशिजोजन कीधां घणां, बहु जीव विणास्या ॥ प काजक घणा जक्ष्या, पातकनो नहीं पार ॥ पर० ५

॥ ढाल पांचमी ॥ जापामां ॥

॥ एम कही सुर वेदना ए, वयर ठहीरे ताडितो ॥ सिला कंटाला वज्रतणा ए, तिहां पढावे साहतो ॥ १ ॥ सयल वदन कीडा जखे ए, जीज करे शत खंम तो ॥ ए फल निशि जोजन तणां ए, जाणो पाप अखम सो ॥ २ ॥ तरस वसे तातो तरुवें, मुखमां नामें साम सो ॥ अगनी वरणी पुतली ए, स्पर्श करावे श्राम तो ॥ ३ ॥ जनोने अति आकरो ए, आर्पे तातुं नीर तो ॥ ते धावे तस आंखमां ए, कानमां

नरेय कथीर तो ॥ ४ ॥ कालो अधिक बिहामणो ए, हूंमक जे संस्थान तो ॥ दीशे दीन दयामणो ए, व ली अ संहारे प्राण तो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ इणिपरें बहु वेदन सही ॥ चित चेतो रे ॥ व सतां नरक मजार ॥ चतुर चित्त चेतो रे ॥ ज्ञानवि ना जाणे नहीं ॥ चि० कहेतां नावे पार ॥ च० ॥१॥ दशदृष्टांतें दोहिलो ॥ चि० ॥ लाधो नरनव सार ॥ च० ॥ पामी एले म हारजो ॥ चि० ॥ करजो एह विचार ॥ च० ॥ २ ॥ सूधो संयम आदरो ॥ चि०॥ टालो विषयविकार ॥ च० ॥ पांचे इंद्री वश करो ॥ चि० ॥ जिम होये बूटक बार ॥ च० ॥ ३ ॥ निद्रा विकथा परिहरो ॥ चि० ॥ आराधो जिनधर्म ॥च०॥ समकेत रत्न हैये धरो ॥ चि० ॥ नांजे मिथ्या नरम ॥ च० ॥ ४ ॥ वीर जिणंद पसाउले ॥ चि० ॥ अहि पुर नगर मोजार ॥ च० ॥ तवन रच्युं रलीयामणुं ॥ चि० ॥ परमकृपाल उदार ॥ श० ॥ ५ ॥

॥ इति नारकीनुं षटढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ हरीआली ॥

॥ महोटा ते मदिर मालीयां रे सखी, जालीयें जाकजमाल ॥ दीप जलामल जगमगे रे सखी, वास भुवन वरलाल रे ॥ माननी महीयल मोहनवेल ॥१॥ पतो गाजती करे गजगेल, रलीयामणी रंगनी रेल, पहनें पोहोचती पुरुषनी खेल रे ॥ माननी मही० ॥ ए आंकणी ॥ लाखतणा लेखा नही रे सखी, जोग ये पुरुषनी कोड ॥ कामणगारी कामिनी रे सखी, न विकरे मोडामोड रे ॥ माननी मही० ॥ २ ॥ यती घणा जेणे वस्था रे सखी, ए सति बालकुमारि ॥ नीच नपुसकशु रमे रे सखी, लोककहे सायास रे ॥ माननी मही० ॥ ३ ॥ वेसिछुंति वेश्या नही रे सखी, नही अबला सुणि दासि ॥ गुणवती ते गोरडी रे सखी, जाठगी तस बलिहार रे ॥ माननी मही० ॥ ४ ॥ देह अजरामर कजली रे सखी, बीजतणो जिस्यो चंद ॥ श्रीचरणप्रमोद पसाउलें रे सखी, पामो परमानद रे ॥ माननी मही० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ॐ श्री जिनेश्वराय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्योनमः ॥

अथ श्री हंसराज वत्सराजनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ आशावरी राग ॥

॥ आदीश्वर आदें करी, चउवीशे जिणचंद ॥ सरसति मन समरूं सदा, श्री जयतिलक सूरींद ॥१॥ सद्गुरु पय प्रणमी करी, पामी गुरु आदेश ॥ पुण्य तणां फल बोलशुं, कहिशुं हुं लवलेश ॥ २ ॥ पुण्ये शिवसुख संपजे, पुण्ये संपत्ति होय ॥ राजऋद्धि लीला घणी, पुण्ये पामे सोय ॥३॥ पुण्ये उत्तम कुल हुवे, पुण्ये रूप प्रधान ॥ पुण्ये पूरुं आउखुं, पुण्ये बुद्धि निधान ॥ ४ ॥ पुण्य उपर सुणजो कथा, सुणतां अचरिज थाय ॥ हंसराज वत्सराज नृप, हूवा पुण्य पसाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ रागधन्याश्री—कोश्या वामिनी एणी परे विनवे जी ॥ देशी ॥

॥ जंबुद्वीपें भरत वखाणीयें जी, पुर पयठाण प्रधान ॥ अलकापुर समोवरु ते जाणीयें जी, वृद्ध तणुं नहिं ज्ञान ॥ जंबु० ॥ १ ॥ जाइ जुइ ने चंपो

मोघरो जी,सेघत्री सुकुमाल ॥ केवडो करेणो ने वलि मालती जी, पूगी ताल तमाल ॥ जंबु० ॥ २ ॥ आंबा रायण जबु करमदां जी, वड पींपल ने डाख ॥ जवी री ने दाडिम नींबुआं जी, वृक्षतणा तिहां लाख ॥ जबु० ॥ ३ ॥ पुरपयगाण नगर पासें वहे जी, गंगा जलसम नीर ॥ नदी गोदावरी नामें गुणभरी जी, जल जेवुं गोक्षीर ॥ जंबु० ॥ ४ ॥ हंस चकोर ने च कवा सारही जी, बगलां वेगां तीर ॥ चीडी चास ति त्तर पारेवडां जी, केलि करे ते नीर ॥ जबु० ॥ ५ ॥ गढ मढ मंदिर सोहे देहरां जी, वलि पोशाल निशा ल ॥ नगर चोराशी चहूटा चिहुं दिशे जी, उपर ढाक कमाल ॥ जबु० ॥ ६ ॥ विविध व्यापारी नगरमांहें वसे जी, धर्मी ने धनवंत ॥ चार वरणनां लोक तिहां रहे जी, धर्मतणी मन खंत ॥ जबु० ॥ ७ ॥ शालि वाहन सुत नरवाहन पटे जी, रूपें अमर समान ॥ त्याग खाग निकलंक सदा चलो जी, सहुको माने आण ॥ जंबु० ॥ ८ ॥ यादववंश विभूषण ऊपनो जी, जीव दया प्रतिपाल ॥ त्रणशे शाठ अंतेउरी तेहनेजी, उत्तम गुणहिं विशाल ॥ जबु० ॥ ९ ॥ गयवर हय वर आगें हींसता जी, नाटक चऊ बत्रीश ॥ वहेता,

शेठ सेनापति मंत्रवी जी, सेवे कुलि बत्रीश ॥ जंबु०
॥१०॥ बावन वीर सदा सेवा करे जी, बंधव अतिबल
वंत॥ लहुडो शक्तिकुंवर सोहामणो जी, सकल कला
गुणवंत ॥ जं० ॥ ११ ॥ एक दिन सुतो नरवाहन सुखे
जी, निद्रावश नरपूर॥पहेली ढाले राजा पोढियो जी,
कहे श्री जिनोदय सूरि ॥जंबु०॥१२॥ सर्व गाथा ॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ सूतो सुपनांतर लहे, अद्भुत सुपन नरेश ॥
दिवस उग्यो जागे नहीं, देखे नयर निवेश ॥ १ ॥ क
णयापुर पाटण गयो, कीधो नगरी प्रवेश ॥ हंसावलि
रायपुत्रिका, दीठो अद्भुत वेश ॥२॥ कनकब्रम राजा
सुता, परणावी सा बाल ॥ दीधा बहुला दानजा,
सुखे गमतो तिहां काल ॥३॥ दरबारे सहुको मिल्या,
खान अने सुलतान॥शेठ अने सेनापति, बेठा बहु
दीवान ॥ ४ ॥ नरपतिने भेटण भणी, पुरप्रगणे कै
भूप ॥ निमित्तिया आया तिहां, कहेवा सकल स
रूप ॥५॥ ब्राह्मण वेद भणे जिके, वली ज्योतिषिया
जाण ॥ वैदराज आवी मिल्या, नट चट करे वखाण
॥ ६ ॥ हयवर आगे हींसता, गयवर गरू करंत ॥
पायक आया प्रणमवा, इणि परि मेल मिलंत॥७॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुकीया कौतुक भणी, खेड सघलो साजो रे ॥
एकण विण सहुको मिल्या, एक नहीं महाराजो रे॥
॥ १ ॥ जेवुं घर दीपक विना, अंधकार किम थायो
रे॥ एकणहीं राजा विना, गोवाला विण गायो रे ॥
जे० ॥२॥ तिणे अवसर तिहां आवियो, मनकेसरि
मनरंगो रे॥लोक खास मिल्यां जिहां, प्रणमे सहु
उठरंगो रें ॥ जे० ॥३॥ आदर दे आघो गयो, पहो
तो राजा पासो रे ॥ आसंगो करि अति घणो, सा
मि सुणो अरदासो रे ॥ जे० ॥४॥ तुम दरवार सहू
खडे, भेटण आया काजो रे ॥ दिनकर पण ऊंचो
चढ्यो, उठो श्री महाराजो रे ॥ जे० ॥ ५ ॥ मन्त्रिव
चन राय जागीयो, आलस मोडी अंगो रे ॥ सूतो सिं
ह जगावियो, कीधो निद्राभंगो रे ॥ जे० ॥ ६ ॥ को
पानल राजा हुर्ड, रातां लोचन कीध रे ॥ रीप भरें
राय ऊठियो, खांडु हाथें लीध रे ॥ जे० ॥ ७ ॥ रे
मूरख कीधु कीश्यु, हु निद्रामांहि आजो रे ॥ कण
यापुर पाटण गयो, कनकभ्रम तिहां राजो रे ॥ जे०
॥ ८ ॥ तस पुत्री हंसावली, अपहरने अनुहारो रे॥

रंग जंग करी अति घणा, परणी में सुविचारो रे ॥ जे० ॥९॥ तेहनो तें विरहो कीयो, सुखमें कियो अंतरायो रे ॥ जीवंतां नवि वीसरे, इम बोले महारायो रे ॥ जे० ॥१०॥ खड्ग काढी जव धाइउं, मंत्रीश्वर मन चिंते रे ॥ सुहणां किम साचां हुवे, राय पड्यो किसी भ्रांतें रे ॥ जे० ॥ ११ ॥ जूहारी साचो चवे, ऊगे पश्चिम भाणो रे ॥ समुद्र किमे पूरो हुवे, आपणो न होय राजानो रे ॥ जे० ॥ १२ ॥ मनकेसरी सुहतो भणे, विण अपराध कांइ मारो रे ॥ बीजी ढाल पूरी हुइ, आगल जेह प्रकारो रे ॥ जे० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्री कहे राजा सुणो,कीजे काम विमास ॥ पछे न पछतावो हुवे, जीव हुवे न उदास ॥ १ ॥ सुपन मांहि परणी जीके, हंसावलि जसु नाम ॥ परतख ते परणाविशुं, सारशुं वंछित काम ॥ २ ॥ इण वचनें सुसतो हुउं, खड्ग धस्युं निज ठाम ॥ सुसतो शीतल जाणियो, मंत्री करे प्रणाम ॥३॥ अवधि दियो एक मासनी, जोवरावुं सा नार॥ राय कहे बिहु मासनी, तां लगे करो विचार ॥४॥ मंत्रीश्वर तुं मुझ

खरो, जो मेले मुझ नार ॥ पृथ्वीपति पधराविया,
सहु को करे जुहार ॥ ५ ॥ मन्त्रीसर आयो घरे,
शोचे बुद्धिनिधान ॥ किणविध ते नारी मिले, री
झे किम राजान ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शील कहे जग हु वडो ॥ ए देशी ॥ राग रामग्री ॥
॥ मंत्री तस कीधुं किश्युं, सत्रकार तिहां मांड्यो रे
॥ मरणसणे मेले करी, सहु प्रमाद तिणे छांड्यो रे
॥ मं० ॥ १ ॥ चिहुं दिशि चिहु पोले सदा, मागे ते
तसु दीजे रे ॥ नाकारो नवि कीजिये, नाम ठाम पू
छीजे रे ॥ मं० ॥२॥ सोफी संन्यासी घणा, जोगी जं
गम भाटो रे ॥ वजण अवधूत कापरी, भिखिया नर
ना थाटो ॥ रे ॥ मं० ॥३॥ एम करतां बहु दिन गया,
परदेशी पूछतो रे ॥ गाम नाम नवि को कहे, पूछि पू
छि विरतसो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ एक आयो परदेशथी,
मुझुसे नयणे दीठो रे ॥ आदर दीधो अति घणो, मुह
कराव्यो मीठो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ कहो तुमे किहांथी
आविया, किण देशांतर वासी रे ॥ कवण नगर तुमे
निरखियां, तब ते कहे विमासी रे ॥ मं ॥ ६ ॥ अ
ड़शठ तीरथ में कियां, बहु धरती में दीठी रे ॥ कण

यापुरथी आवियो, वात कहि अति मीठी रे ॥ मं० ॥ ॥७॥ भूख्यां भोजन संपजे, जिम तरशांने पाणी रे ॥ मुहताने मन जे हुती, तेहज बोल्यो वाणी रे ॥ मं० ॥ ८ ॥ आदर देई अति घणो, पूछे तेहने वातो रे ॥ कणयापुर ते किहां अछे, वात कहो विख्यातो रे ॥ मं० ॥ए॥ समुद्र परें अति शोभतो, कणयापुर पेठाणो रे ॥ कनकभ्रम राजा तिहां, बहुबुधि चतुर सुजाणो रे ॥ मं० ॥ १० ॥ हंसावलि रायपुत्रिका, रूपे रंभ समाणी रे॥ तिहांथी हुं आव्यो इहां, मंत्री वात सहु जाणी रे ॥ मं० ॥ ११ ॥ ते परदेशी लेइने,नरवर पासे आवे रे ॥ आगल मूकी भेटणुं, रंगे राय वधावे रे ॥ मं० ॥ १२॥ पूर्वे वात मांडी कही, जिम परदेशी भांखी रे ॥ राये वात मानी खरी, ते नर कीधो साखी रे ॥ मं० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजामन धीरज धरी, हवे हुई मन आश॥त्रीहुं मिलि मतो कियो, पंथ अछे एक मास ॥ १ ॥ बावन वीर तेमाविया, बंधव अति बलवंत ॥ हुं जाशुं जात्रा भणी, भेटण तीरथ खंत ॥ २ ॥ नरवाहन राजा कहे, राजा विण शुं राज ॥ जब लगे हुं आवुं नहीं,

हता नणी रे, कोइ न पूछे वात ॥ पोलमांहे मालण मिली रे, सलखू नामे विख्यात ॥ रा० ॥ ६ ॥ मालण माला कर धरी रे, कीधी विहुंने पेस ॥ शकुन नलुं जाणी करी रे, रंज्यो मनमां नरेश ॥ रा० ॥७॥ मालण ने मुड़ा दिये रे, राजा करे पसाय ॥ राजा मंत्री विहुं नणी रे, मालण लेइ घर जाय ॥ रा० ॥७॥ मालण कर जोमी कहे रे, हुं बुं तुमारी दास॥ए मंदिर ए मालियां रे, रहो सदा इहां वास ॥ रा० ॥ए॥ मालणने मंदिर रह्या रे, मनकेसरी ने राय ॥ नगर कुतुहल जोवतां रे, मनोवंछित ते खाय ॥ रा० ॥१०॥ एक दिवस राजा नणी रे, मालण जंपे आम ॥ बेशी रहो निजस्थानके रे, जो जीवणशुं काम ॥ रा० ॥ ११ ॥ राजा पूछे आदरे रे, मांमी कहो मुऊ वात ॥ मरण तणो नय किण विधे रे, मालण कहे अवदात ॥ रा० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण नगरे राजा तणी, पुत्री छे डुरदंत॥आठम चौदश पूनमे, नर निश्चे जु हणंत ॥ १ ॥ सोम शनिश्चर मंगले,वलि चोथो रवि वार ॥ इण वारे निश्चे हणे, फरे ते लहेछे मार ॥२॥ राजा घर बेठो रहे,

नावे को दीवान ॥ नर ते सवि नाठा फिरे, सामो न मले प्राण ॥३॥ पांच दिवस लगि सामटी, देवी सक जाय ॥ वाजिंत्र आगल वाजतां, प्रणमे देवी पाय ॥४॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग रामग्री ॥ करमपरीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ एह वचन राय मंत्री सांभली जी, शोचे हृदया मकार॥ए परपंचो आवे पाधरो जी, करस्यां किश्यो विचार ॥ १ ॥ कर्मपरीक्षा राय मत्री करे जी, मत्री बोले जी ताम ॥ हुं मनकेसरी मुहतो ताहरो जी, सारु तुकनुं काम ॥ क० ॥ २ ॥ राजा पुत्री ते परणावशुं जी, ते करशु तुक दास ॥ जेहनु नाम अछे हंसाव ली जी, ते तुक आणु पास ॥ क० ॥ ३ ॥ माल्हण म दिर राजा राखियो जी, सुखे रहे जो इण गाम॥ढ मन करीने मत्री नीकल्यो जी, करवा नृपनुं काम ॥ क० ॥४॥ देवी देहरे मंत्री आवियो जी, मत्री करे य प्रणाम ॥ पूजी अर्ची मत्री विनवे जी, राखो माह री माम ॥ क० ॥ ५ ॥ शरीर संकोची मंत्री आपणुं जी, बेठो देवीनी पूठ ॥ संध्या समये ते हंसावली जी, खड्ग धरी निज मूठ ॥ क० ॥६॥ नारी पचस या परिवारशुं जी, बेठी पीठ मकार ॥ रुद्ररूप दिसे

तिहां देहरुं जी, हनुमंत करे होकार ॥ क० ॥ ७॥ बावन वीर तिहां बीहामणा जी, डमरु वाजे हाथ॥ झरुख चढीने झाझण धसमसे जी, नाके घाली नाथ ॥ क० ॥ जूत प्रेत ने व्यंतर तिहां घणांजी, जोटिंग करे ऊंकार ॥ जोगणी पीठ तिहां किणे जाग ती जी, शक्तितणी तिहां कार ॥ क०॥ ए॥ रुंढमुंड माथा तिहां रडवडे जी, वहे तिहां लोहीनी खाल॥ अग्निकुंड सदा आगे बले जी, करती जालो जाल॥ ॥क०॥१०॥ कुमरी एहवां कौतुक जोवती जी, पूजावि धि सहु लेय ॥ बलि बाकुल ने तिलवट लापशीजी, तीन प्रदक्षिणा देय ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ७ए ॥

॥ दोहा ॥

मंत्रीसर मन चिंतवे, अवसर लाधो आज ॥ शक्ति तणे सांनिध्य करी, सारिश निश्चे काज ॥१॥ हुं मंत्रीश्वरतो खरो, एहने पाडुं पास ॥ ए हंसावलि हरखशुं, रायतणी करुं दास ॥२॥ महुताने मति उ पनी, बोले देवी वाण ॥ अंधारे अलगां थकां, चाले से मुज प्राण ॥ ३ ॥ मंडप आवी मानिनी, हाकोटी तव हिक ॥ मत पेसे रे पापिणी, मारिश तुजने ठीक

॥ ४ ॥ कुमरी कपट न जाणियु,जाणी देवी वाच ॥ शीकंपा शरीरे हुया, जे जपे ते साच ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ राग सिंधुमो ॥ तोमीजाति॥वीरे वखाणी राणी चेलणा जी, ॥ए देशी॥ कुमरी मनमें चिंतवे जी, देवी कोपी श्राज ॥ केमेंकीधीआशातना जी, के नवि श्राव्यो साज ॥कु० ॥ १ ॥ मुऊ न जरे म श्रावे इहां जी, नावे तु मारी पीठ ॥ जा परहि तुं पापिणी जी, ताहरुं मुह म दीठ ॥ कु० ॥ ॥२॥पुरुष हत्या कीधीघणीजी, तिणे हुउं तोशुंरोप॥ कर जोमी कुमरी कहे जी, सामिणि मुऊ नहिं दोष ॥ कु० ॥ ३ ॥ पूरव जव में जाणियो जी, ज्ञानतणे परिमाण ॥ हुं पहेले जवें पक्षिणी जी, रहेती वडे उद्यान ॥ कु० ॥४॥ श्रांबा उपर अति जखुं जी, रहे वा कीधुं ठाम ॥ मालें इहां में मूकियां जी, जुगल ज नम्यां बे ताम ॥ कु० ॥ ५ ॥ कर्म जोगें तिहां शु थयुं जी, लागो दव असराल ॥ सूकां नीला तिहां बालतो जी, करतो जालो जाल ॥ कु० ॥ ६ ॥ नीयमो जव में निरखियो जो,बालक आएयो मोह ॥ उपर पांख पसा रिने जी, मनमें धरियो ठेह ॥ कु० ॥ ७ ॥ कल ज पी में नांखियु जी, श्रावो जल तुमे जाय ॥ तरु सीं

च्यां सहुने हुशे जी, जीवन एह उपाय ॥कुं० ॥८॥ पापी मिश पापी गयो जी, मुऊ नही पूठी सार, इणां बलियां अग्निमें जी, नाणी महेर लगार ॥ कुं० ॥ए॥ संतति कारण सामिणी जी, में होमी निज काय ॥ मरणतणे मेलें करी जी, कंत गयो निरमाय ॥ कुं० ॥१०॥ जातिस्मरणे जाणियो जी, पूरव नव विरतंत ॥ बलतां बालक मूकिने जी, नाशी गयो मुऊ कंत ॥ कुं० ॥ ११ ॥ तिण द्वेषे में मारिया जी, हणिया पुरुष अनेक॥देवी कहे कीधुं किश्युं जी, तुऊमें नहिंय विवेक ॥कुं०॥१२॥ तुऊ कंतें कीधुं जिश्युं जी, अवर न दूजे होय ॥ तुऊ कारण तिणे तनु दह्यो जी,हिये विचारी जोय ॥कुं०॥१३॥ सर्वगाथा ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

॥ शक्ति मुखेथी सांजली, मात न जाणी वात ॥ अण जाण्या में पापिणी, नरनी कीधी घात ॥ १ ॥ आज पठी मारिश नहीं, चूके तोरा पाय ॥ जगते जोग जमाहि, कुमरी स्थानक जाय ॥ २ ॥ धसमस मंत्री उठियो, देवी बुद्धिनिधान ॥ हरुहरु तव देखी हसी, ए नर नहीं समान ॥३॥ कर जोमी मंत्री कहे, खमजो अवगुण मात ॥ तुं त्रिपुरा तुं तोतला, त्रिहुं

भुवनें विख्यात ॥४॥ तुं शीकोतर सरसती, सारे सं
घला काज ॥ कोल्ह पर्वत जागती, देवी तु हिंगला
ज ॥५॥ जालंधर ज्वालामुखी, आबू तु अंबाई॥ उ
ज्जेणी हरसिद्ध नमु, राणा जाणे राउ ॥६॥ हुं अ
पराधी ताहरो, स्तुति कीधी कर जोड ॥ स्वामि
काज साहस कियो, पूरो मनना कोड ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग आशा सिंधु ॥ धर्म हैये
धरो ॥ अथवा ॥ बंध्याचलनो हाथियो रे॥ ए देशी ॥

॥ इणे वचनें तूठी सुरी रे,मागो वर अभिराम॥
जे मागीश ते आपशु रे, सारिश तुमनो कामो रे ॥
पुण्य सदा फले, पुण्यें वंछित होय रे ॥ पु० ॥ १ ॥
मुहतो कर जोडी कहे रे, आपो करिय पसाय ॥ वि
विध विश्राम करु चर्हां रे, ए वर द्यो मुक भायो रे ॥
पु० ॥२॥ शक्ति एक दीधी तिहां रे, जा वत्स करशुं
काम ॥ देवी चरण नमी करी रे, आव्यो आपण ठा
मो रे ॥ पु० ॥३॥ मनकेसरी मुहतो नमे रे, नरवा
हननना पाय ॥ आज पछी नवि मारशो रे, देवी तणे
सुपसायो रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पूर्व वात मांडी कही रे,
हरख्यो मनमें नरेश॥चिंता हुवे स्वामी टली रे, वं
छित काज करेशो रे ॥ पु० ॥५॥ चीतारो मंत्री हु

वो रे, करे जलां चित्राम॥ क्रय विक्रय चहुटे करें रे, प्रसिद्ध हुउं सहु गामो रे ॥ पु० ॥६॥ कुमरी दासी एकदा रे, चहुटे पुहती काम॥ विविध रूप दीठां तिहां रे, मूल्यें लियां चित्रामो रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ कुमरी पासे लइ गइ रे, दीधां कुमरी हाथ ॥ हरखी हंसावली तिहां रे, लेइ आवो जइ साथो रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ कुमरी वचन मानी करी रे, पहुती तिहां तत्काल ॥ उठहो ईहांथी आदरे रे, काम परहां सहु टालो रे ॥ पु० ॥ ए ॥ हुं आवी तुझ तेमवा रे, आवो कुंमरी पास ॥ प्रसिद्धि घणी तुझ सांजली रे, पूरेश्यां तुझ आसो रे ॥ पु० ॥ १० ॥ केइ घोमा केइ हाथिया रे, केइ लिया आराम ॥ सिंह अने सावझ घणा रे, लियां इस्यां चित्रामो रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कुमरी आगें मूकीयां रे, कुमरी हुइ उल्लास ॥ विविध रूप करो इहां रे, सोहे जिम आवासो रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥१२६॥

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरि मान्युं वचन, कीधो लाख पसाय॥ ते लेईने आवियो, प्रणमे नरवर पाय ॥ १ ॥ राय आदेश लही करी, मांड्युं करवा काम ॥ कुमरी आपे आवीने, देखाडे निज ठाम ॥ २॥ नल राजा जि

म निकल्यो,हारी सघलु राज ॥ दमयंती सार्थे हुइ, वनें
मूकी महाराज ॥३॥ वलि लंका गढ मांकियो,रावणकी
धु रूप ॥ नव मह पायेसेवता, कीधु इस्यु स्वरूप ॥४॥
॥ ढाल आठमी ॥ देशी लखनानी ॥ धमाल रागे॥

॥ लखना हो रामरूप कीधु जमुं कीधो सीता
पास॥लखनां हो लखमण बंधव ते कीयो, कीधो व
लि वनवास ॥ १ ॥ ल० ॥ सोवन मृग कीधो जखो
सीता वांसे धाय ॥ ल० ॥ जोगि सरूप कीयो जुठ,
रावण हरि ले जाय ॥ २ ॥ ल० ॥वासे हनुमंत वा
दरू, लंका वाली हाथ ॥ल०॥ समुद्र पाज बांधी
तिणे, लंका कीधी अनाथ ॥ ३ ॥ ल० ॥ रामचंद्र
रावणथकी, घर आणी निज सीत ॥ल०॥ धीज की
यो सीता सती, प्रसरी दह दिशि किच ॥४॥ल०॥
पांडवनारी अपहरी, सुती भुवन मझारि ॥ ल० ॥
पद्मोत्तर तिहां पाविये, आणि जाइ मुरारि ॥ ५ ॥
॥ ल० ॥ श्रवणरूप कियो सारिखो, मात पिता
वेढ अध ॥ ल० ॥ पाणी भरतां पापियें, दशरथ
हणियो कध ॥ ६ ॥ ल० ॥ कृष्णरूप कीधु जसु,
जिण विध हणियो कंस ॥ ल० ॥ जीवजसा कंत
तातनो, जिणे खोया वेहु वंश ॥ ७ ॥ ल० ॥ लखि

या वन वाडी घणां, लखिया तरु वर आंब ॥ ल० ॥ समुद्र सरोवर वावडी, मांड्यां नगर ने गाम ॥ ल० ॥ ८ ॥ नाखर लखिया नांतशुं, लखिया तेतर मोर ॥ल०॥ लखिया सारस सूअडा, लखिया चंद्र चकोर ॥ ल० ॥९॥ सरप सावज मांड्यां घणा, सांवर रोज शीयाल ॥ल०॥ गौ गज वृषभ सुहामणा,वानर देता फाल ॥ल०॥१०॥ मलकेसरि मुहते कियो, फल्यो फूल्यो सहकार ॥ ल० ॥ मालो पण मांड्यो तिहां, जो जो कर्म प्रकार ॥ ल० ॥११॥ सर्व गाथा ॥१४१॥

॥ दोहा ॥

॥ बे बचडां उपर धर्यां, मात पिता बे पास ॥ दावानल लागो दहन, सघलो कियो प्रकाश ॥ १ ॥ पाणी लेवा पंखियो, पहोतो सरवर ठाम ॥ नारी बचडां सहु बल्यां, पाछो आवियो ताम ॥ २ ॥ देखीने दुःख ऊपनुं,झंपाणो तत्काल ॥ मोहवशे मांहे पड्यो, काल कियो तत्काल ॥ ३ ॥ इणविध चित्रज चितर्यो, पहोतो कुमरी पास ॥ मात महेल पूरो हुवो, दीधी तसु साबाश ॥४॥ चित्रहारने चोंपशुं, दीधो बहुत पसाय ॥ धन लेईने आवीयो, नरवर प्रणमे पाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्मविटंबणा ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी मंदिर निरखती रे हां,आगें दीठो तिहां सहकार॥ कर्मविटंबणा ॥ ईर्मा मुजने कारणे रे हां, कपाणो भरतार ॥क०॥१॥ हे ! हे ! जोवो जोवो रे हां, जोबन खाधा धाय ॥ क०॥ कंता तें साहस कियो रे हां,हैडे दुःख न समाय ॥ क०॥२॥ कंता तुजने कारणे रे हां, में कस्यां पाप अघोर ॥ क० ॥ पुरुष विणाश्या पापिणी रे हां, एम करती बहुला सोर ॥ क० ॥३॥ हे ! हे ! कंता तें कीधो जिस्यो रे हां, तेहवो मुज नवि थाय ॥ क० ॥ कंता कारण तुं थयो रे हां, तें होमी निज काय ॥क० ॥४॥ आपणपे आपे जाणियो रे हां, पण कंत न जाणे वात ॥ क०॥ पोपट पखी कारणे रे हां,हुं करशुं आतमघात ॥ क०॥५॥ कंता तुं किहां उपनो रे हां, सो जो जाणुं ठाम ॥ क० ॥ तो तुजने आवी मिलुं रे हां, थापु करीने सामि ॥ क०॥६॥ कंत विना हुं कामिनी रे हां, कां सरजी किरतार ॥ क० ॥ देव विछोहो कां दियो रे हां, दुःखऊपर दियो खार ॥ क० ॥७॥ इम विलाप करती घणुं रे हां, मनमांहे अति दुःहवाय ॥ क० ॥

रूप देखी धरणी ढली रे हां, क्षणमांहे मूर्छाय ॥क०
॥८॥ दासी सहु दोडी मिली रे हां, टाले शीतलवाय
॥ क० ॥ केई चंदन तनु घसे रे हां, केइ जूप पूछण
जाय ॥ क०॥९॥ पूछ्या जोषी पंडिता रे हां, देवरावे
शनिदान ॥क०॥ ऊंट घोडा खर डंभिया रे हां, कुम
रीने कंतनुं ध्यान ॥क०१०॥ एक कहे आणी गूगलां
रे हां, नाके दीजें नास ॥क०॥ एक कहे सहु पाछां
रहो रे हां,हुं वात कहुं विमास ॥क०॥११॥ चित्रहारें
महोल चीतर्यो रे हां, कोइ कीधो मंत्र ने तंत्र ॥
क०॥ए चित्रकार झाकणो रे हां, कुमरी छली एकंत
॥क०॥१२॥वात जणावो रायने रे हां, तेडावे तत्काल
॥क०॥ कूटी पीटी तेहने रे हां,आणो इहां करी झाल
॥क०॥१३॥ जोवणने दासी फिरी रे हां, जोवंती चि
त्रकार ॥क०॥ दीठो मालणमंदिरे रे हां,खेंची काढ्यो
बार ॥क०॥१४॥ आज अदिन थारो बापडा रे हां,
ते कीधुं भूंडुं काम ॥ क० ॥ के राजा शूली दीये रे
हां, के मारे तुझने गाम ॥ क० ॥१५॥ गलहथ्थो देइ
हाथशुं रे हां,केइ देता पूठें मूठ ॥क०॥ हीण वचन
मुख भाखता रे हां, पापी तुं इहांथी ऊठ ॥ क०
॥१६॥ मनकेसरी मन चिंतवे रे हां,रूडुं कीधुं भूंडुं

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्मविटंबणा ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी मंदिर निरखती रे हां, आगें दीठो तिह
सहकार ॥ कर्मविटंबणा ॥ इण मुजने कारणे रे हां
फणाणो भरतार ॥क०॥१॥ हे ! हे ! जोवो जोवो रे हां
जोवन खावा धाय ॥ क०॥ कंता तें साहस कियो रे
हां, हेहे दुःख न खमाय ॥ क०॥२॥ कंता तुजने का
रणे रे हां, में कर्यां पाप अघोर ॥ क० ॥ पुरुष वि
णास्या पापिणी रे हां, एम करती बहुला सोर ॥
क० ॥३॥ हे ! हे ! कंता तें कीधो जिस्यो रे हां, तेहवो
सुक नवि थाय ॥ क० ॥ कंता कारण तु थयो रे हां,
सें होमी निज काय ॥क० ॥४॥ आपणपे आपे जा
णियो रे हां, पण कंत न जाणे वात ॥ क०॥ पोपट
पखी कारणे रे हां, हुं करशु आतमघात ॥ क०॥५॥
कंता तु किहां उपनो रे हां, सो जो जाणु ठाम ॥
क० ॥ तो तुजने आवी मिलु रे हां, थापु करीने
सामि ॥ क०॥६॥ कंत विना हुं कामिनी रे हां, का
सरजी किरतार ॥ क० ॥ देव विछोहो कां दियो रे
हां, दातऊपर दियो खार ॥ क० ॥७॥ इम विलाप
करती घणु रे हां, मनमांहे अति दुःख थाय ॥ क० ॥

रूप देखी धरणी ढली रे हां, क्षणमांहे मूर्छाय ॥क० ॥८॥ दासी सहु दोडी मिली रे हां, टाले शीतलवाय ॥ क० ॥ केई चंदन तनु घसे रे हां, केइ नूप पूछण जाय ॥ क०॥९॥ पूछ्या जोषी पंमिता रे हां, देवरावे शनिदान ॥क०॥ उंट घोडा खर डंनिया रे हां, कुमरीने कंतनुं ध्यान ॥क०१०॥ एक कहे आणी गूगलां रे हां, नाके दीजें नास ॥क०॥ एक कहे सहु पाछां रहो रे हां,हुं वात कहुं विमास ॥क०॥११॥ चित्रहारें महोल चीतस्यो रे हां, कोइ कीधो मंत्र ने तंत्र ॥ क०॥ए चित्रकार मूाकणो रे हां, कुमरी छली एकंत ॥क०॥१२॥वात जणावो रायने रे हां, तेमावे तत्काल ॥क०॥ कूटी पीटी तेहने रे हां,आणो इहां कणे काल ॥क०॥१३॥ जोवणने दासी फिरी रे हां, जोवंती चित्रकार ॥क०॥ दीठो मालणमंदिरे रे हां, खेंची काढ्यो बार ॥क०॥१४॥ आज अदिन थारो बापडा रे हां, ते कीधुं नूंडुं काम ॥ क० ॥ के राजा शूली दीये रे हां, के मारे तुऊने ठाम ॥ क० ॥१५॥ गलहछो देइ हाथशुं रे हां,केइ देता पूठें मूठ ॥क०॥ हीण वचन मुख नांखता रे हां, पापी तुं इहांथी ऊठ ॥ क० ॥१६॥ मनकेसरी मन चिंतवे रे हां, रूडुं कीधुं नूंडुं

थाय ॥ क० ॥ मानो वचन ए माहरु रे हां,कुमर छेह जाय ॥क०॥१७॥ मानी वात मांहे लियो रे हां सुणजो सहुको लोक ॥क०॥ काने मन्त्र कही करी रे हां,कुमरीनो भांजु शोक ॥क०॥१८॥ लोक सहु पाछा कियां रे हां, कुमरी पडी अचेत ॥ क० ॥ पूरव वात मांभी कही रे हां, कुमरी हुई सचेत ॥ क० ॥ १९ ॥ हंसावलि हरखित थइ रे हां, तें मेली पियुनी वात ॥क०॥ कहे पियु माहरो पंखियो रे हां, किहां अब तरियो तात ॥क०॥२०॥ नाणतणे मेलें करी रे हां,हुं आणुं विहुनी वात ॥ क० ॥ पुर पयठाणे परगडो रे हां, शालिवाहन राय विख्यात ॥ क० ॥२१॥ जावन वंशें परगडो रे हां, नरवाहन तेहनो पुत ॥क०॥चतु रंग दलबल जेहनेरेहां, देश तिणे आण्यो सुत ॥ क० ॥२२॥ अणाशे शाठ अंतेउरी रे हां, रतिरूपे रंभ समान ॥क०॥ बावन वीर सेवा करे रे हां,जसु सेवे मंत्रि प्रधान ॥क०॥२३॥ हंसावलि हर्षित हुइ रे हां, सुणि कंत तणो अवदात ॥ क० ॥ जो मुक कतो मे लवे रे हां, तो गुण मानु हुं तात ॥ क०॥२४॥ नरवा हन राय मेलशुं रे हां, तुं मान विशावाबीश ॥ क० ॥ परणावुं परगटपणे रे हां, जो करशे जगदीश

॥ क० ॥ २५ ॥ मंत्री वली बोले इस्युं रे हां, अलगो पुर पैठाण ॥ क० ॥ विच समुद्र विच जूइ घणी रे हां, केम आवे इहां जान ॥ क० ॥ २६ ॥ राजाने हुं आणशुं रे हां, एकाकी इणे ठाम ॥ क० ॥ एक मासने आंतरे रे हां, सारिश तुझनुं काम ॥ क० ॥ २७ ॥ धन दीधुं कुमरी घणुं रे हां, लीधुं करीय प्रणाम ॥ क० ॥ स्वयंवरमंडप मांझजो रे हां, वासे करजो थें काम ॥ क० ॥ २८ ॥ मागी शिख सने हशुं रे हां, बिहु मन आनंद पूर ॥ क० ॥ ढाल हुइ दशमी इहां रे हां, कहे श्री जिनोदय सूरि ॥ क० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ १७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा पासे आवियो, जिहां रहेवानुं गेह ॥ तुझ कुमरी परणावशुं, मास दिवसने छेह ॥ १ ॥ गुप्त पणे रहेजो इहां,को नवि जाणे वात ॥ मास दिवस पूरो हुवे, होशे तिहां विख्यात ॥२॥ कुमरी कहायो तातने, तेडावो राजान ॥ संवरमंडप मांझशुं, देजो अमने मान ॥ ३ ॥ राजा मन आनंद हुउं, कुमरी वरनी चूंप ॥ ठामठामथी तेडिया, वडा वडा तिहां भूप ॥ ४ ॥ संवर [illegible] सहु मिल्या, ऋद्धिवंत-

थाय ॥ क० ॥ मानो वचन थें माहरु रे हां, कुमरई लेइ जाय ॥क०॥१७॥ मानी वात मांहे लियो रे हां सुणजो सहुको लोक ॥क०॥ काने मन्त्र कही करी रे हां, कुमरीनो भांजु शोक ॥क०॥१८॥ लोक सहु पाछा फियां रे हां, कुमरी पडी अचेत ॥ क० ॥ पूरव वात मांकी कही रे हां, कुमरी हुई सचेत ॥ क० ॥ १९ ॥ हंसावलि हरखित थइ रे हां, सें मेली पियुनी वात ॥क०॥ कहे पियु माहरो पखियो रे हां, किहां अव तरियो तात ॥क०॥२०॥ नायणपणे मेखें करी रे हां, हुं आणु विहुनी वात ॥ क० ॥ पुर पयठाणे परगको रे हां, शालिवाहन राय विख्यात ॥ क० ॥२१॥ जावन वंशें परगको रे हां, नरवाहन तेहनो पुत ॥क०॥चतु रंग वलवल जेहनेंरेहां, वेश लिणे आव्यो सुत ॥ क० ॥२२॥ प्रयशे शाठ अंतेउरी रे हां, रतिरूपे रंभ समान ॥क०॥ बावन वीर सेवा करे रे हां, जसु सेवे मंत्रि प्रधान ॥क०॥२३॥ हंसावलि हर्षित हुइ रे हां, सुणि कंत तणो अवदात ॥ क० ॥ जो मुझ कंतो में लखे रे हां, तो गुण मानुं हु तास ॥ क०॥२४॥ नरवा हन राय मेलशु रे हां, तुं मान विशावाधीश ॥ क० ॥ परणाउं परगटपणे रे हां, जो करशे जगदीश

धावशे ॥६॥ सांभल तुं चित्रकार, राजाने हो पासे रहेजे ढूकडो ॥ जिम घालुं गले माल, राजाने हो जाणुं सहुमांहे वडो ॥७॥ सहु मनावी वात, कुमरी हो आवी आपणे मंदिरे ॥ पहेरी शोल शृंगार, राजा हवे हो बहु उछव करे ॥८॥ मलिया घणा नरींद, हंसावली आवे हो कुमरी हरखशुं ॥ नरवाहन तिहां राय, कुमरी हो जाणे कंतो निरखशुं ॥९॥ वरमाला लेइ हाथ, जोतां हो चितारो नयणे निरखियो ॥ माला घाली कंठ, राजा ने राणी हो मनमां हरखियां ॥ १० ॥ नगरे हुउ उत्साह, परणी हो हंसावली राजा हेलमें ॥ जीमाड्या सहु राय, राजापे हो राणी बे पहुतां महेलमें ॥ ११ ॥ दीधा बहुला देश, दीधा हो राजाने हयवर हींसता ॥ दीधा गयवर थाट, धवला हो ऐरावण सरिखा दीसता ॥१२ ॥दीधां दासी ने दास, दीधी हो राजाने सखरी अति घणी ॥मागे शीखसनेह, चाल्या हो राजेसर आपणी भुइ भणी ॥ १३ ॥ भले दिवसे भले वार, आया हो राजेसर परणी नारीने ॥घुरिया निसाणे घाव, आयो जो मंत्रीश्वरकाम समारिने ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १९५ ॥

जान ॥ हयवर गयवर हींसता, शोक तणा नहिं ज्ञान ॥५॥ सत्तावीश दिन इम गया, कुमरी जोवे वाट ॥ जलविण मछी टलवले, खिण खिण करे उचाट ॥६॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग खंभायती ॥ लाखा फुलाणीना ॥

॥ गीतनी देशी ॥

॥ कुमरी मनह दुःखाय, अणविचार्युं हो कंता में कियुं ॥ वरस समो दिन जाय, दुःखे न हो फाटे कंता मुज हियुं ॥१॥ खिण बाहिर खिण माहिं, गोंख चडी हो कुमरी मलवले ॥ सो धन्य दिन ने मास, पूरव भवनो हो कंतो मुज आवी मिले ॥२॥ फट् चूका चित्रकार, बोल न पाल्यो हो किम तें ताहरो ॥ खोज भरी मनमांहि, धन लीधो हो कपटे तें माहरो ॥३॥ अवधि कही एक मास, जइने हो कुंवर हुं आणुं इहां ॥ हजी रें न आव्यो तेह, मुज कारण हो राय आवे किहां ॥४॥ तेडाव्या सहु राय, संवरा हो मंडप सहु आवी मल्या ॥ बिहु दिन पहिली जाय, वीणे हो चित्रकारो कुमरी दुःख टल्यां ॥ ५॥ कहे चितारने वात, नरवाहन राजा हो कब इहां आवशे ॥ आयो मोरी मात, वीणा हो राजाने सहुए व

धावशे ॥६॥ सांजल तुं चित्रकार, राजाने हो पासे रहेजे ढूकडो ॥ जिम घालुं गले माल, राजाने हो जाणुं सहुमांहे वडो ॥७॥ सहु मनावी वात, कुमरी हो आवी आपणे मंदिरे ॥ पहेरी शोल शृंगार, राजा हवे हो वहु उह्वव करे ॥८॥ मलिया घणा नरींद, हंसावली आवे हो कुमरी हरखशुं ॥ नरवाहन तिहां राय, कुमरी हो जाणे कंतो निरखशुं ॥ए॥ वरमाला लेइ हाथ, जोतां हो चितारो नयणे निरखियो ॥ माला घाली कंठ, राजा ने राणी हो मनमां हरखियां ॥ १० ॥ नगरे हुउ उत्साह, परणी हो हंसावली राजा हेलमें ॥ जीमाड्या सहु राय, राजापे हो राणी बे पहुतां महेलमें ॥ ११ ॥ दीधा बहुला देश, दीधा हो राजाने हयवर हींसता ॥ दीधा गयवर थाट, धवला हो ऐरावण सरिखा दीसता ॥१२ ॥दीधां दासी ने दास, दीधी हो राजाने सखरी अति घणी ॥मागे शीखसनेह, चाल्या हो राजेसर आपणी जुइ जणी ॥ १३ ॥ जले दिवसे जले वार, आया हो राजेसर परणी नारीने ॥घुरिया निसाणे घाव, आयो जो मंत्रीश्वरकाम समारिने ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १ए५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरी मुहता जिस्या, पूरा हुववेप्रधान॥रा जानी चिंता हरे, मेले नवे निधान ॥१॥ बुद्धिमत पासे हुवे, सारे सघलां काज॥ नरवाहन मंत्री जपी, वे एकदेशनु राज ॥ २ ॥ राज धुरंधर रायने, मुह ता समो नहि कोय ॥ काज समारे स्वामिना, जो बुद्धि घहुली होय ॥ ३ ॥ नरवाहन राजा सदा, पूर व पुण्य पसाय ॥राणीशुं सुख भोगवे,चिंतानहि मन कांय ॥ ४ ॥ पहिलो खरू पूरोहु थो, कहेश्री जिनो दय सूरि॥ भणे गुणे श्रवणे शुणे, तिणघर आनंदपुर ॥ ५ ॥सर्वगाथा॥२०० ॥ इति श्रीहंसवछप्रवंधेरायमं त्रिपरदेशगमन मत्रीकृतबुद्धिविप्रकारकेलवणहसाव लिपाणिग्रहणनामा प्रथमखंड संपूर्णः ॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव बीजो खंड बोलशु, श्रीजयतिलक पसाय॥ वक्कर हुरे करे, तुसे सरसति माय ॥ १ ॥ हसा वलि राणी समी, नगर नहि को नारि ॥ दान शील तप भाव गुण, जाणेसघुथ विचार ॥ २ ॥ हं सावलि राणी तणे, गर्भ हुवा वे बाल ॥ केलिगर्भ तिण सारिखा, अंगे अति सुकुमाल ॥ ३ ॥ जन्म

काल राजा हिवे, लेई दासी साथ ॥ बे बालक लेई करी, चाल्यो पृथिवीनाथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग गोडी॥ मन जमरानी देशी॥

॥ पुत्र बेइ निज निरखतो, राय मन हरख्यो रे॥ पहुतो वनह मझार, राय मन हरख्यो रे ॥ रूंख तले लेइ मूकिया ॥ रा०॥ बोल्या देव प्रकार ॥ रा० ॥१॥ ए बालक रूमा तमे ॥ रा० ॥ राखो रूमी रीत ॥ रा० ॥ ए बालक सघले सदा ॥ रा० ॥ दहदिशि हुशे विख्यात ॥ रा० ॥ २ ॥ गुप्त पणे ए राखजो ॥ रा० ॥ किणही दाय उपाय ॥ रा० ॥ बेइ बालक लेइने ॥ रा० ॥ आपणे मंदिर जाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ राणीने आणी दिया ॥ रा० ॥ कीधां जन्मनां काज ॥ रा० ॥ हंसराज नाम थापियुं ॥ रा० ॥ वडो जाइ वत्सराज ॥ रा०॥४॥ मनकेसरी राय तेडीयो ॥ रा०॥ आव्यो बुद्धि निधान ॥ रा०॥ जतने बालक राखवा ॥ रा० ॥ जपें इम राजान ॥ रा० ॥५॥ बावन वीर बुद्धि आगला ॥ रा० ॥ तेहनो नहिं वेसास ॥ रा०॥ बिहुं कुमरने जाणशे ॥ रा० ॥ तो करशेज विनाश ॥ रा० ॥६॥ मनकेसरी मुहतो कहे ॥ रा० ॥ करशुं कुंमरने खेम ॥ रा० ॥ परदेशे एने राखशुं ॥ रा० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरी मुहता जिस्या, पूरा हुववेप्रधान॥रा जानी चिंता हरे, मेले नवे निधान ॥१॥ बुद्धिमत पासे हुवे, सारे सघलां काज॥ नरवाहन मंत्री त्तणी, ये एकदेशनुं राज ॥ २ ॥ राज धुरंधर रायने, मुह ता समो नहि कोय ॥ काज समारे स्वामिना, जो बुद्धि घनुली होय ॥ ३ ॥ नरवाहन राजा सदा, पूर व पुण्य पसाय ॥राणीशु सुख नोगवे,चिंतानहि मन कांय ॥ ४ ॥ पहिलो खंम पूरोहु थो, कहेश्री जिनो दय सूरि॥ नणे गुणे श्रवणे सुणे, तिणघर आनंदपुर ॥ ५ ॥ सर्वगाथा॥२०० ॥ इति श्रीहंसवछप्रबंधेरायमं त्रिपरदेशगमन मंत्रीकृतबुद्धि चित्रकारकेलवणहसाव लिपाणिग्रहणनामा प्रथमखंड संपूर्णः ॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव बीजो खंम बोलशु, श्रीजयतिलक पसाय॥ वरूदार हुरे करे, तुसे सरसति माय ॥ १ ॥ हंसा वलि राणी समी, नगर नहि को नारि ॥ दान शील तप नाव गुण, जाणेसहुथ विचार ॥ २ ॥ हं सावलि राणी तणे, गर्न हुवा बे बाल ॥ केलिगर्न सिय सारिखा, अंगे अति सुकुमाल ॥ ३ ॥ जन्म

इ निराश ॥ भूख तृषा सहु वीसरी रे राय, कुमर न देखुं रे पास ॥१॥ ससनेही राय, एक घमी रे छ मास॥ विहुं कुमर विण किम करुं रे राय, दीठे पूगे आश ॥ वालेसर राय, एक घडी रे छमास ॥ ए आंकणी॥ ॥२॥ तेमावो पुत्र बे माहरा रे राय, आणो मुजनी रे पास ॥ पुत्र न देखुं जां लगें रे राय, तां लगें रहुं रे उदास ॥स०॥३॥ जिण दिन नयणे निरखशुं रे राय, सो मुज दिहाडो धन्य ॥ राय कहे राणी भणी रे राय, कर भरु तुं मन्न ॥स०॥४॥ राणीने धीरज दियो रे राय, मूक्यां तेमवा ठेठ ॥ भडी जिम ते टलवले रे राय, दोहिलुं जगमें पेट ॥ स० ॥५॥ पनर वरष पूरां हुवां रे राय, आया पुर पेठाण ॥ दीधी पुरो हित वधामणी रे राय, बेठा सहु दीवान ॥स०॥६॥ महोत्सव करी मांहे लीया रे राय, धूस्या निशाने घाव ॥ घर घर गूमी उछले रे राय, प्रणमी तातना पाय ॥ स० ॥ ७ ॥ सहु जनने अचरिज हुवो रे राय, कदहीं न सुणिया एह ॥ ए अलगा किम मू किया रे राय, एवी नेहनी देह ॥ स० ॥ ८ ॥ खोले बेहु बेसाभिया रे राय, पूछे पंमित वात ॥ लगन जोवो थें रूअडो रे राय, जाय मिले निज मात ॥

रूमी परे राय एम ॥ रा० ॥७॥ शुन मुहूर्त्त शुज वासरें ॥रा०॥ पुरोहित पुत्र दियो साथ ॥ रा० ॥ पांच धाइ प्रतिपालजो ॥ रा० ॥ लेजो हाथो हाथ ॥ रा० ॥ ८ ॥ सार्थे सबल घालियां ॥ रा० ॥ घाल्या बहुला दाम ॥ रा० ॥ रहेतां को जाणे नहीं ॥ रा०॥ रहेजो तेथे गाम ॥ रा० ॥ए॥ शीखामण पेई करी ॥ रा० ॥ लेइ चाल्या परदेश ॥ रा० ॥ नगर चम्पु देखी करी ॥ रा० ॥ कीधो तिहां प्रवेश ॥ रा० ॥ १० ॥ शुन नगरे रहेता थकां ॥रा०॥ वर्ष हुआं जब पांच ॥ रा०॥ लेहु जणावण मोकिया ॥ रा० ॥ ते न करे लव खांच ॥ रा० ॥११॥ पुरुष तणी बहोंत्तर कला ॥ रा० ॥ शीख्या थोडे काल ॥ रा० ॥ नारीतणी चोशठ कला ॥ रा० ॥ वलि शीखी रागमाल ॥रा०॥१२॥ शस्त्र तणी शीखी कला ॥ रा०॥ शीखी सघली जाख ॥ रा० ॥ पनर वर्ष पूरां हुआं ॥ रा० ॥ सघलां केरी शाख ॥ रा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ २१७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग मारु ॥ नव नगरीथी नीसख्यो रे राय ॥ ए देशी ॥

॥ जिण दिन कुमर वे मूकिया रे राय, राणी हु

धरू, संकलिगल हनुमंत ॥ जलयंत्रधिगुरु रुधिर विष,ऊांजशुं कपूरदंत ॥७॥ नरमोरू लंगो गुणगुहिर, अकलंक धिंगड मास ॥ जैरव जूतशिला जलो, का लरूप सुखवास ॥८॥ लोहिताक्ष ने बावरो,जस वल अधिक शरीर ॥ कालपीठ ने जंगडो, गरगतीयो धरधीर ॥९॥ अग्निजाल ने आगियो, चाचरियो चो मुख ॥ लोहखरो ने जूचरो, देतो दादर डुःख॥१०॥ शक्तिकुमर तें सामटा,सघले मानी हार ॥ वीर सहू मन खल जल्या, हूउं किश्यो प्रकार ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रिजी ॥

॥ राग सिंघू ॥ चरणाली चामुमां रण चढे॥ एदेशी ॥

॥ वीर सहु मन चिंतवे,ए हुवा आपण सालो रे॥ पांचे दिन जातां थकां, इहांथी आपणो कालो रे ॥ वी० ॥१॥ बावन वीरे शुं कियो, पहुता देवी पासो रे ॥ हम सेवक सहु ताहरा, पूर हमारी आसो रे॥ वी०॥२॥ हंसावलि राणी तणा,बेहु हुआ अंग जातो रे ॥ बल बुद्धि गुण आगला, हुवा सहु विख्यातो रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ बे बालकनो वध करो, के करो घणा सचिंतो रे ॥ देशवटो दूरें दियो, अमने करो निचिं तो रे ॥ वी० ॥४॥ शक्ति कहे तुमे सांजलो, मास्या

स०॥७॥ जोयां लगन मिलि ज्योतिषी रे राय, बोले सहुअ विचार ॥ विहाण सरीखो को नही रे राय, श्राखे वरस मकार ॥ स० ॥१०॥ तहत्ति वचन सहुये कियो रे राय, मान्यो जोषीनो बोल ॥ इण दिवस मलिया थकां रे राय, होशे सहि रंगरोल ॥ ११ ॥ सहुको जन थानक गयां रे राय,कीधो भूप पसाय॥ रतन दम्नो ते श्रापियो रे राय,उलट श्रग न माय॥ स० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय पासे भोजन कियो,बोले बावन वीर॥जाणु नदीये नरवदा,जोस्यां जोर शरीर ॥ १ ॥ दम्नो लेइने चालिया, मलिया नरना थाट ॥ कीफिनगारांनी परें, वहेता मारग वाट ॥२॥ हंस वंश एकण शिशो, इक दिसि बावन वीर ॥ जुके मूजे धसमसे, नदी नर वदा तीर ॥ ३ ॥ जे जण श्रागल हारशे, सो पमशे सहु पाय ॥ सहुरू दमाइ को नही,शका मकरो कांय ॥४॥ मेघनाद सहुमें वडो, बीजो नाम्नी श्रोड॥ काल भयंकर मुंजलो, शखचूरू शुलिमोरू ॥५॥ भीम भयं कर पांकुरो, वडनल ने विखमोड ॥ गोरलो गुणवंतो वली, सवलो संकलतोड ॥ ६ ॥ नगर फाड भरनी

धरूरू, संकलिगल हनुमंत ॥ जलयंत्रधिगुरु रुधिर विष,फांजशुं कपूरदंत ॥७॥ नरमोरू लंगो गुणगुहिर, अकलंक धिंगड मास ॥ भैरव भूतशिला भलो, का लरूप सुखवास ॥८॥ लोहिताक्ष ने वानरो,जस बल अधिक शरीर ॥ कालपीठ ने जंगडो, गरगतीयो धरधीर ॥९॥ अग्निजाल ने आगियो, चाचरियो चो मुख ॥ लोहखरो ने भूचरो, देतो दादर दुःख॥१०॥ शक्तिकुमर तें सामटा,सघले मानी हार ॥ वीर सहू मन खल भव्या, हूउं किश्यो प्रकार ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रिजी ॥

॥ राग सिंधू ॥ चरणाली चामुण्डां रण चढे ॥ एदेशी ॥

॥ वीर सहु मन चिंतवे,ए हुवा आपण सालो रे॥ पांचे दिन जातां थकां, इहांथी आपणो कालो रें ॥ वी० ॥१॥ बावन वीरे शुं कियो, पहुता देवी पासो रे ॥ हम सेवक सहु ताहरा, पूर हमारी आसो रे॥ वी०॥२॥ हंसावलि राणी तणा,बेहु हुआ अंग जातो रे ॥ बल बुद्धि गुण आगला, हुवा सहु विख्यातो रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ बे बालकनो वध करो, के करो घणा सचिंतो रे ॥ देशवटो दूरें दियो, अमने करो निचिं तो रे ॥ वी० ॥४॥ शक्ति कहे तुमे सांभलो, मास्या

न मरे मर्मो रे ॥ पर्डनु चुद्ध नवि हुवे, पोते पूरो धर्म
रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चिंतातुर करशु घणा, चूकावुं इप
गामो रे॥मात सातथी चूकवुं, शक्ति सही शुन नाम
रे ॥ वी० ॥६॥ इण वचने सहु सुखी हुआ, पहुत
रामत काजो रे॥शक्ति देवी तिहां थु कियो,पहुत
जिहां हंसराजो रे ॥ वी० ॥७॥ दखो उगास्यो वा
शु, देवी अदृष्ट से कीधो रे ॥ से बांधव जोता फिरे
एको काम न सीधो रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ गाम गा
जोयो घणो, किहांही न लाधी वातो रे॥ वीरक से
वत्सराजने, कुण उत्तर देशां तातो रे ॥ वी० ॥ए॥
एक नणे वत्स सांजलो, दखो गयो राजलोको रे॥
तिहां जाइ आणो तुमे, जिम नांजे मन शोको रे॥
वी० ॥ १० ॥ हंस नणे वत्सराजने, थो मुजने अ
देशो रे ॥ तुम प्रसादे हु आणशु, करशु काम विशे
षो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ सुण नाइ मुज विनति, पहो
चो सेवा काजो रे॥ विलंब तिहां करवो नहीं, शीख
विघे वत्सराजो रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ नणशे शाठ अते
उरी, आपणी तिहां ठे मातो रे ॥ मान वचन तु
माहरु, म करे कांइ तु वातो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ स
र्व गाथा ॥ २५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥मागी शीख सनेहशुं, पहोतो तिहां कुमार॥रा जलोक राजा तणो, ऊनो पोलि डुवार ॥ १ ॥ तेह वे दासी नीकली, दीठो पुरुष प्रधान ॥ राणीने आ वी कहे,द्यो एक अमने मान ॥ २ ॥ आवो जुवो आंगणे, कुण नर ऊनो बार ॥ राणी नजर निहालि यो, रीष धरी तेणि वार ॥ ३ ॥ रोष नरीराणीकहे, नरवाहन मुज स्वामि ॥ जो ऊनो तुज जोशे, सजी ते मारशे गाम ॥ ४ ॥ द्वारायत इम विनवे, तुम स रिखो जो-जोइ॥के नाणेज नतीजको, के बंधवबेटो होइ ॥ ५ राणी वातज सांनलि, आयो पुत्र वे आज॥दासी वचनेज मानियुं,के हंसकेवत्सराज॥६॥

ढाल चोथी ॥

॥ राग सोरठ ॥ देशीबर्यत्तनी ॥ राजाइ लावे बलनद्र नार ॥ ए देशी ॥

॥ राणीने करे रे जुहार, राणी हरखी तिण वार ॥ हंसावलि लीधो हरखे, वार वार पुत्रपे निरखे ॥ ॥ १ ॥ मल रंगे मकुर वधाया, नली होइ तुमे इहां आया ॥ पूठे वत्सराजनी वात, नेटशे ते विहाणमें मात ॥ २ ॥ आज दिवस अठे माय नूको, पण वि

हाणे अठे दिन रूडो ॥ तुं कांइ मिस्यो वत्स आज, कुमुहूर्ते विणसे काज ॥३॥ मा नेत्र्यां आणव पाय, मा नेत्र्यां पातक जाय ॥ मात आयो तु हुं काज, इम जंपे ठे हंसराज ॥४॥ सवा कोडी दडो इहां आयो, तिणे वांसे मा हुं धायो ॥ हवे शीख दियो मुज माइ, वमो जोइ इहांथी जाइ ॥५॥ ते वमो ढंढरहो जो लीजे, वत्सराज भाइने दीजे ॥ इम शीख दीधी तिहां माय, जननीने लागो पाय ॥६॥ माता मंदिरे जाय, दडो तिम तिम आघो थाय ॥ ते किहां नहिं पायो, जोइ जोइने पाछो आयो ॥७॥ हंसराज हुवो उदास, एक मंदिर दीठुं पास ॥ विविध तिहां वाजां वाजे, जेणे करी अंबर गाजे ॥ ८ ॥ सामी एक आवी दासी, हंसराज पूछे विमासी॥कहे किणनु ठे ए गेह, मुजने भांखो सवि तेह ॥९॥ तव दासी बोली आम, लीलावती राणी नाम॥ राजानुं ठे बहु मान, इण घर ऋद्धि तणुं नहिं मान ॥१०॥ तेहनो ए ठे आवास, सहु वात कहे इम दास॥गयो तिहां राजकुमार, राणीने करे जूहार ॥ ११ ॥ राणीने कुमरे निरखी, इन्द्राणी अपठर सरखी ॥ राणी पण दीठो कुमार, एहवो नर नहीं संसार ॥१२॥ एहशु भोगवो

यें जोग, जो पुण्य मले संयोग॥राणी कीधा शोले शणगार, आव्यां जिहां हंसकुमार॥ १३॥ आवीने कुमरने निरखे, हाव जाव करे मन हरखें ॥ मुख चंडकला जिम सोहे, नर नारी तणां मन मोहे ॥१४॥ जुजदंम जिस्या जंकाली, शोहे शोल वरसनी बाली॥ आंखडली अति अणियाली, कज्जल जिम कीकी काली ॥१५॥ सोहे कीर जिसी मुख नासा, जलां वस्त्र सुगंध सुवासा॥कानें बिहु कुंडल दीपे, जाणे शशी सूरज जीपे ॥१६॥ लीलावती चाले ठमके, पाय नेउर घूघर घमके॥कटिमेखला घूघरीयाली,सहीयरशुं देती ताली ॥१७॥ कंठें पहेर्यो नवरस हार, राणी रति तणे अनुहार ॥ करकंकण मोती जमियां,जाणे आप विधाता घमियां ॥ १८ ॥ कवि उपमा केहवी आखे,राणी हवे किश्युं जांखे॥तोशुं मोरी प्रीति अपार, जाणे परमेसर सार ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥२७९॥

॥ दोहा ॥

॥ हंस दिठे हरखित हुइ, नवि मूके ते ठाम ॥ मुख नीशासा मूकती, कीश्युं न करे काम ॥ १ ॥ कामथकी सीता हरी, रावण ले गयो लंक ॥ दशशिर रावण छेदियां, काम तणा ए वंक ॥ २ ॥ कामवशे

द्रापदी हरी, पांचे पांडव नार ॥ कुलवंते आर्य सती, दोहिलो काम संसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ सीताने संदेशो रामजीए मोकल्यो रे ॥ अथवा निंदा म करजो कोइनी पारकी रे ॥ए देशी ॥

॥ हसकुमर राणीने कहे रे, में कीधो तुमने जुहार रे ॥ मुज आशीष न दीधी तुमे रे, कहो मुज किस्यो प्रकार रे ॥ ह० ॥ १ ॥ ठोरु कुठोरु हुवे सदा रे, मा बाप न धरे रीश रे ॥ अणख आया माटें शु करे रे, माय बाप धूणे शीश रे ॥ ह०॥ २ ॥ कार लोपी कहे कामिनी रे, न गयो सगपण लाज रे ॥ रीश नहीं कांइ माहरे रे, माहरे ठे तुजशु काज रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ सगो पुत्र नहीं तु माहरो रे, तु मुज शोकी मात रे॥इण सगपण कांहिं नही रे, अतर दिन ने रात रे॥हं०॥४॥हस जणे हु आवियो रे, रतन वखाने काम रे ॥ राजलोक में जोइयो रे, फिरियो ठामो ठाम रे ॥ ह० ॥५॥ तेह वडो गयो हाथथी रे, सेहनी जे मुक चिंत रे॥ राणी कहे ते आपशु रे, जो मुज धरशो प्रीत रे ॥ हं० ॥ ६ ॥ राणी वडो देखाडियो रे, तो आप्यु हुं तुज रे॥महारी वा

त मानो खरी रे, मति लोपे तुं मुज रे ॥ हं० ॥७॥ जंघा मांस मीठुं घणुं रे, कांइ आपणपे न खवाय रे ॥ मात विचारि जुवो तुमे रे, ए काम मुजथी न थाय रे ॥ हं० ॥८॥ कुमर कहे कामी जिको रे, ते थाय सदाइ अंध रे ॥ हित युगति जाणे नही रे न लहे मर्मनो बंध रे ॥ हं० ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ १ए१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लीलावती राणी जणे, अंतर नहिं को देह ॥ बाप बेटी सासू वहू, नणंद जाणेजी तेह ॥ १ ॥ काम विकारे कामिनी, न गणे अंतर कोय ॥ बहेन जाइ माता सुता, चूकावे नर सोय ॥ २ ॥ वेद सार ब्राह्मण तणी, कामलुब्धि घर नार ॥ वेद विचक्षण पुत्रशुं, चूकी करे संसार ॥ ३ ॥ आदिनाथ अरिहं तजी, सगी बहेन घरवास ॥ रहनेमी राजीमती, रहियां मनहिं विमास ॥ ४ ॥ पाप नही को कुमर जी, मोशुं धर तुं राग ॥ मान वचन तुं माहरुं, जो होय पोते जाग ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥

॥ राग केदारो ॥ शोलमो शांति जिवनर नमुं ॥ अथवा ॥ स्वामी सीमंधर विनती ॥ ए देशी ॥ तहा

रु रूप देखी करी, उपनो मुझ मन मोह रे ॥ दीन वचन मुख भांखती, लोचन भरि मुख जोह रे ॥ ता० ॥ १ ॥ जलचर जीव जिम जलविना, मरण लहे ततकाल रे ॥ तिम तुझ विरहे हुं आकुली, कामदु ख परहु तु टाल रे ॥ ता० ॥ २ ॥ नमन करी खोलो पाथरे, नयणे न खके राणी भार रे ॥ माहरे जीवन तु सही, कर हवे मुझ तणी सार रे ॥ ता० ॥ ३ ॥ वचन माहरुं तुमे मानशो, आपशुं तुझ भणि राज रे ॥ कुमर ए वचन सुणि कोपियो, बोलियो तब हसराज रे ॥ ता०॥४॥ हण भवें मात तु माहरी, मुझथकी किमं पडे वंश रे ॥ समुद्र म र्यादाथी जो मिटे, अगनी झरे जो शशक रे ॥ता० ॥५॥ पश्चिमसूर जो उगमे, धरणी रसातल जाय रे॥ सायर मीठु जो जल हुये, तो मुझ काम न थायरे ॥ ॥ ता० ॥ ६ ॥ कुमर भणी कहे मानिनी, मान तु माहरी वात रे ॥ तूठिय सुख तुझ पूरशुं, रूठिय कर शुं तुझ घात रे ॥ता०॥७॥ कुमर भणे सुण मात जी, रूडे चूंकु किम थाय रे ॥ मिश्री खातां थकां दंत जो, पडी-जाय तो जाय रे ॥ ता० ॥ ८ ॥ कुमरजी साह स आदरी, लोपी मातनी लाज रे ॥ हाथथीखेंची

दडो लियो, चाल्यो देई हंसराज रे ॥ ता० ॥९॥ रा
णीयें कौतुक जे कियां, कहेतां न आवे छेह रे ॥
लाज मर्यादा मूकी करी, आप वलुरीयो देह रे ॥
ता० ॥ १० ॥ शोक्यना पुत्रने सामटा, वेहु मरावशुं
गम रे ॥ नाम लीलावती तो खरी, जो करुं एहवुं
काम रे ॥ त० ॥ ११ ॥ कंचुउं फाडि कटका कियो,
फाडियुं सुंदर चीर रे ॥ उंधे मुखें पडी खाटले, सर्व
संकोचि शरीर रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एम उपाय राणी
करी, कीधुं कपट अपार रे ॥ शोलमी ढाल पूरीहुई,
कहे श्री जिनोदय सार रे ता० ॥ १३ ॥ ३०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लीलावती राणी तणे, मंदिर आयो राय ॥ रा
णी किहां देखी नही, मंदिर खावा धाय ॥१॥ पूछे
राय सहेलियां, राणी नहिं आवास ॥ कर जोडी दा
सी कहे, राणी अछे उदास ॥२॥ उरामांहि अलगी
थकी, सूती छे तिहां जाइ ॥ वात सुणीने शंकियो,
पहोतो राजा धाइ ॥ ३ ॥ कहे राणी सूती किमे,
कहे तुं मननी वात ॥ पटराणी तुं माहरी, तोशुं अ
धिकी प्रीत ॥४॥ बोलावी बोले नही, खेंच्युं रायें ची
र ॥ सस[illegible]

हस तणी हुं भारजा, तिण ससरा थें थाय ॥ अल
गा रहेजो अभयकी, मनमें चिंते राय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कोयलो पर्वत धुधलो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ राणी वचनज सांभल्युं रे लाल, राजा रह्यो वि
मास रे ॥ वालूहा ॥ सिंह तणां जे बाठडां रे लाल,
कह्यो किम खाये घास रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ १ ॥ पर
नारी वधव हुता रे लाल, गगाजल जिम पूत रे ॥
॥ वा० ॥ जादववंशें ऊपना रे लाल, कीधो केह्यो सू
त रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ २ ॥ नजर भरी राय जोश्युं
रे लाल, फाल्गु सुंदर चीर रे ॥ वा० ॥ कचुको ते
काढीयो रे लाल, देखाडीयु ते शरीर रे ॥ वा० ॥ रा०
॥ ३ ॥ ते देखीने शंकियो रे लाल, मीठो सहु ए कू
ड रे ॥ वा० ॥ गुणथी अवगुण मानीयो रे लाल,
भंभेरी कियो भूड रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ ऊपण
घृत जिम धाखियां रे लाल, अधिको अग्नि दिपाय रे
॥ वा० ॥ राणी तणे वचने करी रे लाल, धमधमियो
नम राय रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ दासी तेडवा मो
कली रे लाल, पहोता मञ्जुता पास रे ॥ वा० ॥ साब
दिये ठे स्वामीजी रे लाल, राणी तणे आवास रे ॥ वा०

॥ रा० ॥ ६ ॥ मनकेसरी मुहुते तिहां रे लाल, आ
वी कीयो जुहार रे ॥बा०॥ राणी वात सहु कही रे
लाल, मुहुतो करे विचार रे ॥ बा० ॥ रा० ॥७॥ रा
णीयें शरीर वलूरियुं रे लाल,नही कोइ पुरुषनो हाथ रे
॥ बा० ॥ स्त्रीयां अनरथ उपजे रे लाल, जंजेस्यो इ
णें नाथ रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ८ ॥ राय कहे मंत्री सु
णो रे लाल, मारा ए बेहु पूत रे ॥बा०॥ ढील इहां
करवी नहीं रे लाल, राख्यो न रहे सूत रे ॥ बा०
रा० ॥९॥ मनकेसरी महुतो कहे रे लाल, कूडो म
करो रोष रे ॥बा०॥ नारी वचन नवि मानिये रे ला
ल, कुमरनो नहिं को दोष रे ॥बा०॥रा०॥१०॥ अण
विचार्युं नवि कीजिये रे लाल, कीजे कामविचार रे
॥ बा० ॥ दोष दई शिर उपरे रे लाल, नारी चरित्र
अपार रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ११ ॥ जोजोने नर पंकि
ता रे लाल, सुसर मनावी हार रे ॥बा०॥ वेगवती
वदि ब्राह्मणी रे लाल, दोष दियो अणगार रे॥बा०
॥ रा० ॥१२॥ इम जाणी नवि कीजिये रे लाल, हं
स न दीजे छेह रे ॥बा०॥ पांचे दिन जातां थकां रे
लाल, इणथी रहेशे गेह रे ॥ बा० ॥ रा० ॥१३॥ क
र्म मेले बे किहां वध्या रे लाल, पनर वरश परदेश रे

॥वा०॥ राय चरणे इहां आविया रे लाल, कर्मे कीयो प्रवेश रे ॥ वा० ॥ रा० ॥१४॥ सर्व गाथा ॥३१९

॥ दोहा ॥

॥ राजा राणी वेहु जणे, मूल न मानी वात ॥ वार वार मत पूछजो, करजो विहुनी घात ॥ १ ॥ राय कहे तिम पाधरो, पासो पडे ते दाव ॥ निर्धन पुरुषनु बोलवुं, जाणे वायो वाय ॥ २ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ वेशी मधुकरनी ॥ धन सार्थवाह साधुने,दीधुं घृतनु दान ॥ ललना ॥ राग जयश्री ॥

॥ राय भणे मुहता भणी,काम करो इवे जाय॥ राजा ॥ राणी दुःख दूरें करो,शंका म करो कोय॥ रा० ॥१॥ राणीनु मन राखवा, कुमर छलाख्यो मोह॥ रा० ॥ राजा राणीने कारणे, मनमांहे धरतो कोह ॥ रा० ॥२॥ मनकेसरी मन हठ करी, लागो राणी पाय ॥रा०॥ वे बालक मार्यां थकां, लोके फट फट थाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ कहे राणी मुहता भणी, जो तुझ जीवण काज ॥रा०॥ वे जिम श्रीजो मेलशु,नहि गणशुं तुझ लाज ॥ रा० ॥ ४ ॥ मनकेसरी मन शं कीयो, जिम कहियें तिम साच ॥रा०॥ काम करु इवे

मातजी, मानजो तमे मुझ वाच ॥रा०॥५॥ राजा रा
णी बे जणां, मान्यो मन संतोष ॥रा०॥ मनकेसरि मुहु
तो कहे, मत देजो मुझ दोष ॥रा०॥ (पाठांतरे)॥ नयणे
नयण देखाडजो, जाजो राजा शोष ॥रा०॥६॥ लइवीडुं
मंत्री चल्यो, आयो कुमरो पास ॥ रा० ॥ मनकेसरी
तिहां मांडीने, सघलो कीधो प्रकाश ॥ रा० ॥ ७ ॥ चार
रतन साथे दीयां, दीधा हयवर दोय ॥ रा० ॥ प्रछ
न्नपणे दोउ काढीयां, कर्म तणी गति जोय ॥ रा०
॥ ८ ॥ साथे संबल घालियो, घाल्या बहुला दाम ॥
रा०॥ हित शिखामण देइने,नीसरिया आराम ॥ रा०
॥९॥ मनकेसरी मुहता तणे, बेहुजण लागा पाय ॥रा०
॥ जीवदान आहरो दीयो, ते करण किमहिं न थाय
॥ रा० ॥ १० ॥ आंखे आंसु नाखता, मूकंता नीशा
स ॥रा०॥ हंसावली राणी जणी, मलवा हूती आश
॥ रा० ॥ ११ ॥ माणस मनमांहि चिंतवे, मनोवंछि
त पूरेश ॥ रा० ॥ देव जणे रे बापडा, हुं तुझ अवर
करेश ॥ रा० ॥ १२ ॥ पुण्य विहूणां माणसां, चिंत्युं
निष्फल थाय ॥ रा० ॥ जिम कूवामां छांयडी, आ
ल माल होइ जाय ॥ रा० ॥१३॥ मनकेसरी कहे सां
जलो, रोयां न लाजे राज ॥ रा० ॥ करतां दृढ मन

आपणु, सीझे वंछित काज ॥ रा० ॥ १४ ॥ ९ में गाथा ॥ ३४५ ॥

॥ दोहा ॥ गोडीरागमध्ये ॥

॥ एम शिखामण देइने, वळियो पाछो गेह ॥ मनकेसरि मन चिंतवे, राखु सघळी रेह ॥ १ ॥ दोइ मृग हणियां तिहां, पारधि दीठो एक ॥ तेहना नेत्र मागी लियां, मनमें आणि विवेक ॥ २ ॥ ते लोचन लेई करी, पहोतो राणी पास ॥ लोचन लेइ आगे धर्यां, कीधो सहु प्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढालनवमी ॥ नायकानी देशीमां ॥

॥ राणी लोचन देखीने रे लाल, धरियो अग उल्लास रे ॥ लीलावती ॥ महारु जाएयु मे कियु रे लाल, पहोंचाड्या स्वर्गवास रे ॥ लीलावती ॥ रोष धरी मनचिंतवे रे लाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कहे राणी लीलावती रे लाल, कहो मुझता एक वात रे ॥ली०॥ किण स्थानके लेइ जइ रे लाल, कीधो बेहुनो घात रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ २ ॥ कहे मंत्री सुणो मातजी रे लाल, आंखे पाटा बांध रे ॥ ली० ॥ रणमांहे ले जाइने रे लाल, मार्या बेहुने कांध रे ॥ ली० ॥रो० ॥ ३ ॥ वे बालकने मारतां रे लाल, कांइ कही मुख

वातरे ॥ली०॥ मनकेसरी मन अटकली रे लाल, ली धी अंगनी धात रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ४ ॥ कहे मंत्री सुण मातजी रे लाल, हंसे कही एक वात रे ॥ ली० ॥ राणी वचन नवि मानियां रे लाल, तो थावे छे घा त रे ॥ली०॥रो०॥५॥ राणी वचन जो मानता रे ला ल, तो थावत सहु काज रे ॥ ली० ॥ तिणि वेला हुं पातस्यो रे लाल, एम बोल्यो हंसराज रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ६ ॥ जो मुखथी एम नाखियुं रे लाल, कां इ विणाश्यो बाल रे ॥ली०॥ प्रछन्नपणे इहां राखती रे लाल, हवे मुझ हुवो साल रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ॥ ७ ॥ कांइ कुमति मुझ ऊपनी रे लाल, धूणे राणी शीश रे ॥ ली० ॥ अणविमाश्युं में कीयुं रे लाल, रूठो मुझ जगदीश रे ॥ ली० ॥ रो० ॥८॥ मनकेस री मन चिंतवे रे लाल, राणी तणां ए काम रे ॥ली० राजाने भंभेरीयो रे लाल, माम गमाइ गाम रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ए ॥ वात सुणो हवे आगली रे ला ल, सुणतां अचरिज थाय रे ॥ ली० ॥ रात दिवस वा टें वहे रे लाल, अतिशय मन न खमाय रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १० ॥ विषमा पर्वत वांकडा रे लाल, वि षमी वहेता वाट रे ॥ली०॥ नदियां निज्झरणां निहा

खता रे लाल, वीषमा लंघे घाट रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ११ ॥ विण विशामे चालता रे लाल, भूख तृषा सहे देह रे ॥ ली० ॥ शीत ताप सघलो सहे रे लाल, सुख दुःख नहिं को ठेह रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १२ ॥ वे जाई रणमां फिरे रे लाल, मनुष्य मात्र नहिं कोय रे ॥ ली० ॥ किहां चढिया पाला चले रे लाल, कर्म तणां फल जोय रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १३ ॥ वनखरु तरुवर देखतां रे लाल, कायर कंपे प्राण रे ॥ली०॥ एक एकमांहे मीस्या रे लाल, जिहां नवि दीसे जाण रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १४ ॥ वाघ सिंह गुंजे घणा रे लाल, मृगलां देतां फाल रे ॥ ली० ॥ सूअर सावर रोजडा रे लाल, देखे नाग विकराला रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १५ ॥ एम अटवी लंघी घणी रे लाल, वा तो करता जाय रे ॥ ली० ॥ हंस जपे वत्सराजने रे लाल, लागी तरष मुज न्हाय रे ॥ ली० ॥रो०॥१६॥ नगरथी आपण नीकल्या रे लाल, थाक्या जेवा आज रे ॥ली०॥ पहुचा कदीय न थाकता रे लाल, बोले तव वछराज रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १७ ॥ इण वड तलिये थें वीशमो रे लाल, जोवुं पाणी ठाम रे ॥ ली० ॥ इमणा आणी पावशुं रे लाल, तो वध

म्हारुं नाम रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १७ ॥ वडलातले हंस विशम्यो रे लाल, लाधुं सुख शरीर रे॥ली० ॥ घोडो वृक्ष तले बांधियो रे लाल, वछ गयो लेवा नीर रे ॥ ली० ॥ रो० १८ ॥ ढाल हुइ उगणीशमी रे लाल, कहे श्री जिनोदय सूरि रे ॥ ली० ॥ वछरा ज जल कारणें रे लाल, जोतां पहोतो दूर रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वछराज जल कारणे, चढियो तरुवरझाल ॥ जलचर शब्द तिहां सुण्यो, दीठि सरोवर पाल ॥१॥ चक्रवाक सारस घणां, पहुतो तिहां कणे वीर ॥ कमलफुल मांहे तीरे, दीठु निर्मल नीर ॥ २ ॥ गरुड पंखी वासो वसे, मरस कछनुं ठाम ॥ जोवानो अवसर नहिं, जलने आयो काम ॥ ३ ॥ ठाम विसास्यो ठागलो, जल लियो पोयणपाम ॥ जल लेई पाछो वल्यो, देखे सर्व आराम ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी जावनानि ॥

॥छकीडो न छोडे रे गीरांदेरो छेडलो रे, हांरे मारी छे रे मद पाइ ॥ ए देशी ॥

॥ वररासज जब नीसर्यो रे,नीसर्यो हो पाणी

सेवा काज॥वांसें सुखे हस वीशम्यो रे, हो वाट जोवे हसराज ॥१॥ पाणीह पाले जाइ हु तरशो थयो रे, हो काइ जोवाओ रे वाट, पाणीमा विहुणो रे जाइ हु केम रहु रे, क्षणमाहे थयो उचाट ॥ पा० ॥कां० ॥ ॥२॥ हवे थासे जे कौतुक हुवा रे, हो वडनी टाढी छाह ॥ नीचे वीछायो खडनो साथरो रे, हो देइ ठंशी शे वाह ॥पा० ॥कां० ॥ ३ ॥ आवी निद्रा वली हस नेरे, हो वडो निसरियो साप॥हंस सूतो आव्यो ति हां रे, हो पोते प्रगटयु पाप ॥ पा० ॥ कां० ॥ ४ ॥ गाम गाम हसने रुख्यो रे, हो वेठो हियडे आय ॥ पवन पियो तिणे पापीयें रे, हो डशणी रक्त ते खाय ॥पा०॥ कां० ॥५॥ मारग आयो वरस उतावलो रे, हो भाई केरे रे काज॥पाणी पाइने हु सुख करु रे, हो प म चिंते वछराज ॥ पा० ॥ का० ॥ ६ ॥ सर्पे वीगे वछने आवतो रे, हो उतरियो ततकाल ॥ वछ रा जे पण नयणें निरखियो रे, हो वींटां पेठी जाल ॥ पा० ॥ कां० ॥ ७ ॥ नाग गयो निज स्थानके रे, हो पेगे वडने मूल ॥ हंसराज सूतो तिहा आवियो रे, हो वीगे रुशनो शुल ॥ पा० ॥ कां० ॥ ८ ॥ नी लवरण तनु निरखीयो रे, हो जोवण लाग्यो नाड ॥

चेतन देखी चित्तमां चिंतवे रे, हो वनमें ऊठीधाड ॥ पा० ॥ कां ॥ ए ॥ पाणी परहुं नाखियुं रे, हो लांबी मेली हाथ ॥ न्हाई विना हुं केम रहुं रे,हो व स्खावाने धाय ॥पा० ॥ ॥ १० ॥ न्हाई तें कीधुं कि स्युं रे,हो कीधो हुं निराधार ॥ सार करेतुं न्हाईमाह री रे, हो दीधोकतें खार ॥ पा० ॥ कां ॥ ११ ॥ वार वार वछ बेठो करे रे रे, हो नीचोधरणीजाय॥ शक्ति गई सहु शरीरनी रे, हो पाणी अन्न नखाय ॥ १२ ॥ पा० ॥ कां० ॥ वछ कुमर झूरे घणुं रे हो, किहांइ न देखे श्वास ॥ गलहडो देइ हाथशुं रे,हो बेठो रोवे पास ॥ १३ ॥ पा० ॥ का० ॥ न्हाइ तें की धु किस्युं रे, हो हुं बेठो वनवास ॥ मुझने देतुंबो लडां रे, हो जिम मुज पूगे आश ॥ १४ ॥ पा० ॥ कां० ॥ मुजशुं प्रीति हती हंसताहरी रे, हो सो हुइ केथी आज ॥ मुजहुंती अलगो थयो रे हो, विलपे इम वछराज ॥ १५ ॥ पा० ॥ कां ॥ जननीगर्जे बे ह ऊपन्या रे, हो जन्मा बेहुं समकाल ॥ परदेशेंबे हुं आपे वध्या रेहो, बेउ न्हणिया रागमाल ॥ १६ ॥ पा० ॥ कां ॥मातायें वली अपमाणिया रे, होराजा कीधी रीश ॥ मनकेसरि आपणने मूकियो रे, हो

छेदता आपणु शीश ॥ १७ ॥ पा० ॥ का० ॥ आपण
वेहुं तिहांथी नीसरया रे, हो आव्या इणेठयान ॥
पाणी लेवाने हु गयो रे, हो तु सूतो इण रान ॥
१८ ॥ पा० ॥ कां० ॥ जीव्यो जाइ माहरो विन का
रिमो रे, हो घालुगलेमे फास ॥ राग हतो जोमुजथी
तांहरो होरे, हा इणविध करे विमास ॥ १९ ॥ पा०
॥ का० ॥ ॥ हस मुवो माता जाणशे रे हो हैडे हो
शे दाह ॥ नयणे नीर प्रवाह वशे रे, हो सरखीवेशे
धाह ॥ २० ॥ पा० ॥ कां० ॥ सर्व गाथा ॥ ३९४ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ मायमी अनुमति दियो मुज आज ॥ ए देशी
॥ माता मनमें जाणती जी, मोसरखी नहिंनार
पुत्र जण्या वे जोडलेजी, होशे मुजआधार रे॥ वंभण
॥ १ ॥ तें कीधी निराश रे वभम, हैये विमासीजोए
आकणी ॥ वे बालकमहोटा होशे जी, जणशे शा
अनेक ॥ नारी घणी परणावशु जी, जीणमांहि घण
विवेक रे ॥२॥ वभव० ॥ वे बालक राजा होशे जी
वेखीश बेहुनां सुख ॥ एहवी वातजो जाणशेजी,
हैडे धरशे दुःख रे ॥३॥ बभव०॥ सेज सुवाली
हतो जी, केहींढोला खाट ॥ शु तु सूतो साथरे जी

वहेता मारग वाट रे ॥४॥ बंधव०॥ मनोवांछित सुख पामतो जी,करतो सरस आहार॥ कर्मवशे रणमें पड्यो जी,अन्न न लाधो वार रे ॥५॥बंधव०॥महेल जले तुं पोढतो जी,कर्मे वमनी छाय ॥ उंशीशां जिहां दीज तां जी,सो शिर नीचे बांह रे ॥६॥बंधव०॥सेवक तुऊ सहु सेवता जी,सहुको करता आश॥ एकलम्मो इहां वीशम्यो जी, जो जो कर्मप्रकाश रे ॥७॥ बंधव०॥ हुं मनमांहे जाणतो जी,बांधव छे मुऊ बांह ॥ मुऊने कोण गंजी शके जी, ए शीतल छे छांह रे ॥८॥बं०॥ एम मन दुःख कीधुं पूणुं जी,रोयां न आवे राज ॥ रण रोया जाणे नहिं जी,एम जंपे वछराज रे ॥ए॥ बंधव० ॥ एम मन पाछुं वालियुं जी, साहस धरियुं अंग ॥ एकलडो हुं इहां कणे जी, नहि कोइ बीजो संग रे ॥१०॥बंधव०॥ साहस धरीने ऊठीयो जी, प होतो सरोवर छाम ॥ समुद्र तणी परे सारखुं जी, श्रवण सरोवर नाम रे ॥११॥ बंधव०॥रहे तिहां सा रस पंखियां जी,गरुड लहे विशराम ॥ जल आश्रय क्रीडा करे जी,वडतरु तिहां अभिराम रे ॥१२॥बं०॥ लघुबांधव कंधे करी जी,आण्यो वडनी हेठ ॥ वडनी शाखें बांधीयो जी,न पडे केहनी दृष्ट रे ॥१३॥बंध०॥

सरोवर जल सिंची लियो जी, शरीरें कियो सनान॥ फिट रे हैरू कारिमा जी, जीव्यो तु कये ज्ञान रे ॥ १४ ॥ बधव० ॥ एक तुरी हाथे प्रह्यो जी, बीजे हुर्ल असवार ॥ तिहांथी आघो संचरयो जी, सुणि यो वाजित्र धोकार रे ॥ १५ ॥ बधव० ॥ तिण दिशि आघो संचरयो जी, दीतुं नगरी स्थान ॥ कुंती नग री परगटी जी, बार जोयणनु मान रे ॥१६॥ बधव०॥ लोक नणी तिहां पूठीयु जी, नगरी नृपनुं नाम ॥ तुरी रतनने इहां मेचीने जी, लेवुं चवन इण गाम रे ॥ १७ ॥ बधव० ॥ ते चवन लुं लेइने हीं, देशु बांधवदाग ॥ ढील हवे करवी नहिं जी, एम चिंते महाजाग रे ॥ १८ ॥ बधव० ॥ वत्सराज कुती गयो जी, बासें पुण्य प्रकार ॥ गरुड पखी तिहा आवियो जी, हंस करेवा सार रे ॥ १९ ॥ बधव० ॥ जिण डालें हंस बांधियो जी, तिणहीज वेगो गाम ॥ गय लज नाखी ऊपरे जी, विपनु न रह्यु नाम रे ॥२०॥ बधव० ॥ हंसराज सचित हुवो जी, नयणें निरखे रन्न ॥ कर्णें किणें इहा बांधियो जी, एम चिंते रे मन्न रे ॥ २१ ॥ बंधव० ॥ ढोख्या बंधन हाथशु जी, दीतु निर्मल नीर ॥ पाणी पीधु प्रेमशुं जी, कीधुं

म्लान शरीर रे ॥ २२ ॥ बंधव० ॥ बीजो खंड पूरो हुउ जी, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ जणतां गुणतां संपजे जी, नवनिधि आणंदपूर रे ॥२३॥बं०॥इति हंसवच्छप्रबंधे हंसवच्छपरदेशगमनहंसदुःखसहननामा द्वितीयः खंडः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजो खंड बोलशुं, आणी मन आणंद ॥ सान्निध्य करजो सरसती, वलि जयतिलक सूरींद ॥ ॥ १ ॥ विकथा निद्रा परिहरी, सुणजो बाल गोपाल ॥ सुणतां अचरिज ऊपजे, कांइ मत जंखो आल ॥ २ ॥ हंसराज जोवे तुरी,नवि देखे वछराज ॥ वन देखे बीहामणुं, सुणे सिंहनी गाज ॥ ३ ॥ -

॥ ढाल पहेली ॥ झलालियानी देशी ॥

॥ हंस तिहांथी उठीयो रे,जोवे तरु वर आम ॥ बंधव मोरा रे ॥ मुझने मूकी किहां गयो रे, ए उत्तम नुं नहिं काम ॥ १ ॥ बं० ॥ म्हारुं मनडुं बंधव किम रहे रे, तुझ विरहो न खमाय ॥ बंधव० ॥ तुझ विरहे हु आकुलो रे, तुम विण किम दिन जाय ॥ बं० ॥ २ ॥ मनमांहे हुं जाणतो रे, नहिं मूकुं तुझ केड ॥ बं० ॥ जिण दिशि बंधव तुं गयो

सरोवर जल सिंची लियो जी, शरीरें कियो सनान॥
फिट रे देखा कारिमा जी, जीव्यो तु कये ज्ञान रे
॥ १४ ॥ बधव० ॥ एक तुरी हाथे ग्रह्यो जी, बीजे
हुई असवार ॥ तिहांथी आघो संचरयो जी, सुणि
यो बाजित्र धोकार रे ॥ १५ ॥ बंधव० ॥ तिण दिशि
आघो संचरयो जी, दीठु नगरी स्थान ॥ कुती नग
री परगडी जी, बार जोयणनु मान रे ॥१६॥ बधव०
लोक जणी तिहां पूछीयु जी, नगरी नृपनुं नाम ॥
तुरी रतनने इहां वेचीने जी, लेवुं चदन इण गाम
रे ॥ १७ ॥ बधव० ॥ ते चदन कुं लेइने ही, वेशुं
बाधववाग ॥ ढील हवे करवी नहिं जी, एम चिंते
महाभाग रे ॥ १८ ॥ बधव० ॥ वत्सराज कुती गयो
जी, बासें पुण्य प्रकार ॥ गरुड पखी तिहां आवियो
जी, हंस करेवा सार रे ॥ १९ ॥ बधव० ॥ जिण
डालें हस बांधियो जी, तिणहीज बेठो ठाम ॥ ग
लज नाखी ऊपरे जी, लिपतु न रह्यु नाम रे ॥२०॥
बधव० ॥ हंसराज सचिंत हुवो जी, नयणें निरखे
रत्न ॥ बर्ने किणें इहां बांधियो जी, एम चिंते
मन्न रे ॥ २१ ॥ बंधव० ॥ ठोल्यां बंधन हाथशुं जी
[illegible] निर्मल नीर ॥ पाणी पीधु प्रेमशुं जी, कीधु

स्नान शरीर रे ॥ २२ ॥ बंधव० ॥ बीजो खंड पूरो हुउं जी, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ भणतां गुणतां संपजे जी, नवनिधि आणंदपूर रे ॥२३॥बं०॥इति हंसवछप्रबंधे हंसवछपरदेशगमनहंसदुःखसहननामा द्वितीयः खंडः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१६ ॥

॥दोहा॥

॥ हवे त्रीजो खंड बोलशुं, आणी मन आणंद ॥ सान्निध्य करजो सरसती, वलि जयतिलक सूरींद ॥ ॥ १ ॥ विकथा निद्रा परिहरी, सुणजो बाल गोपाल ॥ सुणतां अचरिज ऊपजे, कांइ मत जंखो आल ॥ २ ॥ हंसराज जोवे तुरी,नवि देखे वछराज ॥ वन देखे बीहामणुं, सुणे सिंहनी गाज ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ झलालियानी देशी ॥

॥ हंस तिहांथी उठीयो रे,जोवे तरु वर आम ॥ बंधव मोरा रे ॥ मुझने मूकी किहां गयो रे, ए उत्तमनुं नहिं काम ॥ १ ॥ बं० ॥ म्हारुं मनडुं बंधव किम रहे रे, तुझ विरहो न खमाय ॥ बंधव० ॥ तुझ विरहे हु आकुलो रे, तुम विण किम दिन जाय ॥ बं० ॥ २ ॥ मनमांहे हुं जाणतो रे, नहिं मकं तझ केडु ॥ बं० ॥ जिण दिशि बंधव तुं गयो

रे, तिण विशि मुकने तेम ॥ ध० ॥ ३ ॥ सरवरनी पाले चढी रे, देतो सरला साद ॥ ध० ॥ वन तरु वर सहु दुढतो रे, पूछ्या न दिये साद ॥ ध० ॥४॥ हाइ हाइ करतो भमे रे, तरुने घाले घाथ ॥ ध० ॥ कर्त्ता तें कीधु किस्यु रे, आज विठोह्यो साथ ॥ ध० ॥ ५ ॥ चिंत चियो कांइ नवि हुर्ह रे, अणचिंतवियो थाय ॥ ध० ॥ सरल निशासा मूकतो रे, स रली देतो धाइ ॥ ध० ॥ ६ ॥ के हाइ साथ जेहरुयो रे, के लेइ गयो आकाश ॥ ध० ॥ घल बुद्धि तुज कुती घणी रे, क्यां थइ गइ ते नाश ॥ ध० ॥ ७ ॥ पग जोवे चिहु दिशि फिरे रे, तरुतल दीठो साथ ॥ ध० ॥ तप करी काया शोषवी रे, राने रहे निर्वा ध ॥ ध० ॥ ८ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइने रे, वदे मुनि ना पाय ॥ ध० ॥ कहो मुज हाइ किहां गयो रे, तव कपे मुनिराय ॥ ध० ॥ ए ॥ हाई तुज कुती गयो रे, चदन लेवा काज ॥ ध० ॥ ठए मासे मेलो हुशे रे, मलशे तिहां वछराज ॥ ध० ॥ १० ॥ मुनि वांदी ने नीकल्यो रे, कुंती नगरे जाय ॥ ध० ॥ धार जो अण नगरी घडी रे,वर्णन न कह्यु जाय ॥ ध०॥११॥ हाइ कारण नगरी भमे रे, को न कहे तसु वात ॥

॥बं०॥ कबाडो केल्हण मिल्यो रे, छे परमाररी जात॥ वं० ॥१२॥ वात पूछी सवि गामनी रे, म्हारुं केल्हण नाम ॥ बं० ॥ पुत्र पंच छे माहरे रे,एक एकथी अभि राम ॥ बं० ॥ १३ ॥ आवो घरे तुमे आपणे रे,थापिश तुमने पुत्त ॥ बं०॥ वात मानी तिहां हंसजी रे, दीठो एवो सुत्त ॥ बं० ॥ १४ ॥ तेहने घरे रहेतां थकां रे, इंधण आणे हाथ ॥बं०॥ छए जाइ जोवे सदा रे,आवे जावे साथ ॥ बं० ॥ १५ ॥ हवे वडा जाइनुं चरित्र रे, पहोतो कुंती ठाम ॥ बं० ॥ चंदन लेशु चिंतवे रे, देई बहुला दाम ॥ बं० ॥ १६ ॥ ठाम ठाम ते पूछतो रे, दीठो मुम्मण हाट ॥बं० मोटुं पेट मातो घणो रे,सेवे नरना थाठ ॥ बं० ॥ १७ ॥ वछराज मन चिंतवे रे, दीसे रूडे घाट ॥ बं०॥ दीसे जेह सुंहालडा रे, तेहज पाडे वाट ॥ बं०॥ १७॥ हाट जइ उभो रह्यो रे,दीठो मुम्मण शेठ ॥ बं० ॥ गादी दीधी आपणा हाथशुं रे, वेठो नीची दृष्टि ॥ बं० ॥ १९ ॥ शेठ कहे वछ राजने रे, अश्वरत्न दोइ हाथ ॥ बं० ॥ अवर कोइ दीसे नहिं रे, एकाकी बीजो साथ ॥ बं० ॥ २० ॥ वलतो वचन कहे शेठने रे, अमे बांधव हुता दोय ॥ बं० ॥ मुझ भाई सापे रुश्यो रे. जोग न चाल्युं

कोय ॥व०॥२१॥ वडतरु शाखे बांधीने रे, हुं आयो चदन काज ॥ व० ॥ शेठ चदनने दाघशु रे, सघु जाइ हसराज ॥ व० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रतन अमूलक मुझ कन्हे, ते संख्या दश वार ॥ थापण राखो ए माहरी, अश्वरत्न दोइ सार ॥१॥ शेठ सुणी मन हरखीयो, अश्व वधाव्या वार ॥ रत्न लेइ आघां धर्या, ये चदन ततकाल ॥२॥ शेठ नर जेतो उपडे, तोली लियो वछराज ॥ मजूरने माथे वियो, चाल्यो वधव काज ॥३॥ श्रवण सरोवर आवियो, आव्यो वनने ठाम ॥ नजर भरी नीहालियो, कुंवर न देखे ताम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इडर आवा आवली रे ॥ ए देशी ॥

॥ वडतरु डाले बांधियो जी, में बंधव हंसराज ॥ कुंतीनगरे हु गयो जी, चदन लेवा काज हो ॥ बांधव, बोलको बोने आज ॥ विलपे एम वछराज हो ॥ बांधव ॥बो०॥१॥ ए आंकणी ॥ वड उपर चढी जोइयु जी, किहाइ न देखे हम ॥ वली नीचो ते उतर्यो जी, जोवा लाग्यो वछ हो ॥ बां० ॥ २ ॥ साव

जनो जय नहीं इहां जी,कोणे छेड्यो आय ॥ मूजं मरुं केम उतरे जी, पगें कहो केम जाय हो ॥ बां० ॥ ३ ॥ तुझमें मति हुंती घणी जी, अधिकुं जोर श रीर ॥ नदीय नर्मदा तिहां कणे जी, तें जीत्या बाव न वीर हो ॥ बां० ॥४॥ किण दिशि हुं जोवा फरूं जी, कोणनें पूछु वाट ॥ उजरू उजड जोवतो जी, लाधे बहुला घाट हो ॥ बां० ॥५॥ पग जोवंतो नी कल्यो जी, हुइ जीवणनी आश ॥ एकलडो हुं इहां कणे जी, नहिं को बीजो पास हो ॥ बां० ॥ ६ ॥ आघो पग नवि नीसरे जी, होइ गयो आलमाल ॥ साद दिये सरला घणा जी,हैडे हुउं साल हो ॥बां० ॥ ७ ॥ किहांइ सुध लागी नहिं जी,कोइ न सरियुं काम ॥ पाछो कुंती आवियो जी, जीहां मुम्मणनुं गाम हो ॥ बां० ॥८॥ शेठ जणी सहु जांखियुं जी, जे हुइ अचरिज वात ॥ चंदन ल्यो थें आपणो जी, छेडे आंसुप्रपात हो ॥ बां० ॥ए॥ बार रतन दीठां तुरी जी,ते केम दीधा जाय ॥ फग आघा पाछा जरे जी,न सुणे वातज कांय हो ॥ बां०॥१०॥ बुद्धि फरी तिहां शेठनी जी, ए परदेशी वाल ॥ एहनो माल हुं लेइशुं जी,माथे देई आल हो ॥ बां० ॥११॥ था

पणमोस धन कारणे जी, धन छे अनर्थ मूल॥ अश्व रतन जव मागियां जी, माथे उठ्यु शूल हो ॥ थां० ॥ १२ ॥ धन कारण जूके रणे जी, धन कारण सेवे खाट ॥ धनकारण कूडां करे जी, धन पडावे वाट हो ॥ थां० ॥ १३ ॥ धन कारण कर्पण करे जी, धन कारण सेवे पाय ॥ धन कारण बंधव वढे जी, धन वडे ची सहु खाय हो ॥ थां० ॥ १४॥ मुम्मणशेठ ववन लियो जी, पण मनमांहे छे पाप॥ अश्व लीयो बेंश्रा पणा जी, शेठ कहे एम आप हो ॥ थां० ॥ १५ ॥ रख पडी छुं आपछु जी, रतन पड्यां छे गेह ॥ वछरा ज तिहां मूकियो जी, वारु बांध्या छे जेह ॥ थां० ॥ ॥१६॥ अश्व लिया बे आपणा जी, एके वाली टाग॥ बीजो हाथे संग्रह्यो जी, शोभ करे हये सांग हो ॥ थां० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा॥

॥ शेठें कीधो कूकर्ड, धार्ड धार्ड रे जाय ॥ अश्व लिया एणे माहरा, सहुको आया धाय ॥ १ ॥ तेह बे त्या फिरतां थकां, आव्या नगर तलार ॥ शेठे सइ देखाडियो, वेश्या लाग्या मार ॥ २ ॥ अश्व लेइ

शेठने दीया, शेठनी पूगी आश ॥ वछराज मन चिंतवे, जो जो कर्मप्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हवे धनसार विमासियुं ॥ ए देशी ॥

॥ चोर तणी पेरे बांधियो, ऊपर देतो मार ॥ घी सावीने ताडियो, देखे बहु नर नार ॥ कर्मतणी गति वांकडी, छूटे नहिं कोइ ॥ नलराजा तिण सारिखा, रडवडीया सोइ ॥ १ ॥ क० ॥ जो जो राजा मुंज ने, हुंता बहुला देश ॥ कर्मे भीख मंगावियो, मुंज जे परदेश ॥ २ ॥ क० ॥ संभूम चक्री वलि आठमो, मू ओ समुद्र मझार ॥ षट्खंड ऋद्धिनो धणी, गयो नर क मझार ॥ ३ ॥ क० ॥ करमें दशरथ काढिया, ल खमणने राम ॥ सीता साथे रडवडी, करम तणां ए काम ॥ ४ ॥ क० ॥ कोटवाल लेई गयो, राजानी पा स ॥ आगल लेइ ऊभो कीयो, स्वामी सुणो अरदास ॥ ५ ॥ क० ॥ शेठ कहे स्वामी माहरे, पेठो लेवा काज ॥ अश्वरत्न बे काढियां, हमणां महाराज ॥६॥ क० ॥ वडा बुढाना पुण्यथी, में लाधो चोर ॥ अश्व थकी ऊतारियो, में करीने शोर ॥ ७ ॥ क० ॥ वात राजाने विनवी, सहु जाणो फोक ॥ वात कहे स

पणमोस धन कारणे जी, धन ठे अनर्थ मूल॥ अश्व रतन जव मागियां जी, माथे उव्यु शूल हो ॥ धा० ॥ १२ ॥ धन कारण जूझे रणे जी, धन कारण सेवे खाट ॥ धनकारण कूडां करे जी, धन पढावे पाट हो ॥ धां० ॥ १३ ॥ धन कारण कर्पण करे जी, धन कारण सेवे पाय ॥ धन कारण धधव वढे जी, धन वढेची सहु खाय हो ॥ धा० ॥ १४॥ मुम्मणशेठ चदन लियो जी, पण मनमांहे ठे पाप॥ अश्व लीयो वेश्यापणा जी, शेठ कहे एम आप हो ॥ धा० ॥ १५ ॥ रत्न पढी हु आपशु जी, रतन पख्यां ठे गेह ॥ वछरा ज तिहां मूकियो जी, वारु धाघ्या ठे जेह ॥ धां० ॥ ॥१६॥ अश्व लिया वे आपणा जी, एके वासी टाग॥ बीजो हाथे संग्रह्यो जी, शोध करे हुवे साग हो ॥ धां० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा॥

॥ शेठें कीधो कूकुर्व, धाउं धाउं रे जाय ॥ अश्व लिया एणे माहरा, सहुको आया धाय ॥ १ ॥ तेह वे त्यां फिरतां थकां, आव्या नगर तलार ॥ शेठे सह देखाडियो, देवा लाग्या मार ॥ २ ॥ अश्व लेह

शेठने दीया, शेठनी पूगी आश ॥ वछराज मन चिंतवे, जो जो कर्मप्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हवे धनसार विमासियुं ॥ ए देशी ॥

॥ चोर तणी पेरे बांधियो, उपर देतो मार ॥ घी सावीने ताडियो, देखे बहु नर नार ॥ कर्मतणी गति वांकडी, बूटे नहिं कोइ ॥ नलराजा तिण सारिखा, रडवडीया सोइ ॥ १ ॥ क० ॥ जो जो राजा मुंज ने, हुंता बहुला देश ॥ कर्मे जीख मंगावियो, मुंजे जे परदेश ॥ २ ॥ क० ॥ संभूम चक्री वलि आठमो, मू ओ समुद्र मकार ॥ षट्खंम ऋद्धिनो धणी, गयो नरक मकार ॥ ३ ॥ क० ॥ करमें दशरथ काढिया, लखमणने राम ॥ सीता साथे रमवडी, करम तणां ए काम ॥ ४ ॥ क० ॥ कोटवाल लेई गयो, राजानी पास ॥ आगल लेइ उनो कीयो, स्वामी सुणो अरदास ॥ ५ ॥ क० ॥ शेठ कहे स्वामी माहरे, पेठो लेवा काज ॥ अश्वरत्न बे काढियां, हमणां महाराज ॥६॥ क० ॥ वमा बुढाना पुण्यथी, में लाधो चोर ॥ अश्व थकी उतारियो, में करीने शोर ॥ ७ ॥ क० ॥ वात राजाने विनवी, सहु जाणो फोक ॥ वात कहे स

हु केवली, एहने नहीं शोक ॥ ८ ॥ क० ॥ जण ज
ण सहु एहवु चवे, राय इण नहिं को खोरु ॥ महे
र करो अम्ह उपरे, वधणथी छोड ॥ ए ॥ क० ॥ शे
ठ कहे राजा सुणो, लोक न लहे ए वात ॥ जो तुम
एहने छोरुस्यो, तो करशे मुझ घात ॥ १० ॥ क० ॥
के लूटो घर वालशे, देशे बहुलां दु ख ॥ इणने सहि मा
र्यां थका, हु पामीश सुख ॥ ११ ॥ क० ॥ वछराज
मन चिंतवे, शेठनो नहिं दोष ॥ आप किया फल पा
मिये, जीव म करे रोष ॥ १२॥क० ॥ शेठ कहे राजा
भणी, एह इच्छा शी खाण ॥ निकर ठार मार्यां थका
कंपे केइकाण ॥ १३ ॥ क० ॥ जो तुमे एहने छोरु
शो, सहु को करशे एम ॥ जो एहने नहिं मारशो,
तो अन्न लेवा मुझ नेम ॥ १४॥क० ॥ राय कहे कोटवा
लने, शेठ राखो रूख ॥ एहने सहि मार्यां थका, शेठनु
भांजशे दु ख ॥ १५ ॥ क० ॥ कोटवाल लेइ नीक
ल्यो, इणवाने काज ॥ लूटे खर वेसारियो, जो जो
महाराज ॥ १६ ॥ क० ॥ मस्तक दीधु टीकरु, मुख
कीधु स्याम ॥ वछराज मन चिंतवे, जो जो विधिनां
कांम ॥ १७ ॥ क० ॥ शेठ गयो निज स्थानके, मुझ
सरियु काज ॥ में उपाय कीधो भलो, मार्यो वछ

राज ॥ १७ ॥ क० ॥ नगरलोक मळ्या घणा, जोवाने काज ॥ कोटवाल घरणी तिसें, दीठो वछराज ॥१ए॥ क०॥ देखिने मन चिंतवे, इणनो नहिं दोष ॥ खुन खता इणमे हुवे, तो तातो पीवुं हुं कोश ॥ २० ॥ क० ॥ कोटवाल घर तेमियो, झंपे घरनार ॥ पुरुषर त किम मारियें, ए कोण आचार ॥ २१ ॥ क० ॥ बालहत्या महोटी कही, जाणी न करे कोय ॥ एम जाणी तुमे राखवो, पुण्य बहुलुं होय ॥ २२ ॥ क० ॥ ए बालक घरे राखशुं, थापशुं मुऊ पूत ॥ ए बाल क राख्यां थकां, रहेशे घरनुं सूत ॥ २३ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कोटवाल मान्युं वचण, हकरायां सहु लोक ॥ प्रछन्नपणे घर आणियो, जाग्यो बेहुनो शोक ॥ १ ॥ पुत्र करीने थापियो, को नवि जाणे वात ॥ शेठ थकी बीहीतां रहे, कीधो नरनो घात ॥ २ ॥ एम करतां दिन बहु थया, शेठने लोज अपार ॥ शुज दिन इहांथी पूरियां, समुद्र वाहाण अढार ॥३॥ वस्तु सहु लीधी घणी, मेल्यो बहुलो साथ ॥ पुप्फदंत माजी हुउ, ली धी बहुली आथ ॥ ४ ॥ शुजदिन प्रवहे पूरिणयां,

चाले नहिं लगार ॥ मन चिंता मुम्मण हुइ कीजे किश्यो प्रकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ वांगरियानी देशी ॥

॥ मुम्मण तेड्यो ज्योतिष रे, जोयो लगन विचार रे ॥ जोशीडा ॥ प्रवहण केम चाले नहिं रे जोइ करो उपचार रे ॥ जो० ॥१॥ किण देवे दोषज कियो रे, विचारो हैयमांहि रे ॥ जो० ॥ हुं मानीश तारो घोलडो रे, देशु बहुत पसाय रे ॥ जो०॥२॥ शेठ भणी कहे ज्योतिषी रे, राखी थापण गेह रे ॥जो०॥ तिणे पापे हाले नहिं रे, जाणो लगनमां नेह रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ शेठ सुणी मन चमकियो रे, साच कही सहुवात रे ॥जो०॥ शेठे वात सुणी तिसे रे, नरनो न हुठे घात रे ॥जो० ॥ ४ ॥ कोटवाल घर राखियो रे, थाप्यो आपण पुत्त रे ॥ जो० ॥ सुणी वात मन शकियो रे, कवण हुठे ए सुत रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ दिन पाचे जातां थकां रे, होशे मुजने साल रे ॥जो०॥ राजाने जाइ मलुं रे, भेट अमूलक आल रे ॥जो०॥ ॥६॥ आगे भेट मूकी करी रे, शेठे कियो प्रणाम रे ॥जो०॥ राजा आदर आपियो रे, आया कीये काम रे ॥ जो० ॥ ७ ॥ शेठ कहे स्वामी सुणो रे, हु ठो

रुं हवे वास रे ॥ जो० ॥ कोटवाल सबलो हुउ रे, वा
दें केहो वास रे ॥ जो० ॥ ७ ॥ राजा मरायो चोरटो
रे, सो घर राख्यो आप रे ॥ जो० ॥ पुत्र करीने था
पीयो रे, तिण आयो माय बाप रे ॥ जो०॥ ए॥ ए
क पुत्र मारे अठे रे, नामे ठे पुप्फदंत रे ॥ जो० ॥
समुद्रनणी ते चालशे रे, त्रीजा दिवसने अंत रे ॥
जो० ॥ १० ॥ कोटवाल सुत जे कीयो रे, सोय देवा
डो राय रे ॥ जो० ॥ तेहने सेवक थापशुं रे, देइशुं
बहुलो पसाय रे ॥ जो० ॥११॥ तेहने करिशुं आ जी
विका रे, देशुं सहस्र दीनार रे ॥ जो० ॥ कोटवाल
राय तेडियो रे, राय कहे सुविचार रे ॥ जो० ॥१२॥
शेठ तणी पुत्र आपवो रे, वचन हमारुं मान रे ॥
॥जो०॥ कोटवाल मन चिंतवे रे,रीझवियो राजान रे
॥ जो० ॥१३॥ हसतां रोतां प्राहुणो रे, आगे दो तट
पाठे वाघ रे ॥जो०॥ दिवस होवे जब पाधरो रे, दि
न दिन वाधे आथ रे ॥ जो० ॥१४॥ शेठ तणी पुत्र
सोंपियो, आण्यो घर वछराज रे ॥ जो० ॥ मूम्मण
शेठ मन चिंतवे रे, हवे मुझ सरियां काज रे ॥जो०
॥ १५ ॥ प्रवहण पासे आणियो रे, बेसाड्यो लेइ
ठाम रे ॥ जो० ॥ पुत्रतणी एहवुं कहे रे, करजो पू

रु काम रे ॥ जो० ॥१६॥ शीखामण दीधी घणी रे, आव्यो मूम्मण तेह रे ॥ जो०॥ प्रवहण पवने पूरियु रे, शुकन भला ते लेह रे ॥ जो० ॥ १७ ॥ अश्व लीधा साथे घणा रे, लीधा सहस जूझार रे ॥ जो० केता दिनने आतरे रे, पाम्यो समुद्रनो पार रे ॥ ॥ जो० ॥ १८ ॥ कनकावती जइ उतर्यो रे, भेव्यो पृथ्वीनाथ रे ॥ जो० ॥ राजा आवर आपियो रे, दीठो बहुलो साथ रे ॥ जो० ॥ १९ ॥ तिण नगरे कोठी रह्या रे, मांड्यो बहु व्यवसाय रे ॥ जो० ॥ बहुराजा पांदम थापियो रे, नित नित पावण जाय रे ॥ जो० ॥ २० ॥ कांबलक्रो वड पहेरणे रे, सुखु सूक्कु खाय रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चडे रे, पवन तणी परे जाय रे ॥ जो० ॥ २१ ॥ कनकभ्रम राजा तणी रे, पुत्री गुण अभिराम रे ॥ जो०॥ रति रंभा तिण सारिखी रे, चित्रलेखा जसु नाम रे ॥ जो० ॥ २२ ॥ कुवर भणी तिण निरखीयुं रे, लक्षण अग बत्रीश रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चडे रे, वडायुध छत्रीश रे ॥ जो० ॥ २३ ॥ पुरुष तणी सघली कला रे, जाणे शास्त्र विचार रे ॥ जो० ॥ पूरा पुण्य पोते हुवे रे, तो थाये भरतार रे ॥ जो०

॥ २४ ॥ कुमरीये दासी मोकली रे, वच्छकुमरनी पास रे ॥ जो० ॥ नारी हुं छुं ताहरी रे, पूर हमारी आश रे ॥ जो० ॥ २५ ॥ तुजशुं कीधो नेहडो रे, जेम चूनीने हेम रे ॥ जो० ॥ जेम चकोर चित्त चंद्रमा रे, दीठां वाधे प्रेम रे ॥ जो० ॥ २६ ॥ के तुं मुऊने आदरे रे, नहींतर ठंडुं प्राण रे ॥ जो० ॥ माहरे मन तुंहिज वसे रे, एहवी बोली वाण रे ॥ जो० ॥ २७ ॥ दासी वचनज मानियुं रे, दासी हुइ उल्लास रे ॥ जो० ॥ मदनरेखा उतावली रे, आवी कुंवरी पास रे, ॥ जो० ॥ २८ ॥ ढाल हुइ पच्चवीशमी रे, कुंवरी आणंदपूर रे ॥ जो० ॥ परणी जो पुण्य पूरुं हशे रे, कहे श्री जिनोदय सूरि रे ॥ जो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनरेखा तव मूकीने, वात जणावी राय ॥ संवर मंरूप मांरूियो, कुंमरी आनंद थाय ॥ १ ॥ राय वात मानी तिहां, तेड्या सघला नूप ॥ संवर मंडप आविया, सुंदर सकल सरूप ॥ २ ॥ मल्या लोक मंरूप घणा, बेठा गामो गाम ॥ पुप्फदंत वछ राजशुं, आवी बेठो ताम ॥ ३॥ चित्र लेखा कुंमरी

रु काम रे ॥ जो० ॥१६॥ शीखामण दीधी घणी रे, आव्यो मूल्मण तेह रे ॥ जो०॥ प्रवहण पवने पूरियुं रे, शुकन भला ते लेह रे ॥ जो० ॥ १७ ॥ अश्व लीधा साथे घणा रे, लीधा सहस जूझार रे ॥ जो० केता दिनने आंतरे रे, पाम्यो समुद्रनो पार रे ॥ ॥ जो० ॥ १८ ॥ कनकावती जइ ऊतर्यो रे, भेट्यो पृथ्वीनाथ रे ॥ जो० ॥ राजा आदर आपियो रे, दीठो बहुलो साथ रे ॥ जो० ॥ १९ ॥ तिण नगरे कोठी रही रे, मांड्यो बहु व्यवसाय रे ॥ जो० ॥ वछराजा पांडव थापियो रे, नित नित पायग जाय रे ॥ जो० ॥ २० ॥ कांयसमो वड पहेरणे रे, सुखु सूकु खाय रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चढे रे, पवन तणी परे जाय रे ॥ जो० ॥ २१ ॥ कनकब्रम राजा तणी रे, पुत्री गुण अभिराम रे ॥ जो०॥ रति रंभा तिण सारिखी रे, चित्रलेखा जसु नाम रे ॥ जो० ॥ २२ ॥ कुंवर भणी तिण निरखीयुं रे, लक्षण अंग बत्रीश रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चढे रे, दहायुध छत्रीश रे ॥ जो० ॥ २३ ॥ पुरुष तणी सघ ली कला रे, जाणे शास्त्र विचार रे ॥ जो० ॥ पूरा पुण्य पोते हुवे रे, तो थाये भरतार रे ॥ जो०

॥ हे० ॥ निर० ॥ बोलबंध जिणशुं कीया जी ॥६॥ घाली गलामें माल ॥ हे० ॥ घा० ॥ पुप्फदंत मन विलखो हुउं जी, विलखाणा सहु राय ॥ हे० ॥ वि० ॥ कनकभ्रम राजा जुउं जी ॥ ७ ॥ फिट्ट फिट्ट करे सहु लोक ॥ हे० ॥ फि० ॥ राजा सहु मूकी करी जी ॥ कुमरी मूरख एह ॥ हे० ॥ कुम० ॥ पामर गले माला धरी जी ॥ ८ ॥ धमधमिया सहु राय ॥ हे० ॥ धम० ॥ माला तुझ छाजे नही जी ॥ जो जीवण री आश ॥ हे० ॥ जो० ॥ दे माला अमने सही जी ॥ ए ॥ बोले तव वछराज ॥ हे० ॥ बो० ॥ कोप करी कांइ कारिमो जी ॥ जेहने सरजी नार ॥ हे० ॥ जे० ॥ तेहने कर्म पोते समो जी ॥ ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे सहुको सुणो,कांइ करो विखवाद ॥ म्हारे मन ए मानियो,फोकट करो छो वाद ॥ १ ॥ मौन करी सहुको रह्या,प्राणे न हुवे प्रीति ॥ लोक सहु निंदे घणुं, जो जो कुंवरी रीति ॥ २ ॥ सहुको निज स्थानक गया, लहुडा म्होटा नूप ॥ मुह विलखाणुं सर्वनुं, कन्या देखि सरूप ॥३॥ निरांत हुइ

तिसें कीधां शोल शणगार ॥ दासी साथे लेइने, आवी तिहां किणे नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग सोरठ ॥ काठियानी ॥
अथवा देखी कामनी दोय ॥ ए देशी ॥

॥ संवरा मंडपमांहे, हे सखि संवरा मंडपमांहे॥ गयगमणी निरखे सहु जी ॥ आरिसो लेइ हाथ, हे सखि आ० ॥ दासीय नाम कहे बहु जी ॥१॥ वाजे गुहिर निशाण, हे सखि वा० ॥ नादे अंबर गाजियां जी ॥ वाजे ताल कसाल, हे सखि वाजे० ॥ महेल मंदिर सहु गाजियां जी ॥ २ ॥ माला लेइ हाथ, हे सखि माला० ॥ राय राणा सहु निरखतां जी ॥ रिद्धि नगरीने नाम ॥ हे० ॥ रि० ॥ गुण अव गुण सहु परखती जी ॥ ३ ॥ जे जे मूके राय ॥ हे० ॥ जे० ॥ ते ते विलखा थई रहे जी ॥ जिम जिम आवी जाय ॥ हे० ॥ जिम० ॥ ते राजा मन उम्महे जी ॥ ४ ॥ पुप्फदंत पासे आय ॥ हे० ॥ पुप्फ० ॥ मनमांहे ते आणंदियो जी ॥ कुमरी अनुपम देख ॥ हे० ॥ कु० ॥ पोते पुण्य पूरो कीयो जी ॥ ५ ॥ मुज वरशे सहि एह ॥ हे० ॥ मुज० ॥ राजा सहु पूठे रह्या जी ॥ निरख्यो निज भरतार ॥

॥ हे० ॥ निर० ॥ बोलबंध जिणशुं कीया जी ॥६॥ घाली गलामें माल ॥ हे० ॥ घा० ॥ पुप्फदंत मन विलखो हुउ जी, विलखाणा सहु राय ॥ हे० ॥ वि० ॥ कनकभ्रम राजा जुउ जी ॥ ७ ॥ फिट्ट फिट्ट करे सहु लोक ॥ हे० ॥ फि० ॥ राजा सहु मूकी करी जी ॥ कुमरी मूरख एह ॥ हे० ॥ कुम० ॥ पा मर गले माला धरी जी ॥ ८ ॥ धमधमिया सहु राय ॥ हे० ॥ धम० ॥ माला तुझ छाजे नही जी ॥ जो जीवण री आश ॥ हे० ॥ जो० ॥ दे माला अ मने सही जी ॥ ९ ॥ बोले तव वच्छराज ॥ हे० ॥ बो० ॥ कोप करी कांइ कारिमो जी ॥ जेहने सरजी नार ॥ हे० ॥ जे० ॥ तेहने कर्म पोते समो जी ॥ ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे सहुको सुणो,कांइ करो विखवाद ॥ म्हारे मन ए मानियो,फोकट करो छो वाद ॥ १ ॥ मौन करी सहुको रह्या,प्राणे न हुवे प्रीति ॥ लोक सहु निंदे घणुं, जो जो कुंवरी रीति ॥ २ ॥ सहुको निज स्थानक गया, लहुडा म्होटा नृप ॥ मुह वि लखाणुं सर्वनुं, कन्या देखि सरूप ॥३॥ निरांत हुइ

राजा नणी, कुमरी थाप्यो कत ॥ इयेवालो तिहां मेलव्यो, वेढुनी पहोंची खत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ७ही ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ मोरी कुमरी रे, राजा दीठुं रूप ॥ कवलमो वक पहेरणे ॥ मो० ॥ मोरी कुमरी रे, तु हुती अधिक सुजाण, कहो इम किम हुए तुम तणे ॥ मो० ॥१॥ मो०॥ तें दीतुं अधिक स्वरूप, तु सतीनी परे सुदरु ॥ मो० ॥ मो० ॥ किहां कल्पद्रुम रुख, किहां एरंड धत्तुरतरु ॥ मो० ॥ २ ॥ मो० ॥ किहा सूरज किहां चद, किहां खजवानो चांदणो ॥ मो०॥मो०॥ अरहट घडे धारे मास, क्षण एक जल धर वरसणो ॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ सहु राजाने ठांकि, इणने तें किम आदस्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ आप हाणी जग हांसि, एको काज न तें कस्यो ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ पासे बेठो शेठ, रूप कला गुण आगलो ॥ ॥ मो० ॥ मो० ॥ जे ते कीधो कत, हाथे लेहने ठगलो ॥ मो० ॥ ५ ॥ मो० ॥ राजा पूछे शेठ, कोण नर छे एह तादृशो ॥ मो० ॥ मो० ॥ राजाजी कहुं साच, ए पांगुल छे मादृशो ॥ मो० ॥ ६ ॥ मो० ॥ राजा पूछे वात,वश कहो तुम एहनो ॥ मो०॥मो०॥

स्वामी न जाणुं वात, रूप रूडुं छे एहनुं ॥ मो०॥७॥ मो० ॥ हुं राखुं छे दूर, मन संदेह छे माहरे ॥ मो० ॥ मो० ॥ कीधो कुमरी कंत ॥ शुं पूछा छे ताहरे ॥ ॥ मो० ॥ ८ ॥ मो० ॥ वात सुणी तव राय, है है कुमरी शुं कियो ॥ मो० ॥ मो० ॥ आप विटाल्यो देह, आप जाण्यो आपे कियो ॥ मो० ॥ ए ॥ मो० ए पुत्री नहिं मुज, कुललंछण कीधो सही ॥ मो० ॥ मो० ॥ एहनुं मुह म दीठ, आज पछी जोवुं नहीं ॥ ॥ मो० ॥ १० ॥ मो० ॥ तें पाडी मुज माम, लोक मांहे हांसो कियो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ए अंतेउर मांही, में तुजने उत्तर दियो ॥ मो० ॥ ११ ॥ मो०॥ तुं मुज मुई समान, जीवंती केथी करुं ॥ मो० ॥ मो० ॥ लोक हुवे अपवाद, लोकथकी पण हुं डरुं ॥ मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ नगरथी बाहिर जाइ, छेह डे घर मांडी रहे ॥ मो० ॥ मो० ॥ सांजली तात नी वात, कुमरी कंत जणी कहे ॥ मो० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुण स्वामी मुज वीनति, मानो नरवर वात ॥
नहिंतर रीशाणो थको, निश्चें करशे घात ॥ १ ॥

वछराजे मान्यु वयण, बाहिर कीधो वास ॥ राजा रीशाणे थके, कोइ न आवे पास ॥ २ ॥ जननी ठा नो पूरवे, अन्न धन खीर कपूर ॥ चड्ढलेखाने पाठ वे, नित्य उगमते सूर ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग कानरो ॥

॥ कामिनी तुं मूकने मह्यारो हाथ ॥ ए देशी ॥

॥ वछराज मन चिंतवे रे, कीधुं में कुण काम ॥ में अबला नारी भणी रे, ठगावी एह ठाम रे ॥१॥ कामिनी तुं मूकने मह्यारो शोष ॥ ए आंकणी ॥ वछराज कहे कामिनी रे, इण वाते नहिं तुझ दो ष ॥ हुं पापी भूंमो थयो रे, मुझथी रायनो रोष रे ॥ २ ॥ का० ॥ नारी तें शु जाणियु रे, मुझ थाप्यो भरतार ॥ विधाता रूठा सही रे, के रूठो कीरतार रे ॥ ३ ॥ का० ॥ मुझने को जाणे नहिं रे, इण नगरीनां लोक ॥ परदेशी हुं बापमो रे, तुझने मुझथी शोक रे ॥ ४ ॥ का० ॥ सुरतरुसम ते जा णियो रे, दीठो अधिक स्वरूप ॥ भेद न जाण्यो मा हिलो रे, लागी तुझने चूप रे ॥ ५ ॥ का० ॥ रतन चिंतामणि सारिखो रे, तें करी काढ्यो साथ ॥ हुं मूरख तुं बापमो रे, निवरुशु हुं काच रे ॥ ६ ॥

॥ का० ॥ मात पिता तुऊ मानशे रे, मुऊनो गेज्यां पास ॥ परकाजे दुःख कां सहे रे, बोली मनहीं विमास रे ॥७॥का०॥ हुं सेवक हुं शेठनो रे, पड्यो पर वश हुं नार ॥ उण जाते हुं जाइशुं रे, आपां श्यो घर वार रे ॥७॥ का०॥ किहां हंस किहां कागडो रे, संग मले कहो केम ॥ हुं जाते कोई अबुं रे, केहवो मुऊशुं प्रेम रे ॥ए॥ का०॥ कुमरजणी कहे कामिनी रे, परखी कीधुं में काम ॥ मात पिता सहुको जलां रे,महारे तुमशुं काम रे ॥१०॥ का०॥ सूर्य उगे पश्चिमदिशे रे,मही रसातल जाय ॥ समुद्र मर्यादा जो मिटे रे,मुऊथी ए काम न थाय रे ॥११॥का०॥ जिहां जाशो तिहां आवशुं रे,जेम शरीरनी ग्रांह ॥ इणवाते जो पालरुं रे, तो मुऊ जीव न कांह रे ॥१२॥ का०॥ वछराज मन चिंतवे रे,एहनो पूरो राग ॥ एहवी नारी तो मिले रे,जो हुवे पोतें जाग्य रे ॥१३॥का०॥ एम सुखमां रहेतां थकां रे, राजा चिंते एम ॥ लोकमांहे निंदा हुवे रे,मार्यां थाये केम रे ॥१४॥ का०॥ कुमरीनी चिंता नही रे,कुमरी रहेशे रोय ॥ तेणी विधे हुं मारशुं रे,को नवि जाणे लोय रे ॥१५॥का०॥ वछराज मारण जणी रे, राय करे परपंच ॥ चार पुरुष तेमी क

हे रे,जोई सघला संच रे ॥१६॥का०॥ वछराज जाई
मरे रे,मदन देजो रंग ॥ चार पुरुष पइ सामटा रे,
करजो ढीलां अग रे ॥१७॥ का० ॥ नस टालजो अंग
नी रे,वेदनथी सहे काल ॥ ढील इवे करवी नही रे,
श्रोडो मुऊनुं शाल रे ॥१८॥ का०॥ ते नर तिहांथी नी
सख्या रे, रायने करी प्रणाम ॥ सेवक तारा तो सही
रे,अवश्य करीये काम रे ॥ १९ ॥ का० ॥ मागी शीख
सनेहशुं रे,श्राव्या वछनी पास ॥ राजाना आदेशथी
रे, करशु सेवा उल्लास रे ॥२०॥का०॥ विविध तेल ति
हां काढियां रे, कुमर न जाणे भेद ॥ कुमरी नयणे
निरखियु रे, देखी धरियो खेद रे ॥२१॥ का० ॥ कं
त भणी कहे कामिनी रे,चिहुंने छे मन कूरु ॥ नस
टालशे ए स्वामीनी रे, करशे सघलु धुरु रे, ॥२२॥
का० ॥ वछराज कहे कामिनी रे, चिंता म करो कां
य ॥ जेहवुं जे नर चिंतवे रे, तेहवु तेहने थाय रे॥
॥२३ ॥ का० ॥ वेहु पासे वे मल्या रे, तेल लियो
सहु हाथ ॥ मर्दन देवा ऊठिया रे,कुमरे घाली घाथ
रे ॥ २४ ॥ का० ॥ श्राधा पाछा रगदल्या रे, नस
काढी तत्काल ॥ बे नर धरती पाथस्या रे, वे नरें
सांधी फाल रें ॥ २५ ॥ का० ॥ राजसभामें आवि

या रें, कांटा पमिया कंठ ॥ नाशीने अमें आविया रें,बे कीधा तिहां वंठ रें ॥२६॥का०॥सर्व गाथा ॥५०४॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा मनमां चिंतवे, वात हुई सहु फोक ॥ कामज कोई नवि हुवो, मनमें धरतो शोक ॥ १ ॥ एक उपाय करशुं वली, तिणथी सरशे काज ॥ आहेडा मिष तेमशुं, साथें श्रीवछराज ॥२॥ पुष्फदंतने राय दियो, तेजी वमो तुखार ॥ नर देखीने उछले, को न हुवे असवार ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ मनोहरना गीतनी देशी ॥ अथवा तप सरिखुं जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ वाजी अणायो हो वालथी, डीले अतिपर चंम ॥ हो नरवर ॥ तेजी न खमे हो ताजणो, पाडी करें शतखंम ॥ हो नरवर ॥ १ ॥ कुंवर तेमाव्यो हो तालमें, रामत रमवा काज ॥ हो न० ॥ ए आंकणी ॥ आदर दीधो हो अति घणो, बेठो राजा पास ॥ हो न० ॥ तीना तुरीय पलाणिया, दीधा राय उल्लास ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २ ॥ सहुको जन

साथे हुआ, कुमर लियो निज साथ ॥ हो न० ॥ श्रेष्ठ तुरी राये आणीयो, मारण मांड्यु नाथ ॥हो न०॥कु ॥३॥ अश्व रतन देखी करी,मन चिंते वछराज॥हो न०॥ राजा हो मुझशु कोपीयो, मारण मांड्यो साज ॥हो न०॥ कुं०॥४॥ कुमर जणी आगे कीयो, कुमर हुवो असवार ॥ हो न०॥ वाजा हो विविधे वाजीयां, मूकण लागो कार॥ हो न० ॥ कु॥ ५ ॥ घोडो हो ऊंचो ऊछल्यो, हुवा सहुको हेरान ॥हो न०॥ सहुको जन एम उचरे, परतां जा शे प्राण ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ६ ॥ सहुको जन अलगा रह्यो, निरखे अलगा लोक ॥ हो न० ॥ कुवरी नय णे निरखती, धरती मनमें शोक ॥ हो न० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पवन तणी पेरे फेरियो, लै चाल्यो आकास ॥ हो न० ॥ कलशुं घोडो केलव्यो, आव्यो आपणी पास ॥ हो न० ॥ कु० ॥ ८ ॥ राजा हो मुख विलखुं कीधुं, जे जे करु छु उपाय ॥ हो न० ॥ ए नर नहिं ए देवता, एम चिंते मन राय ॥ हो न० ॥ कुं०॥९॥ राजा हो मंदिर आवियो, आव्यो घर वछराज ॥ हो न० ॥ कुवरी मन आणंदियु, सीधां वांछित काज ॥हो न० ॥कु०॥ १०॥ मत्रीसर रायें तेडिया, ते च्या बुद्धि-निधान ॥हो न०॥ चित्रलेखा पुत्री कन्हे,

मूके राय प्रधान ॥ हो न० ॥ कुं० ॥११॥ कुंवरी तैं जुगतो कियो, तुझथी न पड्यो वंक ॥हो न०॥ सुख जोगवो संसारनां, नाणो मनमें शंक ॥ हो न०॥कुं० ॥ १२ ॥ रायतणे आग्रहें करी, पूछे तुं भरतार ॥ हो न० ॥ नाम गाम कुल एहनुं, पूछे तुं सुविचार ॥ हो न० ॥ कुं० ॥१३॥ राजा हो वचनज मानियुं, सहुयें दीधुं मान ॥ हो न० ॥ कंत जणी कहे कामिनी, वात सुणो राजान ॥हो न०॥कुं०॥१४॥ कर जोमी कहे कामिनी, लोक करे सहु हास ॥हो न०॥ देव करी में मानियो, ते केम हुवे उदास ॥हो न०॥ ॥ कुं० ॥ १५ ॥ महारे मन तुंहिज बसे, दूजो अवर न कोय ॥ हो न० ॥ वात प्रकाशो हो आपणी, जिम मुझ आणंद होय ॥ हो न० ॥ कुं०॥१६॥जाव जीव हुं तो सभी, जीवन मरणु तो साथ ॥हो न०॥ प्राण दिसे छे हो ताहरा, साचुं मानो नाथ॥हो न० ॥ कुं० ॥ १७ ॥ मात पिताथी हुं विछडो, बाहिर मां ड्यो वास ॥ हो न० ॥ एकण जीवने कारणे, स्वामी मनहिं विमास ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १८॥ अन्न पाणी तोही नखुं, जो करशो तुम वात ॥ हो न० ॥ नव बीजे हुं बोलशुं, नहिंतर आतम घात ॥हो न०॥कुं॥

॥ १९ ॥ घरणी छत्र मांड्यो मणो, मदफी वियो तव रोय ॥हो न०॥ हेतु आहणे नायशु, जाग्यो पूरव मोह ॥ हो न० ॥ कु० ॥२०॥ कुंवरी मनमांहे चिंतवे, में पूछी कांई वात ॥हो न० ॥ अति ताण्यो त्रुटे सही, होशे मांहे घात ॥ हो न० ॥ कु०॥२१॥ मौन करी कुमरी रही, कथ दीधो में दुःख ॥ हो न०॥ कंता रुदन निवारियें, जिम होये तुज सुख ॥ हो न०॥कु०॥ ॥ २२ ॥ नारी राज्य हो रोवतो, कायर न हुवो कंत ॥ हो न० ॥ वात पूछी में पाछली, जो दीठो पर्कंत॥ ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २३ ॥ वात पूछी तें माहरी, पूरवली सुण वात ॥ हो न० ॥ पुरपेठाणें हुं वसुं, नरवाहन मुफ तात हो न० ॥ कुं० ॥२४ ॥ हंसावली राणी तणा, जाया वे अभिराम ॥ हो न०॥ जादव वंशे हो ऊपजा, साख्या उत्तम काम ॥ हो न० ॥ कुं०॥२५॥ त्रीजो खंड पूरो हुओ, कुमरी आनंद पूर ॥ हो न०॥ वात कही सहु पाछली, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ ॥ हो न० ॥ कुं० ॥२६॥ सर्वगाथा ॥६११॥ इति श्री हंसराजवछराजप्रबंधेकृतिनगरगमन कन्यापरिणयन नामा तृतीयः खण्ड संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुद्ध मति दीजे सरसती, माया करी मुझ मा य ॥ श्री जयतिलक सूरींद गुरु, प्रणमुं तेहना पाय ॥ १ ॥ चोथो खंड सुणजो चतुर, सुणतां अचरिज थाय ॥ चित्रलेखा नारी जणी, वात कहे समझाय ॥ २ ॥ मात पितायें माहरुं, नाम दीधुं वछराज ॥ लघु बंधवने आपियुं, नाम ते श्री हंसराज ॥३॥ जन्म कालथी नीसर्यां, बे वधियां परदेश ॥पन्नर वरष तिहां कणे रह्या, जेट्यो आवि नरेश ॥ ४ ॥ देश वटे बेहु नीकल्या, राणी तणे सरूप ॥ मनकेसरी अम राखिया, लोक न जाणे भूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ जदें पधार्या तुमें साधुजी रे ॥ ए देशी ॥ बे बांधव राणी नीकल्या रे, पहोंच्या वडे उद्यान रे ॥ वाट घाट जुइ लंघता रे, वृक्ष तणां नहिं ज्ञान रे ॥१॥ जुवो रे विचित्रगति कर्मनी रें, कर्म करे ते होय रे ॥ विधि लिखियो ते नवि मिटे रे, एम कहे सहु कोय रे ॥ जुवो० ॥ २ ॥ लघु बंधव तरशो थयो रे, हुं लेवा गयो वारि रे ॥ पाणी लेइ पाछो वल्यो रे, वांसे कर्मप्रकार रे ॥ जुवो० ॥३॥ हंसकुमर सापे ड

ख्यो रे, मुफ मन हुवो साख रे ॥ जाइ खेइने हुं वस्या रे, बांध्यो मकनी फाल रे ॥ जुवो० ॥ ४ ॥ कुंतीनगरे हुं गयो रे, चदन लेवा काज रे ॥ चदन लेइ पाछो वस्यो रे, नवि देखु हंसराज रे ॥ जु० ॥ ५ ॥ दैव संयोगे ऊतस्यो रे, में दीठा बधव पाय रे ॥ आलमाल आंगे हुआ रे, जीवे छे सहि जाय रे ॥ जु० ॥६॥ हुं वली पाछो आवियो रे, राखी थापण शेठ रे ॥ चोर करी मुफ फालियो रे, गले घाली मुफ वेठ रे॥जु०॥ ॥७॥ जिम तखारें राखीयो रे, पुष्फदंत लीधों साथ रे ॥ जिम हुं इहां कणे आवियो रे, में परणी तुने हाथ रे ॥ जु० ॥ ८ ॥ पूर्वसंबंध पूरो कह्यो रे, तेहवे आव्यो राय रे ॥ चित्रलेखा ठठी उतावली रे, प्रणमे तातना पाय रे ॥ जु० ॥ ए ॥ नाम ठाम कुमरी क ह्यां रे, आपी पूरव वात रे ॥ मनभ्रम भांगो रायनो रे, एह कुंवर विख्यात रे ॥ जु० ॥ १० ॥ राय कहे तव शेठने रे, आणो इहां कणे बांध रे ॥ खुंटी लियो धन एहनु रे, महारो एहने कांध रे ॥ जु० ॥ ११ ॥ कुंवर कहे राय सांभलो रे, महारे छे ए बंध रे॥सुख दुःख महारे इण समां रे, सो केम हणियें कंध रे ॥जु०॥१२॥ यत ॥ "गुण कीधे गुणही करे रे, ए छे

लोकाचार रे ॥ अवगुण कीधे गुण करे रे, उत्तम एह
आचार रे ॥१॥" राजा मन मांही हरखीयो रें, हर
ख्यो सहु परिवार रे, कुंवरी न पडे पांतरो रे, जोइ
कीधो नरतार रे ॥ जु० ॥ १३ ॥ उत्सवशुं राय आ
णियो रे, शणगार्यां सहु हाट रे ॥ नारी कंत साथे
करी रे, जोवे नरना थाठ रे ॥ जु० ॥ १४ ॥ गोखे
चढी जुवे गोरडी रे, दीसे देव कुमार रे ॥ परमेशर
आपे घड्यो रे, एहवो नहिं संसार रे ॥ जु०॥१५ ॥
वछराज सुख जोगवे रे, सहुको माने आण रे॥हंस
राज हैडे वसे रे, खटके शाल समान रे ॥ जु० ॥
॥१६॥ किहां कुंतीनगरी रही रे, किहां कनकावती
एह रे॥समुद्रविचें आमो पड्यो रे, एम चिंतवे वछ
तेह रे ॥ जु० ॥ १७ ॥ कर्म मेळें तिहां शुं थयुं रे,
पुष्फदंत मलियो राय रे ॥ शीख दीयो हवे स्वामीजी
रे, आपण स्थानक जाय रे ॥ जु० ॥ १८ ॥ वछराज
वाणी सुणी रे, हुवो साथो साथ रे ॥ बे कर जोडी
वीनवे रे, सुणजो पृथिवीनाथ रे ॥ जु० ॥ १९ ॥
दीजें शीख सनेहशुं रे,जेम जाउं महाराज रे ॥ कुं
तीनगरें जाइशुं रे, एम बोले वछराज रे ॥ जु० ॥
॥ २० ॥ राय कहे सहु माहरुं रे, देशुं तुजने राज

रे ॥ सुख जोगवो देवता समां रे, जावानुं शुं काज रे ॥ जु० ॥२१॥ तुम पसायें सहु माहरे रे, बहुली छे मुक आय रे ॥ इसकुमर मलया जणी रे, जाशुं पृथिवीनाथ रे ॥ जु० ॥ २२ ॥ ज्यां लगे नावु र्यां लगे रे, पुत्री राखो स्वामी रे ॥ थोडा दिनमें आवशु रे, सहिय करी सु काम रे ॥ जु० ॥ २३ ॥ भित्रसेला कहे कतनें रे, ए नहि नारीनी रीत रे ॥ जिम पुरुषोनी छांहडी रे, तेहवी तो मो प्रीत रे ॥जु०॥ ॥ २४ ॥ इठ लीधो नारीए घणो रे, तव ते मानी वात रे ॥ करो सज्जाइ चालशु रे, जणाव्यो इवे तात रे ॥ जु० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ६४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुचदिन शुज वेला कुमर, पूछी नृप परिवार॥ राजा दीधो शायजो, पहोंचाडे नर नारि ॥१॥ राजा राणी बेहु जणां, शीख दीये ससनेह ॥ पुत्री आपण कतने, मत सु दाखे छेह ॥ २ ॥ इमी मली सहु को चल्यो, आव्यां आपण गाम ॥ पुष्फदंत वछराज बे, चाल्या आपण गाम ॥ ३ ॥ समुद्र तणी पूजा करे, कुशल उतारो साम ॥ आशा पूगी मूकीने, विधिशुं करे प्रणाम ॥४॥ इकाश्यां प्रवहण सहु, वेगां

कामिनी कंत ॥ शेठ नारी निरखी तिहां, लाग्यो खारे खंत ॥ ५ ॥ पुष्फदंत वछराजशुं, मांमी बहुली प्रीत ॥ कुमरीयें मनमां जाणीयुं, ए नहिं रूडी रीत ॥६॥ पुष्फदंत मन चिंतवे, मेलवी नारी एह ॥ परदेशी बे एकलो, एहने दाखुं बेह ॥७॥ नारी लेवा कारणे, मांड्यो तेणे प्रपंच ॥ पाणीमांहे परठवुं, जोइ सघलो संच ॥७॥ माजी सहु हाथे कीया, सहू मनावी वात ॥ पंच दिवस पूरा हुवा, वहेतां दिन ने रात ॥ ए ॥ छठे दिनने अंतरे, प्रहर गइ जब रात ॥ वछराज आवो इहां, मत्स्य अपूरव जात ॥ १० ॥ वछराज पहोतो तिहां, दीठो नहिं लगार ॥ वांसेथी धक्काविया, पाड्यो समुद्र मझार ॥ ११ ॥ वछराज पडतां थकां, गणियो तिहां नवकार ॥ अशरण शरण ए माहरे, मंत्र तणो जे सार ॥ १२ ॥ मंत्र प्रभावे तिहां पड्यो, मगरमत्स्यनी पूंठ ॥ वछराज पुण्ये करी, चाल्यो तिहांथी ऊठ ॥ १३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ हरिया मन लागो, रंग लागो थारी चाल॥ए देशी॥

॥ पमतां पाणी वाजीयुं रे, चित्तमें चमकी नारी रे ॥ कंत कीधुं किश्युं ॥ जोवा लागी सुंदरी रे, नवि

देखे नरतार रे ॥ कं० ॥१॥ आस पास सहु जोइयो रे, किहां न देखे कत रे ॥कं०॥ लोक सहु देखी करी रे, मनमांहे पमीय भ्रांत रे ॥ कं० ॥ २ ॥ रोवंती रोवाडिया रे, प्रवहणवालां लोक रे ॥ कं० ॥ एकल की हु हुइ हवे रे, धरवा लागी शोक रे ॥ क०॥३॥ सार करो कंत माहरी रे, कीधो कांहि वियोग रे॥कं०॥ मुज मन तुहिज वालहो रे, धरती मनमांहे शोक रे ॥कं०॥४॥ न्हानपणे मूई नहीं रे, पेट धरी कांय माय रे ॥कं०॥ कंता तु विण एकली रे, कह्यो केम दहाडा जाय रे ॥ कं०॥५ ॥ तुज पसाये सुख घणां रे, में नोगवियां स्वामि रे ॥ क० ॥ तुंकारो ते नवि दियो रे, बलिहारी तोरे नाम रे ॥ क० ॥ ६ ॥ हैडा तु फूटे नहिं रे, मूके मुख नि श्वास ॥ क० ॥ तो विण जीव्यो कारिमो रे, कत तणी शी आश रे॥क० ॥७॥ साथे चूकी मरगली रे, जोवे दह दिशि साथ रे ॥क०॥ बीजा जन देखे सहू रे, एक न देखे नाथ रे॥क०॥०॥ तुज पहेली मूई नहीं रे, करती विर ह विलाप रे ॥ क० ॥ आप कमाई नोगवुं रे, पूरव कीधां पाप रे ॥ क० ॥ए॥ पूरव नव में पापिणी रे, शोक्यने दीधो शाप रे ॥ क० ॥ पुत्रतणु सुख नवि

लह्युं रे, अथवा जपिया जाप रे ॥ कं० ॥१०॥ के प राइ थापण रही, के में दीधुं आल रे ॥कं०॥ के पाणीने कारणें रे, सरोवर फोडी पाल रे ॥ कं० ॥ ११ ॥ के में रमतकारणे रे, तरुनी मोडी डाल रे ॥ कं० ॥ गर्भ गलाव्या पापिणी रे, उषध वेषध आल रे ॥कं० ॥१२॥ के काचां फल त्रोमियां रे, रसना केरे स्वाद रे ॥ कं० ॥ अणगल पाणी वावर्यां रे, मनमां आणी प्रमाद रे ॥ कं० ॥१३॥ के में माला खेंचिया रे, इडां नाख्यां हाथ रे ॥ कं० ॥ के में परनां धन हर्यां रे, मार्यां बहुला साथ रे ॥ कं० ॥ १४ ॥ पंखी घाल्यां पांजरे रे, के घाल्यां मृगपास रे ॥कं०॥ मंदमति में पापिणी ये, के में बलाव्यां घास रे ॥कं०॥१५॥ तिल सरशव पीलावीया रे, लाज्न तणें में हेत रे ॥ कं० ॥ के में सूड कराविया रे, के में खेमाव्यां खेत रे॥कं० ॥ १६ ॥ के पूरवभव पापिणी रे, मारी जूने लीख रे ॥कं०॥ के में दान देतां थकां रे, दीधी जूंमी शीख रे ॥ कं० ॥ १७ ॥ के में मोड्या करडका रे, सो केम होवे सुख रे ॥ कं० ॥ मंत्रे गर्भ बंधाविया रे, शोक्यने दीधुं दुःख रे ॥ कं० ॥ १८ ॥ ऋण राख्युं में पारकुं रे, घाली पेटे जाल रे ॥कं०॥ के में परना धन हर्यां रे,

मात विछोझ्यां वाल रे ॥ क० ॥१९॥ के मछरजाये सही रे, माख्या विप वइ हाथ रे॥क०॥ के में लोज वशे करी रे, लूट्या वहुला साथ रे ॥ क० ॥ २० ॥ के केहनां घर जांगियां रे, बालपणे में आल रे॥क० होजो अर्था पांगलां रे, दीधी एहवी गाल रे॥क०॥ ॥ २१ ॥ निंदा कीधी साधुनी रे, आहार दीधो अंत राय रे ॥ क० ॥ पाप विचारे आपणां रे, केतांइक कहेवाय रे ॥ क० ॥ २२ ॥ वार वार फूरे घणु रे, नां खे आसू पात रे ॥ क० ॥ इण जीव्यां मरवुं जलु रे, करशुं आतम घात रे ॥ कं० ॥ २३ ॥ चित्रलेखा कहे स्वामिनी रे, जीवतां सहु होय रे ॥क०॥ जानु मतीने सरस्वती रे, वेहु मल्यां सहु जोय रे ॥ क० ॥२४॥ धीरपणुं धरिये हइये रे इहक न दीजे रोय रे ॥ क० ॥ शील जली परे पालतां रे, आपद् दूरे होय रे ॥ क० ॥ २५ ॥ शीलथकी सुख कोणे ल ह्या रे, ते सुणजो दृष्टांत रे ॥ क० ॥ राम घरणी सीता सती रे, आवि मिल्या वे अंत रे ॥ क० ॥ ॥२६॥ मूकी अबला एकली रे, सिंहल द्वीपे नारी रे ॥ क० ॥ पग छेदाव्या नारीना रे, पद्मावती जर तार रे॥क०॥२७नल राजा नारी तजी रे मूकी दूर

र रे ॥ कं० ॥ बार वरसें मलो हुवो रे, पुण्यतणे
कार रे ॥ कं० ॥ २७ ॥ शंख राजा छेदाविया रे,
ळावती कर दोय रे ॥ कं० ॥ जीवंतां मेलो हुवो
ते तो पुण्य तणां फल जोय रे ॥ कं० ॥ २ए ॥
व दृढ मन कर आपणुं रे, रोयां न लाजे राज
॥ कं० ॥ जीवंतां मेलो होशे रे, निश्चेशुं वत्स
ज रे ॥ कं० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राग गोडी ॥ वणजाराना गीतनी देशी ॥

॥ मोरा जीवन हो तो विण रह्यो रे न जाय, ए
कलमो हुं केम रहुं ॥ मोरा प्रीतम हो ॥ मोरा जीवन
हो एहवो जग नहिं कोइ, मननी हो वात किणने क
हुं ॥ मो० ॥ १ ॥ मो० ॥ समुद्र नणी दे शीख, शर
ण राखो स्वामीने नले ॥ मो० ॥ मो० ॥ मरण शरण मु
ऊ तोय, ऊंपावे कंत नवि मिले ॥ मो० ॥ २ ॥ मो० ॥
म पड म पड तुं नार, रत्नाकर एहवुं कहे ॥ मो० ॥
॥ मो० ॥ वछराज तुऊ कंत, मछ पूठे बेगो वहे ॥
॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ तुऊथी पहेलो कंत, कुंती न
गरें जायशे ॥ मो० ॥ मो० ॥ तिहां मलशे नरतार,
आगें आणंद थायशे ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ अंबर

एहवी वाणी, सुणीने मन हरखित हुइ ॥ मो० ॥
॥ मो० ॥ हवे हुइ जीवन आश, मरण थकी सुसती
थइ ॥मो०॥५॥मो०॥ ज्यां लगे मले मुज कंत, श
रीर सनान करुं नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ लेशुं नीरस
आहार, चीर नवुं पहेरुं नहीं ॥ मो० ॥ ६ ॥मो० ॥
तेहवे आयो शेठ, मन दृढ कर तु कामिनी॥मो०॥
॥मो०॥ में नवि जाणी वात, जब बूडो वह जामि
नी ॥ मो० ॥ ७ ॥ मो० ॥ शेठ भणे सुण नारी, ठही
रात्रे खस्यो हस्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ते किण टाल्यो
जाय, कहो अपशोप कीजे किस्यो ॥ मो०॥ (नावे सही
वछराज, मूखाशु दुःख कीजे किस्यो) ॥मो०॥८॥मो०॥
हु हुं तहारो दास, जे जोइये ते पूरशुं ॥मो०॥मो०॥
ज्यां जीवे त्यां सीम, माये कीधे राखशु ॥मो०॥९॥
मो० ॥ मोशु धर तु राग, मो सरखो सहि नहिं मिले
॥ मो० ॥ मो० ॥ जिणे नाख्या मुज कंत, तिणशु मन
कहो किम मले ॥ मो० ॥१०॥मो० ॥ तब तेणे जाणी
वात, इण पापीये पति माहरो ॥मो०॥मो०॥ नाख्यो स
मुद्र मझार, हिवे फल थाये माहरो ॥ मो० ॥११॥मो०॥
नारी चिंते एम, शीयल किणविध राखशुं ॥ मो० ॥
मो० ॥ ताण्या जाशे छेह, मधुर वचन हु भाखशु॥

मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ म्हारो तो शुं राग, कंत छतां पहेलो हुंतो ॥ मो०॥मो०॥ माग्या ढलिया आज, म्हारे तोशुं छे मतो ॥ मो० ॥ १३ ॥ मो० ॥ वात अछे इहां एक, तुरत कंत कीजे नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ जो कीजे ए काम, प्रेत थई पीडे सही ॥ मो० ॥ १४ ॥ मो० ॥ पख्खो मास छ मास, जिम कहेशो तेम कीजीये ॥ मो० मो० ॥ जिहां छे थारो वास, मुहूर्त्त तिहां कणे लीजिये ॥ मो० ॥ १५ ॥ मो० ॥ शेठे मानी वात, धीरपणुं मनमे धर्युं ॥ मो० ॥ मो० ॥ धवलुं एटलुं दूध, हवे कारज म्हारुं सर्युं ॥मो०॥१६॥ मो० ॥ पुष्फदंते धर्यो उल्लास, नगर कदी जाशुं वही ॥ मो० ॥ मो० ॥ कहे श्री जिनोदय सूरि, हवे वछराजनी कहुं सही ॥ म०॥१७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पाणिमांहे पडतां थकां,नवपद धरियुं ध्यान॥ नवकारे कीधुं किश्युं, दीधुं जीवितदान ॥ १ ॥ मछ पूठे जाई पड्यो, बेठो जिम असवार ॥ तिणविध देवे प्रेरियो, लंघे जलनिधि पार ॥ २ ॥ सात दिवस लगे सामटो, वछ तरियो जलमांहि ॥ कुंती नगरी मूकियो, बेठो तरुनी छांहि ॥ ३ ॥

पहुथी वाणी, सुणीने मन हरखित थइ ॥ मो० ॥
॥ मो० ॥ हवे हुइ जीवन आश, मरण थकी सुसती
थइ ॥मो०॥५॥मो०॥ ज्यां लगे मले मुझ कंत, श
रीर सनान करुं नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ लेशु नीरस
आहार, चीर नवु पहेरु नहीं ॥ मो० ॥ ६ ॥मो० ॥
तेहवे आयो शेठ, मन हढ कर तु कामिनी॥मो०॥
॥मो०॥ में नवि जाणी वात, जल बूडो वछ जामि
नी ॥ मो० ॥ ७ ॥ मो०॥ शेठ भणे सुण नारी, ठठी
रात्रे लस्यो इस्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ते किण टाल्यो
जाय, कहो अपशोष कीजे किश्यो ॥ मो०॥ (नावे सही
वछराज, मूषाशु दु ख कीजे किस्यो) ॥मो०॥८॥मो०॥
हु हुं तहारो दास, जे जोइये ते पूरशु ॥मो०॥मो०॥
ज्यां जीवे त्यां सीम, माथे कीधे राखशु ॥मो०॥९॥
मो० ॥ मोशु धर तु राग, मो सरखो सहि नहिं मिले
॥मो०॥मो०॥ जिणे नाख्या मुझ कंत, तिणशु मन
कहो किम मले ॥ मो० ॥१०॥मो० ॥ तव तेणे जाणी
वात, इण पापीये पति माहरो ॥मो०॥मो०॥ नाख्यो स
मुद्र मझार, हिवे कंत थाये माहरो ॥ मो०॥११॥मो०॥
नारी चिंते एम, शीयल किणविध राखशु ॥ मो० ॥
मो० ॥ ताण्या जाशे छेह, मधुर वचन हु भाखशु॥

मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ म्हारो तो शुं राग, कंत छतां म्हेलो हुंतो ॥ मो०॥मो०॥ माग्या ढलिया आज, म्हा रे तोशुं छे मतो ॥ मो० ॥ १३ ॥ मो० ॥ वात अछे इहां एक, तुरत कंत कीजे नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ जो कीजे ए काम, प्रेत थई पीछे सही ॥ मो० ॥ १४ ॥ मो० ॥ पक्खो मास छ मास, जिम कहेशो तेम की जीये ॥ मो० मो० ॥ जिहां छे थारो वास, मुहूर्त्त तिहां कणे लीजिये ॥ मो० ॥ १५ ॥ मो० ॥ शेठे मा नी वात, धीरपणुं मनमे धस्युं ॥ मो० ॥ मो० ॥ ध वलुं एटलुं दूध, हवे कारज म्हारुं सस्युं ॥मो०॥१६॥ मो० ॥ पुष्फदंते धर्यो उल्लास, नगर कदी जाशुं वही ॥ मो० ॥ मो० ॥ कहे श्री जिनोदय सूरि, हवे वछ राजनी कहुं सही ॥ म०॥१७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पाणिमांहे पडतां थकां,नवपद धरियुं ध्यान॥ नवकारे कीधुं किश्युं, दीधुं जीवितदान ॥ १ ॥ मछ पूठे जाई पड्यो, बेठो जिम असवार ॥ तिणविध देवे प्रेरियो, लंघे जलनिधि पार ॥ २ ॥ सात दिवस ल गे सामटो, वछ तरियो जलमांहि ॥ कुंती नगरी मू कियो, बेठो तरुनी छांहि ॥ ३ ॥

॥ ढाल च्योथी ॥

॥ राग सिंधूडो ॥ हाथीया रे हलके वेआवे महारे प्राहुणो रे॥अथवा॥कर्म परीक्षा करण कुमर चल्यो रे॥ ए देशी ॥ उदक लेइने अग पखालीयु रे, पीधु निर्मल वार ॥ वात विचारे बेठो पाळली रे, कोण करशे मारी सार ॥ १ ॥ चित्रलेखानी चिंता अति घणी रे, कोइ नहीं छे पास ॥ एकलडी ते अबला किम रहे रे, होशे सहिय निराश ॥ चित्रलेखा० ॥ २ ॥ मारे कारण नारी फूरशे रे, रहेशे सहिय उदास ॥ नारी विछुर्ण जीव्यु कारिमु रे, बल मूके नि श्वास ॥ चि० ॥ ॥३॥ महारु रूपण नारी कोइ नहीं रे, अचिरज ए छुइ वात ॥ आगे विछोहां नारी कते हुआ रे, नाखे आंसु पात ॥ चि० ॥ ४ ॥ रणलो रोयो को जाणे नही रे, होशे ने होवणहार ॥ दु खचे कीधुं कांई न वि पामिये रे, हैडे किभो विचार ॥ चि० ॥५॥ सात विषसनी निद्रा सामटी रे, सूतो बाग मझार ॥ पुण्य प्रभावे सहु तरुवर फल्यां रे, जाइ जुई सहकार ॥ चि० ॥६॥ लोक देखीने अचरिज उपन्यो रे, मालण पासे जाय ॥ देवसंयोगे वाडी नवपल्लव थइ रे, सह खु सांजलि धाय ॥ चि० ॥ ७ ॥ बाग फरीने जोवे

चिहुं दिशें रे जिहां सुतो वछराज ॥ आवी निरख्यो नारी तेहने रे,रूपे जिश्यो देवराज ॥ चि०॥७॥ पग पद्म देखी मालण चिंतवे रे, पुरुष नहीं सामान्य ॥ एहने पुण्ये ए वन पल्लव्युं रे,एहने देशुं मान॥चि० ॥ए॥मालण बेठी आवी ढूकरी रे,उंलांसे तसु पाय॥ जोर करीने कुंवर जगावियो रे,ऊलट अंग न माय ॥चि०॥१०॥ आलस मोमी कुंवरजी उठीया रे,कुमर करे रे जूहार ॥ देइ आशीषने सलखु एम कहे रे, तुं आयो पुण्य प्रकार ॥चि०॥११॥ फल फूल लेइ कुमर आगे धस्यां रे, पूछे पूरव वात ॥ एकाकी तुं कुमर दीसे जलो रे,नाहिं कोइ तुऊ संघात॥चि०॥१२॥ करम प्रसादे माता हुं एकलो रे,माय अछुं निर्धार॥ मननी वात कहुं माय केहने रे,एक अछे किरतार॥ चि०॥१३॥ हुं परदेशे जावा निकल्यो रे, आव्यो इणे आराम ॥ तुऊ देखीने म्हारुं डुःख टल्युं रे, सीधां वांछित काम ॥ चि० ॥१४॥ डुःखीयां दीठां डुःखडुं सांजरे रे,मालण मूके धाह ॥ सरल निशासा सलखु मूकती रे, कुमरे राखी साह ॥ चि०॥१५॥ डुःखनी वात कहो मुऊ मातजी रे,जिम हुं जाणुं वात॥ मालण ऊंपे लोचन जल जरी रे,हुं छुं इहां विख्या

त ॥ चि० ॥१६॥ पाच पुत्र हता यष्ठ माहरे रे, वली ठठो भरतार ॥ कर्म संयोगे यष्ठ सहू प मुआ रे, नहिं जल पावणहार ॥चि०॥१७॥ कर जोमीने कुमर भणी कहे रे,महारे बहुली आथ ॥ पुत्र करीने था पुं तुजने रे,आवो महारी साथ ॥ चि० ॥१०॥ परउ पकारी वात मानी तिहा रे,थाप्यो सलखु पूत ॥ घ रनो भार दियो सहु तेहने रे,घर आव्यो निज सुत ॥चि०॥१ए॥ विविध प्रकारे गूथे सेरखा रे, गूथे नव सर हार ॥ फूलदमा गूथे बहु भातिना रे, एम करे व्यापार ॥चि०॥२०॥ काम करंता नारी न वीसरे रे, वीजु नावे चित्त ॥ वन जईने वछराज आरडे रे, पूरवली तिण प्रीत॥चि०॥२१॥ सोहिला वहाडा ड ‍खमां निर्गम्या रे,दिवस न लागे भूख ॥ राते सूतो वछराज वलवले रे,नारी केरे डुःख ॥ चि० ॥ २२॥ हवे वछराज सुखे रहेतां थकां रे,मन कीधु एकांत॥ श्री जिनोदय कहे नारी तणु रे,सुणजो सहु वृत्तांत ॥चि०॥२३॥ सर्व गाथा ॥ ७२७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥नाहलिया म जाजो गोरी रायट वटे रे॥ए देशी॥

॥ प्रवहण पवने प्रेरियो रे, चाला चाले दिनने

रात ॥ सती शीले सुखे वहे रे,हवे नारीनी सुणजो वात ॥१॥ वालमिआ तुं जाये कुंती नगरी पाधरो रे, जिहां ठेशेठनुं गेह ॥ तिहां कणे गयाथी कंता तुं मिले रे,जिम सुख उपजे देह ॥ वालमिआ०॥२॥ ए आंकणी ॥ प्रवहण समुद्रथी उतस्यां रे,वलि उतरि यां लोक ॥ नगरी निरखी नयणशुं रे,नांग्यो सविहु शोक ॥ वा०॥३॥ नगरी बाहिर डेरा कीया रे, उता स्या सहु नार ॥ पुष्पदंत मनमांहि चिंतवे रे, हिवे करशुं एहने नार ॥ वा०॥४॥ वधावो आगे मूकीयो रे,मुम्मण हुउ उब्राह ॥ सहुको जन आइ नेटीया रे,उलट अंग न माय ॥ वा०॥५॥ लोक वाणी सहु को कहे रे,शेठे परणी नारी ॥ राजकुमरी इण सार खी रे,को नहिं ठे संसार ॥ वा०॥६॥ चित्रलेखा आ णी घरे रे,कीधा बहुला जंग ॥ हवे गृहिणी हुइ माहरी रे,नारी राखो मोशुं रंग ॥ वा०॥७॥ शेठ तमे सुसता रहो रे,सुसते सीझे काज ॥ ठारीने पीजे सही रे,उतावलां न लाने राज ॥वा०॥८॥ मालण वात सु णी सहु रे,आवी कुंवरनी पास ॥ पुष्पदंत शेठ इहां आविया रे,सघलो कियो प्रकाश ॥ वा० ॥९॥ वात सुणी मन हरखीयो रे, पूगी मननी आश ॥ नारी

मुझने सहि मिले रे, हवे चांग्यो मन उदास ॥वा०
॥ १० ॥ कुमर कहे माता सुणो रे, तुमने ठे पग
फेर ॥ नित्य आपु कुसुम हु तुम जणी रे, आगे
करो हजूर ॥ वा० ॥ ११ ॥ वछराजे कीधु किश्यु रे,
आगे चतुर सुजाण ॥ चित्रलेखाने कारणे रे, कीधो
देह प्रमाण ॥ वा० ॥ १२ ॥ कठ जणी कीधो जलो
रे, पहेरण नवसर हार ॥ बाजुबंध ने बहेरखा रे,
चरणाकंचु सार ॥ वा० ॥ १३ ॥ पुष्पतणा सहु सू
गफा रे, लखियुं आपणुं नाम ॥ कुशल खेम लखि
या सहु रे, नारी आव्यो तु इण गाम ॥ वा०
॥ १४ ॥ डाली जरियुं फूलनु रे, नीचे घाली नेट ॥
मालण माथे लेइने रे, पहोती तिहां कणे ठेठ ॥
वा० ॥ १५ ॥ शेठ जणी आगे धस्यो रे, देखी चर्यो
उल्लास ॥ ले जाउं ए महेलमां रे, पहुचो नारी
पास ॥ वा० ॥ १६ ॥ मालण ते मांहे गइ रे,
लागी कुमरी पाय ॥ नेट आणी में तुम जणी रे,
दीठे आणंद थाय ॥ वा० ॥ १७ ॥ तें मुझने मह्रो
टी करी रे, माता नावे मुझने काम ॥ कंत पखे
कीजें किश्यु रे, शुरू नहीं मुझ स्वामि ॥ वा०॥१८॥

पान फूल तेहनो रे, माता मुजने छे सही नीम ॥ वस्त्र नवुं पहेरुं नहीं रे, जिहां न मले तिहां सीम ॥ वा० ॥ १९ ॥ मालण फूल परहां कियां रे, कंचू लीधो हाथ ॥ अलगो नयणे निहालियो रे, कीधो छे सहि नाथ ॥ वा० ॥ ३० ॥ दीठुं नामुं कंतनुं रे, दीठुं आपण नाम ॥ दीठां मन आणंदियुं रे, विधिशुं करे प्रणामो ॥ वा० ॥ ३१ ॥ ढाल हुइ चोत्रीशमी रे, वांच्या आणंदपूर ॥ आगे वात सहु पूछशे रे, कहे श्री जिनोदय सूरि ॥ वा० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री कुंती थकी, लिखितं श्री वछराज ॥ कुशल क्षेम हुं आवियो, दुःख म करे मो काज ॥ ॥ १ ॥ सलखु मालणने घरे, रहुं छुं सदा उदास ॥ परमेसर जाणे सही, केहवो करुं प्रकाश ॥ २ ॥ हम तुम जिहांथी विछड्यां, करवी निंद हराम ॥ अन्न पाणी निरतो नखुं, हवे जीव आयो ठाम ॥ ३ ॥ उखाणो नदी नावनो, आय मिल्यो इहां ठाम ॥ सहियारो समुद्र लगे, तुम हम हवे प्रमाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ राग मल्हार ॥ ठंलंगजीनी देशी ॥

॥ कुमरी कुमरी अकुर देखीने रे, जाग्यो मनमां मोह ॥ कुमरने कुमरने राख्यो साहेबे जीवतो रे,वा ग्यो सहु अवोह ॥१॥ जीवतां जीवतां राजेसर सहु आवी मले रे,मूआ केहो सोस ॥ जायने जमारो आश विलूरुडो रे, कंत धर्यो मन रोष ॥ जीव०॥२॥ कत के तपखे हु रही जीवती रे, तेतो सायर शोष ॥ तहारो रे तहारो कतो तुज आवी मले रे, तिण में कीधो शोष ॥ जीव० ॥३॥ नाहले नाहले ठंलंचा लखिया कारिमा रे, मूल न जाणे वात ॥ तहारे तहारे कारणे हु कुर ती रहु रे, सदा अहो ने रात ॥ जीव०॥४॥ में तुज में तुज कारण कता परिहस्या रे, रूका सरस आहार ॥ तन भूषण तन भूषण कता सहु तज्यां रे, सो जाणे किरतार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ घोडो ते घोडो ते दोडीने मरे रे, सार न लहे असवार ॥ घोडाने घोडाने रा जेसर दूषण को नहीं रे, वेसण हार गमार ॥जीव० ॥६॥ तारे तारे कारण हुं दुःखणी हुइ रे, झुरी दिन ने रात ॥ आंसुडे आंसुडे सिंचियु वाला में हैयडुं रे, पण तें न जाणी वात ॥ जीव० ॥ ७ ॥ मरम म

रम वचन प्रियनां वांचिने रे, मूर्छाणी तिहां नारी॥वली उठी वली उठी धरणी पडे रे, कंत न लाधी सार ॥ जीव०॥ ८ ॥ मालणी मालणी मन विलखुं कीयुं रे, ध्रूजण लागी ततकाल॥ चित्रलेखा चित्रलेखाने कारणे रे सहु मलियां ततकाल॥ जीव०॥ ए॥ सर्व गाथा ॥ ३६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए मोशी मायण अछे, लागी एहने पिंम॥ जो छोडे तो उगरे, कूटो काढी रंम ॥१॥ लोक सहु नेलां हुआ, करे घणा संताप॥ मालण मनमां चिंतवे, पूरव नवनां पाप ॥ २ ॥ एक कहे मालण थकी, न होवे एवुं काम ॥ नूत प्रेत लागो अछे, तिणनो छे ए विराम ॥ ३ ॥ राजकुमरि मालण नणी, पूछे सहु वृत्तांत॥ कुसुम किणे ए गुंथीयां, नांगो मननी भ्रांति ॥ ४ ॥ साची वात सलखु कहे, जूठ म नाखे मात ॥ मालण कहे सुत मायरे, कीधां विविध नात ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ देशी अलबेलानी ॥

॥ अनुमाने राणी जाणितुं रे लाल, सही हुवे मक कंत ॥ प्याराराय बे ॥ सागर वचन साचुं हुवुं रे लाल, पूगी मुक मन खंत ॥ सु० ॥ १ ॥ मनडुं ते मोह्युं माहरुं रे लाल ॥ तोशुं मोहोरी प्रीत रे ॥सु०॥

॥म०॥जिम गयवर रेवा नदी रे,जिम चकोर चित्त चव ॥सु०॥म०॥२॥ लोक सहु पासे किया रे लाल,माधव रा खी पास रे॥सु०॥ विनतडी एहवी लखी रे लाल,हु तु तोरी दास रे ॥सु०॥म०॥३॥ रही न शकु हु तो विना रे लाल, पूगी न शकु कोय ॥ सु० ॥ मह्यारे मन तु हीज अछे रे लाल, तोही न जाणु कोय ॥ सु० ॥ ॥ म० ॥ ४ ॥ कता तारे कारणे रे लाल, छोडी श रीरनी सार ॥ सु० ॥ लूखे मन हुं इहां रहुं रे ला ल, लेती नीरस आहार ॥ सु० ॥ म० ॥ ५ ॥ म हारे तो विण को नहीं रे लाल,बीजो इण संसार ॥ ॥ सु० ॥ बीजा पुरुष बंधव समा रे लाल, इण भव तु भरतार ॥ सु० ॥ म० ॥ ६ ॥ शील जली पेरे पा लतां रे लाल, आवी हुं इण गाम ॥सु०॥ पानमांही संदेशडो रे लाल, लखीयु आपणु नाम ॥ सु०॥म०॥ ॥७॥ बीडु बांधी आपियुं रे लाल, देज्यो पुत्रने हा थ ॥ सु० ॥ वीधी मुद्रा हाथनी रे लाल, दीधी बहु ली आथ ॥ सु० ॥ म० ॥ ८ ॥ माधव आवी मल पती रे लाल, आवी आपण गेह ॥ सु० ॥ बीडुं लइ आगे धर्युं रे लाल, कुमरीये दीधु जेह ॥सु०॥म०॥ ॥ ९ ॥ पान वांच्यु लइ प्रेमशु रे लाल, हरख्यो हि

यडा मझार ॥ सु० ॥ चित्रलेखा साची सती रे ला
ल, नहिं एहवी संसार ॥ सु० ॥ म० ॥ १० ॥ हंस
कुमर वछराजने रे लाल, जिणविध मलशे आय ॥
॥ सु० ॥ सो विधि कहिशुं इहां कणे रे लाल, सहु
सुणजो चित्त लाय ॥ सु० ॥ म० ॥ ११ ॥ कुंती नग
रीथी निकल्या रे लाल, समुद्रे श्रीवछराज ॥ सु० ॥
॥सु०॥ कुंती नगरी तेहनो रे लाल, मृत्यु लह्यो हंस
राज ॥ सु० ॥ म० ॥ १२ ॥ राजाने सुत को नहीं
रे लाल, नगरी हुइ निर्नाथ ॥सु०॥ पंच शब्द मेला
करी रे लाल, मलीया सहुको साथ ॥ सु० ॥ म० ॥
॥१३॥ पूर्ण कलश लेइ हाथियो रे लाल, ले फरियो
सहु गाम॥सु०॥कबाडी केल्हण घरे रे लाल, आयो
तिहां किण ठाम ॥ सु० ॥ म० ॥ १४ ॥ कलश न
माञ्यो हाथणी रे लाल, हंस हुउे तिहां राय ॥
॥ सु० ॥ वाजां तिहांकणे वाजियां रे लाल, प्रणमे
सहु को पाय ॥ सु० ॥ म० ॥ १५ ॥ हंसराज राजा
हुवो रे लाल, सहु को माने आण ॥सु०॥ वछराज
नवि वीसरे रे लाल, हुतो जीवन प्राण ॥ सु०॥म०॥
॥१६॥ दिन दिन पडह वजावतो रे लाल, जे सुधि
कहे वछराज ॥ सु० ॥ एकण नगरी तेहनुं रे लाल,

आपु तेहने राज ॥ सु० ॥ म० ॥ १७ ॥ सात दिवस वोल्या जिशे रे लाल, कुमरी सुणीयो बोल ॥ सु० ॥ राजाने जाइ कहो रे लाल, कहिशु महारो बोल ॥ ॥ सु० ॥ म० ॥ १८ ॥ मुजने मेलो पालखी रे ला ल, जो तुमने छे चाह ॥सु०॥ वल्लराज कह्युं वातडी रे लाल, राजाने धरि उछाह ॥ सु० ॥ म० ॥ १९ ॥ राजाने जइ विनव्यो रे लाल, राय धर्यो उल्लास ॥ ॥सु०॥ ले जाउ तुम पालखी रे लाल, आणो महारी पास ॥ सु० ॥ म० ॥ २० ॥ राजा मूकी पालखी रे लाल, आया घरनी बार ॥ सु० ॥ पुष्फदंत मनमें हरखियो रे लाल, में परणी सा नारि ॥ सु०॥म०॥ ॥ २१ ॥ किम मूकुं हुं एकली रे लाल, प्रसिद्ध करु घरनारि ॥सु०॥ सर्व महाजन मेलिने रे लाल,जाशु सह दरबार ॥ सु० ॥ म० ॥ २२ ॥ सुम्मण शेठ परि वारशुं रे लाल, पुष्फदत हुवो साथ ॥ सु० ॥ पंच शब्द आगे बाजता रे लाल, हवे कुवरी किण हाथ ॥ सु० ॥ म० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७९० ॥

॥ ढाल आठमी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ सहु महाजननी साथे हुउ, सुम्मण शेठने खेह भेटीयो ॥ फोंद हलावे चावे पान, हाथे भरे अभि

मान ॥ १ ॥ हालो हालो सहुको कहे, पालखी पासें ऊना रहे॥चांचो चांगो ने चांपशी, गांगो सांगो ने धर्मशी॥२॥पेथो पोपट ने पदमशी, साकर सुंदो ने करमशी ॥ तेजो राजो ने लखमशी, कचरो घेलो ने पोमशी ॥३॥ वरधो वासण ने वेरशी, जागो जेमल ने जेतशी॥नेतो खेतो ने खीमसी, नादो नादो ने नीमसी॥४॥राजो रामो ने राजसी, तालो तोलो ने तेजसी ॥ कीको वीको ने सोमशी, हरखो हीरो ने हेमशी ॥ ५ ॥ राणो रणमल ने रूपशी, कह्नो देलो ने कूपशी ॥ सूजो सामल ने समरशी,पासो श्रासो ने अमरशी ॥६॥ एहवा एहवा महोटा शेठ,सहुको बेठा वडला हेठ ॥ मांहो मांहे हूंके हसे, राजाने जोझुं इण मिषें ॥ ७ ॥ पुष्फदंत घर जेवी नार, बीजी अवर नाहिं संसार ॥ सहुको महाजन पोलें गया, ठरीदार जइ आगे कह्या ॥८॥ परस्त्री बंधव हंसराज, आडी प्रियठ बंधावे काज ॥ आसण बेसण ऊाऊां धस्यां, महाजन सहुको तिहां संचस्या ॥९॥ सहु महाजन कियो जूहार, प्रियठमांही बेठी ते नार ॥ यथायोग्ये बेठा सहु, लोक मट्यां ठे सुणवा बहु ॥ १० ॥ राय कहे सणजो मह लोक

जो बोलशो तो देशु ठोक॥राय वचन एहवां जब क ह्यां, मान करीने बेठा रह्या ॥ ११ ॥ कुवरी बोली सुण राजान, एक चित्ते सुणजो दइ कान ॥ नगरी तुमारी पुरपेठाण, बावन वीर तणु तिहां ठाण ॥ ॥१२॥ यादव वंश करे त्यां राज, उत्तम तणां सम रे काज ॥ शालिवाहन सुत प्रगट प्रताप, नरवाहन राजा तुम बाप ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ८०३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ नीनश्यानी देशी ॥

॥ तुम जननी हंसावली रे, तसु जन्म्या वे अगजातो जी ॥ हंसकुमर वछराज बेहु सुवा, नाम दिया माय तातो जी ॥ १ ॥ हस नरेसर सुणजो तुम चरित्र, नानपणानी वातो जी ॥ पनर वरस विदेशे रह्या तुमे, चणिया दिन ने रातो जी ॥ हं० ॥ २ ॥ मा त पिता भेटणने काजे, पहोता पुरपेठाणो जी ॥ मं त्रीये तिहां मारण मांमिया, हुकम कीयो राजानो जी ॥ हं० ॥ ३ ॥ प्रछन्नपणे मनकेसरी राखीया, दी धु जीवितदान जी ॥ अश्वरत्न बे मंत्री आपियां, वीर्धा रत्नप्रधान जी ॥ हं० ॥ ४ ॥ तिहांथी तमे बे हु नीसरया, पहुता अटवी ठामो जी ॥ हंसकुमरने तिरषा ऊपनी, जल तु नहिं तिहां नामो जी ॥ हं०

॥५॥ वरु बंधन तुऊने कारणे, पहोतो जलने काजो जी ॥ जल लेइने पाछो आवियो, चपलगते वछराजो जी ॥ हं० ॥ ६ ॥ हंसकुमरने विषधर डशियो, जिम वांध्यो तरुमालो जी ॥ कुंती नगरी चंदन लेइने, आव्यो सरनी पालो जी ॥ हं० ॥७॥ कुमर न दीठो डाले वांधियो, दीधी बहुली धाहो जी ॥ हियकुं कूटे शिरने आहणे, दीधो हंसने दाहोजी ॥ हं०॥८॥ पग ठेलखियां हंसकुमर तणा, दीधा सरला सादो जी ॥ फरि फरिने वन सहु जोइयुं, मूकी मन परमादो जी ॥हं०॥९॥ कुंती नगरी पाछो आवीयो, शेठे दीधो दोषो जी॥चोर करीने राजा ऊालियो, कीधो राजा रोषो जी ॥ हं० ॥ १ ॥ बार रतन ने वलि बीहुंतुरी, राख्या मुम्मण शेठ जी ॥ कूकुं आल दीयुं कुमर त्रणी, नीची घाली दृष्टि जी ॥हं० ॥ ११ ॥ चित्रलेखानां वचन सुणी करी, खलत्रलियां सहु लोको जी ॥ कुमति सहुने आवी सामटी, सहुने पडशे ठोको जी ॥ हं० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ८१५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन सहु सांसे पड्या, कीधुं त्रूकु काम ॥ इण साथे आव्या सहु, रोषें हरशे दाम ॥ १ ॥ मां

छोमाहे चिंता करे, क्यां सरशे काम॥जो वेगां र हेस्यां इहां, तो पकशे सहि मान ॥२॥ के राजा मारे सही, के कापे सहु कान॥ ग्रह पीडा सहुने करे, दू ख्यां दीजें दान ॥३॥ एक कहे समरो सहु, जेहना जे छे देव ॥ तेहनी ते रक्षा करे, समस्थानी छे टेव ॥ ४ ॥ शिर ढांकीने ऊठीया, भूजन लाग्यां अग ॥ पग पिंडी गोला थख्या, मुम्मण नाठो संघ ॥ ५ ॥ नासंता नागा हुआ, तूटण लागी लांग ॥ थरहर थरहर नीसख्या, जिणमां न हुतो वंक ॥ ६ ॥ आगे पाछे नीकख्या, घर आव्या सहु शेठ ॥ पुत्र पिता वेगा सहु, नीची घाली दृष्ट ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ मेंदीना गीतनी देशी ॥

॥ हंस भणे सुण नारी, वात कही हे सघली पा छली रे॥ वछ कुमरनी वात, मांडीने हे भाखो सुंद रि आगली रे ॥१॥ कहे कुमरी सुण राय, मुम्मण शेठे प्रवहण पूरियां रे ॥ शुभ लगने शुभ वार, तिहां थी हे पोते सहु हंकारियां रे ॥ २ ॥ तुरु वधव लि यो साथ, कनकावती नगरी पासे तिहां गया रे॥क रियाणां उतार्यां गाम, राजाने मलवा पुण्यवंत ति हां गया रे ॥ ३ ॥ में दीठो वछराज, देखीने हे में

तिहां कणे आदस्यो रे॥इण पुष्पदंते शेठ, तुफ बंधवने अन्यजाति कोई कस्यो रे॥४॥राजा धरियो कोप,नगरी थी हो राजा बाहिर राखीया रे ॥मारण मांडी घात' नाम ठाम सहु हे राजाने नाखीयां रे ॥ ५॥ राजा धरियो राग, तुफ बांधवने हो नगरिये आणीयो रे ॥ दीधुं बहु सन्मान,नगरने लोके हे कुमर वखाणियो रे ॥ ६ ॥ हुं तुफ बंधवनारी, सुख नोगवतां केइक दिन हुवा रे ॥ प्रवहण पूस्यां शेठ, तुफ बांधवने हु साथे हुवा रे ॥ ७ ॥ आव्या समुद्र मफार, मुफने हे देखी पापी चिंतव्युं रे ॥ ए थापुं घरनारी, एम जाणीने हे पापी शुं ठव्युं रे ॥ ८ ॥ कीधुं कर्म चंडाल, आधी राते कुंवरने नाखीयो रे॥करवा मांरु घात, एह चरित्र सहु कुंमरी नांखीयो रे॥ए॥ सर्व गाथा ॥८३१॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ राग मल्हार ॥

अथवा तप सरिखो जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ एह वचन श्रवणे सुणी, मूर्बाणो हंसराज ॥ हो सुंदर॥ऊठीने धरणी पडे, बंधव केरे काज ॥ हो सुंदर ॥ ए० ॥ १ ॥ मुफ बंधव तिहां किणे मुऊ,जीवणनी किसी आश ॥हो०॥रोवे रीशे आरके,मनमाहे हुउ उदास ॥ हो०॥ए०॥२॥ चित्रलेखा कहे रायजी,

दुःख न कीजे कोइ ॥हो०॥ तुझ बंधव मलशे सही, जीवतो जो होइ ॥ हो० ॥ ए० ॥३॥ हंस जपे सुण कामिनी, पडियो समुद्र मझार ॥ हो० ॥ जीवतो कहो केम मले, तव जपे ते नार ॥ हो० ॥ ए० ॥४॥ तुझ बंधव इहां आवियो, सागर तरी महाराज॥हो० सखखु मालणने घरे, रहे छे श्री वछराज ॥ हो० ॥ ॥ ए० ॥ ५ ॥ एह वचन श्रवणे सुणी, प्रणमे नारी पाय ॥ हो० ॥ वात कही सहु बांसली,वछघरणी तु भाय ॥ हो० ॥ ए० ॥ ६ ॥ हंसकुमर हरखे करी, पहोतो मालण गेह ॥ हो० ॥ पूछे सहु पाछा वले,नर नारी नहीं छेह ॥ हो० ॥ ए० ॥७॥ बेहु भाई भेला थया, मलिया मनने रंग ॥ हो० ॥ नगर लुआ वधामणां, कीधा बहुला जंग ॥ हो० ॥ ए० ॥८॥ घर घर गूडी उछली, तरियां तोरण बार ॥हो०॥ पग पग नाटक नाचती, गावे अबला बाल ॥ हो० ॥ ए० ॥९॥ सुखासन साथे घणां, साथे बहु असवार॥हो०॥राज लोकमांहे गया, हरख्यां सहु नर नार ॥ हो० ॥ए० ॥ १० ॥ नारीकंत बेहु मल्यां, फलिया पुण्य अकूर ॥ हो०॥वात सुणो हवे शेठनी, कहे श्रीजिनोदयसूरि ॥ हो० ॥ ए० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४२ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ मुम्मण शेठ शंका परी रे, कीधुं नूंडुं काम॥इण
वाते अपजश अति हुवे रे,न करे कोइ लेवा नाम कामो
जी ॥१॥ पुत्र पिता हवे चिंतवे, रूडे रूडुं थाय ॥
नूंडाथी नूंडु सदा हुवे, लोके एम कहाय ॥सु०॥२॥
जे मति पाछे ऊपजे, सो मति पहेली होय ॥ काज
न विणसे आपणुं, डुर्जन हसे न कोय ॥ मु० ॥३॥
हंसराजाये तलार तेडिया, मारो विहुने गाम॥धाक
पडे जिम सघला गाममां,को न करे ए काम॥मु०॥
॥४॥ शेठ कुटुंब शूली दीयो,मत करजो कांइ लाज ॥
घरनुं धन लूंटी इहां, सहु आणजो साज ॥मु०॥५॥
वछ कहे नाइ तुमे सुणो, शेठ तणो नहीं दोष ॥
कृत कर्म लखियुं ते पामिये, इणशुं केहो रोष ॥
॥ मु० ॥ ६ ॥ मामात्रे कहीये सारिखी,करमे कीधी
रीश॥ पिताने परमेश्वर सारिखो, बेहु छेदियां शीश
॥मु०॥७॥ मनकेसरि मुहते तिहां राखिया रे, दीधुं जी
वितदान ॥ ऊंची नीची आपे नोगवी, सविहु पुण्य प्र
माण ॥ मु० ॥ ८ ॥ शुन्न अशुन्न लखियुं जे कर्ममां,
ते निश्चेशुं होय ॥ नल राजाये हारी नारीने रे,वली
वन मूकी सोय ॥ मु० ॥ ए ॥ हरिचंद्र राजा राज्य

तणो धणी, घड्डुं सुघ घर नीर ॥ दशरथ राजा श्रवण वध कीयो, जोरे मृत्यु तीर ॥ मु० ॥१०॥ देशवटे बे बांधव नीसर्या, लखमण ने वली राम ॥ रावण सीता वनमें अपहरी, कर्म तणां ए काम ॥ मु० ॥ ११ ॥ भीख मगावी राजा मुजने, विडंबियां ए कर्म ॥ एम जाणीने बंधव टालिये, कर्म तणो ए मर्म ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ एहवां वचन सुणी वछराजनां, बहु धन वनी लाज॥सुम्मण शेठ भणी मूकावीयो, उपकारी वछराज ॥ मु० ॥ १३ ॥ नगरथी बाहिर काढियो, शेठ तणो परिवार ॥ वछ कुमरने सहु को विनवे, तें कीधो उपकार ॥ मु० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम करतां बहुदिन हुआ, भोगवतां ते भोग ॥ निजनारीशु सुखे रह्या, पुण्य मिल्यो संयोग ॥ १ ॥ बे बंधव मन चिंतवे, नही मैत्रीमां दोष ॥ कर्मे आपे काढिया, ताते कीधो रोष ॥ २ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वालेसर मुज वीनति गोडी हो ॥ ए देशी ॥

॥ इहांथी चाली उतावलो रे ॥ धंधवीया ॥ जाशुं जननी पास रे ॥ध०॥ तास भणी जाइ मली रे ॥धं०॥

पूरे सविहु आश रे ॥ बं० ॥ १ ॥ हंस कहे हंसा
वली रे ॥वं०॥ दुःख जर दाधी देह रे ॥ बं०॥ चकवा
चकवी प्रीतडी रे ॥ बं०॥ तेहवो राणीनो नेह रे ॥
बं० ॥ हं० ॥ २ ॥ जिम गयवर रेवा नदी रे ॥बं०॥
जेहवो चंदचकोर रे ॥बं०॥ जिम सुरभि ने वाछडो
रे ॥बं॥ जेहवी प्रीति मेह मोर रे ॥वं०॥ हं० ॥३॥ मा
नसरोवर हंसलो रे॥बं०॥जेहवी कोयल आंब रे ॥बं०
जेहवी जलमां माछली रे ॥बं०॥ जेहवी प्रद्युम्नसांब॥बं०
॥ हं० ॥ जेहवी कंतने कामिनी रे ॥ बं० ॥ क्रौंच
बच्चाशुं चित्त रे ॥ बं० ॥ तेम आपणशुं माननी रे॥
बं० ॥ रहेती हशे प्रीत रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ५ ॥ ए
म आलोची आपसमां रे ॥ बं० ॥ केल्हणने सोंपी
राज रे ॥बं०॥ हंस कुमर साथ हुवो रे ॥बं०॥ चाल्यो
श्री वछराज रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ६ ॥ शुभ लग्न शुभ
वासरे रे ॥बं०॥ नारी लीधी साथ रे ॥बं०॥ हयगय
रथ परिवारशुं रे ॥बं०॥ लेई बहुली आथ रे ॥बं०॥
॥ हं० ॥ ७ ॥ पुरपेठाणे आवीयो रे ॥ बं० ॥ कीधो
तिहां मेल्हाण रे ॥बं०॥ डेरा तंबू ताणिया रे ॥बं०॥
को नवि कीध प्रयाण रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ८ ॥ आग
ल मूके आदमी रे ॥ बं० ॥ तात जणावी वात रे॥

॥ व० ॥ कुशल केम इहां आविया रे ॥ व० ॥ जाइ जणावी वात रे ॥ व० ॥ ह० ॥ ए ॥ राजा सांजली हरखीयो रे ॥व०॥ हरख्यां सहु को लोक रे ॥व०॥ नगरे हुआं वधामणां रे ॥ व० ॥ नाठो सविहुं शोक रे ॥ व० ॥ ह० ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ७६७ ॥

॥ ढाल पचवमी ॥

॥ फूमखडांनी देशी ॥ राणी वात सुणी तिसे रे, आया हंस वछराज ॥ मनोहर पूरणा ॥ रोम राय वि कसी सहू रे, सीधां वांछित काज ॥ म० ॥ १ ॥ आ ज दिवस धन्य ऊगीयो रे, सफल फली मन आश ॥ म० ॥ कष्ट गयु हवे माहरुं रे, नाठी मनही उदा स ॥ म० ॥ २ ॥ घन आगम हरखे घणुं रे, नाचे नाटक मोर ॥ म० ॥ मेघ तणे मनही नही रे, करे बपैया सोर ॥ म० ॥ ३ ॥ तेम राणी सुत आगमे रे, धरती अंग उछाह ॥म०॥ हरखे शरीर शीतल हुवुं रे, नाठो दुखनो दाह ॥ म० ॥४॥ राजा राणी बे जणां रे, मनकेसरी पण साथ ॥ म० ॥ लोक सहु मलवा गयां रे, आडंबर करी नाथ ॥ म० ॥५॥ सा मा आव्या सावरे रे, प्रणम्या नरवर पाय ॥ म० ॥ हंसावली हरखी घणु रे, दीठी नजरे माय ॥ म०

॥६॥ चरण नमे माता तणां रे, मात दीये आशी
ष ॥ म० ॥ हंसकुमर वछराजशुं रे, जीवो कोमी व
रीस ॥ म० ॥७॥ हैयमा आगल आणीने रे, जीड्या
अंगो अंग ॥ म० ॥ तिनसें साठ अंतेउरी रे, आ
य मीली मनरंग ॥ म० ॥ ८॥ मनकेसरि मुहता ज
णी रे, दीधुं अधिकुं मान ॥ म० ॥ तुजनो उरण के
म हुवे रे, तें दीधुं जीवितदान ॥ म० ॥ ए ॥ जग
ति जुगति कीधी घणी रे, दीधां फोफल पान ॥म०
॥ बेहु कुमर लेई करी रे, घर आयो राजान ॥ म०
॥१०॥ अचरिज लोक देखी करी रे, पहुतां ठामो
ठाम ॥ म० ॥ लीलावती राणी जणी रे, जाइ कीधो
प्रणाम ॥ म० ॥ ११ ॥ राय कहे लीलावती रे, की
धुं न करे कोय ॥ म० ॥ अवगुण केडे गुण करे रे,
हुं बलिहारी सोय ॥ म० ॥१२॥ गंगाजल जिम नि
र्मलुं रे, एहवा हंस वछराज ॥ म० ॥ कूमो दोष दे
इ करी रे, मारण मांड्यो साज ॥ म० ॥ १३ ॥ ना
री चरित न को लहे रे, सहु को कहे संसार ॥म०॥
निजपति परदेशी हणयो रे, सूरिकंता नार ॥म०॥
१४ ॥ गोखथकी लेइ नाखीयो रे, जितशत्रु राजा
नार ॥ म० ॥ गंगाजलमांहे नीकल्यो रे, पुण्य तणे

परकार ॥ म० ॥ १५ ॥ धनदत्त घरणी कंतने रे, मां ड्यो मनशु डोह ॥ म० ॥ कल जाणी देखी करी रे, आंधो थहेरो होइ ॥ म० ॥ १६ ॥ इम चरित्त चूल णी कीधु रे, बीजी न करे माय ॥ म० ॥ ते ब्रह्मदत्त राजा हुवो रे, पुण्यतणे सुपसाय ॥ म० ॥ १७ ॥ ए म चरित्र नारी तणां रे, कहेतां नावे पार ॥ म० ॥ इण राणीने मारशु रे, जिम सहु माने कार ॥म०॥ ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ८०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा खांडु काढियु, राणी मारण काज ॥ कुं मर बे आवी पड्या, छोडीजे महाराज ॥ १ ॥ ए राणी लीलावती, मात समी ए माय ॥ नारी हत्या छे नारकी, तो किम कीजे राय ।२। लीलावती पर सादथी, मेली थजुली आथ ॥ चित्रलेखा परणी घर णी, आइ मिल्या नरनाथ ॥ ३ ॥ अजयदान देवा डियु, हंस अने वछराज ॥ पीयर परही मोकली, राखी सघली लाज ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ ढोलनी देशी ॥

॥ नरवाहन राजा हवे ॥ सोभागी सुंदर ॥ पाखे सुखमां राज ॥ सो० ॥ राणी हवे हंसावली ॥ सो० ॥

रोष नहिं काहीं आज ॥ सो० ॥ १ ॥ बे पुत्र महा
रे जोमले ॥ सो० ॥ हंस अने वछराज ॥ सो०॥ पक
तो आज्ञ जावे जिस्या ॥ सो० ॥ सारे उत्तम काज
॥ सो० ॥ २ ॥ राते सूतो चिंतवे ॥ सो० ॥ नरवा
हन ते राय ॥ सो० ॥ जो मुनिवर आवे इहां ॥
सो० ॥ सेवुं तेहना पाय ॥ सो० ॥ ३ ॥ एम चिंत
वतां तेहवे ॥ सो० ॥ एहने ऊग्यो सूर ॥ सो० ॥ पं
चसया परिवारशुं ॥ सो० ॥ आव्या धर्मघोष सूरि
सो० ॥ ४ ॥ नरवाहन राजा हवे ॥ सो० ॥ वंदण
हेते जाय ॥ सो० ॥ हंस वछ हंसावली ॥ सो० ॥
वंदे मुनिना पाय ॥ सो० ॥ ५ ॥ सूरि दीये तिहां दे
शना ॥ सो० ॥ जलधरसम ते वाण ॥ सो० ॥ सु
ख डुःख कर्मे पाइयें ॥ सो० ॥ कर्मतणे परिणाम ॥
सो० ॥ ६ ॥ जब हुइ पूरी देशना ॥ सो० ॥ नरवा
हन तब राय ॥ सो० ॥ चरण नमी पूछे इस्युं ॥ सो०
॥ केहो पुण्यपसाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ रमणी ऋद्धि
लीला घणी ॥ सो० ॥ हंस अने वछराज ॥ सो० ॥
संशय जांगो सद्गुरु ॥ सो० ॥ आया पूछण काज
॥ सो० ॥ ८ ॥ सद्गुरु कहे तुम सांजलो ॥ सो० ॥
पूरव जवनी वात ॥ सो० ॥ धनपुर नगरे तिहां वसे

॥सो०॥ वे बांधव विख्यात ॥ सो० ॥९॥ कर्ममेले धन सहु गयु ॥ सो० ॥ धन शोचे दिन रात ॥सो०॥ भूधर सूधर वे जणा ॥सो०॥ जाय सदा परजात ॥ स०॥ १०॥ कध कुहाडा लेइ करी ॥सो०॥ कटिये बांधे दोर ॥ सो० ॥ रोटी पण पूठे धरे ॥ सो० ॥ पोते पाप अघोर ॥ सो० ॥ ११ ॥ रानथी आणे इंधणा ॥ सो० ॥ नगरे वेचण जाय ॥सो०॥ एक टको लेइ सुसतो ॥ सो० ॥ लूखु शूक्रु खाय ॥ सो० ॥ १२ ॥ वे बांधव रणमां गया ॥ सो० ॥ इंधण लेवा काज ॥सो० ॥ रोटा ले आगे धर्या ॥सो०॥ जोजन करवा काज ॥सो०॥१३॥ साधयकी चूक्या यति ॥ सो० ॥ पडिया रणही मकार ॥सो०॥ अन्नपाणी मले नहीं ॥ सो० ॥ जे कीजे आहार ॥ सो० ॥१४॥ वेहु बांधव मुनि पेखिया ॥ सो० ॥ दीधुं अदलक दान ॥ सो० ॥ मारग पण देखाडियो ॥सो०॥ तिणे पुण्य हुवा राजान ॥ सो० ॥ १५ ॥ दुःख बीजां जे पामीयां ॥ सो० ॥ ते पूरव कृत कर्म ॥ सो० ॥ एम जाणी आदरो ॥ सो० ॥ साचो श्री जिनधर्म ॥ सो० ॥ १६ ॥ नरवाहन राजा कहे ॥ सो० ॥ रहेजो त्यां लगे साध ॥ सो० ॥ पद्मराज राजा ठवुं ॥सो०॥ लिउं चारित्र निर्बाध ॥

सो० ॥ १७ ॥ गुरु वांदी घर आवियो ॥ सो० ॥ वछ
कुमरने दीधुं राज ॥ सो० ॥ कुंती नगरी तिहां क
णे ॥ सो० ॥ थाप्यो श्री हंसराज ॥ सो० ॥ १८ ॥
नरवाहन चारित्र लिधुं ॥ सो० ॥ राणी लीधी दी
ख ॥ सो० ॥ बेहु संयम सूधो धरी ॥ सो० ॥ चाले
जिन मत शीख ॥ सो० ॥१९॥ सर्वगाथा ॥ ९०४ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सुमति पांच सुधी धरे जी, पाले पंचाचार ॥
एहवा साधु नमुं॥दोष बहेंतालीश टालता जी, कर
ता उग्र विहार ॥ ए० ॥ १ ॥ केता कालने आंतरे
जी, आया पुरपेठाण ॥ ए० ॥ वछराज वंदन गयो
जी, प्रणम्या तात सुजाण ॥ ए० ॥२॥ मुनिवर ना
खे देशना जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ ए० ॥ पंच म
हाव्रत साधुनां जी, जिणथी नवनो पार ॥ ए० ॥
॥ ३ ॥ तात वचन श्रवणे सुण्यां जी, लीधुं समकि
त सार ॥ ए०॥ श्रावक व्रत सूधां धर्यां जी, श्री वछ
राज ने नार ॥ ए० ॥ ४ ॥ अंते अनशन आदरी जी,
देइ पुत्रने राज ॥ ए० ॥ त्रीजे कल्पे उपना जी, सु
ख बहुलुं वछराज रे ॥ ए० ॥५॥ श्री खरतर गछ गु
रुनिलो जी, श्री नावहर्ष सूरींद ॥ए० ॥ गछ चोरा

सिंहासने, ठेव जिस्या सोहृत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशु, रूपें जग मोहृत लाल रे ॥ सु०॥२२॥ ढाल थई ए बारमी, बीजे खर्मे उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहा परणासे, महाबल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नूप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहा, गयो खबर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहा, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी तूटो किहा गयो, जिम फल पाके वींट ॥ २ ॥ नूप जाणे पहेला इणे, साध्यो मन्त्र सुसाज ॥ साधन अर्ऊ रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥ ३ ॥ वचन सबे तेहना मल्या, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहा आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन नि फल होसे, हे हे सरजण हार ॥ ५ ॥ कुअर सुणी तिहा बलसु, ढाकी वदन हसत ॥ सर्व जणासे ठेह्रके, ... मनमांहे कहंत ॥ ६ ॥ वात सही कन्या तणी, ...नकल यथार्थ ॥ माहो माहि ते कहे, आव्या तु... ॥ ७ ॥ मलया बाला बापनी, मारी विण अप... ॥ हवे नृपने किम बालशे, उत्तर देई अबाध ॥०॥

एहवामां नृप कहेणथी, ऊंचे स्वर संजलाई॥ निपुण नकीव कहे ईस्युं, राजसजामां आई॥ ए॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोमा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो जूप हगला रे, नरपति ठेगाला रे, थाउ उजमाला विकथा ठेरुीने रे, मंरूपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो मीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांजा मुख कोरें रे, करे घात कठोरें बे दल जूजूआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम नृपनी धूआा रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, ऊठ्यो सपराणो रे, आवे हर्ष जराणो मंरूपनें तलें रे ॥ इंद्र धनुपथी जारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाठो वले रे ॥ ३ ॥ चौरू जूपति नामें रे, ऊठ्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंरूप ठामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अंगारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौमाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो मुरिउ खिसतो धनुष उपामतो रे ॥ हूतो ए रसिउ रे, पण देवें मुशिउ रे, इम नृपगण हसियो ताली पामतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहिं स्वामी यश करतो भमे रे ॥ शर नाखी वको रे, ययो ते साशको रे, जिम हुये मुकुल कमलको तिम जाखो पके रे ॥ ६ ॥ केता नवी ऊठे रे, केई वेग पूठे रे, केई शरनी मूठे जोदे धजनें रे ॥ पण धज न वेयो रे, नृप टोलो खे वो रे, निज दर्प्प उच्छेयो वस आरजीनें रे ॥ ७ ॥ मरमक मूछाला रे, लाज्या जूपाला रे, करता हकचा ला निंदे आप आपनें रे ॥ मांटी पण मूक्या रे, पुजनु वस चूक्या रे, लाहामा वली दूक्या कोई न चापर्मे रे, ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सखि लासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमा लाजशु रे ॥ मह वल ते तेहवे रे, धज पासें एहवे रे, आव्यो धसि के हथे वीणा साजशुं रे ॥ ए ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे, जूवया रीजावी जण तंती रसें रे ॥ वली धनुष उपामी रे, वोल्यो अति श्रामी रे, परणीश हु लामी मुज वचने वशें रे ॥ १० ॥ गाधर्व ए बीठेरे, एहने विधि रुठो रे, नहीं ठे इहां मीठो खावो चीखनो रे ॥ इम कही नृप हसता रे, महवलशु सुसता रे, र हेणो कर भसता कहु मग शीखनो रे ॥ ११ ॥ ताण्यो धनुष ते लीगो रे, टंकारव कीधो रे, जाणे मद पीधो हु

प गण लोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचें रे, नाखे परपंचें रे, खीलीनें संचें थांजो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट उघमिउ रे, साथे जे जमिउ रे, अलगो जई पमिउ बाणे आहएयो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश जलो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखंम कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहमी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोजा धारें रे, श्रीपुंजने हारें ठवी बमणी चढी रे ॥ १४ ॥ बीमी कर लावे रे, जिमणे कर ठावे रे, वरमाल सुहावे हावें ते जरी रे ॥ दीपे द्युति जारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे नागकुमारी थंजमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम काठें रे, क्यारें किणे ठाठें रे, पूछे इति पाठें नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शक्तें रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते जुगतें कुलदेवी मतें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूंपें रे, नाखी ते कूपें रे, राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोमां जूंमो रे, एहने वर रूमो रे, आलोचीने ऊंमो चित्त देवी तियें रे ॥ १७ ॥ जूपतिना वारु रे, बल परखण सारू रे, रचियो ए वारु थंजो काठनो रे ॥ कनकाथी लीधो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर ठाठनो रे ॥ २० ॥ चर्चित अति रूमे रे, मणि सोव

न चूके रे, ठंपी बाजूके कोमल बाहुली रे ॥ कुलदेवी सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंभ मांहिं उतारी तु अमने जमी रे ॥ १९ ॥ डु खरु मुज नाबु रे, कारज थयु काबु रे, पण लागे ए माबु जे महाबल नहीं रे ॥ जेणें थंभ उघाम्यो रे, नृप गर्व उताम्यो रे, गधर्व दे खाम्यो ते नाम्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवा रें रे, जूपति डु ख नारें रे, महाबल तेणि वारें मुख ढांकी हसे रे ॥ थाजाथी निकसी रे, कुमरी कहे विक सी रे, नाम्यो थंभ उकसी ते नर क्यां वसे रे॥ २१ ॥ देखामे प्रकाशें रे, धाई मात उल्लासें रे, कन्नो थंभ पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ जूपतिनी बाला रे, सुंदर वरमाला रे, महाबलनें विशाला कर्ठे लोठवे रे॥ २२ ॥ महाबल वर वरीठ रे, नाग्यें अति नरीठ रे, रतिपति अवतरीठ रूप समाजशु रे॥ विजे खंमें दाखी रे, ढाल तेरमी जांखीरे, लेजो रस चाखी कांति कहे ईश्युरे॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ जूपति कोपें धमधम्या, बोले विपम वचन्न ॥ जूठं परीक्षा एहनी, वरीठ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि ठामी आदम्यो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जि सी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

जलपूर परें, प्रगट पराजव पाल ॥ हणी एह गंधर्वने, देशुं बाल ऊलाल ॥ ३ ॥ इंम कही ते हुई एकठा, हणवा उठ्या रूठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे ऊठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥ अण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जे म दंजाग्रें बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ जट्ट पुत्र परिचित तिहां, ऊन्नो एक नजीक ॥ महबलनें जाणी ईसी, जणी स्वस्ति निर्जीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल जासण चंद, पद्मावती देवीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम ॥ संजवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न कस्या मीटथी लेश, धीस्या किम नरपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं छे कोय, इंम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंम सुणी त्यां रीज्यो नृप

चित्त, पूछे कवण साचु कह्यो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं छे सदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ थाप्यो जेहने हाथा हेठ, छेल खीयें नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचु नि मित्तनु वयण, आज हूई मिल ते नररयण ॥ मो० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो इशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम भाग्यें पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टाली घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी था प्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, भोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोय राव्यो ते नार्णी राय, पण नवि लाधो किणही ग य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते निरलोभ, पवन परें न लहे किहां थोभ ॥ मो० ॥ चंपकमाला साथें चूप, भुजे भोजन सरस अनूप ॥ मो० ॥ आ० ॥ ९ ॥ लगननो दाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥ मो० ॥ समराव्या जल छांट्या सेर, शणगारी नगरी चोफेर मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे उतार्या सुर आवास ॥ मो० ॥

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ मो० ॥ आ० ॥ ११ ॥ तोरण माला झाक जमाल, घर घर वर्त्त्यां धवल धमाल ॥ मो० ॥ बीजे खंमे चौदमी ढाल, कांति कहे सुणो वचन रसाल ॥ मो०॥आ०॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ राज नवनमां रसन्नरें, प्रगट्या रंग अपार ॥ अन्निनव शोन्नायें कस्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग उन्नांहिं ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी विधें, वजमाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विध विध अंग उवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंद्रुआ, जरतारी जर बाफ ॥ जेम अकालें युगतिनी, संध्या फूली साफ ॥ ५ ॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जम लशुं जानीया, खमकंते केकाण ॥ सोंधे न्नीना सा मठा, गाहिरु नस्या जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करमो तिहां कोटवाल ॥ एदेशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोहा न्नू

पणेजी ॥ सुतरु मोहन वेलि, सरिखा दीसे बिहु नि
रूपणेजी ॥ १ ॥ वाजे चूगल घेरि, ताल कसाल न
फेरी नादशुजी ॥ शणगार्या गजराज, आगल वाले
अति उनमादशुजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलत, फरह
रते केसरीये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोरु,
श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल
क बनाय, तंडुल चालें चोरूया उजलाजी ॥ परवरिया
धमसाण, तोरण आव्यो वर बधती कलाजी ॥ ४ ॥
मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥
भट्ट भणे जयमाल, सोहला गाया सरखें गोरीयें
जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण भणते वेद, पंचामृतना होम ति
हां कीयाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ
वींटीयाजी ॥ ६ ॥ विहुना छेहडा बांध, चारे फेरे मं
गल वरतियांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसा
र तिहां आरोगीयाजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय,
पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा
णी आशीष, वचन हस्यो अति हेजें उलस्योजी ॥ ८ ॥
चंडिका चंद्र समान, अविचल होजो तुमची जोड
लीजी ॥ हयगयरथ धन कोडि, करमोचन वेलायें दे
भलीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिहां

पधराविंयांजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत दै सहु राजी कीयांजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोकि, मलती जोमी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान, रतिपति नायकनी जोमी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनी श, पूछे त्यां माहाबलने खांतशुंजी ॥ एकाकी इंणे ग म, लगन समय आव्या किण जांतशुंजी ॥ १२ ॥ कुमर जणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणी उंजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जा णीउंजी ॥१३॥ वली माहाबल कहे एम, शीख क रो तो चालुं घर जणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, कर तां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ बार पहोरमां जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा क रुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥ परूवेने दिन सूर, ऊग्या पहेलो जो जाई मलुंजी ॥ जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी ॥ १६ ॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाउ आ कलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गु ण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवी ठाण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम, परूखोजी वोलावीश हुं पछेंजी ॥ १८ ॥ करहलिया

करी साज, करयतियां धर काटण कोरमीजी ॥ संप्रेमी श ततकाल, असवारी मनधारी ए ठमीजी ॥ १ए ॥ कोप्या जे नरपाल, सतकारी बोलावु तेहनेजी ॥ त्यां लगें धीर धराय, रहो रहो इमहिज करतां ए बनेजी ॥ २० ॥ इम कही उठ्यो नूप, बीजे खंमें सरस सोहामणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविलास पणे जणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणों तजी लाज॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥ गत दिवसें देवी ग्रहें, मिल्या रजसमां जेह ॥ कही न सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥ पहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामाइ ॥ आवी कर जोमी विन्हे, पूठे एम हसाइ ॥ ३ ॥ कारज ए देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन ससय आफर्ले, कहो सुजग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी ए माहरे, वीसवासणी ठे स्वामि ॥ सुखें कहो शका तजी, पह मुज जामणि गाम ॥ ५ ॥ गजमुख दीधी मुडिका तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ जाखीने दिन अपर नु, सप्यानु कहे चित्र ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ सखीरी आयो उन्हालो
आटारणो ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय बीजे दीने, बीजे दीने, नृपथी मांडी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांभलो ॥ पियारी मंत्र साधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो, नूप कनें लेई लंच ॥ मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते द्रव्यें सूतारना ॥ सू० ॥ उपकरण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥ ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥ सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥ पि० ॥ विवर सहित ते फालिका ॥ फा० ॥ कीधी घणी अभिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली भाभी तेहमां, ते० ॥ बेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साल संचे मुख ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥ पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी भीत मंजूष ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥ ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ उभो रह्यो करी शान ॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥ ते अति लोभने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तासुं भांजी

नवि शक्‍ ॥ न० ॥ तु मुज खोळी आप ॥ मृ० ॥ ७ ॥ पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥ में० ॥ लीधो तिणे स वि माल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥ पो० ॥ द्रव्यतणी सोजाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मु जने इम कहे ॥ ह० ॥ शूकी सतनी मूठ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाणतो हवे चोर ते ॥ चो० ॥ के नृप जन करे पूंठ ॥ मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥ मू० ॥ थरके तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या त णु ॥ जी० ॥ देखाको कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि० ॥ पद्मशिला ते जवननी ॥ से० ॥ में उघाडी खांच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ ते० ॥ घाल्यो ठंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर से ठवी ॥ ते० ॥ विवर अतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊ तरतां अगण तर्ले ॥ अ० ॥ दीठे वम्तरु जांख ॥ मृ० ॥ १२ ॥ पि० ॥ दोमी वम ऊपर चढ्यो ॥ ऊ० ॥ रहु जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि० ॥ दीठे वमनी कूखमां ॥ कू० ॥ भूषण वसननो थाट ॥ मृ० ॥ १३ ॥ पि० ॥ अपह रि लीधा केवींयें ॥ दे० ॥ पहेलो मुज समुदाय ॥ मृ० ॥ ॥ पि० ॥ ते तिण ठांनां गोपव्यां ॥ गो० ॥ दीसे ठे प्राय ॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते ठंखखी ॥ ठं० ॥

निरखुं बेठो गुज्झ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊवट वाटें आवती ॥ आ० ॥ नजरें पडी तुं मुज्झ ॥ मृ० ॥ १५ ॥ पि० ॥ वडतरुथी हुं ऊतरस्यो ॥ हुं० ॥ साहामो आव्यो दोड ॥ मृ० ॥ पि०॥ बेहुं मल्यां ए माहरी ॥ मा० ॥ वात कही छल छोड ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजे खंडें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर जणे में जुगतिशुं, जांख्यो मुज विरतंत ॥ तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥ ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वेष मगधासदन, पुछुं पग पग छांहिं ॥ २ ॥ घर न मली पुरमां जमी, किहांइ न दीठी स्वाम ॥ बेठी देवल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके फांकडे, धूरत एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रोकी सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूछ्या थकी, बोली करती रींग ॥ अहो सुगुण मुज पाछले, वलगो छे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूंठे पड्यो, लंघावे छे मुज्झ ॥ क्षण क्षण थइ विरुउं नडे, गूमड जेम अरु

ज्ञा ॥ ६ ॥ नि कारण मुजनें इणे, नीमी सकट माहि ॥ वात कहु ते श्रादिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥ ७ ॥
॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥
गतदिन वेठी हो राज, मंदिर बारें राज, भूरत त्यारें रे, एतो श्राव्यो मारुहसो ॥ १ ॥ हास करीने हो राज, में बोलाव्यो राज, इमतो न जाएयो रे धूतारो जन एह ठे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते करीने राज, कांइक श्रापु रे हु तुमने रूश्ररु ॥ ३ ॥ वचन सुणीने हो राज, श्राव्यो समीपें राज, मर्दी माहारी रे इणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हु पण तूठी हो राज, मनमा मारु राज, जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतर्यो ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं ठे राज, नोजन न करु रे काइक मुने दे हवे ॥ ६ ॥ पीतपटोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमें देता रे दामें राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम न नांखे हो राज, काइक मागे राज, श्राज ए श्रावी रे लागो पूठे माहरे ॥ ८ ॥ देहरे वेसारी हो राज, मुजनें खपावे राज, जावा न दीये रे क्याहिं फीव्यो बाहिरें ॥ ए ॥ तब में विचारयु हो राज, नो हु डु खमा राज, जगमां निवेकी रे वेश्याने गेरूधुं ॥ १० ॥ तो मुज पावे हो राज, कारज

एहथी राज, इम निरधारी रे बेठी त्यां हुं ते कन्हें ॥ ११ ॥ मगधानें काने हो राज, कहि कांइ छानें राज, में कह्यु बिहुंने रे जाउं जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्रीजे ते पहोरें हो राज, जगमो हुं जांजीश राज, वेहेला आंहिं रे बेहु पाछां आवजो ॥ १३ ॥ माहाबल पूछे हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी जांज्यो रे गोरी कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पंथनी थाकी होराज, देहरे हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी बेहु आवीयां ॥ १५ ॥ मुजने जगामी हो राज, मगधानी दासी राज, घट एक ढांकी रे मांहे छानो त्यां ठवे ॥ १६ ॥ में कह्युं तेहने हो राज, जण करी साखी राज, कांइक अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे वारू हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे एहथी माहारे आजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी होराज, शान में ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे जांखे एहवुं धूर्तनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जीत्यो राज, कांइक मूक्यु रे मेंतो मांहे कुंजमां ॥ २० ॥ ते तुं लेइनें हो राज, ठेहको छोरू राज, इम सुणी आव्यो रे रंगें देवलमां वही ॥ २१ ॥ कुंज निहाली हो राज, ढांकणी उपाडी राज, कांइक लेवारे घाले मांहे

हाथ ते॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, हार्थे वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर आगरुता ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांइक बीते राज, मगधा हसतीरे जाखे पइ ठे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज बोल्यो हो राज, ते पइ दीधो राज, तुज दे णाथी रे कीधो माहारे दूटको ॥ २५ ॥ लोक हसता हो राज, कहे तिहां बहुला राज, पहने दीधु रे पणे कांइक रूअरु ॥ २६ ॥ विषधर कस्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरें वारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेमी हो राज, मगधा सार्थे राज, निजघर आवी रे पाम माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खन्ने हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमगें रे जाखी रूमी नेहशु ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्वार रही में तेहने, आप्यो इम उघाट ॥ मुज घर नृपहेषी बसे, पेसु नहीं ते माट ॥ १ ॥ इम सु णी ते विलखी थइ, चिंते पहवु चित्त ॥ ए नाणी ठे कोइक नर, जाणे रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बीहती मन मा बापमी, मुजने इम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहे ता किहां. कम वुं जोमी पाण ॥ ३ ॥ किहां उपाउ

तुम थकी, न रहे ढानी नेट ॥ कहो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ बने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पड्युं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी जली ॥ एदेशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणिमा हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीनां ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गाडरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूंण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारमो, बीजो एगुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधानें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो बेहुमां, जाएयो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

तोपण तुज उपरोधथी, करशु हु ए काज ॥ ना० ॥ ते मुज रातें मेलवे, जिम करु कारण साज ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ गणीकायें अति आदरें, चोजन मुजने दीध ॥ ना० ॥ रातें एकातें मुने, कनका मेलवी सीध ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें जरी, बदती मीठा बोल ॥ ना० ॥ जोग जणी मुज प्रारथे, करती नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में जांख्यु तेहने ईस्यु, मुज वालो ठे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी नारीनो, मनमथ रूपें ठेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ९ ॥ प ण कामें गामें गयो, आज करी सकेत ॥ ना० ॥ मुज मलशे देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ मुज साथें तु आवजे, देशु जोग बनाय ॥ ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति कीहा नहीं जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका मयाथी तुमें, आव्या कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्यु बिहु क्षत्री अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, जाखे निज अवदात ॥ ना० ॥ गोष्टि करंता रातनी, वीती थयो परजात ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूर्व्यु प्रपंचें में सखी, तेह ने प्रजातें साँह ॥ ना० ठे तुज पासें पे नहीं, आ

तरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजने
दखामीयां, आनूषण तेणें काढि ॥ना० ॥ हसतां में कह्युं
योमलां, ते कहे इम रस चाढि ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥
हार अछे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥
गुप्त धस्यो ते काढतां, आवे छे मुज ध्रुज ॥ ना० ॥
च० ॥ १६ ॥ में पूछ्युं ते क्यां धस्यो, ते कहे चहुटा
मांहिं ॥ ना० ॥ शूना घर पासें वमो, कीर्त्ति थंन्न छे
त्यांहिं ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें नंमारीयो, ते
हमां मूक्यो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, मर
ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ रातें आज
जई तिहां, आणीश तेह छिपाई ॥ ना० ॥ जाई शके
जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥
॥ १ए ॥ नहीं तो सांजे मुजनें, कहेजे जेहवुं होय ॥
ना० ॥ इम आलोच कस्यो घणो, मांहोमांहें रस हो
य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालथकी हुं उतरी, आ
वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंमें अढारमी, कांतें
नणी ईम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कहो केती छे ढील ॥ में
कह्युं ए तुज घर थकी, काढी छे अमखील ॥ १ ॥ सं

च कस्यो छे एहवो, पूरी पूरण पूठ ॥ वारंतां पण रा तमां, जाशे कनका रूठ ॥ २ ॥ सामग्री भोजन तणी, करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, म ई दिवसने छेह ॥ ३ ॥ नाना थानक थजनो, जोतां न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई भाख्यो सु विचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी भवन मजा र ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हु चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छंगणीशमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हु चित्त चाहे, आछे लाल ॥ अध मारगें भूली पमी ॥ आफलती पूर सेर, खाती घारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पामी वाटमी ॥ १ ॥ आवी हु तुम पास, भाखी वात प्रकाश, आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने पेह, आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २ ॥ वात सुणी इम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥ प्रीति वचन ते उह्मप्यां ॥ बोलवु नही घटमान, एहं थी होय नुकशान, आ० ॥ इम कही थें छाना छिप्यां ॥ ३ ॥ कनका मन उल्कठ, आवी मुज उपकंठ ॥ आ० ॥ सब में इम कसु तेहनें ॥ आवी म कर काइ बे पोर, छा छे दृष्ठा चोर, आ० ॥ दे मुज जे होय सु

ज कनें ॥ ४ ॥ राखुं छिपाऊी क्यांहिं, तव ते आपे त्यां
हिं, आ० ॥ बगचो हाथें उचकी, में तेहमांथी टा
लि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली कं
चूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक मिला
य, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धस्यो ॥ में कह्युं तेहने ए
म, थरके छे तुं केम, आ० ॥ थानक में ताहरे कह्यो
॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय, त्यां लगें तें न खमाय,
आ० ॥ पेश मंजूषें ते जणी ॥ पेठी ते निर्भीक, मे
धारी मन ठीक, आ० ॥ ताळुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥
आपण बे अति हुंस, ऊपाडीने मंजूष, आ० ॥ गोला
मां वहेती करी ॥ वैर प्रथमनुं वालि, वाही नीर वि
चाल, आ० ॥ करताशुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पि
उ ततकाल, थूंकें माहारुं जाल, आ० ॥ रूप सहज
नुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग,
आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ए ॥ पहेस्यां कुंड
ल खास, रविशशी मंडल जास, आ० ॥ लाधां जे
वडने थडें ॥ पहेस्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार,
आ० ॥ वरमाला धारी जलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मां
हि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि
शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खीली चोर,

आ० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही वी जे खरु, थाप्यु शीश अखरू, आ० ॥ तेहमा वसी स्त्री स्त्री जमी ॥ राख्या पवनना माग, नीचें ठानें लाग, आ० ॥ चतुरगईशु ते घमी ॥ १२ ॥ जाणु एती वात, कहो आगें अवदात, आ० ॥ में न लह्या तिहां संक मी ॥ बीजे खमें एह, काति कहे धरी नेह, आ० ॥ ढाल भणी छंगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे मालवल माननी सुणो, आगें जे हुई वा त ॥ थन लिख्यो में वीतस्यो, जिम जाएयो नवि जा स ॥ १ ॥ रग प्रमुख जे ऊगरया, ते वाह्या जलपूर ॥ एहवामां फरी चोर ते, आव्या भवन हजुर ॥ २ ॥ चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोता दीठ ॥ तस रानें बोलावता, कीधा आदर इठ ॥ ३ ॥ मुज पूछे मधु पशु, दीठो एक किहां चोर ॥ वीरु में देई आदरें, कयु एम तिण ठोर ॥ ४ ॥ थंज एहजो पूर्वनी, पोलें मूको आज ॥ सो देखाडुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ थें तोनें आया ठेलणुं, ठेलगाणाजी ॥ जिरमट लाल्यो गाल भण्या ॥ ए देशी ॥

॥ चोर कहे इम ठमही ॥ गुणवताजी ॥ राज भवें

मल्या नाग्यथकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता जी, अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहमां पाप न कोइ इहां ॥ कहोतो काढी दीजीयें ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जीहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारीखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय दुःख घणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥ लहीयें अर्थ सरे वमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया एकठां ॥ गु० ॥ धन दाटी तेह सिंधु तटें ॥ उपाडे मली सामटा ॥ उ० ॥ थंन्न तिहांथी एक धरूं ॥ ४ ॥ ते पूंठें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥ वंछित थल देखाडियो ॥ उ० ॥ ते तिहां मूकी निचिंत थया ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखाडुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ उ० ॥ धन लोन्नें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ उत्तर कूडुं एम कह्युं ॥ लोन्न वशें तेणें चोरटे ॥ उ० ॥ ताळुं ऊघाडी द्रव्य ग्रह्युं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दीवा में सघली परें ॥ गु० ॥ पासें ऊन्ने चरित्त घणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर त

था ॥ ए॥ रातसूखी ते नीरमा ॥ गु० ॥ जाशे तरतो चूमि कीती ॥ देशु मरू जजीरमा ॥ ठ० ॥ प्रहिशु करशे जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहा वेगखो ॥ गु० ॥ चोटी पहुनी हाथ श्रवे ॥ हमणा मूक्यो मोकलो ॥ ठ० ॥ लेशे फल रस पाक पवें ॥ ११ ॥ इम कहेता मन श्रामले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगें ॥ यत न करी में एकले ॥ ठ० ॥ राख्यो यंत्र प्रजात लगें ॥ १२ ॥ प्रहकालें जब नूपनो ॥ गु० ॥ श्राव्यो निरख ण यत्र तिहा ॥ हु थई श्रलख स्वरूपनो ॥ ठ० ॥ बेगे श्रावी ठे नूप जिहा ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल नणें ॥ काढुं चोर ते स वैथा ॥ ठ० ॥ शिखर ठव्यो जे भुवन तणे ॥ १४ ॥ चालीश जो हु निजपुरें ॥ गु० ॥ तो मरशे तिणें नीरु पख्यो ॥ चलशे पाप खराखरे ॥ ठ० ॥ ईयो फिकरें मुज चित्त नख्यो ॥ १५ ॥ तु इहा रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ श्रावी श सेहनो सूल करी ॥ कहे मलया रहेशु नहीं ॥ ठ० ॥ साथें श्रावीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चि त्तमां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम नणे ॥ जो नृप श्रावे तुर तमां ॥ ठ० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ श्रावशे कुमर इहा ह

मणां ॥ मानत किम शकीयें गमी ॥ उ० ॥ मान्या होय जे देव तणा ॥ १८ ॥ इंम कही चाल्यो तिहां थकी ॥ गु० ॥ राति समय देवी भुवनें ॥ वारी पण नवि रही शके ॥ उ० ॥ मलया साथें हुई सुमनें ॥ १९ ॥ बीजे खंमें वीशमी ॥ गु० ॥ ढाल भली अति सरस रसें ॥ सुणतां श्रोताने गमी ॥ उ० ॥ कांति कहे मनने हरसें ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंमें करी, वीरधवल भूपाल ॥ समजाव्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं हगल ॥ १ ॥ तेह कहे परभातमां, मारी तुज जामात ॥ कन्या लेइ चालशुं, तुं न करे अम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि भूपति चक्यो, आवे भुवन विचाल ॥ साज करावे करहलि, संप्रेमण वर बाल ॥ ३ ॥ चुंप करावण आविउं, वर कन्या भवणेह ॥ दीठा नहीं पूछ्युं तदा, वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ बेठो जोवे वाटमी, भूपति करतो चिंत ॥ रात पमी तव जिहां तिहां, शोध्यां पण न मिलंत ॥ ५ ॥ खबर लही नृप नंदनां, कटक गयां परभात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन विरचात ॥ ६ ॥ जामाता कन्या तणी किहां न लही नृप सूज ॥ दुःखियो भूपति चित्तमां, चिंते एम अमूंज ॥ ७ ॥

॥ढाल एकवीशमी॥ धिग धिग धणनी प्रीतमी ॥ ए देशी ॥ नरराज अति चिंता करे, मनमा पोषी दाह ॥ वर कन्या बिहुं किहां गयां, ए तो अचरिज रे दीसे जगनाह ॥ १ ॥ भूपति अटकीने कहे, कुण जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं, थयु होशे रे कांइ विपरिय रूप ॥ भू० ॥ २ ॥ किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोइवीगाप ॥ किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना अहिनाण ॥ भू० ॥ ३ ॥ अथवा देवें वेलुनो, सयोग इम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, देखाडी रे किम जरूपी लीध ॥ भू० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां एहवु हसु, करवु देव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परग ट करी, क्यां पाड्यो रे एह माहारी इष्ट ॥ भू० ॥ ॥ ५ ॥ नवि दीधु भोजन भलु, नहीं दीधुं लीधल दालि ॥ मणि हीर्णुं भूषण भलु, पण पन्छिं रे जश मणि ते टालि ॥ भू० ॥ ६ ॥ हरण्या दुष्ट किण व रीयें, अथवा निरुध्या केण ॥ के किण देवें अपह र्यां, दपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ भू० ॥ ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणु, आव्यो हतो कोइ चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुंज कन्या रे काल

जानी कोर ॥ नू० ॥ ७ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, भ्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गयां, करु णालां रे केइ अथवा विचालि ॥ नू० ॥ ए ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुंण लहे मुज मन पीम ॥ इम कहेतो गलहथ करी, नृप बेठो रे पड्यो चिंता नीम ॥ नू० ॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रनु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ नू० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, ठल ठेतस्यां ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधथी, संनवियें रे हरि या किणें देव ॥ नू० ॥ १२ ॥ देशाउर पुर पर्वतें, वननूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो वरावो रे तजी अपर किलेश ॥ नू० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीठाण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कदे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ नू० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो वात ॥ ते पण खबर करे वली, करतां इम रे सवि आ वशे धात ॥ नू० ॥ १५ ॥ नलुं नलुं नूपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर वा रे नरपति सज थाय ॥ नू० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

मोकल्यो, कहेवानें रे व्यतिकर सवि तेह ॥ चू० ॥
॥ १७ ॥ इमगय सुभट रथ साजशु, ते कुमर निय
त प्रयाण ॥ कुशलें मलशे भूपनें, होशे रूडा रे इहां
कोडी कल्याण ॥ चू० ॥ १८ ॥ ढाल एह एकवीश
मी, इम कही कांति रसाल ॥ जुगतें बीजा खंडनी,
जणतां होये रे घर घर मगल माल ॥ चू० ॥ १९ ॥
॥ चोपाई ॥ खंड खंड रस छे नवनवा, सुणतां मीग
शाकर लवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, बी
जो खंड सपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलय
सुंदरिचरित्रे पंडितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत
प्रबंधे मलयसुंदरीपाणीग्रहणप्रकाशको नामा द्वितीय
खंड सपूर्ण ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खड प्रारमः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजो खंड धमडशुं, पूरण कीध प्रगह ॥ हवे
त्रीजो कहेवा भणी, उमग्यो रंग गरह ॥ १ ॥ प्रेमें
प्रणमी शारदा, कहेशुं शेष चरित्र ॥ अति रसशुं
श्रोता सुणी, करजो करण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुमर

वनमां जई, मलयानें पन्नणंत ॥ फिरवुं निशि सम शानमां, नारीनें न घटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप तुज, करुं कही इंम न्नाल ॥ तिलक कस्युं आंबारसें, गोली घसी ततकाल ॥ ४ ॥ नारी रूपें नर हुउ, थयां बेहु संबंध ॥ देवी गृहनां शिखरथी, काढे चोर निरुद्ध ॥ ५ ॥ कहे इस्युं रे गत दिनें, गया चोर तुज देख ॥ जा कुशलें जिहां रुचि होवे, तिहुनो पंथ उवेख ॥ ६ ॥ प्राण लान्न धनलान्न में, तुम पसायें लद्ध ॥ इंम कही ते नमते घणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ बिहुं न्नुव नथी उतरी, आवे वृक्षतलें आप ॥ तव तिहां गयणे गेबनो, सुणयो न्नूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर स्मरंतो न्नू तथी, करवा यतन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठ थी, लीए उतारी हार ॥ ९ ॥ रहे रहे ठानी सल क मां, सांन्नल देइ कान ॥ वृक्षमां न्नूत वदे किस्युं, कुमर करे इंम शान ॥ १० ॥ ठानां वृक्ष पोलाशमां, बिहुं बेठां थिरगात ॥ सावधान थइ सांन्नले, न्नूत तणी इंम वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सहेर न्नलो पण सांकमो रे, नगर न्नलो पण दूर रे॥ हठीला वयरी ॥ ए देशी ॥

वृक्ष शिखरें इंम बोलीउं रे, न्नूताने एक न्नूत

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहु नवली जली होला
ल ॥ साजलजो अवचूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ चूत वलो
कहे वातमी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुखे
रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो
लाल ॥ वेधक पामे नेठ रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २ ॥ पु
हवी ठाण नरिंदनो रे, माहावल नामे कुमार रे ॥ मो० ॥
ठे मतिवत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार
रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
तेलना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख
पणे लीयो हो लाल, माय करे दुःख जार रे ॥ मो० ॥
॥ चू० ॥ ४ ॥ इम पण बांध्यो आकरो रे, वालव
हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पाचमे हो
लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ ॥ मो० ॥ चू० ॥
॥ ५ ॥ मातायें पण आदस्यो रे, पण तेहवो निर
धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल,
तो रहु जीवित धार रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ६ ॥ ख
बर नहीं ठे कुमरनी रे, हार केमें गयो क्ल रे ॥ मो० ॥
पंचम दिन काले हुशे हो लाल, सूरज ऊग्या पूठ रे
॥ मो० चू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन मुगतावली रे,
मलवा दुर्लज येह रे ॥ मो० ॥ ते दुःख मरखुं आ

गमी हो लाल, बेठी राणी तेह रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ ॥ ८ ॥ विषथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल देश रे ॥ मो० ॥ मरशे के वली शस्त्रथी हो लाल, के करी अगनिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ ए ॥ लोक बहुलशुं राजीयो रे, मरशे पूंठें तास रे ॥ मो० ॥ खबर लेइने आवीयो हो लाल, हुं तिहांथी तुम पास रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १० ॥ नृपनंदन वरु कोटरें रे, सांजले बेठो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे हीयडुं डुः खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥ ॥ नृ० ॥ ११ ॥ चिंता नर मन चिंतवे रे, देव कथ न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ थाशे जो एहवुं कहे हो लाल, तो करशुं श्यो शोक रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १२ ॥ नूत कहे जश्यें तिहां रे, वहेलां ठांमि प्रमाद रे ॥ मो० ॥ कौतिक जोशुं खंतशुं हो लाल, लेशुं रुधिर सवाद रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १३ ॥ इम कही सम कालें कस्यो रे, नूतकुलें हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका शें वरु ऊपड्यो हो लाल, लेता साथ कुमार रे ॥ ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १४ ॥ वेगें वरु नन्नें चालतो रे, आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें जई हो लाल, तुरत कस्यो मेलाण रे ॥ मो० ॥ नृ०

॥ १५ ॥ पुर पासें गोला तटें रे, नामे धनजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ चूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन चूमिना रे, परिचित तरुना वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमर निहाली उलखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १७ ॥ कुमर भणे मलया भणी रे, दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वरु कपरी हो लाल, आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ॥ १८ ॥ वरु कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें वली ऊमशे हो लाल, तो फर स्या श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १९ ॥ एम विचारी नीसस्या रे, वरु कदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन ठे ढूकडु हो लाल, तिहा जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ॥ २० ॥ ऊपडतो गयणांगणें रे, देखे वरु वली तेम रे ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे ईहा थको हो लाल, जाणे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए द्रुमां वली रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ पडतां विषमी जोखमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, सुंदर ए

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो लाल, वाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ ऋू० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया पणे नयणें जरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश हुं वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इम कही नर रूपें त्रिया, तिहां ठवि चल्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पियु नी वाटमी, शूने रंजाकुंज ॥ रयणि गमावे नारि ते, दाधी उःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पाम्यां क मल विबोध ॥ बंधनयरथी बंऊ जिम, बूटा अलिकुल योध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो बालो सूर ॥ आलें किरणजालें हणी, कस्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वृषजान जुवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं पुरमां करारें ॥ माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो हुशे धामें ॥ १ ॥ चाही इम चाली चुंपे, आवी वही पुरनी खुंपें ॥ पेसे जव पुरनें डुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥ दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धमक्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लो चन थापे ॥ ३ ॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे तस

रूप प्रकाशी ॥ कुंभखने कुकूखनी फाली, ठंखर्स्या म
हवखनां चाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधा,
आजूपण कुमरनां बाधा ॥ इम कही नृप पासें लाव्यो,
देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष
ए नवलो, सोसे जूपणे करी भांतीलो ॥ मुज सुतना
पहिरया दीसे, आजूपण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर क
हे ए हिसतो, पकड्यो पुरमां पेसतो ॥ पूछ्यो पण
उत्तर नापे, पूछो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ जूपति
कहे कुण तु किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥
मलया मनमाहे विमासे, साचु इहां जुठु चासे ॥
॥ ८ ॥ कहिशु अम चरित्र वखाणी, कोइ सद्दहशे नहीं
प्राणी ॥ कहेवुं नहीं पीजना पासें, चावी मटशे नहीं
लासें ॥ ए ॥ इम धारीने मलया बोले, महबल मु
ज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने ते
णे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां छे,
सा कहे इहां हिज जिहां त्यां छे ॥ नृप कहे होये जो
इहां गाये, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठी सवि
वात प्रकाशी, चोकस न परी त्रिण रासी ॥ महबल
थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ मुज जाणे ॥ १२ ॥
इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन छीने ॥ बो

ह्यो नरपति हुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥ १३ ॥ अणदीठां मुज नंदननां, वसनादिक लीधां तननां लोजसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर ठोरें ॥ ॥ १४ ॥ चोस्यो पुरनो जेणें माल, पकड्यो ते माटे हवाल ॥ काले तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें वलतो, सूधि लेवा आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इणे पुरमां कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीउ इणे मलीनें, मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोजसार कन्हें जई हणजो, इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥ १७ ॥ मलया मनमां इं म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद मोटी, दीसे ठे इहां वली खोटी ॥ १८ ॥ चिंतवती पूर्व सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सची व विचारी, महाराज जुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आ चरणा दीसे रूकी, शिर आवी तो मति कूकी ॥ २० ॥ इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥ इम करी हणशो तो आठे, कोई दोष न देशे पाठे ॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजें, होशे तो चरण न

मीजें ॥ २२ ॥ नृप गारुमविद अविलंबें, मूके तव शेल अवलंबें ॥ दुरूर विषधर आणेवा, गया हसता ते ततखेवा ॥ २३ ॥ यक्ष कुमल चूर्ये लेई, तसवरने सोंप्यो तेई ॥ बंध आवी मलया राणी, पण डालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें बीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांज लजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलपणी आवी दोम ॥ गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोम ॥ १ ॥ देव खबर नहीं कुमरनी, पचम दिन ठे आज ॥ नेट अ निष्ट इहां किस्यु, दीसे ठे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन दुर्लज हूउं, हार तणी शी वात ॥ शेल अलथायी पमी, करशु ते दु ख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ सदेशा तुम राणीयें, इम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरो, करो आ प हित जाणी ॥ इम सुणी नरपति तेहने, पजणे अ वसर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जुयखमानी देशी ॥

मुज वचन इम जांखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरमी ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख मीउं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे, दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आव्याथी जाण शुं रे, वात तणो परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नहीं सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुद्धि ॥ स० ॥ तो तुज गति मुजने हजो रे, धारी में एहवी बुद्धि ॥ स० ॥ ३ ॥ उं ट करूण किण वेसशे रे, तेल जूउं तेल धार ॥ स० ॥ कुंमल वसन कुमारनां रे, आव्यां सहसाकार ॥ स० ॥ ४ ॥ किम रहेशे ठानो हवे रे, लाधो पग संचार ॥ स० ॥ पुरुष अपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥ स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी जणी रे, आपीने कहे जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाण्यां आवियां रे, सुत पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीव तो रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ महुलणी आवी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥ कुंमल वसन समर्पिनें रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स० ॥ ८ ॥ विस्मित मन राणी हुइ रे, पूछे वस्तु निदान ॥ स० ॥ महुलणी आगम पुरुषथी रे, नांखे तस घ टमान ॥ स० ॥ ए ॥ हर्ष शोकाकुल कामिनी रे, म

दूसणी आगें वदत ॥ स० ॥ मुज सुत वक्षभ आवि यो रे, कहेवा सुधि कुण सत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा कोईक वैरीये रे, कुमर हण्यो छल खेल ॥ स० ॥ कुरु ल वसन लीयां तिर्के रे, ते आव्यां इणि वेल ॥ स० ॥ ११ ॥ ते माटे निरखु हुवे रे, करतो बीज विशु रू ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर सार्थे मुरू ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो रे, बींध्यो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तव विषध र महीं रे, गारुडी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप तिनें कहे गारुडी रे, देव अलखा देव ॥ स० ॥ वि षर अनेक निहालसां रे, लाधो फणिधर नेव ॥ स० ॥ १४ ॥ फूंकारें तरु बालतो रे, कालो काजल वान ॥ स० ॥ मन्त्रप्रयोगें कुंजमां रे, बाल्यो आणी निदा न ॥ स० ॥ ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावे नर कुंज ॥ स० ॥ नर न्हमरावी आणीयो रे, सुजटें करी सरंज ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहाली तेहनु रे, कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम दूषवी रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंड अंगारा जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाए अमृ तथी जो हुवे रे, तो एहथी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

द्व्य कठिन ए एहनें रे, देतां मन न वहंत ॥ स० ॥ दोष नहिं नृपति जाणे रे, गुणही एम लहंत ॥ स० ॥ ॥१९॥ समसूधो वानी ग्रहे रे, वाधे सुजश अताग ॥स०॥ जात्य सुवर्ण हुताशनें रे, ताप्यो ले गुण जाग ॥ स० ॥ ॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहां रे, जपती मन नव कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, ऊघाड़े घट वार ॥ स० ॥२१ ॥ निर्जय करकमलें ग्रह्यो रे, वि षधर अति रोषाल ॥ स० ॥ लोक लह्यो अचरिज नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥२२॥ नाग हू उं निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल ॥ स० ॥ नेह निविरू रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥ स० ॥२३॥ साचो साचो इम कहे रे, पाड़े नर करताल ॥ स० ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, कांतें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केलि करंतो करतलें, काढें मुखथी हार ॥ ते मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणिधार ॥ १ ॥ ते निर खी विस्मित हुउं, नृप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पि गाणी इम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी पुंज किहांथकी, आव्यो एह अचिंत ॥ विण वादल वरसात ज्युं, करे अचंज अनंत ॥ ३ ॥ जाल तिल

क नरनो पढी, चाटे जब श्रहिराय ॥ दिव्यरूप तरु णी हुई, तब ते मूख स्वभाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि मंमली, रह्यो उपर धरी छत्र ॥ जोता जण श्रद्भुत रस, सहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे बागमां,
दो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ थर थरतो नरराजीयो, जणे एहवी वाचा लो ॥ श्रहो ज० ॥ देखी तिहां श्रचरिज मोटोरे लो ॥ विण विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥ श्र० ॥ देखी० ॥१॥ पुरजण देवी वारता, श्रनरथ उगाड्यो लो ॥ श्र० ॥ नरनिंद सुतो इहां, मृगराज जगाड्यो लो ॥ श्र० ॥ दे० ॥ २ ॥ नहिं सामान्य भुजग ए, कोइ देव सरूपी लो ॥ श्र० ॥ निरखत रचना एहनी, रही मनमें खूंपी लो ॥ श्र० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए बे जणा, हां की निज थाना लो ॥ श्र० ॥ पुरमां कार्य उद्देशथी, श्राव्यां कोई छाना लो ॥ श्र० ॥ दे० ॥४॥ परमारथ सहे तो नथी, श्राराधी बहुनें लो ॥ श्र० ॥ जगतें सूर्यो रीजवी, प्रभु गति एहुनें लो ॥ श्र० ॥ दे० ॥ ५ ॥ इम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥ श्र० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही इम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रजु,
कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ जक्तें वश होय देव
ता, इम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि
सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥ अ० ॥
नृप पयपात्र धखुं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो लो ॥
अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ
देशें लो ॥ अ० ॥ गारुमीयें पाठो ग्रही, मूक्यो गिरि
देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें,
जोतां जण पासें लो ॥ अ० ॥ नरथी नारी किम हुई,
एह कौतुक जासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुंण
छे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी लो ॥ अ० ॥
रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥ अ०
॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उ
लट्युं लो ॥ अ० ॥ जाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं
पण उलट्युं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विष
हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार
लह्यो पीयु करतणो, अचरिज इहां जाणुं लो ॥ अ० ॥
दे० ॥ १३ ॥ कारण ए मुज पीउनां, विण कारण सीधां
लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां
लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पमती नथी,

श्यो उत्तर आपु लो ॥ अ० ॥ जेतु इहां कहेवुं घटे, तेनु थिर थापु लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचु करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चड्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥अ०॥ दे०॥१६॥ हु ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतु नहीं, ए वचन विशेषें लो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्यु तु तेहथी, मलतु नहीं लेखे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुठे धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित पहने हवे, देवी तुज पासें लो ॥अ०॥ सुखशाताशुं राख जो, उंचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने लिहा, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खन्नी, ढाल भाखी कांतें लो ॥अ०॥ दे० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ भूपति कहे सुण भामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिठे, लाधो अति चाहृत ॥ १ ॥ कीधो महबल नदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख डुःख अगें साहसी, पूख्यो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचन सु

णी राणी हूई, दुःख नारें दिलगीर ॥ प्रीतमने इम
नवे, नयण जरंती नीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सासू काठा हे गहुं पी
साय, आपण जास्यां हे मालवे, सोइ
नारी नाणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया बेठा हे कांइ निचिंत, कान ढालीनें
णिपरें ॥ सुत भायो घरें ॥ पीया विरहो हे अति
कंत, सुतनो हे हीयका नीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥
मुजथी हे रह्युं न जाय, लंबा दीहा किम नीगमु
सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी थाय, नींद गई
नमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बालुं हे नवलख हार,
त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे
उदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥
ढोल्युं हे सरस पीयूष, हार उदकने कारणें ॥ सु
पीया कापी हे सुरतरु रुंख, वाव्यो धंतुरो बार
सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र र
दोनागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे ऊंपावीश
निवृत्त होइ जीवित नणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया
हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥
या लेहेशुं हे पुण्य पसाय, हार परें सुत आप

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इम आसास, पुत्र विगो
ही गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा
स, मन धींध्यु दु ख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो
होता हे निज निज थान, लोक नरखां अवरिज चिंते
॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि
रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया वोल्यो हे तपतां दिस, रा
ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख
जगदिश, के जस वीते ते कले ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया
आया हे जन परजात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥
सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दपती चा
ल्या गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पकया हे चाली
हांम, नृप राणी ऊचा थसे ॥ सु० ॥ प्रीया सार्से हे
जरीया ताम, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥
॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वरु
काखियें ॥ सुत पायो वर्के ॥ प्रीया टांग्यो हे वाउ
ली जेम, महयल दीठो गोवालीये ॥ (कनालिये)
सु० ॥ १२ ॥ प्रीया थांभ्यो हे जे लोजसार, चोर अ
घो मुख जिण वके ॥ सु० ॥ प्रीया जीमयो हे काख
मकार, सुम नदन तिहां तमफके ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री
या जाएयो हे नहीं परमार्थ, दीवु तेहनु जांखीयु ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्मय हर्ष, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इछा जाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनां हे दरिसण चाहि, चाल्यो नृप वरु सनमुखें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्रीतमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वरुतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संजाल, नवली विधि नृप आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंरुनी ढाल, कांतें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूछे सुतनें जूप ॥ लेखन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोज सार टांग्यो वरु, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तुज दुर्दशा, गयो सुद्धि हुं जूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल जीवित कला, प्रजुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अनुजवी, दोहिलिम दुःख समाज ॥ ३ ॥ इम कही तेड्यो वर्द्धकी, छेदावी वरु माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

काढे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन सुणि पीकित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली बेठो हूई, बोलाव्यो तत्र माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ मारगढामां जोवुजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जाखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अजिलाषेंजी ॥ न० ॥ किहां विचरयो अम पाखे जी ॥ न० ॥ बाध्यो किण वमसाखेंजी ॥ न० ॥ कहे सुख दुःख तें किहां किहां लाधु, करते हार विशुद्ध ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० बा० ॥ १ ॥ निंदवशा निरधारीजी ॥ न० ॥ निरखे नयण उघारीजी ॥ न०॥ बेठी आगल मामीजी ॥ न० ॥ पूठें मलया लामीजी ॥ न० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ निं० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न०॥ गोंख थई मुज पासेंजी ॥ न० ॥ हुं बेठो तस वासें जी ॥ न० ॥ उड्यो ते आकाशेंजी ॥ न० ॥ इम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ न० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ न० ॥ कदली वन बेसारीजी ॥ न० ॥ तुम श्वशुर निरधारीजी ॥ न० ॥ आक्रंदने अनु

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ ॥ आगल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर बेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहमो आवी, आवोजी वरुनाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं बाधुंजी ॥ नं० ॥ उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥ मं० ॥ ६ ॥ मन उपगार नरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो बोली फरीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेजी ॥ नं० ॥ हाथें खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, करतो कोमी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारीजी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे ठे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां ठे वरुतरु नारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥ नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग ॥ क० ॥ ८ ॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र खरुग कर झाल्योजी ॥ नं० ॥ उन्नें रही जव नाल्योजी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर तलें विरले स्वर रोती, दीठी तिहां एक नारि ॥ व० ॥ ९ ॥ में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

काढे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीमित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली बेठो हूठ, बोलाव्यो तब माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ मारगमामा जोवुजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जांखेजी ॥ नदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अजिलापेंजी ॥ न० ॥ किहा विचरयो श्रम पाखें जी ॥ न० ॥ वाध्यो किण वमसाखेंजी ॥ न० ॥ कहे सुख डु ख तें किहा किहा लाधु, करते हार विशुरू ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० वा० ॥ १ ॥ निंदवशा निरधारीजी ॥ न० ॥ निरखे नयण उघारीजी ॥ नं०॥ बेठी आगल मामीजी ॥ न० ॥ पूर्वे मलया लामीजी ॥ न० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुख्य थई नृपनद ॥ निं० ॥ १ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न०॥ गोख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हु बेठो तस वांसे जी ॥ नं० ॥ उमयो ते आकाशेंजी ॥ न० ॥ इम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन वेसारीजी ॥ न० ॥ तुम वधुअर निरधारीजी ॥ न० ॥ आक्रदने अनु

आलिंगन सुं हुं, जो आपे तुज बुद्धि ॥ क० ॥ १५ ॥ में निसुणी तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा आणीजी ॥ नं० ॥ कह्युं आवो गुण खाणीजी ॥ नं० ॥ मुज खांधे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जाणे तिम कर तुं एहनें, मेल्यो में ए योग ॥ में० ॥ १६ ॥ धरणीथी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई मुज गूंदीजी ॥ नं० ॥ लेपे शबनी बूंदीजी ॥ नं० ॥ आलिंगे दृग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिंगन करतां मृतकें, लीधी नासा तोमि ॥ ध० ॥ १७ ॥ घणुं हुती अनुरागीजी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ रूरती पाठी जागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं० ॥ ॥ ताणे त्रुटी रह्यो शबमुखमां, नाक तणो अग्रजाग ॥ घ० ॥ १८ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आवी मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोप प्रकाशीजी ॥ नं० ॥ बोल्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ हसे तुं इणे वरू मुज ज्यों, बंधाइश निशि काल ॥ जो० ॥ १९ ॥ वचन सुणी हुं जमक्योजी ॥ नं० ॥ शोक महा जर खमक्योजी ॥ नं० ॥ चिंताथी चित्त तमक्योजी ॥ नं० ॥ हृदयथकी जय धमक्योजी ॥ नं० ॥ दैव प्रयोगें शब इंम बोल्यो, हैहै करशुं केम ॥ व० ॥ २० ॥

जी ॥ न० ॥ एकाकी किम होवेजी ॥ नं० ॥ एह सा हमु शु जोवेजी ॥ न० ॥ घन चीपम वननें शमशानें, बेठी तु किण काम ॥ मे० ॥ १० ॥ तव ते वदन उघाडी जी ॥ न० ॥ जोती अवली आडीजी ॥ न० ॥ मूकी लाज कमाडीजी ॥ न० ॥ बोली इम पट फाडीजी ॥ न० ॥ शु दुःख चाखु हु तुज आगें, जाग्य रहितमा लीह ॥ त० ॥ ११ ॥ बांध्यो जे षग्र नार्येजी ॥ न० ॥ शेल अलव विचालेंजी ॥ न० ॥ रहेतो कदर नालेंजी ॥ न० ॥ हरतो पुरधन आलेंजी ॥ न० ॥ चोर पुरातन पाप दशार्थी, ए आव्यो नृप हाथ ॥ घा० ॥ १२ ॥ सोज सार ईणे नार्मेजी ॥ न० ॥ वीतक त्रीजे यार्मेजी ॥ न० ॥ सप्यार्ये विण मार्मेजी ॥ न० ॥ घाधी हणीठ गार्मेजी ॥ न० ॥ मुज प्रीतम ठे हु धण एहनी, रोवु डु दुःख तेण ॥ सो० ॥ १३ ॥ नेह नवल मुज खटकेजी ॥ न० ॥ चिंता चित्तमा चटकेजी ॥ न० ॥ विरह अगनि जिम झट केजी ॥ न० ॥ प्राण कठमां अटकेजी ॥ न० ॥ आज प्रजातें कर मेलावो, हुई हसो एह साथ ॥ ने० ॥ ॥ १४ ॥ करथा चोरी निकस्योजी ॥ न० ॥ गयो नेहनो तरस्योजी ॥ नं० ॥ मुज सगें नवि विलस्योजी ॥ नं० ॥ हवे विरहो मुज विकस्योजी ॥ न० ॥ चंदन लिंपी

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चमक्या, नूपादिक जन नूर ॥ अभुत नय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥ वली विगत महबल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चंदन रस चर्चित करी, थाप्युं मंमल गाइ ॥ २ ॥ अग्निकुंरु दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत नत्र ऊललें, परे न पावक कुंरु ॥ खिन्न थयो जप ध्यानथी, साधक चिंता मंरु ॥ ४ ॥ तेहवे शव गयणांगणें, जम्यो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिम हिज जई, वरुशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कांएक ध्यानमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रातें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज बलें साधन तणी, थाशें वहेली सिद्ध ॥ रहो सुत्नग योगी कहे, उपगरवानी बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक पास ॥ योगी करतो सुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशे काम ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोलो मुज चित्तमां रे, एहवो एक इंण गाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो लेख

नकटी करतीं तितरेंजी ॥ न० ॥ मुज खांधायी ऊत रेंजी ॥ न० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥ न० ॥ किण न गरें तु विचरेजी ॥ न० ॥ नाम थानादिक में ते भा- गें, चांख्यु सघलु साच ॥ न० ॥ ११ ॥ मुज ऊपरें विश्वासीजी ॥ न० ॥ बोली ते उल्लासीजी ॥ न०॥ सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ न० ॥ मुज नासा रूजा सीजी ॥ न० ॥ तव हुं पीउनु द्रव्य गुफामां, देखा डीश तुम आय ॥ मु० ॥ १२ ॥ इम कही ते घर चालीजी ॥ न० ॥ हु चढीउं घरु मालीजी ॥ न० ॥ ठोल्यो चोर सचालीजी ॥ न० ॥ नाख्यो नीचो भा- लीजी ॥ न० ॥ ऊतरि जोउ तो तिण सालें, बांध्या तिमहीज दीठ ॥ ६० ॥ १३ ॥ में जाण्यो ततकाला जी ॥ न० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ न० ॥ ठोकी मन उक्चालाजी ॥ न० ॥ फिरि चढीयो घरु माला जी ॥ न० ॥ बधन ठोकी केश म्हलीनें, ऊतरियो व ली देउ ॥ में० ॥ १४ ॥ खध चढावी लीधुजी ॥ न० ॥ अक्षत शब परसीधुंजी ॥ न० ॥ जई योगीनें दीधु जी ॥ न० ॥ इम पर कारज कीधुजी ॥ न० ॥ बीजे खभें हाल ए ठठी, कांतें कही रसरेल ॥ ख० ॥ १५ ॥

तों नारी सांग ॥ नं० ॥ महबल नांखे तातने रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जातां नारी पाछलें रे, गुटिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, मुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं कर प्रह्यो रे, धीज समय इंणे बाल ॥ नं० ॥ जाल तिलक चाटथुं चढी रे, में एहनुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३ ॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नूप प्रमुख सहु रीजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नूप कहे में आचस्तुं रे, अणघटतुं प्रतिकूल ॥ नं० लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सरजित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, बेसारी उत्संग ॥ नं० ॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वत्से तें दुःख संग ॥ नं ॥ १६ ॥ अथवा तें जाएयुं कस्तुं रे, वात न खाती पारु ॥ नं० ॥ विण अवसर जे नांखियें रे, न चढे तेह सिराम ॥ नं० ॥ १७ ॥ दुःखमां मौन धरी रही रे, नांखि न एका टोक ॥ नं० ॥ ए विरतंत कही जतो रे, मानत नहीं को लोक ॥ ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूडुं दैवें कस्तुं हशे रे, पाम्यां दुःखनो पार ॥ नं० अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कुल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इम कहेती नृपनी प्रिया

शे रे, तुजने नृप जाण वृद ॥ नं० ॥ तो अई कहे शे जोलव्यो रे, अवधूतें तुम नद ॥ न० ॥ २ ॥ प्रा ण पियाणु महारे रे, होशे अचिंत्यु आय ॥ न० ॥ तेमाटे तुम फेरवु रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं० ॥ ३ ॥ जाशो मा मुज पासथी रे, लखमीपुज अनेय ॥ न० ॥इम धारी मुखमां ठवी रे, कथन प्रभु में तेव ॥ नं० ॥ ४ ॥ ताम मूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिल क मुज कीध ॥ न० ॥ तास प्रभावें हु थयो रे, पन्नग विष आवीष ॥ न० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे, आप गयो कोइ काम ॥ न० ॥ पवन भखी सुखमां रहु रे, ठानो विलने ठाम ॥ न० ॥ ६ ॥ गिरिवन जोतां गारुमी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें व श करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ पण पु वनमां मूकीयो रे, कुत्त करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम आदेशें जे नरें रे, काढ्यो हु विण खीज ॥ न० ॥ ८ ॥ तेहने तुरतज डंखली रे, काढी मुखथी हार ॥ न० ॥ कर्ते धर्यो तेहथी हुयो रे, ते नारी अवतार ॥ नं० ॥ ॥ ए ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥ ॥ न० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, यह तुम प्रत्यक्ष माग ॥ न० ॥ १० ॥ नूप कहे ते किम हूठं रे, जो

॥ ह० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां ड्रमरू ड्राक ॥ वीर बावन आगें चलें, पाड़ंता पोढी हाक ॥ ह० ॥ २ ॥ अन्नथकी उद्भट उतरती, शक्ति कहे रे धीठ॥ मृतक अशुद्ध आणी किस्युं हुं, तेड़ी कां जूपीठ ॥ ह० ॥ ३ ॥ इंम कहेती योगीनें साही, नाखे अगनिनें कुंड ॥ नागपाशने बंधनें मुज, बे कर बांध्या प्रचंड ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी ले कुण पाप ॥ इंम कहेती नत्र मारगें, बिहुं पग ग्रही ऊड़ी आप ॥ ह० ॥ ५ ॥ बे शाखा विच हुं पग नीड़ी, उंचा पग शिर हेठ ॥ टांगी मुजनें ए वड़ें, उड़ी गई लेती कुलेठ ॥ ह० ॥ ६ ॥ शब ते तिम द्विज उड़ी तिहांथी, वलग्युं गुंफाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं वली, तिहां पाछी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक कहे दीसे ठे बांधुं तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे मुखमां एहनें, नासा पल होशे कुशुद्ध ॥ ह० ॥ ८ ॥ लोक कहे इंम कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥ दीठी वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास ॥ ह० ॥ ए ॥ ए में साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे इंम खेद ॥ भूप कहे जवितव्यनां, मेटीजें केम जमेद ॥ ह० ॥ १० ॥ भूप कहे केम करथी छूट्या, बांध्या वि

रे, जे जीवितनी आथ ॥ न० ॥ आजूपण मणि ते हसी रे, आपे मलया हाथ ॥ न० ॥ २० ॥ त्रीजे ख में सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥ न० ॥ कांति कहे सुणता सदा रे, लहियें मंगल माल ॥ न० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे, रहेतां शैल अलग्न ॥ कारण शु शु अनुजन्यां, कहीयें ते अविलंव ॥ १ ॥ पवन जखत गिरि कंदरें, निर्गत हुउं दिनेश ॥ रजनी समय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनकर तरुना डुग्धथी, घस्यु जाल मुज लेण ॥ देखी मूल सरूप हग, घोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर कला निला, करीयें मंत्र विधान ॥ ईम कही पावक कुंम तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें वरुयकी, आणी दीठ शब फेरि ॥ बेठो अपमा सेह तव, हु पण बेठो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हरिहा सुज्ञानी साहेब मेरा बे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, आहूति बे अवसान ॥ तिम तिम शब कंपकी पके, तरुफरतुं रोप निदान ॥ ह ठीली योगिणी आई बे, अरिहां रीस चराई बे ॥ १ ॥

जलहलतो दंम ॥ ह० ॥ २० ॥ ठेव्यां पण निश्चिर्मा हें वाधे, शीश विना जस अंग ॥ पुरसो तेह कढावीने, नंमार धस्यो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग जस्यो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंमनी आठमी ढालें, जांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी, लहियें मनवंछित जोग ॥ ह० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोभतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी गण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रका शी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ जगिनीपति जगिनी बिहुं, मेलवियां नृप तेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित बेठां गण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरि त्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिज ॥ नवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र जरिज ॥ ४ ॥ गोष्ठि महारस सागरें, करता हर्षण केलि ॥ जुख तृषा निद्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मजाण जोजन वस्त्रथी, सत्कास्यो नृपनंद ॥ बांध्यो बेहूनी नेहनो, रहे तिहां स्वछंद ॥ ६ ॥ केताइक दि

पभर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंठकुं, मुज मुखमां अ
व्यु उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ कोप भरी वाव्यु में तेहथी
पीक्यो पन्नग जोर ॥ नर्म थई हेगो पम्यो, न चढ्यु वि
मन्त्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काळ्या
कु खमां में विलखात ॥ सकट सहु टलियां सवे, मळ्
क्रम योगें तास ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कयु सुरशि
मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरसत कह्यो सवे,
म आगल पूरी पक्ष ॥ ह० १४ ॥ लोक प्रशंसें शि
धुणतां, अहो हो अतुल बलवीर ॥ थोका काल मां
घणी, जल सांसयो पीन शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वच
पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संक
जलराशिनो, तारु एक सुईज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥
हो साहस निर्जय पण मामा, बुद्धि महोदधि खास
उपगारक करुणापणुं, दढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह
॥ १७ ॥ नारि लही सकण साखीथी, मलियो
मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, हर्ष वर्धन गुणम
जेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नृप कहे नंदन मंगल ते, देखा
हे क्यांहिं ॥ कुमर नृपति जण विंटीहे, देखाके अ
त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मल्या उलटें,
रखे पावक कुंभ ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दी

आंहिं ॥ चतुर तुमें पण चालतां, सावधान रहेजो रा हिं ॥ गु० ॥ ८ ॥ वचन सहुनां चित्त धरी, गलगल तो थाय विदाय ॥ उपपुर लगें आम्बरें, महिपति पोहोंचावा जाय ॥ गु० ॥ ए ॥ केटले दिन चंद्रावती, पो होंच्यो कहे सकल वृत्तांत ॥ खबर लही माता पिता, पामे तिहां हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ १० ॥ महबल मलया संगमें, विलसंते निवहे काल ॥ एक समय बेठा बि न्हे, उंचा मंदिरनें जाल ॥ गु० ॥ ११ ॥ नाक विहु णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी ने कहे, एक पश्यतहरनी नारि ॥ गु० ॥ १२ ॥ थिर मीटें तव उलखी, प्रमदायें ते उपमात ॥ प्रीतम क नकवती इहां, दीसे ठे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १३ ॥ गुह्य न कहेशे लाजती, जो उलखशे मुज देख ॥ ते हथी हुं पम्दे रहुं, पूठो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १४ ॥ इम कहेती जुवणंतरें, बेठी जइ सुणवा विगत्त ॥ क नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणीपत्त ॥ गु० ॥ १५ ॥ आदर द्ये पूठ्या थकी, कहेशे इहां आप चरित्त ॥ नवमी त्रीजा खंम्नी, कांते कही ढाल पवित्त ॥ गु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पन्नणे सा चंद्रावती, नगरीपति उद्दाम ॥ वीरध

न त्या रही, मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव या, करे प्रयाण देश ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ घरे आवोजी आंबो मोरीउं ॥ ए देशी॥

॥ मलय कुमरने नृप कहे, सप्रेरूण मन न वहत ॥ गुणवताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व धामणी, पण धारो पुरि मतिवत ॥ गु० ॥ १ ॥ प्रीति लता सिंची रसे, पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफल हूई तुम आवतां, पोता घट राखी अछेह ॥ गु० ॥ २ ॥ वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोमि प्रणाम ॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान ॥ गु० ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्यें, पोहोतो आ पू ठण काज ॥ देखी दंपती ऊठिया, बोलावे वचनें स माज ॥ गु० ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे जो जई कोमि सलाम ॥ चोर थयो हु रावलो, खम जो ते गुनह प्रकाम ॥ गु० ॥ ५ ॥ विण शीखें तुम नदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्यु डुःख आकरु, ते करज्यो मांई वात विलीन ॥ गु० ॥ ६ ॥ मल य नणी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ वी नवशो माय तातनें, मुज आगमनादि प्रकार ॥ गु० ॥ ॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता छे

यक्ष धनंजय जवन समीपें, गोला कंठें गवी ॥ १ ॥ साची वात कहां छां राज, जे वीती छे अममां ॥ तिलज र जूठ कहुं नहीं मोहन, मलताना संगममां ॥ साची० ॥ ए आंकणी ॥ लोजसार चोरें जलमांथी, काढी नार गरिष्ठी ॥ ताल्लुं जांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज ठाने ॥ द्रव्य सहित मंदिर पोतानुं, देखाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें मीजी मुज जींजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पाप दिशाथी जूपें साही, सांजे वक्ले बांध्यो ॥ पर्वत शिखर रही में जोतां, मोहन विरूबन साध्यो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रमती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो छो, ए वीत्युं छे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आज्ञो द्रव्य घणुं देखाडुं, इम सुणी महाबल ऊठे ॥ कह्युं तातने तात कुमरशुं, चाह्यो त्यां तस पूंठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संजाली ॥ शेष द्रव्य लेइ नरपति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

वस तस हु प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हु
रुठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि
देशी मुझने, तरुणो एक वयस्क ॥ तस संकेत सुरि
यहें, मली राति हु हस्क ॥ ३ ॥ देखाडी जय चोरनो,
वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुक्तावलीनें कंचुकी, आप हस्कु
तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठं यत्र घटकांहिं ॥
॥ ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोडी ॥
विहु उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ
वसघन विण पवनथी, खाती जोस अछेह ॥ सुहिर
नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
ओलखे, जो तजा होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
किस्युं, हता अजाएया धूत ॥ निःकारण वैरी हुस्या, गया
करी करतूत ॥ ९ ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित
खेल ॥ शीश धूणतो आगलें, पूछे कथा उकेल ॥ १० ॥
॥ ढाल दशमी ॥ वेरुले जार घणो छे
राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥
॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

यरू धनंजय जवन समीपें, गोला कंठें गवी ॥ १ ॥ साची वात कहां छां राज, जे वीती छे अममां ॥ तिलज र जूठ कहुं नहीं मोहन, मलताना संगममां ॥ सा ची० ॥ ए आंकणी ॥ लोजसार चोरें जलमांथी, काढी नार गरिठी ॥ ताछुं जांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज छाने ॥ द्रव्य सहित मंदिर पोतानुं, दे खाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें मीजी मुज जींजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इंणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पा प दिशाथी जूपें साही, सांजे वकले बांध्यो ॥ पर्वत शि खर रही में जोतां, मोहन विकंबन सांध्यो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रमती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो छो, ए वीत्युं छे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो द्रव्य घणुं देखाडुं, इंम सुणी महाबल ऊठे ॥ कह्युं तातने तात कुमरशुं, चा ल्यो त्यां तस पूठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संजाली ॥ शेष द्रव्य लेइ नर पति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

वख तस छु प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप रि कोप्यो मद्दीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हु रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि देशी मुझने, तरुणो एक उपन्न ॥ तस संकेत सुरि एहें, मली राति हु ह्स्न ॥ ३ ॥ देखाडी जय चोरनो, वस्त्राविक मुज लीध ॥ मुक्तावलीनें कचुकी, आप हस्तु तिर्मे कीध ॥ ४ ॥ शेप जपास सार्थे मुने, घाली पेटी मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठं यंत्र चटकांहिं ॥ ॥ ५ ॥ सकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोडी ॥ विहु उपाडी मंजूषकी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ वलयन विण पवनथी, खाती जोल अछेह ॥ गुहिर नदी गोला अछें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने ठंलसे, जो उजा होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण किस्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निकारण वैरी हस्या, गया करी करतूत ॥ ए ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित खेख ॥ शीश धूणतो आगलें, पूछे कथा अकेख ॥ १० ॥

॥ ढाख दशमी ॥ बेन्खे जार घणो छे राज, वार्ता केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ जखपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

दीस ॥ सुख जोगवतां मलया एहवे, धरे गर्भ सुजगीश ॥ सा० ॥ २७ ॥ ऊपजतां डोहोला पीउ हेजें, पूरे नव नव जातें ॥ प्रसव समय आसन्न हूउ तव, दीपे राणी गातें ॥ सा० ॥ २ए ॥ त्रीजे खंडें चावी दशमी, ढाल महारस पूरी ॥ जांखी कांतिविजय बुध नेहें, निरुपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

इण अवसर महबल प्रत्यें, दीये तात आदेश ॥ वत्स विकट जट साजसुं, करो चढाई वेस ॥ १ ॥ नामें क्रुर सज्यो गढें, पल्लीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देशमां, ते निर्झाटो दूर ॥ २ ॥ सजा समद्दें दक्ष ते, तात वचन परमाण ॥ मलयानें पूछण जणी, गयो जुवन गुणखाण ॥ ३ ॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश पीयु साथ ॥ दूर रहीने किम चढुं, विषम विरहने हाथ ॥ ४ ॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चित्त ॥ लाजचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत्त ॥ ५ ॥ जाणे तुं गुण एहना, करजे खरा यतन्न ॥ ते आपी पजणें वली, महबल विरह विखिन्न ॥ ६ ॥ पदमिणी तो पांखे हिये, आवे विरह जरेय ॥ गणया दिवसमां ते जणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७ ॥ ताल वचन जो

पुज सहित मलया त्यां, देखी बेठी पासें ॥ सा० ॥ ए ॥
चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवती ॥ कू
पथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुती ॥
॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नहिं पूठी, रही
वदन निरखती ॥ रखें चरित्र मुज चार्वा पाके, मन
मा इम बीहती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुज मनो
हर मझारो, लीधो तो जिण धूर्ते ॥ ए पापणीने आ
णी दीधो, दीसे तेण कुपूर्ते ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणु न
हीं के लीधो इहुणे, खेरी नवलो फदो ॥ हवणां तो ए
द्विज मुज वैरी, कीधो इम दिल मदो ॥ सा० ॥ १३ ॥
कहे मलया माता ठो रूडा, एकाकी किम आव्यां ॥ कुश
ल न दीसे नाक चणी कां, के किणे कर्मे सताव्यां ॥
॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर जणे पदमिणी मत पूठो, क
हेशु हु तुम आगें ॥ हिन न लमे कारज ठे बहुलां, क
हेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें
आप्यो, शूने मदिर पासें ॥ मुख मीठी हियडामां धी
ठी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिव
सें मलया उपकर्ठे, आवे कनका रंगें ॥ थई विश्वा
सिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥ सा० ॥
॥ १७ ॥ ठिद्र निहाले मलया केरां, शोक समी, निश

लणां ॥ पयमां साकर नेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूंठें
एक राक्सी रे गोरी, लागी ठे कम जात ॥ नव नव
नांतें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी नर रातमां
रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं ठाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन नोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव इम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
नलावती रे गोरी, जे शीखवतुं तुज्ज ॥ तव० ॥
मया करी मुज ऊपरें रे नोली, करो उचित जे
गुज्ज ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नव०॥
नूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने दे३ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे इम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी ठे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी ततो कहुं रे सामी, जो द्ये जीवित दान

अवगणु, तो लागे कुललाज ॥ दीठें अनुज्ञा सुंदरी, जिम साधु जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती, ना खे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली ए म उदास ॥ ९ ॥ लेइ अनुमति ऊठ्यो मनें, बांधी तरकस बेग ॥ पाछी मींटें निरखतो, चल्यो पवनथी वेग ॥ १० ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट-महा विषवे लि ॥ अहनिशि जोवे रे ठल मलया तणुं ॥ अनुया यी वेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलडी जवनें रही रे धीठी, मुज चार्म्ये ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम ठलकेलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेठी मुख करमां ठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे ऊरसे लोयणां ॥ वेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे दुःख भरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवीरे धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रंगमां रे गोरी, कनकाशु रसमाणि ॥ नवनव चर्ति रे करती खेलणां ॥ ४ ॥ कहे मलया माता इहां रे जोवी, रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां थो

लणां ॥ पयमां साकर नेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूंठें
एक राक्षसी रे गोरी, लागी ठे कम जात ॥ नव नव
नांलें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी नर रातमां
रे गोरी, काढी कूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तु मुजनें
आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं ठाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन नोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव इम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
नलावची रे गोरी, जे शीखववुं तुज ॥ तव० ॥
मया करी मुज ऊपरें रे नोली, करो ऊचित जे
गुज ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नव०॥
नूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे इम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी ठे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी ततो कहुं रे सामी, जो द्ये जीवित दान

॥ रह० ॥ ११ ॥ अजय हुजो कहे राजीयो रे जोशी, कहेसा न कर सकोय ॥ जिम मुज नावे रे मनमा चो खणा ॥ जगमाहे तेहिज वाल्हा रे जोशी, देखाडे जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राकसी रे सामी, तुम वहूअर दीसत ॥ नव० ॥ मुज वचनें नवि वीससो रे सामी, तो देखाडु तत ॥ रह० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमा रही वेगला रे सामी, जो जो आ ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राकसी रे सामी, साधे राकस मत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अगणमा नाचे हसे रे सामी, रमे नमे खलगत ॥ नव० ॥ दिसिदि सि नयणा फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्यु रटत ॥ नव० ॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी ऊछले रे सामी, पुरमां मरगी क ष्ट ॥ महशो जो जाई निशें रे सामी, करशे काई अ निष्ट ॥ नव० ॥ १६ ॥ प्रातसमय सुजटो कन्हें रे सा मी, करजो एहनें वध ॥ जिम तुऊ नावे रे मनमां चोखर्णा ॥ पहेला पण नृपनें हतो रे सामी, पूरवो कष्ट निषध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी सुण्यु रे सामी, कारण ए असराल ॥ नव० ॥ तेहथी मन मेलुं थयु रे सामी, चित्त चक्यो भूपाल ॥ नृपति विचारे रे करतो चोखणा ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल लोकमा रे

सामी, थाशे हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे जोली, लागजो विषहर रूंक ॥ नृप० ॥ ॥ १ए ॥ रातें सर्व जणायशे रे जोली, बाहिर न जांखे वात ॥ तव इंम बोली रे करती चालणां ॥ एव ऊघारुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रह० ॥ २० ॥ सतकारी नृपें तिका रे धीठी, पोहोती जुवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्रीजे खंमें इग्यारमी रे मीठी, कांतें कही ए ढाल ॥ नव नव जांतें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशाचर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई बाहिर गई, कूरु चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारें अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ ग्रहे उसाकी वदनमां, वलबलती वे पीर ॥ ४ ॥ रुंमाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवे

ठाने रातिमा, आव्यो जोवा नृप ॥ अपर समीप ए
ह चढ्यो, निरखे दुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी सुने कुवे घर
सालो मेह, लशकर आयो दरिया
पारतो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही होलाल ॥ होजी दीसे छे ते साच, जे मुजने कनका यें कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम, कुलने दुर्यश ए किस्यु होलाल ॥ होजी एहथी नहीं जाय खेम, मुजने पण विरुछं किस्यु होलाल ॥ २ ॥ होजी करवी न पके कचाट, पहेली जो समजावीयें होलाल ॥ होजी तेह जणी वनमाहिं, एहने हणणा हणावीयें होलाल ॥ ३ ॥ होजी इम कहेतो नरनाथ, कोपानलथु परजल्यो होलाल ॥ होजी तेकी सेवक साथ, गुप्त पणे जणे सांजल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होला ल ॥ होजी रथ चाढी वन देह, गुपत पणे हणजो परी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करता रातें काम, लोक न जाणे वातकी होलाल ॥ होजी इम सुणी सुजट उ दाम, उठ्या जीनी गातकी होलाल ॥ ६ ॥ होजी कर

लीधें करवाल, आवत सुजट निहालीनें होलाल ॥ होजी जिहां ठे मलया वाल, कनका त्यां गई चाली नें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल फलती बोले इस्युं होलाल ॥ होजी नृप नट हणवा मुज, आवे ठे करवुं किस्युं होलाल ॥ ८ ॥ होजी तुज पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल॥ होजी ते माटे महाराज, मुज ऊपर रूठा सही होलाल ॥ ए॥ होजी क्यांहिक मुजने ठिपारू, जणनी मीट न ज्यां प रू होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गारू, हाथ रखे कोइनो अरू होलाल॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश, पेठी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश, बेसे मांहे एकेंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज तालुं दीध, अन्नय करी राखी तिका होलाल॥ होजी आव्या सुजट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल ॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, बेठी रूप स्वनाव नें होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, बदल्यो सांग ऊटा किनें होलाल॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी डु ठ, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी लो कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल॥ १४ ॥ होजी इम कहीनें ग्रही गांहें, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राह, श्वापद जिहां वांका वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इठ, दे खी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अ निठ, इण सूखें मारारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी हपाचु के वनवास, सुसरें निश्चय आदिस्यो होलाल ॥ होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाएयो देख्यो किस्यो होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित हु आ फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो मागे म र्म, वनी आवे किम पहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधा आपणा होलाल ॥ होजी दारुण कर्म अतीव, छूटे नहीं चाख्या विना हो लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संभारि, जाणती नियति निहालिनें होलाल ॥ होजी मूकी वन सचार, आघुं पालु चालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी गानी उन्नरू पाहारू, विषम थलीमांहे धरी होलाल ॥ होजी प्रहसमे चीम जिरारू, आव्या जण नगरें फरी होलाल ॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, भूपति महीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित ते नारि, नृप जोवरावी मदिरें होलाल ॥ होजी दीठी

नहि किण ठार, नूप जाणे नाठी खरी होलाल ॥ २३ ॥ होजी त्रीजे खंडें रसाल, ढाल कही ए बारमी होला ल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जीती तेह किरात ॥ तात चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया नवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक चरित्र त्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कुमर निसासो नाखतो, बे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंठ मन, करे एम उल्लाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ नूपतिजी कांई कीधुं हो दुःख दीधुं मलया बालने, हाहा नूलो कांहीं ॥ चित्तमां कां न विचार्यो हो नवि धार्यो अवसर आपशुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं ॥ नू० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ जाला ज्युं चित्त खटके हो अति नटके अग्निसमा थइ, काम कर्यां विण मर्म ॥ नू० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो छल नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जोव

रावो किहां दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहना
एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो
नृप वयणे श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥
जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी गर्ते ते किहां,
कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृ
प वयणा हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे
हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज
प्रमदा प्रत्यें, साधु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धू
तारीनें वचणे हो कुल रयणें सजन चावीज, गोत्र ठ
मृत्यु एण ॥ ठसंज्ञा इम देतो हो नृपनदन पोहोतो
मदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ सजन
सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूमणो, उधाने घर ता
स ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज ठेठी दयिता रा
क्षसी, रूपें करती चास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को
माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुं अपराधें वरू ॥
वाहाली पण जे विणाठी हो ते परठी दीजें छेदीनें,
वांहम्ली करी स्वरू ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमसाणा कां म
नमा हो मंदिरमां आवी आपणो, सच्चलो घर सा
र ॥ अधमथकी जण हासो हो घर आथ विणासो
जाणीयें, ठग न सहे भार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीव तां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउ कांइ अधी र ॥ इम कहि जोवा लागो हो जइ वागो जिहां मं जूषकी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दया मणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मय कारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी रा क्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बा हेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भृंठी हो जणह थीकारें हूहवी, काढी देशा ठेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनेहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हे है मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संभ्रमें,

रावो किहां दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ जू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ जू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचु सहि नरनाथ ॥ जू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लठन चाढीउ, गोत्र उ मूल्यु पण ॥ ठलंचा इम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मंदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ जू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूर्वे हो नृप उठी आवे दूमणो, जघारे घर तास ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज इठी दयिता राक्सी, रूपें करती वास ॥ जू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, कुडे अपराधें दरु ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें ठेदीनें, वांहम्ली करी स्वरू ॥ जू० ॥ ८ ॥ कुमसाणा कां मनमां हो मतिरमो आवी आपणो, सचालो घर सार ॥ अधमथकी जण हासो हो घर आय विणासो जाणीयें, ठंग न सहे चार ॥ जू० ॥ ए ॥ कुमर वि

भासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जाणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जइ वागो जिहां मंजूषनी, उघाडे बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताडी आणी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भंछी हो जणह थीकारें हूहवी, काढी देशा ठेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, है है मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो डुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नडीया हो पुरवासी पडीया संभ्रमें,

रावो किहां दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहनां एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवराथी नथि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणा हो जल नयणां पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रलें, साचु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लछन चाढीउ, गोत्र उ मृत्यु पण ॥ ठेसंजा इम देतो हो नृपनंदन पोहोंतो मदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूर्वे हो नृप उठी आवे दूमणो, जघा घर तास ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज हेठी वनिता रासी, रूपें करती चाल ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नदनजी इहां, हुई अपराधें वरु ॥ माहाखी पण जे विणठी हो ते परठी दीजें ठेदीनें, थाइस्सी करी सरु ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमराणा का मनमां हो मदिरमां आवी आपणो, सत्त्वसो घर सार ॥ अधमयकी जण हासो हो घर आय विणासो जाणीयें, ठेग न सहे नार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

भासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीछे जाणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउ कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषनी, उघाडे बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख भूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंभ ॥ कुमर पयपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंभ ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताडी आडी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भ्रछी हो जणह थीकारें झृहवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अभिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैहै मोह दुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी झूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नडीया हो पुरवासी पडीया संभ्रमें,

राखो किहा दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें साधु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लछन चाढीउ, गोत्र ज मृत्यु एण ॥ उर्लंजा इम देतो हो नृपनदन पोहोतो मदिरें, अनि पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूमणो, जघाकि घर तास ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज ऐठी दयिता राक्सी, रूपें करती पास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नदनजी इहां, हुई अपराधें दरू ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, थांहम्सी करी खरू ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमसाणा को मनमां हो मदिरमां आवी आयणो, सज्जासो घर सार ॥ अधमयकी जण हासो हो घर आय विमासो जाणीयें, उंगा न सहे चार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जाणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जइ वागो जिहां मंजूषनी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां त्रिण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भूंछी हो जणह थीकारें कूहवी, काढी देशा ठेह ॥ नृ० ॥१४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीउं, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हे हे मोह दुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संभ्रमें,

रावो किहा दीसे हो पूठी शे कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कहु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवराधी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहा, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणा हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लठन चाहीत, गोत्र ठ मूस्यु एण ॥ ठेसंचा इम देतो हो नृपनदन पोहोतो मदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूठें हो नृप ऊठी आवे दूमणो, ज्याहे घर ता स ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज ठेठी वनिता रा क्षसी, रूपें करती वाख ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नदनजी इहां, हुई अपराधें दरू ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें ठेदीनें, वाहरूसी करी खम ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा का मनमा हो मदिरमां आवी आपणो, सजासो घर सार ॥ अधमथकी जण हासो हो घर आथ विणासो जाणीयें, ठंग न सहे जार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीव तां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषनी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताक्षी आसी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भ्रंठी हो जणह थीकारें दूहवी, काढी देशा ठेह ॥ नृ० ॥ १४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीठे, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अभिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हे हैं मोह दुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संभ्रमें,

रावो किहां दीसे हो पूठी शे कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें स्याम पणु धरी, मंद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी गर्त त किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणा हो जल नयणा पूरण नाम्वतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रसें, साचु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणी धवन चाहीअ, गोत्र अ मृत्यु एण ॥ ठेलजा इम वेतो हो नृपनदन पोहोतो मंदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूमणो, जघांहे घर ता स ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज केही वयिता रा कासी, रूपें करती चास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, मुई अपराधें दरु ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, वाहकसी करी सरु ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा का मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संभारतो घर सार ॥ अधमथकी जण हासो हो भर आय विणासो जाणीयें, ठगा न सहे मार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर बि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउ कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषकी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भृंठी हो जणह थीकारें हृहवी, काढी देशा बेह ॥ नृ० ॥१४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनाहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवान अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हे हे मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संत्रमें,

फूकि फूकि जोलां खाय ॥ चू० ॥ १६ ॥ श्रीजे ख
में फाधी हो रस जावी वग श्रावी जली, तातो तेर
मी दाख ॥ कांति कहे सांजलजो हो चित्त कलजो
कविता चातुरी, श्रोता थई उजमाल ॥ चू० १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर अप्रागवी, पुस्तक हस्त धरेय ॥ आव्यो
एक निमित्तिउं, महपत्ल पास धसेय ॥ १ ॥ स्वस्ति व
चन मुख उच्चरे, भुज करी आघो सोय ॥ सचिवादि
क तेहनें नमी, थे सत्कार सकोय ॥ २ ॥ नृप नि
र्देशें आसने, बेठो नृपासन्न ॥ पेखी पुरातन पारखु,
खोले शास्त्र रतन्न ॥ ३ ॥ जक्ति युक्तिशु मन्त्रवी, पू
छे करी कर कोश ॥ उपकारी नैमित्तिया, जूउ एक
अम जोश ॥ ४ ॥ अकलकित इण इणी परें, कुमर
वधू सुगुणाल ॥ अम करथी तिम ऊतरी, जिम श
खें परनाल ॥ ५ ॥ ता डु खें महीपति हूउ, मरणो
न्मुख सकुटुंब ॥ अशन वसन रस परिहर्या, न सहे
प्राण विलंब ॥ ६ ॥ तेह जणी कहो अम तणे, जा
ग्यें जाग्य विशाल ॥ मल्लया मलशे जीवती, पजणो
तेहनी जाल ॥ ७ ॥ जोशीनें साहमे मुखें, बेसी विनय
प्रकाश ॥ नृपति योग्योतत कर्यो, चारुवचन विलास ॥ ८ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ जोशीयमा रे नगर सीरोहीयो
राय रे हो रसीया ॥ ए देशी ॥

॥ जोशीयमा रे, लगन निहाली जोय रे हो सुगुणा, कहेने गुणवंती मलशे क्यां वली हो सु० ॥ जो० ॥ क्षण खटमासी होय रे हो सु० ॥ मलया दरिसणनो सुत कौतूहली हो सु० ॥ १ ॥ जो० ॥ कहत म लावे वार रे हो सु० ॥ सुत मत थावे दुःखमे व्याकुली हो सु० ॥ जो० ॥ आतुर न सहे धीर रे हो सु० ॥ जगमां जिम न खमे पाणी पातली हो सु० ॥ २ ॥ जो० ॥ चित्तमांहे निरधार रे हो सु० ॥ लखिने लघु हाथें लगन लह्यो वही हो सु० ॥ जो० मलशे मलया नारि रे हो सु० ॥ अबला जीवती वरषांतें सही हो सु० ॥ ३ ॥ जो० ॥ कुमर सुणे तस वाणी रे हो सु० ॥ मीठमी जीवामण सरस सुधा समी हो सु० ॥ जो० ॥ अवलंबे निज प्राण रे हो सु० ॥ काने पीयंतो कांई न करे कमी हो सु० ॥ ४ ॥ जो० ॥ पूछे कुमर जदंत रे हो सु० ॥ कहोने जीवंती किहां छे गोरमी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ जोशी तव पभणंत रे हो सु० ॥ सांजल सलूणा जे कहुं वालमी हो सु० ॥ ५ ॥ जो० ॥ जाणी न जाये क्यांहिं रे हो सु० ॥ निवसे वनमांहिं के पुरमां वली हो

सु० ॥ जो० ॥ सुखिणी डु खिणी प्रायें रे हो सु० ॥ वींटी परिवारके किहा एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरप ति तेक्यां तेह रे हो ॥ सु० ॥ वनमा जाणी सुजटे, मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय वीको सस नेह रे हो सु० ॥ आपीने पूठे मलया आशरी हो सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रे हो सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्या ठवी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ ते कहे सा जय जीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू की विकटाटवी हो सु० ॥ Ό ॥ जो० ॥ निरखी एहवा चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन जास्यु एहनें राक्सी हो सु० ॥ जो० ॥ नृपति मन निर्विघ्न रे हो सु० ॥ कुणही व्यामोह्यो खेर्से साहसी हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुण लेशे हत्या गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप रे हो सु० ॥ करणी ए नहीं छे रूका लाजनी हो सु० ॥ ॥ १० ॥ जो० ॥ खाति गिरितटें छेव रे हो सु० ॥ पकती आखलती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो० ॥ एकलडी स्वयमेव रे हो सु० ॥ मरशे रखवलती रखलती आफली हा सु० ॥ ११ ॥ जो० ॥ इम मन धारी धाख रे हो सु० ॥ राती यनजाईं मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आवी

नांख्युं आल रे हो सु० ॥ नयथी तुम आगें कही अ छती छती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नाठी मुजथी जे ह रे हो सु० ॥ सुहम्मे ते करुणा रूमे संग्रही हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ विणठी मुज मति छेह रे हो सु० ॥ त्राठी ते पेठी नरु हीयम्मे वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ प निंदे इम आप रे हो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रे हो सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥ ॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रे हो सु० ॥ मलियुं ते साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो बाला र यण. रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंमे ढाल रे हो सु० ॥ सुपरें ए नांखी रूमी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागें सरस सुधा समी हो सु० ॥ १६ ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ कुमर नणे मलया तणा, जनक नणी अवदात ॥ कहेवा चर चंडावती, पूरियें प्रेषो तात ॥ १ ॥ वीरधवल पण आगमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

चूपें पुरुष, मूक्या चिहुदिशि चूर ॥ निरखण लागा तेह पण, देश देशांतर दूर ॥ ३ ॥ समजावी निज तनु जनें, चूप जमाके जाम ॥ करें उत्तरतां कवल, पगपग ल्ये विश्राम ॥ ४ ॥ केते दिन निरखी धरा, धरापालनी पास ॥ आव्या नर कर जोडीनें, पभणे एम प्रकाश ॥ ५ ॥ ढाल पचरमी ॥ मदनेसर मुख बोल्यो भटकी ॥ ए देशी ॥

॥ सुण महीपति शुद्धि न पामी, फरि आव्या स वि खामी हे ॥ ससनेही रे गोरी, दीठी नहीं मलया किहां ॥ देश नगर गढ डुंगर जोया, जलथल वट अ वरोध्या हे ॥ ससलूणी रे गोरी, दीठी० ॥ १ ॥ पुर पाटण सबाहण पाटें, दुर्घट विषमी वाटें हे ॥ स० ॥ फरिया उद्भट अटवी घाटें, मलया जोवा माटे हे ॥ स० ॥ २ ॥ कुमर सुणी ईम चिंता जुत्तो, चिंते मन दुःख खुत्तो हे ॥ स० ॥ पूर्वे महापातक मुज विकस्यां, सुचरित संचय निकस्यां हे ॥ स० ॥ ३ ॥ निर्गमशुं किम दिन अतिलखा,, जोल्यो दुःखनी भुखा हे ॥ स० ॥ हूठे वियोग प्रियाशुं माहरे, वात न दीसे आरें हे ॥ स० ॥ ४ ॥ हे हे शून्य महावन मांहिं, दरु खादर अवगाही हे ॥ स० ॥ मुई हशे हईडुं आफा ली, दयिता मुज सुगुणाली हे ॥ स० ॥ ५ ॥ वनग

हीर फिरती आथमती, किण कर चढशे रमती हे ॥ ॥ स० ॥ के कोइ निर्दय श्वापदसाथें, कीधी हशे निज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें जय जंगुर महिला, सहेती संकट डुहिलां हे ॥ स० ॥ यूथ टली वनहरणी सरखी, मरशे जूखी तरसी हे ॥ स० ॥ ॥ ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीयमे में वारी हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी डुःखमांहे नाखी, दीन वदन हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ८ ॥ गोरी तणो विरहो उचाटें, करवत थईनें काटे हे ॥ स० ॥ मुज हीअमुं पछरथी काठुं, इणी वेला नवि फाटुं हे ॥ स० ॥ए ॥ सुकुलिणी तुं चतुर चकोरी, द्ये दरिसण गुण गोरी हे ॥ स० ॥ देई विठोहो अलवें जारी, न करो प्रीत ठगोरी हे॥स०॥ ॥ १० ॥ संजारी इंम गुण संदोहो, विलवे कुमर समोहो हे ॥ स० ॥ अणीआलां जालां ज्यौं खटके, हियमे विरहो जटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पीता समजावे लेखें, सुतनें वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण सुत अरति पड्यो नवि समजे, विषम विरहमां अलजें हे ॥ स० ॥ १२ ॥ वचन निमित्त तणुं चित्त धारी, कुमर निरखण नारी हे ॥ स० ॥ ग्रही खमग ठानो जली जांतें, निकल्यो माजिम रातें हे ॥ स० ॥ १३ ॥ हूउं प्रजात त

नुज नवि दीसे, शुं कीधु जगदीशें हे ॥ स० ॥ कुमर गयो जोवा दयिताने, इम कहे पीन प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥ १४ ॥ सेहेशे श्वापद दुःख किम सहेशे, पग पालो कि म वहेशे हे ॥ स० ॥ भूमि शयन करशे किम बालो, नदन श्रति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहि त सुत मुखरुं जोस्या, तदीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ ॥ स० ॥ मात पिता इम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ भूख गई सुख निद्रा था की, नृप नदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर क रत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥ १७ ॥ श्री पचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा सवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे ॥ स०॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खरु वखाण्यो, मलय चरित्र थी श्राण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इम मां णी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुद रीचरित्रे पंडित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुदरी श्वसुरकुलसमागमनामा तृतीय खरु संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचतुर्थखंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनलता, वान वधारण मेह ॥ जिन सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सुणतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोमि ॥ कहेतां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोमि ॥ २ ॥ मलय कथा उचितारथा, करे व्यथानो छेह ॥ कथे विचें विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥ ३ ॥ त्रीजो खंम कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंम ॥ उछाहें आदर करी, कहेशुं चोथो खंम ॥ ४ ॥ हवे महाबल वालही, मूकी निशि वन ठोर ॥ कर्ण कठिन श्वापद तणा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती मरती हिये, ऊरती आंसू नयण ॥ आरमती पमती कहे, विरहालां इम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी पाणीमां गइती तलाव हे, हे मारुके मेहेवासी मेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, सुसरे न पूछ्यो गुज्फ़ो वंक हे, हे कोपेंनें कलकलियो राणो मोपरें हे

॥ अम्मां० ॥ रवीनें कूरु काइ कसक हे, हे गनेशुं अपमानें काढी वाहिरें हे ॥ १ ॥ अ० ॥ अटवी ए विषमी दमाकार हे, हे डियम्लु थरकावे नयणों देखता हे ॥ अ० ॥ सिंहना इहा वहुला सचार हे, हे शृगाने चमकावे विरुआ पेखता हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुहरी गूजे गोहा ढली हे, हे चित्तानें वनकुत्ता चोटे हो टशु हे ॥ अ० ॥ हसके गेवरिया टोला टोलि हे, हे रेखता आफखता पाखर कोटशु हे ॥ ३ ॥ अ० ॥ सफसके सूअरनां मातां यूथ हे, हे तातां छर्वे ऊजाता घाना आकुला हे ॥ अ० ॥ वढता उछलता मामे युद्ध हे हे रोपाला दाढाला वाघ महावला हे ॥ ४ ॥ ॥ अ० ॥ धमके साँगाला नरसा फाल हे, हे शवरिया अवरिया लगें अति कूदणा हे ॥ अ० ॥ रखके कूकता पाला श्याल हे हे रोमालां हरणालां रींछ फरे घणा ह ॥ ५ ॥ अ० ॥ खकता ठकयकता दोके रोक हे, ह हींन ते विण ढींके पीके मारका हे ॥ अ० ॥ दीपक करता जकन। सोझा हे हे टीवरीया शुवरीया मारकपारका हे ॥ ६ ॥ अ० ॥ यखगे घुररताके स्याहघोप हे, हे ' मासे मद चेना गेका आयके हे ॥ अ० ॥ चमके चीचख ..लिया राप ह, ह जामा नन पामा आमा आरके हे

॥ ७ ॥ अ० ॥ उलले हुंकलती नाहरकोमि हे, हे लुंकमि
यां वांकमियां दमवमियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती
खेले गेलें जरखां जोमि हे, हे उथमता चलचलता मृ
तलपा लीये हे ॥ ८ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मु
ख फामी हे, हे ससला ते सलसलता तरु मूलें लुकें
हे ॥ अ० ॥ महके सुरहा मशक बिलाम हे, हे विंजू
ता अति खीजू मदमाता झुके हे ॥ ए ॥ अ० ॥ खमके
खोत्तालो खांतें नील हे, हे हूके ठल नवि चूके मांकम
वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें विषधरनी अमखील हे, हे
फुंकीनें परजाले जालां झींगरां हे ॥ १० ॥ अ० ॥ अ
मके चमरी वांसांजाल हे, हे वेमु ने वली सावज झूझें
रोषमां हे ॥ अ० ॥ खमके त्तमके विहगा माल हे, हे
खच्चरिया ठल त्तरिया दोमे सूसमां हे ॥ ११ ॥ अ० ॥
अरमे उन्नाला आरण उंट हे, हे दाढाला सुंढाला शर
त्त घणा उमे हे ॥ अ० ॥ रमवमे रोहि बोहिम बूट हे,
हे गोकरुणा कंदलिया मिलि बेसे खूमे हे ॥ १२ ॥
॥ अ० ॥ घुरले घूघमा मांमी घोर हे, हे त्तम लमतां ह
महमतां त्तूत घणां त्तमे हे ॥ अ० ॥ चरमा चोरा करता
जोर हे, हे धामानें लेई आवे आमा मागमें हे ॥ १३ ॥
॥ अ० ॥ एहवा त्तीषण वनमां मुजा हे, हे निर्दय नृप

ना सेवक मेथी ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग
ध दु ख गुज्ञ हे, हे विण अपराधें नृप धीठ थया हे
॥ १४ ॥ अ० ॥ जाठ इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे
पीयरकुनें असगु वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पक्रियां
दु खथी साहीं हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ
हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानी शुं पलटी बु
द्धि हे, हे पठतावो हशे थाशे श्वेहथी आगली हे ॥
॥ अ० ॥ पीउमे लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमे
किम दाहाडा मो पासें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
का छु न मुई कांई हे, हे दु खडामां नवि पडती इणवेला
इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे मलवु गोरी त्यांहिं हे, हे स
नारे चित्त धारे श्लोक जणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥
अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे धालायें त्यां सुत प्रस
व्यो जलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
अवनरीयो सुरवरीयो पुण्यें ऊजलो हे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सु
तनें खोले ठवीनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सुति
क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पजणे पुत्र वधावु कांई हे,
पाणिणी हु इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ० ॥
सुतनु मुखडु जोती मात हे, हे हरखें ने तिम थरके
वन दम्मीं करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परजा

त हे, हे ऊठीने नावाने नदीयें उतरी हे ॥ २० ॥ ॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन थईने बेठी बाला कांठमे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अरिहंत नाम हे, हे संतोषे निज आतम वनफल मीठमे हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ज्ञानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे हीयमलें हेजाले लालें गहगही हे ॥ अ० ॥ चोथा खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें इंम जलि जांतें पजाणी ऊमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे, सारथपति बलसार ॥ आवी नदीयें ऊतस्यो, वींट्यो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल बनातां पाथरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा महकता, कारुजणें जलठाण ॥ २ ॥ जल तृण इंधण कारणें, पसस्या जन वनमांहीं ॥ सारथपति पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन कुंजमां, पोहोतो मलया ठाम ॥ रुदन सुणी बालक तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, वसती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आबू मन लाग्रु ॥ ए देशी ॥
॥ सारथपति पूछे इसी, एकलडी कुण आंहीं रे ॥
गोरी कहे साचु ॥ उत्तम कुल सजव प्रत्यें, कहे आकृति तुज प्राहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपहरी, के रीशाणी तु आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पुत्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥
वनमांहिं बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥
॥ ३ ॥ धनवतो व्यवहारीयो, मामें छु बलसार रे ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें बसुं, पर द्वीपें व्यापार रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ प्रभु कस्यु जगदीश्वरे, मेलवतां तु आज रे ॥ गो० ॥ मुज केरे आवो वही, मूकी मननी लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए नर चपल पतग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें, करशे शील विभग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूमो उत्तर भासता, रहेशे शील अखरू रे ॥ गो० ॥ इम धारी बोली त्रिया, सुण गुणरयण करंरू रे ॥ गो० ॥ ७ ॥
सनुजा हुं चपालनी, कलहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥
आवी रही वनमा इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥
॥ गो० ॥ ८ ॥ मेल मले किम ते घटे, जिम दिन

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे सघला लोग रे ॥ गो० ॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो तुमें, नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियां मुज मा बापनें, मलशुं जई इण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ कारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥ कपट पणें उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥ ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चिंतवी, बोल्यो वचन विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कदे, नहीं नांखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें मानिनी, स्वेछायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ इम कहेतो रूपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥ ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका ल रे ॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंमन जयथकी, ते थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पूंठें चली, नंद न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ हरख वचन बोलावतो, बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोप वी, पेठो जई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर ती ठानें ठवी, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी एक प्रियंवदा, थापी करण संन्नाल रे ॥ गो० ॥ १७ ॥

अवर जूपण जोजनां, आपें दासी प्रीति रे॥ गो० ॥
जांखे तहिं कम्बु मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥ गो० ॥
॥ १७ ॥ नाम पूगाव्यु अन्यदा, वसुसारें करी शान रे
॥ गो० ॥ इम्भुयें सा कहे माहरू, मलयसुदरी अभि
धान रे ॥ गो० ॥ १ए ॥ व्यवहारी इम चिंतवे, मम कहे
ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीउ,
कुल पहनु सुपवित्र रे ॥ गो० ॥ २० ॥ चाल्यो तिहां
थी वाणीयो, करतो पर्थे मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि
तिलक पुर आपणें, पोहोतो कुशलें ताम रे ॥ गो० ॥ २१॥
पुत्र सहित गानी रहें, राखी महिला तेम रे ॥ गो० ॥
दासी एक विना कहे, जाणी न पके जेम रे ॥ गो० ॥
॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर इम पजण
त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हुवे, आदर तु गुण
वन रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज सपदनी सामिनी, था
तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो,
रहेशु आणाकार रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ पुत्र नहिं को मा
हरे ते गामें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय
मालिका, वधशे इम घरसूत्र रे॥ गो० ॥ २५ ॥ व
चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुरू रे ॥ गो० ॥
कुलवतानें नवि घटे, करखु लोक विरुद्ध रे ॥ गो० ॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पमजो पण ए पिंम रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम ऊजलुं, रहेजो शील अखंम रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वास्यो बहुल प्रकारथी, नाख्यो वचन निठेम रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो बापमो, न करे वलती जेम रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ रोषारुण घर बारणें, द्ये तालक सुत लेय रे ॥ गो० ॥ प्रियसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥ ॥ २ए ॥ कहे सुंदरी ए पामीउं, बालक वनिका मांहि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें जस्यो, रह्यो लक्षण अवगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यन्निचारिणी को मारीयें, नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥ बीजी चोथा खंमनी, कांतें पन्नणी ढाल रे ॥ गो० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रबल जिहाज ॥ पर द्वीपें चालण तणा, करे सजाइ काज ॥ १ ॥ देइ शीखामण नारिनें, पूछी स्वजन कुटुंब ॥ गानी मलया जोरथी,

लेइ चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ साजित पूर्ण जहाजमां, जई बेठो शुभ लग्न ॥ सप्रपच फाल्क जनें, सीधां नां गर लग्न ॥ ३ ॥

॥ ढाल श्रीजी ॥ ईश्वर आंबा आवली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूर्ख्यो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जल निधिमां जल मारगें रे, चल्हेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीनें चाले बाबर कूल ॥ हवे करशुं केहो मूल ॥ ध० ॥ इम चिंते सा सुधि चूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वेचशे रे, के देशे चूकामी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गाळि॥ध०॥२॥ दूणी इहां होजो हवे रे, पण मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयु रे, जिम रोगी काय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिवन मृत सम ते प्रिया रे, गल गलती गलनाल ॥ पूछे प्रवहण नाथनें रे, चल्हेती आंसु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शु कीधो मुज नवनो रे, कहे सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवु रे, जो करे मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पिउयो निरखी आपमां रे, बाघ नदीनो न्याय ॥ राखण शील सोहामणु रे, ते रही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेर्युं रे, चल्हेतु प्रवहण चल ॥ कुशलें केते मासर्रे रे, आव्यों बाबरकूल ॥ भ० ॥ ७ ॥ पधारा रातराविनें रे, आपी द

पने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीउ रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ७ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकरू रोक ॥ ध० ॥ ए ॥ त्यां पण वहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे, ते पण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा डुठ जुवाण ॥ निम्सहेरा ठोले नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर नांखें करी रे, कृमिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत वा ला हुवे रे, नस नस पीरू प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ वि च विच अंतर गालीनें रे, पोपे अशनें अंग ॥ वलती महीरगतारथी रे, मांके रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ बाला चिंते में कीयुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पड्युं रे, मोटुं डुःख दोनाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा नूनारणी रे, कां सरजी किरतार ॥ देतां डुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजण हार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ गाम न हुंतुं डुखने रे, तो आव्यो मो पांहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी वली किण देश ॥ नाल लख्युं घनी आवशे रे,

सुपरें तेह सहेस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दु ख पूरें श्रवसा जरी रे, नाणे मनमा रोष ॥ एकातें चिंते तिहा रे, स घरित कर्म्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परद्दोंके ठार्के चढ्यो रे, ताके श्रनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही रे, श्रहो जव विषम षनाव ॥ ध० ॥ १९ ॥ घरनी तन लोही लीयु रे, मूर्छाणी चूपीठ ॥ खरनी रुधिरें एकदा रे, पनी भारन शूनि दीठ ॥ ध० ॥ २० ॥ पखीनज थी ऊतरी रे, श्राशकी पलपिंन ॥ चच पुटें लेई ऊ ऋियो रे, सहसा ते भारन ॥ ध० ॥ २१ ॥ नज मार्गे ज्यां सचरे रे, जलनिधि माहि विहग ॥ तेहवे बीजो सामुहो रे, श्राव्यो भारन तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ श्रा मिष लोर्जे तेहशु रे, मने जूऊ तिकोई ॥ लनता चच थकी पने रे, ठटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ श्रासु रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के कोई जोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४ ॥ के धारा हरिवज्ञनी रे, के दामिणी थे दोट ॥ ईम रूण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊची कोट ॥ ध० ॥ ॥ २५ ॥ बाला गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनवका र ॥ तरता गज मत्स्य ऊपरें रे, पनी सुकृत श्राधार ॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खर्में ए थई रे, निरुपम श्रीजी

ढाल ॥ पुण्यथकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय माल ॥ ध० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पक्षी, जखपूंठें निर नाथ ॥ पण जो ए जल बूडशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मरण समय इम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आराधन हेतुक ज्ञणे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार पद सांज्ञले, जख वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी सूचवे, पूर्वागत संबंध ॥ ३ ॥ रहि क्षणिक थिर चित्त ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, जुज लंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदयनी दिशा, हजी अछे केतीक ॥ हाले नहीं जल उदरनुं, चाले इम मत्स ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दीसंत ॥ के सुरपादप वेलडी, चलगिरि शिर विलसंत ॥ ६ ॥ संशय एम पमाडती, खगकुलने गजगेल ॥ चाले छांटी जल कणें, जोती जलनिधि खेल ॥ ७॥ सुखें सुखें प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिछ ॥ उदधितिलक वेला जलें, कुशलें पोहोतो मछ ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पुरनो धणी रे, कंदर्प नामें ज्ञूपा

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चडिले अरिनो सालो॥ चढीयो नृपकुल शाल निशको, दिगिकि कुमारें देवा मी रूको ॥ रगें रमतो सायर कठें, आव्यो वींट्यो सुभट उल्लठे ॥ जीराजेंद्र जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे कुर्दंत, सीमाला भांजवी रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर सालामो जल आवतो रे, जलमां नूपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, बेठो तेहनी पीठे ॥ बेठो तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा सारू, मलया माणस खाते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ एक जणे गरुडें चम्यो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे ठे स्वछंदो॥ आवे ठे नृप चाले मानो, कोलाहलथी जाशे पाठो॥ मौन धरी निरखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही थाटें ॥ जी०॥ ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥ शुलादकें सुदरी रे, उतारे महीं धीर ॥ उतारि मही बाहिर मोर्के, सुदर थल भूमि जई ठोके ॥ प्रणमी वाळियो पाठो ठानो, वली वली जोतो मुख प्रमदानो ॥ जी० ॥४॥ थयो अदृश्य मह्या जलें रे, रयणायरमां मीनो ॥ नृपति त्यां मलया कन्हे रे, आवे विस्मय ही

नो॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आदें सकल चवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी इम कह्युं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरिं नेहथी रे, मछ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां रे, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक्र चक्रनां व्रण जूउ गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही, जमीय घणुं दीसे जलमांही जी० ॥ ६ ॥ कोपवशें को वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण नांगे पमी रे, मछवांसे किहां दूरें ॥ मछवांसें बेठी इहां आवी, इम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो नायक, कंडप नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुंण तु किम मीनें धरी रे, आफलती डुःख दीहें ॥ आफलती आवी पुर घणें, हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मुज दीहा धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो लहुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरित्रार्थ होये डुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज विहुं पखनो वेरी ॥ जी० ॥

॥ ए ॥ ए नृपनें हुं उंलखु रे, तात श्वसुर कुल द्वेपी ॥ शीलविलखी माहरु रे, लेशे सुत सपेखी ॥ लेशे सुत इम चिंती नि शासी, बोली वाला फुःख चकासी॥ मुज चिंता तुमनें ठे केह्वी, पुण्य विना रजलु तु एही ॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पजणे नृपनें रे, भारी ए फुःख धारें ॥ न शके इष्ट वियोगथी रे, कहेवु कांई करारें ॥ कहेवु कांई शके मत पूठो, फुःखमां वली वली लागशे उंठो ॥ मीठें वयण हुवे श्रासासी, उपचरणा कीजें कांई खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वली नृप पूठे मानिनी रे, नो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें कहे माहरु रे, मलया नाम निकाम ॥ मलया नाम निकाम नगारो, तेहथकी न लह्यो फुःख श्वारो ॥ सन्मानी नृप मंदिर श्राणी, सुख सार्जे राखी जिह्वा राणी ॥ जी० ॥ १२ ॥ श्रण सरोरुह उंपधि रे, रूऊवियां भण तासो ॥ दासी दास समीपनें रे, थापी पृथग श्रावासो॥ थापी पृथग वसन शणगारें, सतोपी नृपें तेणी वारें ॥ मुजनें इम नृपति सतकारें, वारु नहीं श्रागें इम धारे ॥ जी० १३ ॥ ते दिनथी ततपर हुई रे, करवा धर्म विशेप ॥ ध्यान धरे श्ररिहंतनुं रे, ठांमि भ्रम विश्लेप॥ठांमि भ्रम विश्लेप ।वसेकें, श्रा

ाधे जिनधर्म सुटेकें ॥ चोथे खंमें चोथी ढाला, कांति कहे रहे सुखमां बाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपति जणे, मलयानें धरी राग ॥ न ङे मुजनें आदरी, कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बंध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिय लाग ॥ उचित हेममय मुड्रिका, श्रहेवा मणि पर नाग ॥ २ ॥ तुज वचनामृत चंड्रिका, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दयिता मोजमी, तुं शिरशेखर गोर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ बे पख निवहे रस दिये, जिम रथ चक्र युगेण ॥ ४ ॥ मुज मन लागुं तुज्ञ शुं, वाखुंही न रहंत ॥ कोमि विकल्प कदर्थना, लत्ता पात सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाएये आदरे, तो रस व धतो होय ॥ नहीतो पण ठे मुज वसू, हीये विचारी जोय ॥ ६ ॥ जाइश कीहां पाने पमी, नहीं मूकुं हवे दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥ ॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे ठवी, ठानी हीये निघट्ट ॥ वचनगमें ते डुष्टता, नृपें करी प्रगट्ट ॥ ८ ॥ धिग मुज यौवन रूपनें, लवणिम पमो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी, लहुं लाख जंजाल ॥ ए ॥ बूमी कां नहीं जलधिमां, ऊ

खे उतारी कांइ॥ नरकोपम दु खमां पडी, हे हे पाप प
साइ ॥ १० ॥ चाहे शील विखंडवा, कामघल नृप धी
ठ ॥ मरण शरण जीवित थकी, अदल व्रतनें इठ॥
॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, जाणो निरखी घा
स ॥ धिधिग्धु तन मन सथरी, बोली ईम ततकाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥ ठेको नाजी ॥ ए देशी ॥

॥ ठेको नाजी, नांजी नांजी नांजी, ठेको नाजी ॥
नारी नरकनी कूडी ॥ ठे० ॥ आपे दुर्गति ऊंडी ॥ ठे० ॥
अनुचित करनां मीठडा बोलां, लोक कहे छा दाजी ॥
केई विरला हित मारग दाखे, तेहिज थाजी साजी
॥ ठे० ॥ १ ॥ परनारीथी सपद निकसे, विकसे अपयश
माला ॥ पुरुष पतगा झपण पतो, विषम अगनिनी
जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे,
लागो जिम मशि बिंदु ॥ तिम परदारा सगति राहु, म
लिन करे गुण इंदु ॥ ठे० ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट वि
णसाडे, परनारी रस छांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिपग
वींधे, व्यसन महाविप कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ दीपत फ
र विषधरना मुखमा, जिम जीवितनो सांसो ॥ तिम
सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे० ॥
॥ ५ ॥ निज नारीथी भूख न भांगी, शु विलखे मुज

माटे ॥ भृत जाणे जो तृप्ति नहीं तो, शुं एवुं कर चाटे ॥ ठे० ॥ ६ ॥ काननना तृणमांहे तुं सूतो, आग ठंशीसें सलगे ॥ शीखरूली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥ ठे० ॥ ७ ॥ हीये विचारी निरख रे घेला, महि लामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इंद्रायण फल साचे ॥ ठे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलह नुं, मोक्षपथिक पग बेडी ॥ अति आसंगें अबला विलगी, नाखे कुगति जथेडी ॥ ठे० ॥ ए ॥ शठ जन नें पण वलगी खटके, जिम खर पूंठे ढांची ॥ परदा रा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ ठे० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवने आहूति देवा, नारी हुताशन कुंडी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिंडी ॥ ठे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अतिं रागें ॥ तुं नय ठंडी अनय मग हींडे, तो कहीयें को आगें ॥ ठे० ॥ १२ ॥ चूकवतां दुष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां हुये दुलहो जीवंते, दृग विष नाग नगीनो ॥ ठे० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह जणी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ ठे० ॥ ॥ १४ ॥ वंश विशाल विमल कुल लाहारुं, जरियो गुण

सदोर्हे ॥ तो कां कुमति प्रसगें जोखा, पररमणीशु मो हे ॥ ठे० ॥ १५ ॥ समजाव्यो बहु नय देखाकी, रा मायें रस जरियो ॥ महा कलुष परिणतिथी धीठो, तो पण नवि ठंसरियो ॥ ठे० ॥ १६ ॥ ए नारीनु जोरें पण हु, मूकीश शील विखकी ॥ सुखें करजो जसम धपुप ए, ईम चिंति थिति ठकी ॥ ठे० ॥ १७ ॥ विख ख वदन कदर्प्प नरेसर, राज काजमा वखग्यो ॥ प्र मदा मिखन महोत्सव वन्हि, हृदय सदनमा सखग्यो ॥ ठे० ॥ १८ ॥ निर्जख देश परूपो जिम माठो, तिम नृप विरही तलपे ॥ दृष्टि प्रसगादिक मन्मथनी, दशे दिशा शशि विलपे ॥ ठे० ॥ १९ ॥ आवर्जन करवा नृप तेहनें, वस्तु नवल नव मूके ॥ सती शिरोमणि वस्तु विशेषें, सुपनतर नवि चूके ॥ ठे० ॥ २० ॥ वदन थयु जाखु मन पसर्या, चिंता जलधि तरगा ॥ मरणोन्मु ख मलया थई बेठी, राखण शील सुरगा ॥ ठे० ॥ ॥ २१ ॥ धन्य धन्य शील धरे सकटमा, जे निज मन थिर राखी ॥ ढाख पाचमी चोथे खर्फें, कातिविजय बुध जाखी ॥ ठे० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस एक सूरुलो, तरुवर कोइ तका

य ॥ मुख ठवि फल सहकारनुं, गयणें ऊड्यो जाय ॥ १ ॥ चंचथकी त्यारें खिस्युं, जिहां अगासें राय ॥ नत्रथी नृपना अंकमां, ते फल पमियुं आय ॥ २ ॥ चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अव सर विण किहांथी पम्युं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥ अठे एक पुरपरिसरें, छिन्नटंक गिरितुंग ॥ तास विषम शिखरें सदा, वनना अंब अत्तंग ॥ ४ ॥ आएयुं तिहांथी सूमले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पम्युं तस वदनथी, त्यारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व ल्लन प्रत्यें, के आरोगुं आप ॥ क्षण एक एम विमासतो, नृपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुन्नटने फल ग्रही, पोहोचो मलया पास ॥ अंतेउरमां आणजो, आपी अति विशवास ॥ ७ ॥ नृपति वचन तथा करी, सुन्नट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरशुं तेणें जई, मलयानें फल दीध ॥ ८ ॥ विणकालें किम संन्नवे, ए फल अनुपम आज ॥ विस्मित ईम नृपजणथकी, लीये अंब तजी लाज ॥ ९ ॥ सत्यापी फल आपीनें, थापी नृपति धाम ॥ उत्थापी कहे रायनें, पापी निजकृत काम ॥ १० ॥ महादुःखें दिन नीगमे, तकत

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस्त हूउं दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल छठी ॥ वींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एसो चूको मुज मन त्रासे हो ॥ नृपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, काइ न चर्के मन विशवासें हो ॥ नृ० ॥ १ ॥ सुंदर शील वी गोशे, आउं नें अवसु न जोशे हो ॥ नृ० ॥ शाख लाखीणी खोशे, तो सूल किस्यो हवे होशे हो ॥ नृ० ॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी जगिनी शी ल ज्जा हो ॥ नृ० ॥ बांधे चाली धज्जा, नवि जाणे ख ज्जा अखज्जा हो ॥ नृ० ॥ ३ ॥ इम धारी वेणी टंटो ली, काढी कचमांथी गोली हो ॥ नृ० ॥ आंबा रस मां चोली, वींदी करी मूखी घोली हो ॥ नृ० ॥ ४ ॥ नर हूउं फीटी नारी, दिव्य रूप कला सचारी हो ॥ ॥ नृ० ॥ सुंदर यौवन धारी, जाणे मन्मथनो अवता री हो ॥ नृ० ॥ ५ ॥ वेगे मंदिर जासें, अंतेउर स्या ख निहाले हो ॥ नृ० ॥ सूनो जिम रह्यो आलें, सुर सरुनी साख विचालें हो ॥ नृ० ॥ ६ ॥ अद्भुत रूप निहाली, थई राणी सवि कोलाली हो ॥ नृ० ॥ जा णे सचे ढाली, इम यजी रही विरहाली हो ॥ नृ०

॥ ७ ॥ चिंते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु हो ॥ नृ० ॥ ए सुरपति अवतारु, कहुं अवर पुरुष ते कारु हो ॥ नृ० ॥ ८ ॥ वसुधाथी नीसरियो, कोइ प्रत्यक्ष ए सुरवरियो हो ॥ नृ० ॥ विद्याधर गुणें भरियो, के सिद्ध पुरुष अवतरियो हो ॥ नृ० ॥ ए ॥ पीमी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥ नृ० ॥ वेधी आरें पारें, तस रूप महारस धारें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १० ॥ यामिक संशय पेठो, जोखें कुंण गोखे ए बेठो हो ॥ नृ० ॥ अंतेउर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें हो ॥ नृ० ॥ ११ ॥ नृपतिनें वीनवियो, आव्यो नृप त्यां धसमसियो हो ॥ नृ० ॥ नीरुपम तरुणो दीठो, अति शांत सुखासन बेठो हो ॥ नृ० ॥ १२ ॥ कुंण ए पेठो सौधें, चिंते नृप चढिउ क्रोधें हो ॥ नृ० ॥ मलया बदले योद्धें, कुण मूक्यो मुज अवरोधें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दबावी, पूछ्या भरु भृकुटी चढावी हो ॥ नृ० ॥ ते कहे मलया आणी, न गई क्यां बाहिर जाणी हो ॥ नृ० ॥ १४ ॥ बेठा ठां घर द्वारें, राजेसरजी निरधारें हो ॥ नृ० ॥ कहे नृपति चित्त धारी, नर ए थयो तेहीज नारी हो ॥ नृ० ॥ १५ ॥ नृप पूछे जई पासें, तुम रूप किस्युं ए भासे हो ॥ नृ० ॥ ते कहे

जेहवु देखो, तेहवो तु इहां शु लेखो हो ॥ चू० ॥
॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो, सिद्ध साधकथी पण
न्यारो हो ॥ चू० ॥ मलयाना इणें उमही, पहेर्यां
ते पट ते सिमही हो ॥ चू० ॥ १७ ॥ में रति रस
मागतें, नर रूप धर्युं कोई ततें हो ॥ चू० ॥ जाणु म
लया एही, बेठी उलखानें सनेही हो ॥ चू० ॥ १८ ॥
महीपति कहे सेवकनें, इम अतेउरमा न बने हो
॥ चू० ॥ करशे अनरथ गाढो, कर साही बाहिर का
ढो हो ॥ चू० ॥ १९ ॥ मलय सुंदरी इति नामें, का
ढ्यो बहि भुज ग्रही तामें हो ॥ चू० ॥ बाह्य एहे
नृप राखे, एक दिन वली पहवुं भाखे हो ॥ चू० ॥२०॥
रूप कर्यु शे योगें, नरनुं कुण तत्र प्रयोगें हो ॥ चू० ॥
हतु स्वाभाविक जेहवुं थाशे किम क्यारें तेहवु हो
॥ चू० ॥ २१ ॥ तब चिंते सा हियडामें, विलसे जूठे
जोगनें कामें हो ॥ चू० ॥ मौन करयानी वेला, रहेशे ब
की पहनी मेला हो ॥ चू० ॥ २२ ॥ मलया बाजी जी
ती, चूपतिनी मति गति बीती हो ॥ चू० ॥ उठी जो
ये खर्चे, कांसें कही डाल धमकें हो ॥ चू० ॥ २३ ॥

॥ दोहा

॥ कसी कसी नृप पूछीयुं, हसी न मेले मीट ॥

तीखो लागो ते तदा, जिम बावलनो नीट ॥ १ ॥ मलयकुमरी ऊपर हूउं, रोषारुण नूपाल ॥ मंमावे तन तर्जना, दिन दिन बूरे हवाल ॥ २ ॥ तामे ताते ताजणे, मारे लाठी लात ॥ मुक्की वली चूकी दीये, पामे नामी घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश नूतलें, आकर्षे पग बंध ॥ हर्षें पर्षद निरखतें, धर्षें दे पग खंध ॥ ४ ॥ सिंचे नीचें कूपमां, निहणे पूंठि निबंध ॥ मोटे सोटें चोटीनें, नर्म करे तन संधि ॥ ५ ॥ नृपसुत इम तामी जतो, चिंते हे किरतार ॥ कहीयें इहांथी नीसरी, लहीशुं डुःखनो पार ॥ ६ ॥ एक दिवस निद्रावशें, पड्यो निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरें, वहे कुमर मधरात ॥ ७ ॥ पथिशालायें वीशम्यो, धरी मरण मन आश ॥ दीठो नमत इहां तिहां, अंध कूप तस पास ॥ ८ ॥ तस कंठें ऊनो रही, चित चिंते दिलगीर ॥ पमशुं जो कर नूपनें, तो दहेशे बे पीर ॥ ए ॥ शरण नहिं म्हारें इहां, मरण विणा कोइ ऊर ॥ इष्ट संनारी आपणो, इम बोली तिण ठोर ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ ऊधवजी कहेशो बहु न कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रनुजी डुःखणी कांइ हुं सरजी ॥ ए आंकणी ॥

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटीकरे हियपूर जी ॥ प्रीतम विण न शके कोइ साधी, लाग्व मले जो नर जी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वाहालानो मुज देई वीठो, डु ख स कटमा नाखी ॥ चाम्य रहित ज्यां त्यां हु भटकु, मधु भूखि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ देव अदारा महाबल सार्थे, ए भव दीधो वियोगो ॥ परभव कत पणे मुज तेहनो, मेलवजे सयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूआ शिर क भी नररूपें, देती इम ठंलभा ॥ सज्ज हूइ कूपें ऊपावा, प्रेम भरी निरदभा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें जोतो, महबल ते दिन शेषें ॥ पश्चियशाखमां रातें सूतो, निंद सही नवि लेशे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावु जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मलयायें जे दीया ठंलंभा ते कानें जई वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अ पूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागना सूचक प्राई, पम्ठंदे भन्न मार्गे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सभ्रमथी ऊठ्यो त्यां चमकी, कहेतो इम मुख वाणी ॥ विफल महा साहस रस लेखें, मरण लीये कां ता णी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुनु, इम कही ऊपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूठें तिमहि ज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा नाख्यो, लघु सादें इम नांखे ॥ मुज अब लाने ए डुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो ऊठी पासें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधे, इणे मुज नाम संजाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, डुःखमां हियमे धाख्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे साचुं कुंण तुं बे, कां पमियो इम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तूं बे किम आयो कूपें, पमियो कां मुज केमें ॥ इत्यादिक पूठी सहु पाबें, काम करो एक नेमें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज बिंदी, नांखुं जिम स्वसरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयालुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप नींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ डुर्लज्ञ दयिता दर्शन देखी, उत्कंठ्यो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आज्ञें वूठा घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥ इम

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटीकरे हिय पूर जी ॥ प्रीतम विण न शके कोइ साधी, साख मखे जो दर जी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वाहाखानो मुज देई वीठो, छु ख स फटमा नाखी ॥ भाग्य रहित ज्या त्या हु भटकु, मधु भूखि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ देव अटारा महावख सार्थे, ए जव दीधो वियोगो ॥ परजव कत पणे मुज तेहनो, मेखवजे सयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूष्या शिर क भी नररूपें, देती इम ठंखजा ॥ सङ्क दूह कूपें ऊपावा, प्रेम जरी निरदजा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पहचे त्यां दयितानें जोतो, मह्वख ते दिन शेपें ॥ पहियशाखमां रातें सूतो, निंद खही नवि खेशे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावु जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मखयायें जे दीया ठंखजा, ते कानें जई वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अ पूरव वचन प्रियाना, सरखा सुणतां खागे ॥ प्राण त्यागनां सूचक प्राहें, पक्ठंदे नज मार्गे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सन्नमथी ऊठ्यो त्यां जक्की, कहेतो इम मुख वाणी ॥ विफख महा साहस रस खेखें, मरण खीये कां ता णी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज मह्वख पीयुनु, इम कही ऊपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूर्ठे तिमहि ज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा नाख्यो, लघु सादें इम नांखे ॥ मुज अब लाने ए दुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो ऊठी पासें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधे, इणे मुज नाम संजाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुःखमां हियडे धाख्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे साचुं कुंण तुं बे, कां पडियो इम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तूं बे किम आयो कूपें, पडियो कां मुज केडें ॥ इत्यादिक पूछी सहु पाछें, काम करो एक नेडें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज बिंदी, नांखुं जिम स्वसरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप नींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ दुर्लभ दयिता दर्शन देखी, उत्कंठ्यो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आनें वूठा घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥ इम

कहीनें नयणें जल जरतो, पूछे तस विरतंत ॥ सापि
कहे हियमे ऊःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र०
॥ १९ ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी ऊःख अ
नुजवें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह्यां
किम अगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे ससरोंरें,
ऊरणीनें सुत लीधो ॥ अठे किहां ते सा कहे शेठें, मू
क्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ सहेश्यो किम न
दन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सवि
होशे जो इहांथी, बुटक वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥
मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूछ्यु वली दायतायें ॥
आप चरित्र सघलां ते जांखे, कुमर यथा इहायें ॥
॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख सजायण करता बेहु,, रजनी त्यां
निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पजणी कांतें उ
माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥रयणी गई प्रगम्यो हूउं, ऊग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुपद
जोतो राजिउ आवे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निरखी बे जण
कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जूउं सहजरूपें प्रिया,
विलसे ठे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुजग
ता, येंनंा गुण विज्ञान ॥ युगती जोमी जोगता, चू

ल्यो नहिं नगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोने अनुपम जोमलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अन्नय हजो तुमनें विन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस वंठ ॥ ५ ॥ नृपें विहुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीजनें नृपति तणो, मलया नणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाठें कम जात ॥ कीधी कोरि कर्दथना, कामांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी निखर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूपथी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा योग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूमी जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उद्धरीयें रंगमां रू० ॥ बेठो इम कहे तो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नृपति कहे जणनें पहेली धणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम उचें नीचें सेवक खींचे

जोरशु रू० ॥ गयणागण गहेरो कीधो घहेरो सोरशु रु० २ ॥ आतम तत्त्वरुक जाणे कररुक सापना रू० ॥ निरखत नराणा कलश पूराणा पापना रु० ॥ अंध कूपक आरें आवे करारें ज्यां त्रिया रू० ॥ चूपें ग्रहि ताधा वे कर आधा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ सुख माहिं उतारी घाहेर नारी राजिये रु० ॥ बेठी पिठ विहुणु ऊणु डुणु मन किये रू० ॥ महबल तस केरें आव्यो नेरें काठमे रू० ॥ कोपें कलुपाणो नरनो रा णो दीठमे रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रुपें अधिको मोपें ठवीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वर कीयो रू० ॥ मुज मीटथी रमणी राखी जमणी ए जुवे रू० ॥ मीठो गोल पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥ माद लिठे मार्यो स परिवार्यो गोठिनो रू० ॥ नाखु अ ध कोठीमां जिम पोठी पोटिनो रू० ॥ धापी ईम टूं की कापी मूकी दोरडी रू० ॥ बधनथी छूटी माची चूटी उधरडी रू० ॥ ६ ॥ पर्कित ततलेवा खातो ठेवा कोरनां रू० ॥ नीचें ढल लागा लागा काठा जोरना रू० ॥ नारी तस पूठें पगवा ऊठे साहसें रू० ॥ चू वें कर साही राखी वाहीनें तिसें रू० ॥ ७ ॥ आणी आवासे राय प्रकासे तेहनें रू० ॥ कुण ए रस जार

यो तें आदरियो जेहनें रू० ॥ पूछी नवि बोले आंसू ढोले दुःखनां रू० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न बोटे इकमना रू० ॥ ॥ ८ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा लागी एहवो रू० भोजन पिउ पाखें न करुं लाखें जेहवो रू० ॥ मूकी एक महेलें थाप्या गयलें पाहरु रू० ॥ बेठा जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ९ ॥ था शे किम कूपें नाख्यो भूपें नाहलो रू० ॥ नीसरशे क्यां थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर ती इहरुं भरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर ती दाहाढो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां अण ल हेती, विरहें दहेती देहमी रू० ॥ ॥ निशिमां एक मा गें भूतल भागें ते पमी रू० ॥ फूंकी विषधरियें रोषें भरिये क्यांहिंथी रू० ॥ बोली अहि विलगो न रहे अलगो आंहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संभारे जिन मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उछाल्यो वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो भूपति आयो व्याकुलो रू० ॥ १२ ॥ उपचार घणेरा कीधा भलेरा जे घट्या रू० ॥ साहमा विष जोला लहेर हिलोला ऊमट्या रू० ॥ इंद्री थयां शूना चेतन ऊना धारणें रू० ॥ एक सास

उसासो मन्नित मासो दाण दाणें रू० ॥ १३ ॥ ते दु ख निशि प्रहेती न सहे यहेती विभ्रमो रू० ॥क रया तन ताजी प्रगट्यो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप तिवारें श्रति दुःखें रू० ॥ पम्हो यजमावे साद पमावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कन्या वधुर रणरग सिंधुर तेहनें रू० ॥ श्रापे नृप रा जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फस्या रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पथ थोंके सचस्या रू० ॥ १५ ॥ थानक सवि जटकी पाठा ठटकी नें वस्या रू० ॥ नृप जवननी वाटें श्रावे उमाटें सख जस्या रू०॥ चोथे खर्में चावी ढाल सोहावी श्रावमी रू० ॥ कहे कांति उमगें रसने रगें ए गमी रू०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक श्रजिनवो, पम्ह उवे त्यां श्राय ॥ नृप सुजटें नृपति कन्हें, श्राएयो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत मुख नृप उंखखे, श्रहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, श्राव्यो दीसे श्राहिं ॥ २ ॥ दैव हएयो मुज वैरीयें, कीधो केण कुकर्म ॥ मुजनें श्रख गो जाणीनें, काढ्यो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ इम चिंति

अण उलखू, थयो गोपिताकार ॥ करवा स्वारथ सा धना, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गाढा मारूजी, जमर पीवे जाठी चगें ॥ अमली पीवे कलाल रे ॥ गाढा मारु अति उनमादी माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम वखतें आव्या जलें, उपकार क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे, मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम सरिखे आजूबणें, पुहवी तल शोजंत रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विष वालण तणुं, काम करो लेई हाथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रणरंग आपुं हाथियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ मो० ॥ लाखिणुं लोकां विचें, ए बे यशनुं काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं मुख बो ल्यायकी, आपीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, आपीश मां तुं कांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज सुंदरी, जो पण निर्विष थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ४ ॥ ॥ मो० ॥ आवी देशांतरथकी, नहीं केहने संबंध रे ॥ मो० ॥ क० मो० ॥ एहवी मुजनें आपतां, कर

शे कुण प्रतिबध रे ॥ मो० ॥क०॥ ५ ॥ मो० ॥ सकट पडि
यो मही्पति, कहेे तुज देईश तेह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ बीजा पण मुज केटलां, काम करीश जो ते
ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे कहेशे नृप का
म ते, करिनें तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ले
जाईश निज भारजा, चिंते एम सगर्व रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नृप वचन अगी करी, आव्यो
मलया समीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मूर्छागत दीठी
त्रिया, मूकी गरल उदीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ८ ॥
॥ मो० ॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जजर्रें नय
ण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रोषें मन काबु करी, बो
ल एम वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ९ ॥ मो० ॥ ग
त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ तोपण अगें आगमी, करशु कु
प्रतिकार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥ प्र
सर निषेधी लोकनो, धरणी करो जल सित्त रे ॥ मो०
॥ क० ॥ मो० ॥ तिमहिज नृपने सेवकें, कीधी
धरा सुपवित्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो० ॥
भूपति आदें जन सवे, बेठा बाहिर आय रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ कुमरें मरुल मागीयु, विष वालक

नो उपाय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १२ ॥ मो० ॥ मंडल मां पूजी विधें, ध्यान धरी महामंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, विष वालक मणितं त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १३ ॥ मो० ॥ ढाली मणि जल सिंचीयुं, विकस्यो लोयण लेश रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांक्या ज्यों रवि तेजथी, कमल हशे एक देश रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल सिंच्युं तदा, वलिया सास उसास रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ लोचन पूरां उघड्यां, कमल ज्यों पूर्ण प्रकाश रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १५ ॥ मो० ॥ सर्वंगें जल सिंचीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ऊठी आलस मोमती, करती हाव विशेष रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पउधास्या प्रभुजी इहां, कूपथकी किण रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी मुजनें किम करी, पूछे सा धरी प्रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पडीयो हुं जई हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजें एक शिला, दीठी मणिधर हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १८ ॥ ॥ मो० ॥ ढाने जइ मूठी हणी, उघडियुं तदा बार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर सलक्यो पर मुहें,

पेठो हुं तिण ठार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १९ ॥ मो० ॥ साहस धरि हु चालीयो, विवरें धरणी मांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीवीधर थयो, आवे पूठें उछांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ एह सुरगा चोरनी, तिण वली बीजु बार रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवु चिंतवी, आघो कीधो प्रचार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे मुख आगें थई, मणिधर नाठो तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल उल्लस्यु, जिम जरुता जरु चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुसारें हु चालतो, आयडीयो जई द्वार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ चरणें हणी बीजी शिला, नाखी उलटी तिवार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ धार विवरनु उघडधु, नीसरियो वहि आय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ जन्म्यो गर्भावासथी, चिंत्यु ईम अकुलाय रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आघेरो चाल्यो वही, जोतो अहिगति लीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ शिलाशिरें दीठो अही, बेठो थई निर्भीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २५ ॥ ॥ मो० ॥ मत्र जपी ते वश कीयो, लीधो तस मणि नग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीयें सम

शानमां, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥
॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे मूउ, चिंती इम शिल तेय रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांकी बार सुरंगनें, नीसरियो
उमहेय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २७ ॥ मो० ॥ ठाने पुरमां पेसतां,
निसुण्यो पम्ह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पू
ब्युं जाण्युं ताहरें, व्याप्यो विष उन्माद रे ० मो० ॥
॥ क० ॥ २७ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सांसही, प
म्ह ठव्यो पण बंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणि
योगें साजी करी, गाव्यो विषनो गंध रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ २ए ॥ मो० ॥ बांध्यो वचनें सांकलो, धीठो
पण नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ देशे तुजनें मु
ज जणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३० ॥ मो० ॥ पीयु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खं
म विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय
नांखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरें नृपति तेमीउ, आव्यो अधिक प्रमोद ॥
निरखे बाला हरखथी, करती वात विनोद ॥ १ ॥ शिर
धूणी नृपति नणे, अहो शक्तिनो खेल ॥ अम दुःख
साथें जेणीयें, फेंक्यो गरल उवेल (प्रवाह) ॥ २ ॥

अति विस्मित वसुधाधवें, पुछ्यु नाम निवेश ॥ सिद्ध पुरुष इति तेहनी, निज कहे नाम निर्देश ॥ ३ ॥ जिमी नहीं गत वासरें, विरची वाला एह ॥ उचित जमाम्रो तेह जणी, कहे भूप ससनेह ॥ ४ ॥ पय पाक सा कर रसें, पावे कुमर सहाथ ॥ स्वस्थ हुई वातो करे, ते नृप सुतनी साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पथीम्रा रे सदेशमो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर जणे जूपति प्रत्ये, करो शीख सुजाण ॥ थो मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण ॥ १ ॥ हुरे विदेशी पथियो, न सहु ढील लगार, ॥ मुज मन उतनु उत्सुकी चालण निरधार ॥ हु० ॥ २ ॥ काइ विचारो राजिया, करो कोम्हि विषाद ॥ रुलया थाशो लोकमा मूक्या मरयाद ॥ हु० ॥ ३ ॥ रवि जलधर जलनिधि शशी मूके नहिं स्थिति आप ॥ तिम नृप पण नवि उथपे कुलवट स्थिति थाप ॥ हु० ॥ ४ ॥ आपी मलया गहनें थाउ राजि प्रसन्न ॥ दंपती उ ल्लिया मलयी करो सत्य वचन्न ॥ हु० ॥ ५ ॥ सम जाये इम जपन पुरना लोक समस्त ॥ आपूर्यो ते मातनी पाप मदमस्त ॥ हु० ॥ ६ ॥ तेण समय अ ण थाप्या रही मांहे बीजी वात ॥ हे हे निठुर पणा

तणी, जूठे जूंठी धात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूछे नरपति सिद्धनें, लोयण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहशुं, श्यो सगपण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी, पामी मुज्झ विजोग ॥ दैवदयाथी माहरो, लही आज संयोग ॥ हुं० ॥ ए ॥ अवनीपति आखे वली, कर एक मुज काम ॥ ढील नहीं देतां पछें, तुजनें एह वाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ दुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे चलाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां बाली तेहनुं, कीजें जस्म शरीर ॥ लेपें शिर पीमा हरे, तेह जस्म सनीर ॥ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ उषध ए तुजनें जलें, करवुं माहरे काज ॥ सोंप्युं दुष्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ लुब्ध्यो मलया देखीनें, निर्लज ए नरराज ॥ मुजनें हणवा कारणे, सोंपें एहवुं काज ॥ हुं० ॥ ॥ १४ ॥ अधमें मुजनें सूचव्युं, पहेलुं पण एह ॥ करशुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे छेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥ मरण विना कुंण करी शके; दुःख संजव काज ॥ अंगीकस्युं में धुरथकी, न कस्या मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ एम धारी साहस ग्रही, बोल्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिंता न करो राजिया, कारज ए में लीध ॥ हुं० ॥ १७ ॥

दुर्लभ उपध तादृश, करखुं में निरधार ॥ तु पण प्रम दा आपता, मत करजे विचार ॥ दु० ॥ १८ ॥ फो गट गाल फुलाविनें, कहे भूप हसत ॥ उपकारकर्ने आपता, कहो शुं खटकत ॥ दुं० ॥ १९ ॥ कठिन स्त्वय नरराजियो, हरस्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दंपती जुजु आ, जण थापी नि कृष्ट ॥ दु० ॥ २० ॥ मंदिर आवे मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खंडनी, कातें कही ढाल ॥ दु० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा उचित विधान ॥ काठ शकटपरि जोतरी, मूके ज्यां समशान ॥ १ ॥ निरखी विषम कर्त्तव्यता, दु:खियां पुरखां लोक ॥ हाहा नरमणि विणसशे, इम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ ठे हला आनूपण धरी, वींट्यो राज सुजट्ट ॥ पश्चिम पो होरें पितृवनें पोहोचे कुमर प्रगट्ट ॥ ३ ॥ व्यतिकर लोकथकी लहे, मलया पिनुनो व्याप ॥ संतापी विर हानलें, विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ ऊन कलालणी भर प्र मो हे, दारुडारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज योवन रूपनें हे, धिग मुज जनम अ

काय ॥ आपद पमियो जेहथी हे, मोहें लोचाणी ना थ ॥ प्राण प्यारो बलवा हे कांइ जाय० ॥ १ ॥ पहेलो डुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरद्ध ॥ ए वेलामां साहेबा हे, कुंण ग्रहशे तुज हद्ध ॥ प्रा० ॥ २ ॥ काठ कुठी मां नीमियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशे क्यां थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा ही नृपतिनमें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे कि म पीमा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय ॥ कांइ जीवामी पापिणी हे, हुं हुइ जे डुःखदाय ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियमे घे घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोमीयां हे, ए वेला जगदीश ॥ तरछोमी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ प्रीतमली हीयमे वसी हे, लागें मीठी गा ढ ॥ साले बूटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥ ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पमजो शिल शिर तेहनें हे, पाड्यो जेणे वियोग ॥ पारजन तेहनां रखमजो हे, जिम का प्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ए ॥ विलपत प्रमदा खीज ती हे, डुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें

हे, थे जल अजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखु नय
णें नाहलो हे, तो मुज भोजन वात ॥ बेठी एहवु
आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप
नंदन समशानमा हे, आर्ही तिहा निरखी ठोर ॥ खरूके
इछित धानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥ प्रा० ॥ १२ ॥
साहस देखी तेहवु हे, पुर जण मलिया धाय ॥ विस
गिरी धरता हिये हे, नृपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥
॥ १३ ॥ देव विचार्या विण ईस्यो हे, मांड्यो कवण
अन्याय ॥ राखमिशें पशुनी परें हे, हणियें नहीं सि
रूराय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो जले हे,
पण मारो का एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी क
रुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नृप जपें ए भामि
नी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी काठी हुवे हे,
जो नर ए जीवत ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ ए बाला विण मा
हरे हे, न पके जक पल मात ॥ मत पकजो ए वात
मा हे, सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय
तव निहां बोलीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहनी
तुमने पकी हे, मेलो ठो इहा तान ॥ प्रा० ॥ १० ॥
पोतानें पापें पची हे, मरशे जो दु ख आणि ॥ तो
नगरीमा केहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

राजानें मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ते हवा नररत्ननें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ गरभिशें आरंभियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि दुर्मति ए बेहुनें हे, गरज पडशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज गाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पियु लेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंमें अग्यारमी हे, कांतें पन्नणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संभारी आपणो, परवरियो जनवृंद ॥ दक्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पुरजन मुख हाहा रवें, आपूस्यो आकाश ॥ लोक हृदय कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृपसुत उतपति, पडे चितामां जाम ॥ ततक्षण पुरजन नेत्रथी, पसस्यां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तमाके तोकी ठे दुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुन्नट विकट चयमांहि, पेठो कुमर जिवारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाड्यो, पसरी जाल तिवारें ॥ १ ॥ झबाकें जलकी ठे दिगमाला,

तापें कटकण लागा काठ ॥ चमाकें चमकी ठे सुर
माला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी,
दिशिदिशि अंबर गयो ॥ श्यामघटा करी पावक रूपें,
जाणे पावस आयो ॥ क० ॥ २ ॥ वन्हि पतग उर्मे
तगतगता, खजुआ जिम चिहु ओरें ॥ जाल वीज
ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ क०
॥ ३ ॥ सात जीभ शतजीभ थईनें, नजलल चाटण
लागो ॥ तस उदीपक पवनसहायी, विशमो थई त्यां
वागो ॥ क० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशसे, तस
हा रव श्रण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानल देखी,
सुजट वख्या गुण थुणता ॥ क० ॥ ५ ॥ जिम कीधुं
तेणें तिम नृप आगें, भाख्युं सकल बनावी ॥ नृप
प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥ क०॥
॥ ६ ॥ हुर्ज प्रजात मिजा तनु तारा, ढाक्या सूर प्रजा
वें ॥ तब शिर रक्षा पोटि धरीनें, आवे सिद्ध स्वजा
वें ॥ क० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमगें, पग प
ग पइचुं पूठे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांथी, शिं
शें पट कीस्युं ठे ॥ क० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा लेइ
हुं, आव्यो ठुं नृप काजें ॥ इम कहेतो पोहोतो नृप
जवनें, सिद्ध पुरुष शुज साजें ॥ क० ॥ ए ॥ राख पो

टली आपे नृपनें, कहेतो एहवुं रंगें ॥ ए नाखो निज माथे एहथी, रहेजो निरुआ अंगें ॥ ऊ० ॥ १० ॥ नृप जाणे शुं न वब्या चयमां, आव्या दीसे साजा ॥ आग सगी नहीं जगमां केहनें, न गणे सतियां आजा ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूमा आगें, वनशे कूडुं बोल्युं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो चयमां, मन साहस नवि मोल्युं ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण रीज्या, अमृत रसें चय ठारे ॥ थयो सजी चित्त फरी हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ ठार पोटली तिहांथी लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ वाचा तेह पले तो रूमी, बोली जेह महीपें ॥ ऊ० ॥ १४ ॥ नृप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी वंची ॥ ॥ इहां रह्यो ठाली चय बाली, सुजटें करी दृग ऊंची ॥ ऊ० ॥ ॥ १५ ॥ कांत समागम जाणी मलया, मलवानें धसी आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटी, निरखत हरख न मावी ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पावक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मब्या ते जांखो, पीयु कहे अवसर पामी ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ अंध कूप गत जेह सुरंगा, ते मुख में चय खमकी ॥ पृथुल गर्त्त घरनें आकारें, द्वार शिलायें अमकी ॥ ऊ० ॥ १८ ॥

पेठो ह्रु चयमा थइ ठार्ने, द्वार सुरग उघाकी ॥ सघस सुरग शिला तस द्वारें, दीधी पाठी श्राकी ॥ क०॥ १९॥ सुजटें चय ससगाकी मूकी, चली चली थइ टाढी ॥ द्वार उघाकी कुशलें श्राव्यो, ठार नृपति शिर चाढी ॥ क० ॥ २० ॥ सुदरो गुह्य कथा ए माहरी, कोइ श्रागें मत जांखे ॥ उुष्ट नृपति मुज ठिद्र विलोके, तुज सेवा श्रनिलाखे ॥ क० ॥ २१ ॥ चोथे खंर्मे थइ द्वादशमी, ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे धणनी पिउ सगें, विरह व्यथा सवि नीठी ॥ क० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्राव्यो नरपति सेहवे, कहे सिद्धनें जंत ॥ जोजन द्यो मलया जणी, श्रम हार्थे न करत ॥ १ ॥ तरुणी तुरत जमाकीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधु कारज ताहरु, हवे श्रम दीयो विदाय ॥ २ ॥ श्रापो मुज धण श्रादरें, थापो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन सुणी महेराण ॥ ३ ॥ संकल्पी जगव्यो वली, मत्री ठग नु धाम ॥ श्रहो सिद्ध साध्यु सवल, नृपतिनु ए काम ॥ ४ ॥ उपकारी शिर सेहरो, महा सत्त्वधर सिंधु ॥ बीजुं पण महीपति तणुं, कर एक कारज बधु ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूंउ मुख सांकमो रे विंजा, किस करी करुं रे उकोल ॥
रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकमो रे मित्ता, नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिद्ध रूमा, सयण म्हारा ॥ ॥ सा० ॥ विषम ऊरध शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब अछे निरकंक ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें बारही मास ॥ सि० । सा० ॥ ते शिखरें ऊंचा चढी रे मित्ता, तलपी हवे आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें आंबा शिरें रे मित्ता. पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ ऊंपावो वली अंबथी रे मित्ता, नूतल ला ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें वही रे मित्ता, मूको फल नृप नेट ॥ सि० ॥ सा० ॥ पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मित्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ थानक मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० निहुं वातें

मृत्यु माहरु रे मित्ता, पडिया भूमि वे हाथ ॥ सि० ॥
॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रभावथी रे मित्ता, क
रशु डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज
सुदरी रे मित्ता, बे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥
॥ सा० ॥ धारी एहवु आदरें रे मित्ता, मत्री वचन
तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी कठ्यो धसी
रे मित्ता, साहसनु कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥
मलया जल नयणे जरे रे मित्ता, डु ख पूरें दिलगीर
॥ सि० ॥ सा० ॥ महुमल जण वींट्यो घणे रे मित्ता,
आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम
गिरि उपरे चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥
॥ सि० ॥ सा० ॥ भूपतिनें मत्री हृदये रे मित्ता, वाधे
हर्षना डोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोभे गिरि
टूके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ नृप सुजटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अथ दे
खाड्यो डूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रूडुं जे में उ
पार्ज्यु रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥
सफल हजो माहरुं इहा रे मित्ता, तेहथी साहस
खेल ॥ मि० ॥ १२ ॥ सा० इम कहेतो अंधा
पर्फी रे मित्ता, आपे जंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूहे नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पमठंध्यो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव तलखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जणुं साहस देखीनें रे मित्ता, वोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पमतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, धे खेचरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुउं जन देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पमतां एहना हामनो रे मित्ता, जमशे कहो किहां खंम ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं नांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहमें सकज्ञ सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥ ॥ १७ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रनातें आवियो रे मित्ता, लै सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १ए॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

मृत्यु माहरु रे मित्ता, पमिया जूमि थे हाथ ॥ सि० ॥ ॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रजावथी रे मित्ता, करशु डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज सुंदरी रे मित्ता, ठे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ धारी पहवु श्रादरें रे मित्ता, मंत्री वचन तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ श्रासनथी ऊठ्यो धसी रे मित्ता, साहसनु कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥ मलया जल नयणें जरे रे मित्ता, डु ख पूरें दिलगीर ॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींट्यो घणे रे मित्ता, श्रावे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम रे गिरि ऊंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥ ॥ सि० ॥ सा० ॥ जूपतिनें मंत्री हृदये रे मित्ता, वाधे हर्षना थोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोजे गिरि टूंके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ नृप सुजटें नीचो रह्यो रे मित्ता, श्रथ देखाड्यो डूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रूडुं जे में उपार्ज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥ सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० ईम कहेतो श्रंधा यकी रे मित्ता, श्रापे ऊंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां लणो रे मित्ता, गिरि कूहे नवि मान ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पमठंयो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव लतखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साहस देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पमतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, धे खेचरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुउं जन देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पमतां एहना हामनो रे मित्ता, जमशे कहो किहां खंम ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं भांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहमें सकल सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥ ॥ १७ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रभातें आवियो रे मित्ता, लै सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १ए॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

पूठशो कांड ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इम जन वीं टोयो रे मित्ता, नृप पासनें गयो धाई ॥ सि० ॥२०॥ ॥ सा० ॥ श्यामवदन राजा दूठं रे मित्ता, वीहीनो निरखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहवे मन्त्री रे मित्ता, कुशस्यो किम तु मित्त ॥ सि० ॥ २१ ॥ ॥ सा० ॥ इमहीज इति मुख बोलतो रे मित्ता, मूर्क अव करूं ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए स्यो म्हारं सहू रे मित्ता, पित्त समायो उदरू ॥ सि० ॥ २२ ॥ सा० ॥ वीहीना हाकें थापका रे मित्ता, नृप प्रमुख करे मून ॥ सि० ॥ सा० ॥ वे श्रण तेह करूथी रे मित्ता, सिद्ध भहे फल पून ॥ सि० ॥ २३ ॥ सा० ॥ नृपनें पूठी सचरे रे मित्ता, मलया पास हसत ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ सा घनथी जिम मोरली रे मित्ता, पीठ दीठे विकसत ॥ सि० ॥ २४ ॥ सा० ॥ सकल उचित त्रि धि साचवी रे मित्ता, बेठी पीउ संग वाल ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ पंमितजी रे चोथे खंमे तेरमी रे मित्ता, कीं सें कही ए ढाल ॥ सि० ॥ २५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोमी कामिनी कहे, जांखो कंत उदंत ॥
गत दिन गत आगम कथा, तव महवल पजणंत ॥

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंममां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते व्यतर इहां अंबमां, वसिउं मुज नाग्येण ॥ गिरिथी पमियो वचन वदे, उलखियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें मुजनें ग्रही, बोल्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म बीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं तिणें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वीती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनरुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजाण रे ॥ थावो अम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उठीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचवुं, कहे तुं मुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं, जिम जग नृपनी छाप रे ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ तव हुं बोल्यो ते प्रतें, सुण बांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ पण बांध्यो में जेहवो, तेहवो हुये सुकयत्थ रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमत्थ रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ बोल्यो सुर सुण मित्रजी, ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

चाहे तुजनें, कहे तो शु हुवे शील रे॥मु०॥६॥ में जाएयु एह पटले, नहिं दिरमे जई आप रे ॥ तो एहनें सम जावशु, करी कूमो जपजाप रे॥ मु० ॥ ७ ॥ विषम प्रयोजन ताहरे, आवी पमे कोई जेय रे॥ सजास्यो हु ततक्षणें, करशुं सान्निध्य तेय रे ॥ मु०॥ ८॥ इम क हेतो सुर निहायकी, लाव्यो एक करंम रे ॥ सरस रसाल तणे फलें, जरीयो तेह अखंम रे॥ मु०॥ ए॥ मु जनें तेह करंमशु, सुरवर आप जपामी रे॥ मूवयो पुरनें जपवनें, जिहां जिन मंदिर आमी रे॥मु०॥ १०॥ सुर बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे ॥ अदृश्य रूपें निहां, आवीश हुं तुज साथें रे॥ मु० ॥११॥ जे जे घटशे काम त्यां, करशु ठाने हु तेह रे ॥ शील वियो इम मुजनें, देवें आणी सनेह रे ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ आप्यो तेह करंमीउं, जूपति आगलें जाई रे ॥ लेई अनुज्ञा तेहनी, बेठो हुं इहां आई रे॥ मु० ॥ ॥ १३ ॥ पहवे तेह करंमथी, कमकमतो स्वर क्रूर रे॥ उबलियो बलियो महा, पमहदे जरपूर रे ॥ मु० ॥ ॥ १४ ॥ खाउ पहेलो हु जूपनें, के पुर खाउ प्रधा न रे ॥ एक जणनें खिहु मांहियी, नहिं मूकुं हु नि दान रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पमि

थो चिंतानी जाल रे ॥ थरथरतो कहे सचिवनें, कर
माहारी संनाल रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ सिद्ध पुरुष कोई
सिद्ध ए, गूढातम विपरीत रे ॥ दुष्कर काम करे ह
सी, अण चिंत्युं केणी रीत रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ फल
मिशें एह करंमसां, आणी कांइ बलाय रे ॥ आपणनें
क्षयकारिणी, वलगाम्नी कुपलाय रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ सचिव
कहे नृपनें प्रनु, एहनें मुख दियो धूल रे ॥ इम कहीनें
वारी जतो, आवे करंमनें मूल रे ॥ मु० ॥ १ए ॥ क्रूर
सुणे रव तेहनो, जिम यमडुंडुनिनाद रे ॥ कर्ण विवर
विष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ मु० ॥ २० ॥
फल ग्रहेवा तस ढांकणुं, ऊघारे ततकाल रे ॥ वज्रा
नल सरखी तदा, प्रगट हुई माहाजाल रे ॥ मु० ॥ २१ ॥
नक नक शब्दें गाजती, प्रत्यक्ष जेम नकधाक्षि रे ॥
तेह करंमथी नीसरी, ऊरध नाग धूमाक्षि रे ॥ मु० ॥
॥ २२ ॥ दुष्ट प्रधाननें तेणीयें, जाल्यो जेम पतंग
रे ॥ क्षणमां जीवो त्यां हुउ, निर्जीवित दहि अंग
रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांठें सलगिउ, अगनि म
हा डुरवार रे ॥ बीहितो नृप तव सिद्धनें, तेमावे ति
णि वार रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां,
दीसे ठे कांइ कीध रे ॥ इम धारी नूपति कनें, आवे

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा जियो, वोल्यो एम मरत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें, विज्वर एह दुरत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल गंटीयु, अनल हुर्ठ उपशांत रे ॥ झांख्यो अब करमी ठ, तव रहियो विभ्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते ह करमनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शिं वरी, देखी कुण न मराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें सिद्ध करमीयो, उघामी फल लेय रे ॥ विस्मित चूपा दिक पणी, आपहमु जव देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त व महीपति मरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥ यापी बीजानें करें, खेचराधे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥ जीवानो नंदन वमो, सचिव कस्यो गुण खाणी रे ॥ चोथा खमनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूठे किम ऊलस्यो, एह महाजय सिद्ध ॥ मन्त्रीनें जेणें म्हां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फुल फ ल एहना लहेशे तु प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल माहिं महीपति, जेह करे नय पोप ॥ नासे आपद तेहथी, वाधे संपद कोप ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणो,

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय सयंवरा, निरखी
नृप नय छेक ॥ ४ ॥ तेह वाणी नय गोचरें, निगम
विचारी गुज्ज ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महि
ला मुज्ज ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए
वयण ॥ अनय रसें कोपाववो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजिओ रे, पमीयो विमासण मांहि
रे ॥ नारि रस रातो, पेखो उपांपल गोचरें होलाल ॥
हियके चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांही रे ॥
करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥१ ॥
मंत्र तंत्रादिक योगनारे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥
साधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह
वाणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अत्यंत
र कोई, दुष्कर ते करसे किहां होलाल ॥ २ ॥ कार
ज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे ज
शीयाला, जोंगे पकसे बापको होलाल ॥ फरि नहीं मा
गे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे की
धी, मलशे नहीं वली ताकको होलाल ॥ ३ ॥ इम
करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ न
हीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा
जियो, बोल्यो एम नरत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें,
विज्वर एह डुरत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धे तव जल
गटीयु, अनल हुर्ड जपशात रे ॥ डांक्यो अब करनी
ठं, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते
ह करमनें, वेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शि
खरी, देखी कुण न मराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें
सिद्ध करमीयो, उचारी फल लेय रे ॥ विस्मित नूपा
दिक जणी, आपहयु जल देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त
व महीपति मरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥
थापी बीजानें करें, खेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥
जीवानो नदन वनो, सखिय करयो गुण खाणी रे ॥
चोथा खमनी चौदमी, कातें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम छलस्यो, एह महाजय सिद्ध ॥
मंत्रीनें जेयें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे
सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ
ल एहनां, सहेशे तु प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहि
महीपति, जेह करे नय पोष ॥ नासे आपद तेहथी,
वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणो,

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा जियो, घोस्यो एम रूरत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें, विज्वर एह तुरत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धे तब जल गटीयु, अनल हुर्ड उपशांत रे ॥ डांक्यो अव करही ठे, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते ह कररूनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शि वरी, देखी कुण न मराय रे ॥ मु० ॥ २० ॥ कुशलें सिद्ध कररूीयो, उपाकी फल लेय रे ॥ विस्मित भूप दिक भणी, आपदृष्यु जव देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त व महीपति रूरतो हीये, न्वचे कर मुख फेरी रे ॥ थापी बीजानें करें, खेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥ जीवानो नंदन वमो, सचिव कस्यो गुण खाणी रे ॥ चोथा खरूनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूठे किम उगस्यो, एह महाजय सिद्ध ॥ मत्रीनें जेणें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ ल एहनां, लहेशो तुं प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं महीपति, जेह करे नयपोप ॥ नासे आपद तेहथी, वाधे सपद कोप ॥ ३ ॥ नीतिमाहे आपद तणो,

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नूपनें रे, कां दुःख द्ये बेपीर रे ॥ मरमी गलनाभी, कांई मरे वाह्यो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सजामां वाधीयो रे, सघलो हालकल्लोल रे ॥ देखी नृप विरुउं, लोक मख्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातमी रे, पमियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, वीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे ॥ नूपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें उवे होलाल ॥ पमती रमती सिद्ध नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउं होलाल ॥ पति निक्का अमनें दीउ रे, दातारां शिर उत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताएयो न खमे तांतुउं होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रूप बनाय रे ॥ साचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे ॥ मोहन रंगीला, न हीं होय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्का दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

श्रीजु काम करे हवे रे, तो शुं मद्दिखा सजाख रे ॥ श्राठी ए तुजनें, वचन थकी हु न मोलीयो होलाल ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखु सदा रे, पुठि विना मुज अंग रे॥ तेमाटे वासो, देखु हु तेहवो करो होलाल ॥ मुज ऊपर करुणा करी रे, पूरो एह उमग रे ॥ सुगु णा सोजागी, मानीश पारू इहा खरो होलाल ॥५॥ नृपनदन चींते ईस्यो रे, एह श्यो सोंपे काम रे ॥ नृप हसवा सरिखो, कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥ रीशाणो कहे रायनें रे, ए श्यो मारुयो उधाम रे ॥ ए हयी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नवी होलाल॥ ॥ ६ ॥ पुठ जोवे कोण आपणी रे, जो पण होय लख हाम रे ॥ इम कहीनें खाचे, नामी नृप ग्रीवा तणी हो लाल ॥ उलटी मुख वांकू वस्तु रे, श्राव्यु ग्रीवानें ठा म रे॥ ग्रीवा मुख गर्मे, श्रावी रही तव श्रापणी हालाल ॥ ७ ॥ पूठ निहालो खतशु रे, काम थयु तुज ठीक रे ॥ नृपति गुण मानो, वचन सुणी इम तहवे हालाल ॥ सचिव नवो रोषें जस्यों रे, बोल्यो थई साहसिक रे ॥ सुण धूरत धींग, लाज नहीं तुज ने हव हालाल ॥ ८ ॥ जनक हएयो ते माहरो रे, जीश नाम वजीर रे ॥ खुनी श्म थायी, वीहितो नहीं

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नृपनें रे, कां दुःख द्ये बे पीर रे ॥ मरमी गलनारूी, कांई मरे वाहो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सन्नामां वाधीयो रे, सबलो हालकल्लोल रे ॥ देखी नृप विरुउ, लोक मल्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातमी रे, पमियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, वीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे ॥ नृपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें ठवे होलाल ॥ पमती रमती सिद्ध नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउ होलाल ॥ पति भिक्षा अमनें दीउ रे, दातारां शिर बत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताण्यो न खमे तांतुउ होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रूप बनाय रे ॥ साचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे ॥ मोहन रंगीला, न हीं होय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्षा दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

शे, तो थई ठे पटले भणी होलाल ॥ सिद्ध विमासी प
हवु रे, बोल्यो एह जो दोट रे ॥ पाये अणुवाणे,
वनमा जिन प्रणमे थुणी होलाल ॥ १४ ॥ श्रीजिन
अजित जुहारीनें रे, पायें आवे ज्यांहिं रे ॥ तो थाशे
साजो, बीजो उपाय नहीं तिस्यो होलाल ॥ असमरथ
पण राजियो रे, फले हवे थाशो त्यांहिं रे ॥ साजो जो
थाउं, तो मुज अजर अठे किस्यो होलाल ॥ १५ ॥
लोक कहे निज पापथी रे, पलगो आवी वींग रे ॥ भू
पतिनें पूठें, करशे नहीं हवे लोजणी होलाल ॥ रूप
धन्यु जोवा जिस्यु रे, प्रत्यक्ष जिम जोटींग रे ॥ दीसे
ठे कोई, लेखें लत पाम्यो धणी होलाल ॥ १६ ॥ पुर
जन जोवा पेखणु रे, चढिया गोखें धाय रे ॥ तिहां
होल्म होमें, ठामें ठामें टोलें मल्यां होलाल ॥ पाल
ण मांहे भूपति रे, पण न पडे वग कोई रे ॥ जोतां
दुःखदायी, कारण वे पाकां मल्या होलाल ॥ १७ ॥
जो मांहे पग पाधरो रे, तो दीसे नहीं माग रे ॥ लो
चन उपरांठे, लरु धरुतो पगें आयके होलाल ॥ अ
वले पग ज्यां संचरे रे, लेतो मारग जाग रे ॥ घेरणि त्यां
वाधे प्रेरण शक्ति विना पडे होलाल ॥ १८ ॥ विड
वानें पुर लोकनें रे, करतो कौतुक दुःख रे ॥ जई आ

ज्यो पाछो, साले मार कुचोटनी होलाल ॥ लोक स
मरू समजाविउ रे, थाशे हवे अग्निमुख रे ॥ चिंते
इम बीजी, खांचे नशा शिद्ध कोटनी होलाल ॥ १९ ॥
वइन वलीनें पाधरुं रे, वेउं पाछुं ठाम रे ॥ लागी न
हिं वेला, हूउ अंतेउर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो
मी कहे सिद्धनें रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा
ससनेही, जोईयें ते मागो हसी होलाल ॥ २० ॥ सि
द्ध हवे मागशे इहां रे, चोंपे मलया बाल रे ॥ नृपति
पासेंथी, अरज करावी तेहशुं होलाल ॥ चोखी चो
था खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ चांखी रस जे
ली, कांतिविजय बुध नेहशुं होलाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर कहे राणी प्रत्यें, वंछित आप विचार ॥
जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥
गोरमीयां गुणवंतियां, जो देवरावो वाम ॥ तो थोमामां
प्रीछजो, सरियां मुज लख काम ॥ २ ॥ वचन सुणी
राणी सवे, आवी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण ज
णी, करे कोमि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तर न दीये महीप
ति, पाछो कांइ प्रगट्ट ॥ आने कानें काढतो, चिंते एम

निपट ॥ ४ ॥ जाती मलया सुंदरी, राखु किम जग दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे, जेहथी फवे सदीस ॥५॥

॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
गायशु राजीमती सतीजी ॥ ए देशी ॥

एहवे अनल उदरू, वाजीशालामांहिं जागीउं जी ॥ उंचो जाल अखरू, दारुण गयणें लागीउंजी ॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिरूपस्यें पभणे इस्यु जी ॥ चोर्थुं वली मुज काज, एक अछे करवा जिस्यु जी ॥ २ ॥ वारू पाट केकाण, एह वसे हयशालमां जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमां जी ॥ ३ ॥ रीझ्यो छु तुज नारि, आजज सोंपु ए घ रीजो ॥ जोता जण दरबार, वलीयो मणिमय पाघ री जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, भांखे ए नृप चातस्योजी ॥ पाम्यो शीक्षा रोक, तो वली ईम को पा तस्योजी ॥ ५ ॥ अति दुष्टाध्यवसाय, छोमे नहीं ए दु र्मतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय, योग्य दीयु शीक्षा रति जी ॥ ६ ॥ ध्याती एहवु त्यांहिं, उछाहें घमणो थई जो ॥ पसण हुतभुज मांहिं, वाजी शालें उजो जई जी ॥ ७ ॥ मनमा नृपनें श्राप, निंदे आक्रोशें घणो जी ॥ बाध्यो कापने व्याप, इष्ट सभारे आपणोजी ॥

॥ ७ ॥ संचारे तेह देव, करवा सफल मनोरथाजी ॥ ऊंपावे ततखेव, दीवें पतंग पके यथाजी ॥ ए॥ हाहा कार करंत, शोक नस्या पुरजन तदाजी ॥ आंसूके व रसंत, लोचन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो नूप प्रमोद, कुमर ऊंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य सिद्धराज, अगनिथी नीसरिठ तवेंजी ॥ दीसे जि म सुरराज, आराह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन नूषण धस्यांजी ॥ ऊलहल ज्यो ति तुखार, अंगें साज नला नस्याजी ॥ १३ ॥ धौ रादिक गतिपंच, (१ धौरितं २ वलितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं) नेदें तुरंग रमाम्तोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाम्तोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक नूपतिने पालटीजी ॥ मनमां अति आल्हाद, धरतो इम कहे उल्लटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी नूमि, एह ठे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पमियो हुं इहां आज, बीजो तुरं गम ए वलीजी ॥ बलतां सिद्दतां काज, एहवा थया मागं टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी अम अंग, रोग

जरा नहीं सक्रमेजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसग, अमर
हुआ विहु रगमेंजी ॥ १० ॥ सांजली वायक एह, रा
जादिक सवि जूजूआजी ॥ वलवा अगनिमां तेह, प
रुवानें ततपर हूआजी ॥ १९ ॥ जो जो प्रत्यक्ष स्या
ल, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हूआ वेहु निहाल,
तीर्थ प्रजावें इणी परेंजी ॥ २० ॥ आपणनें इण ग
म, तन होम्यां फल ठे बहूजो ॥ धरता मोटी हों हां
म, आव्या नर परुवा सहूजी ॥ २१ ॥ बोल्यो सिद्ध
विचार, रे रे काण एक परुखीयेंजी ॥ आणो घृत नि
रधार, अगनि जुगतिशु पूजीयेंजी ॥ २२ ॥ आपया
घृतना कुज, ॐ दह दह पच पच इस्योजी ॥ जणतो
मंत्र सदन्न, आहूति थे मन उल्लस्योजी ॥ २३ ॥ पछे
लो पेशीश आंहिं, हु इम कही नृप पेशीठंजी ॥
पूठें सचिव सयाह, जई नृप पासें वेसीठंजी ॥ २४॥
कुमरें वार्त्या लोक परुता अवर हुताशनेंजी ॥ परु
लो परुखो स्तोक, आववा यो नृप सचिवनेंजी ॥ २५॥
लागी वार विशेप, राय सचिव किम नावियाजी ॥ ए
वेला तुमनें हो रेख, लागी नहीं जब आवियाजी ॥
॥ २६ ॥ इम पुरलोकना बोल, सांजलीनें सिद्ध बो
लीठंजी ॥ कारे भूल्या अटोल, अगनि पल्यो कोण

जीवीतंजी ॥ २७ ॥ अगनि पखित हुं आज, सुरसा न्निध्यथी नीसस्योजी ॥ बोली सकल समाज, वैर वाल ए रूम्रो कस्योजी ॥ २७ ॥ फलियो अनय कुवृक्ष, नृप मंत्रिसुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दक्ष, बोल्या व ली आमंत्रिनेंजी ॥ २ए ॥ राज्य निवाहक सिद्ध, हो जो राजा आपणेंजी ॥ इम कही राजा कीध, महो त्सव आमंवर घणेंजी ॥ ३० ॥ मान्यो जन सिद्धरा ज, पाले राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां शिरता ज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३१ ॥ अम्के विषमे काम, लेजे सुरू संज्ञारिजंजी ॥ आज्ञाखी सुर आम, सिद्धूं तेह विसर्जितंजी ॥ ३२ ॥ चोथा खंमनो षंग, मलय चरित्रथी संग्रहीजी ॥ कांतिविजय मन रंग, ढाल शोलमी ए कहीजी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा

॥ आव्यो देशांतर थकी, तेहवे तिहां बलसार ॥ लेई निरुपम ज्ञेटणुं, चली आवे दरबार ॥ १ ॥ नृप ज्ञेटी बेठे तिहां, दीठी मलया बाल ॥ मलयायें पण पेखीजं, सारथपति ततकाल ॥ २ ॥ एक एकनें जंलख्यां, थातां नयणां ज्ञेट ॥ मलियां शत वर्षांतरें, चतुर न ज्ञूले ज्ञेट ॥ ३ ॥ फरतो तुरतज जठीजं, आव्यो मंदिर आप ।

चिंते हैंहे आवीया, उदय मह्ना मुज पाप ॥ ४ ॥ थ्र हो महोदधि परतर्फे, आव्यो पइनें ठोभि ॥ देवें किम ए चूपशु, मेली सांधा जोभी ॥ ५ ॥ जे कीधु में पइनें, थ्रनुचित करण श्रन्याय ॥ कहेशे ते जो चूपनें, तो मुज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात' प्रणमु हो प्रिया प्रणमु पग नाथें करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो हो प्रिय निसुणो जे श्राव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रिय नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी योजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, विधविध हो प्रिय विध विध डुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो हो प्रिय राख्यो ठानो पण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत करता श्रभ्यर्थना जी ॥ २ ॥ इणी परें हो प्रिय इणी परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परिकर हो निज परिकरशुं कार्ते दीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी हो नृप कीधी क्रियाणें ठाप, वाकज हो वरु वाकज मास जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां विमासे श्राप, सार्थ रहो इम सार्थप चिंता नावीयोजी ॥ ४ ॥

छूटण हो मुज छूटण कोई उपाय, दीसे हो नहीं दीसे नहीं कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे ठे एक दाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वैरी दोय, परिचित हो मुज परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर समोय, धींगरू हो बल धींगरू वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जीती हो तेह जीती एहनें ताम, ठोरुण हो मुज ठोरुण विधि करशे वहीजी ॥ अरुलख हो हवे अरुलख सोवन ड्राम, परठी हो तस परठी जन मूकुं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ, आएया हो घर आएया परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी गाठ, छूटीश हो हुं छूटीश एह नेदें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो ठानो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राजवीजी ॥ डुर्गम हो अति डुर्गम तिलक गिरि त्यांहि, नीषण हो जिहां नीषण जिहां रुड्राटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

चिंते हेहे आवीयां, उदय मह्वा मुज पाप ॥ ४ ॥ अ
हो महोदधि परतर्ने, आव्यो पहने ठोमि ॥ देवें किम
ए चूपशु, मेळी साथा जोमी ॥ ५ ॥ जे कीधु में पहने,
अनुचित करण अन्याय ॥ कहेशे ते जो चूपनें, तो मु
ज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात'
प्रणमु हो प्रिया प्रणमु पग नाथें करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो
हो प्रिय निसुणो जे आव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रि
य नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी
योजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, वि
धविध हो प्रिय विध विध डुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो
हो प्रिय राख्यो ठानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत
करता अन्यर्थना जी ॥ २ ॥ इणी परें हो प्रिय इणी
परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण
कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परि
कर हो निज परिकरशु काढें दीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी
हो नृप कीधी क्रियार्थे ठाप, बाकज हो यम बाकज
मास जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां विमासे
आप, सार्थ यहो इम सार्थप चिंता जावीयोजी ॥ ४ ॥

बूटण हो मुज बूटण कोई उपाय, दीसे हो नहीं दीसे नहीं कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे छे एक दाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वैरी दोय, परिचित हो मुज परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर समोय, धींगरू हो बल धींगरू वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जीती हो तेह जीती एहनें ताम, छोरूण हो मुज छोरूण विधि करशे बहीजी ॥ अरूलख हो हवे अरूलख सोवन ज्ञाम, परठी हो तस परठी जन मूकूं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ, आएया हो घर आएया परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी गाठ, बूटीश हो हुं बूटीश एह नेदें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो छानो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राजवीजी ॥ डुर्गम हो अति डुर्गम तिलक गिरि त्यांहि, नीषण हो जिहां नीषण जिहां रुद्राटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

हवी जनमुखथी कहीजी ॥ पल्ली हो तिण पल्लीपति किम जाति, भीमें हो मन भीमें मलयानें महीजी ॥ ११ ॥ आव्या हो तिहा आव्या बेहु नरिंद, निज निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ दुर्जो य हो तेण दुर्जय भीम पुलिंद, रमतो हो रण रमतो रण माच्यो महीजी ॥ १२ ॥ जोता हो तिहा जोता मलया बाल, दीठी हो नहीं दीठी नहीं किण थानके जी ॥ वलीया हो नृप वलीया नृप तिण काल, मलियो हो जई मलियो सोम अथानकेंजी ॥ १३ ॥ वीरप हो नृप वीरपनो आदेश, पामी हो वर पामी वर तिन बीनमेंजी ॥ सार्थप हो तेह सार्थपनो संदेश, सुणत हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ आघु हो भ न आघु देतो बीर, आखे हो विधि आखे शूर प्रत्यें ए सीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शौंडीर, खोजें हो बहु खोजें वात महे भलीजी ॥ १५ ॥ नृपकुल हो पह नृपकुल सार्थे रूप चाल्यु हो नित्य चाल्यु आवे आ पणेजी ॥ बेठो हो कोइ बेठो नूतन एप, तेहने हो छवे तेहने छवे शणशु रणेजी ॥ १६ ॥ सर्वस्व हो तस सर्वस्व लेशु लूटि, सार्थप हो वली सार्थपनें मूकावशुजी॥याशे हो अम याशे यशनी त्रूटि, अरिनो हो वली अरिनो

गाम चूकावशुंजी ॥ १७॥ मंत्री हो इम मंत्री दोय नरेश, करवा हो रण करवा सिद्ध नरिंदशुंजी ॥ चाल्या हो धकि चाल्या कटक निवेश, करता हो पथ करता पथ स्वछंदशुंजी ॥ १८ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ वा दल हो दल वादल उंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा मेरा फावताजी ॥ १ए ॥ बे नृप हो हवे बे नृप मूकी दूत, आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा हमो हो नृप साहमो सेन संजुत्त, करवा हो रण करवा रसमां आवशेजी ॥ २० ॥ चोथे हो एह चोथे खंमे ढाल, नांखी हो इम नांखी सत्तरमी नावथीजी ॥ सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य आवे कांतें सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरप शूर बन्ने मली, शीखावी अदनूत ॥ सिद्ध नरेसर उपरें, मूके उर्द्दम दूत ॥ १ ॥ अवसरविद वाचाल मुख, साहसिक निर्लोन ॥ स्वामीनक्त हित मग कथक, परखद मांहे अक्षोन ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी दीरघगति, सर्वसह मतिवंत ॥ नीति निपुण ज्ञाहक पिशुन, (शत्रुनो चाकित) ए गुण दूत वहंत ॥

॥ ३ ॥ असवारखो केकाण रथ, पदेस्यो जाय कुखिम्म ॥ सिद्धराय जवनागणें, जइ पोहोतो जाखिम्म ॥ ४ ॥ द्वारपाख नृप वीनवी, दीधो जवन प्रवेश ॥ करी स खाम सिद्धरायनें, जाखे इम सदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाख अढारमी ॥ उदया ते पुररो माम्वो रे, गढ अरखुदरी जान महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीगणनो राजीउं रे, शूरपाखण शूरपाख ॥ महाराजा ॥ दम दातोने फोज खेइनें रुकेजी आवे ॥ च ड्रावती नगरी धणी रे, वीरधवख गोगाख महाराजा ॥ द० ॥ १ ॥ ए बेहु एकमतु थया रे, रूठो तोपर आ ज म० ॥ द० ॥ खेखि रण रस खातझु रे, खेशे नाहारु राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो क्यिा रे, नामें जे घखसार म० ॥ द० ॥ ते सार्थे वे जपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा ना जग व्यवहारीयो रे, सहुनें बांधव तुल्य ॥ म० ॥ ॥ द० ॥ पेशकसी करता नथी रे, मागे नहीं काइ मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बाधव परें रे, जाण गहन नृप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सदेशे प ड्या र दम्वी डु रवने कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणे पान आवन र कीधो अमशु नेह म० ॥ द० ॥ तु

म नगरें वासो वसे रे, ते जणी मूको एह म० ॥ द० ॥
॥ ६ ॥ कहेवारुथुं महारे मुखें रे, अम नूपें इंम तु
ज्ञ म० ॥ द० ॥ सत्कारी मूको परो रे, पालो राज्य
सछुज्ञ म० ॥ द० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनो
रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ द० ॥ पमिया पण मुख
के ग्रह्या रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ द० ॥ ८ ॥
वाहाली पाडु गायनी रे, जो आपे पयपूर म० ॥
॥ द० ॥ मीठा माटे खाइयें रे, एवुं पण मामूर म० ॥
॥ द० ॥ ए ॥ धनपति कदिहिक पांतरे रे, तो ते कि
म न खमाय म० ॥ द० ॥ खिरतो पण दल अंगणे
रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ द० ॥ १० ॥ अ
म नूपें बांहें ग्रह्यो रे, ते डुःखीयो किम थाय म० ॥
॥ द० ॥ गूंजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न वसा
य म० ॥ द० ॥ ११ ॥ शूर अछे तुं साहेबा रे, पण
तुज कटक अलप्प म० ॥ द० ॥ सायरमां जिम सा
थुउ रे, थाइश त्यां तुं गरुप्प म० ॥ द० ॥ १२ ॥
ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥ द० ॥
एह वातें मत आणजे रे, शंका बल उमहेइ म० ॥
॥ द० ॥ १३ ॥ थाइश मां तुं आकलो रे, नुजबल
नें विशवास म० ॥ द० ॥ बे जण उषध एकनुं रे, ए

हचो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ मं पमीश माता मोहमां रे, सफेश्वर जिम मूज म० ॥ द० ॥ उचित हितारथ धारियें रे,आणी मननी सूज म०द०॥१५ ॥ दूत वचन सुणी सहे रे, आव्या सुसरो तात म० ॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणु रे, बोख्यो फेरवी धात म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणु जो चूपनें रे, तो शु नहीं भुज दोय म० ॥ द०॥ एक एक देह नहीं किश्युं रे, केवस नर नहीं होय म० ॥ द० ॥ १७ ॥ एकसको पण दिणयरु रे, तेज तणो अंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोमिग मे तारातणुं रे, हरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥ ॥ १८ ॥ आफससो आज्ञा सगें रे, मानीमां शिरदार म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे, गासे गजमद भार म० ॥ द० ॥ १९ ॥ तिम हुं जो पण एकसो रे, ते नृप ते बस साज म० ॥ द० ॥ बाणे रणमा ते होनी रे, फेमीश भुजनी साज म० ॥ द० ॥ २० ॥ वा हसो पण अन्याईयो रे, शीसवीर्यें सुत आप म० ॥ द० ॥ अन्यायें याता पसू रे, साज्या नहीं अयाप म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नेही ठे भूपनो रे, तो अम केहो साज म० ॥ द० ॥ अम सार्ये तो ठेकता रे, भरशे वापां आज म० ॥ द० ॥ २२ ॥ न दीयें शिक्षा

दुष्टनें रे, न गणे साजन शर्म्म म० ॥ द० ॥ तो अ
म सरिखानें रहे रे, केहो नृपनो धर्म म० ॥ द० ॥ २३ ॥
अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग ॥ म० ॥
॥ द० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग साखें रण
जंग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे, पू
रीश हुं इणवार म० ॥ द० ॥ जा कहेजे तुज पूठलें रे,
आव्यो हुं निरधार म० ॥ द० ॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो
वही रे, चोथे खंमें अनुप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए
अढारमी रे, कांतिविजय करी चूंप म० ॥ द० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, वहि मंमपमां आय ॥ ढ
क्का तिहां संग्रामनी, वजमावे सिद्धराय ॥ १ ॥ रणरा
तो मातो मर्द, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मल
या कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मल
या नणी, दे रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, ध
रे आप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गजें, रण रं
गे शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक वि
स्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गमगड्या, वागां वम र
णतूर ॥ रसिया नाद नंनेरिया, अमिग उलट्यो शूर
॥ ५ ॥ जेपां ये करवालने, टोपां कै पहेरंत ॥ तोपां

केता सज्ज करे, धोपां केई धरत ॥ ६ ॥ गज गाजे हय हेषणें, रथ चितकार असम ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हुर्ड अम्बर ॥ ७ ॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा रण खेलाम ॥ रणथंभे जई वागिया, फोजां तणां कमा रू ॥ ८ ॥ बे दल आमा साहमां, अभिया आई सघा हि ॥ तामसिअणपेठा बही, सारू चरू रण माहिं ॥ ए ॥

॥ ढाल श्रोगणीशमी ॥ कम्खानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप बे चमे सिरूशुं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ जनक वनना महा मद भस्या हाथिया, जेम गिरिवर सर्फे आई ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चभ्यो जेह ते गज चढ्यार्थी अरु रथ चभ्यो रथचभ्यार्थी न मूजे ॥ तुरगधर तुरं गधर साथ झपटा लीये, पायचर पायगा सग फूजे ॥ सजे० ॥ २ ॥ वजत शरणाईया राग सिंधु शिरे, गुहिर निशाण चोसाल गुजे ॥ पूर रणतूर रव वीर भेरव च र्ण। युरू रस निरम्वया जई प्रयुजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सु णत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यों द्विगुण फूलें ॥ अटक अटकी परे कवच भींचा तणा, जटीया निम्वण रोमाच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शस्त्र चिलकार झवकार जलनो जिस्यो, गाहीयो गयणवर

पुंमरीकें ॥ खमग कल्लोल नृपहंस खेले तिहां, फेर नं हीं जलधि रणमां रतीकें ॥ स० ॥ ५ ॥ सुहम वच नोपरि वचन प्रतिहत करे, सिंहनादें महा सिंहनादं ॥ नुजयुगा फालणे नुज युगा फालता, करत रण नयें लीला विवादं ॥ स० ॥ ६ ॥ वीर शिरवाल रण चालमां उत्सुक्या, ऊर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोनी ॥ ज्वलित मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिसी गग न थोनी ॥ स० ॥ ७ ॥ करत ललकार हलकार नम को पिया, चलत धमकारशुं शेष मोले ॥ कर ग्रही ढाल धुंताल धुंकल रसें, ठयल ठंगाल करवाल तोले ॥ स० ॥ ॥ ८ ॥ जाति नुज वीर्य गुण वंश उदनावता, बंदिजन प्रबल शूरां जगामे ॥ उमगिया योध बल बोध करि आपणा, रण तणी सबल बाजी फबामे ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ अश्व खुरताल पमतालथी ऊपमी, खेह अं बर चढी सूर ठायो ॥ दिशि हुई धूंधली अरुण रंगें धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥ सगग शर धार वरषण लगी चिहुं दिशें, बगग बरछी चले अगग गेमी ॥ रणण रणकार नल्ली (फरसी) तणा वागिया, सिल्ल सुहमाण नाखे उथेमी ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ खमग खटकार गजदंत ऊपर पमे, ऊरर

जरहर करे अगनि बुदा ॥ तप तप्या शुद्ध सित्कार जल वर्षर्यो, तुरत शीतल करे ते गयदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर महि, जोरशु वैरी सनमुख उछालें ॥ वहृत नव शस्त्र देखी सुर. खेचरा, वज्रशकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ प्रोइया सुभट केइ गांजके गगनमा, ऊरध कीधा जि स्या नष्ट थशें ॥ उरुत श्राकाश आयास विण शुभ नें, वलि महोत्सव हुई तास मर्से ॥ स० ॥ १४ ॥ अरुरु अरुराट करि वूटीया शतघनी, घुमल धूम्रां धुर्खे धुम्मरोला ॥ अगनि कण सिरत तग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥ वरुरु परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, करुरु नर को परी खरु फूटें ॥ गरुरु गेवरि गर्जे नालि मुख श्राह एया, खरुरु खग खाटकें फलक श्रूटें ॥ स० ॥ १६ ॥ कलह स्य काल सरिखो हुर्ड आकरो, सिद्ध नृप सै न्य चार्यु विगतें ॥ थिर करी बल हवे श्राप समरंग णें, आवियो राय रोषाल खंतें ॥ स० ॥ १७ ॥ हाक तो सुभटनें युद्ध मंर्में तिहा, सिद्ध रणरग गज वेसी साजें ॥ विश्व भूषण गर्जे शूर पवि धाईयो, वीर सग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

दल महा पूर्व परिचित तिहां, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नूप हित हेत लागो उपायें ॥ स० ॥ १ए ॥ आवता वैरी हथियार अध मारगें, लेय सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नूपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी अर्द्ध चंद्राज बाणें करी, शूरनां वीरनां छत्र छेदें ॥ चम चम नेजा धजा मांहिं मूरत वरा, तोमियां चिन्ह नृपनां उमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नूप बहु शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंमे ॥ करत यतना घणी बेहुंना देहनी, समरनो खेल इम वारु मंमे ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नूप जांखा पड्या चित्त संकल्पता, समर ऊना रह्या शस्त्र नांखी ॥ खंम चोथे नली ढाल उंगणीशमी, जाति कमखा तणी कांतें नांखी ॥ स० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीन वदन शोकातुरा, जोतां नीची देह ॥ निरख्या सिद्धें महीपति, नाख्या जाणे वेहि ॥ १ ॥ इम इम कारज साधना, करवी ते सुरराय ॥ इम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिण ठाय ॥ २ ॥ बाण मुखें ठवी लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल खो

जरहर करे अगनि वुदा ॥ तप तप्या शुद्ध सित्कार
जल वर्षेवो, तुरत शीतल करे ते गयदा ॥ स० ॥
॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरशु
वैरी सनमुख उछालें ॥ वहुत नच शस्त्र देखी सुर
खेचरा, सत्रशकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥
ग्रोइया सुभट केइ गाजके गगनमां, ऊरध कीधा जि
स्या नट्ट वंशें ॥ उछत आकाश आयास विण उभ
नें, वलि महोत्सव हुर्ड तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥
अरूरू अरूराट करि छूटीयां शतघनी, धुमल धूआ
धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत लग तगत ताता
घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥
ठरूरू परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, करूरू नर को
परी खरू फूटें ॥ गरूरू गेवरि गर्रे नालि मुख आह
णया, खरूरू खग खाटकें फलक ऋूटें ॥ स० ॥ १६ ॥
कलह खय काल सरिखो हुर्ड आकरो, सिद्ध नृप से
न्य भाग्युं विगर्ते ॥ थिर करी बल हवे आप समरग
णें आवियो राय रोपाल खतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाक
लो सुभटनें युद्ध मर्मे तिहां, सिद्ध रणरग गज वेसी
ताजें ॥ विश्व चूपण गर्जे शूर पवि धाईयो, वीर
सग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

कोमि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन
चिंतनें, कीधुं सबल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
में नुज वीरज दाखीउं, करवा बाल विलास ॥ स० ॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेट्या तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुनदैवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांई विषाद करो
हवे, पउधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
सुणी, पूरया हर्ष उठांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक्ष कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरत्नजी, मलियो महब
ल आई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
ड्या महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया फुःख
खाणथी, फुहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या
नरक निवासथी, पमतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप ईम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विनें साहमा

आवतो, चढ्यो गगन तनखेव ॥ ३ ॥ पोहवी हेठो ऊ
तरी, करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पाखती, ते शर
थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी खोटेंगणे, मूके लेख
तुरत ॥ सिद्ध नरींद फन्हे वही, फरी आव्यो उमगंत
॥ ५ ॥ चरित निहाली वायनां, विस्मित हूआ नरीं
द ॥ देव सगति विण किम हुवे, अचरिज एह अमंद
॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा, खेखे खेख कदापि ॥ प
रमारथ एहनो इहा, किम जाणीशु आप ॥ ७ ॥ एम
कही निज कर ग्रही, तुरत उखेले लेख ॥ जोतो अक्ष
र मालिका, लहे परम उल्लेख ॥ ८ ॥ लोक सकल
मलिया तिहां, सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशावद पत्र
स्यां, वाचे वसुधा कंत ॥ ९ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ थारानें माहारा करहला,
वरता नदीने तीर इमीरा ॥ ए देशी ॥

स्वस्तिश्री जिनपद नमी, चक्त्या श्रीमती तत्र ॥
सनेही ॥ शूरप नृप चरणांबुजें, सुत महबल लिखि पत्र ॥
सनेही ॥ १ ॥ कुशल सदेशो पाठवे, ते अमने सुखशात ॥
॥स०॥ तात शरीर नीरोगता, चाहु हु दिनरात ॥स०॥
कु २ ॥ वीरधवल सुसरा तणी, प्रणति करुं कर
जोडि ॥ स० ॥ तास श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोमि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन
चिंतनें, कीधुं सबल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
में नुज वीरज दाखीउं, करवा बाल विलास ॥ स० ॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेट्या तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुनदैवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांई विषाद करो
हवे, पउधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
सुणी, पूग्या हर्ष उठांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक्ष कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरलजी, मलियो महब
ल आई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
ड्या महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया दुःख
खाणथी, उहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या
नरक निवासथी, पमतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप इम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विनें साहमा

पर्गे, दीठा आवत तेग ॥ स० ॥ सहसा हरखें सामो
हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि
या हेजे हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांहो
माहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १३ ॥ हर्ष तणे आसू जलें, गाल्यो विरह हुताश
॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास
॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चदन सीयलु, तेथी
शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वा
हालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ कथ एक इ
ष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ ॥ स० ॥ वैतालिक
(भाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर ढील
॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धनृपें निजपुर प्रत्यें, पध
राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंध्या निज निज परिक
रें आव्या जवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती
दुःख सनारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोला
वी सुमगादिक, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥
तुरत करावी महारसें, अशनादिकनी भक्ति ॥ स० ॥
सैनिक सर्व सनापिया भूपालें भली युक्ति ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ १९ ॥ नान अमुर आई सहु, येग सुरसमा
त्यांहि ॥ स० ॥ ऋद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चित्तमांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २०॥ सुत आगें जनका दिकें, नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी डुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति नावतो, तनुजानें पजणंत ॥ १ ॥ हे हे नृपकुल ऊपनी, पोषी लाम विलास ॥ रखमी दि शि दिशि रंक ज्यौं, पमी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध डुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि डुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, ठठी नावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ सूरपति महीपति बोले ए, पमिया मामा मोलें ए, खोले ए, निज मन डुःखनी गांठमी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूमो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कस्युं में अण जा एयुं, जल पीधुं ते विण गाएयुं, अतिताएयुं, तुज साथें

पगें, दीठा आवत तेह ॥ स० ॥ सहसा हरखें सामो हो, आवे आप रसेह ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि या हेजें हरखसा, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ माहो माहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम नियोध ॥ स० ॥ कु० ॥ ॥ १३ ॥ हर्ष सणे आंसू जलें, ठास्यो विरह हुताश ॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास ॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलु, तेथी शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वा हालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ कण एक इ ष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ ॥ स० ॥ वैतालिक (भाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर ढील ॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिऊनृपें निजपुर प्रत्यें, पध राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंट्या निज निज परिक रें, आव्या भवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती डु ख सनारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोला वी सुसरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥ तुरत करावी महावलें, अशनादिकनी भक्ति ॥ स० ॥ सेनिक सर्व संतोषियां, जूपालें भली युक्ति ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आवें सहु, बेठां सुखमां त्यांहिं ॥ स० ॥ ऋद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चित्तमांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २०॥ सुत आगें जनका दिकें, जांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, जांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें वीशमी, जांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी डुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति जावतो, तनुजानें पत्नणंत ॥ १ ॥ है है नृपकुल रूपनी, पोषी लाम विलास ॥ रखमी दि शि दिशि रंक ज्यों, पमी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध डुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि डुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, ठठी जावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ सूरपति महीपति बोले ए, पमिया मामा मोले ए, खोले ए, निज मन डुःखनी गांठमी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूमो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कस्युं में अण जा एयुं, जल पीधुं ते विण गाएयुं, अतिताएयुं, तुज साथें

में दुर्मति प ॥ ३ ॥ गुनह्यो ते सवि माहरो, खम जो गुणवती खरो, आफरो, मननो इषे दूरें करो प ॥ ४ ॥ जित कोपा तु सुंदरी, था रखियायत गुणजरी, विद्यावरी, करीयें ते हियमें धरो प ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तु सत्य शील कमल तणी प ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त णा, मलया ते धरी धारणा, कारणां, दु खना तुरत विसारीया प ॥ ७ ॥ धन्य धरामा तुज मती, साहस करुणा रात ठती, धृतिगति, सुरिम शुजकृत तुज प लां प ॥ ८ ॥ इम महाबल गुण जांखता, नृपादिक यश दाखता, जणकिता, सलहें महबलने तिहां प ॥ ए ॥ जनक दिक पूठे तिहां, वत्स कहो सुत ठे कि हां, लीघो इहां, पापीने जे वाणीयें प ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, ठानो किहा किण ठठरे, पण खरें, ख्वर नहीं ठे ते तणी प ॥ ११ ॥ तेहीनें पूठा खरो, उत्तरशे नहीं पाधरो, आकरो, करता ते देखाडशे प ॥ १२ ॥ ततक्षण सुजटें आणियो, पग बांधीनें ता णीया, वाणीयो, दु ख पीड्यो रोवे घणु प ॥ १३ ॥ कहे र दुर्मति शुं कस्यो, पुत्र खेडनें किहा धस्यो, जाशे मस्यो, किम तुजथी अम नंदनो प ॥ १४ ॥ कहु प

टशे तुज शिरें, तेतो करशुं द्विज खरें, पण अवसरें, सु त जावा देशुं नहीं ए ॥ १५ ॥ बीहीनो ते कहे तो आ पुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें करो ए ॥ १६ ॥ ठगशे मुज सकुटुंबनें, जो नवि पा शो विटंबनें, तो मुनें, देतां वेला ठे नहीं ए ॥ १७ ॥ हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, ति ण खवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला नो झबकतो ए ॥ १९ । नृपादिक सवि हरखीया, पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण जख्यां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरे सी निर धारिनें, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते कहे बल इति थापना, कीधी ठे करी कल्पना, उल्लापना, चित्त माने ते कीजीयें ए ॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठमी ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठमी, सो दीनारनी दीठमी, ऊथमी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोरार्थी गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतवज्र नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें ठेमीयो, घरवाखर लूंटी लीयो, जीवत दीयो, निज जाचित

में डुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनद्दो ते सवि माहरो, खम जो गुणवती खरो, आफरो, मननो दुवे दूरें करो ए ॥ ४ ॥ जित कोपा तु सुदरी, था रलियायत गुणचरी, विलवरी, करीयें ते हियके धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तु सत्य शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त णां, मलया ते धरी धारणा, कारणा, डु खना तुरत विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामा तुज मती, साहस करुणा रात ठती, धृतिगति, सूरिम शुभकृत तुज प्र ला ए ॥ ८ ॥ इम महावल गुण चालता, नृपादिक यश दाखना, जणकिता, सलहें महबलने तिहां ए ॥ ए ॥ जनकादिक पूठे तिहां, वत्स कहो सुत ठे कि हां, लीधो इहां, पापीके जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, ठानो किहा किण ठवरे, पण खरें, खबर नहीं ठे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेकीनें पूठा खरो, ऊतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करता ते देखाकशे ए ॥ १२ ॥ ततक्षण सुजटें आणियो, पग वाधीनें ता' णीयो, वाणीयो, डु ख पीड्यो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥ कहे रे डुर्मति शु कस्यो, पुत्र लेइनें किहा धस्यो, जाशे कस्यो, किम तुजथी अम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करवुं ष

टशे तुज शिरें, तेतो करशुं द्विज खरें, पण अवसरें, सु
त जावा देशुं नहीं ए ॥ १५ ॥ बीहीनो ते कहे तो आ
पुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, डुःख टापुं, माहरो जो हूरें
करो ए ॥ १६ ॥ गेमशे मुज सकुटुंबनें, जो नवि पा
मो विटंबनें, तो मुनें, देतां वेला ठे नहीं ए ॥ १७ ॥
हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, ति
ण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो
बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला
नो ऊलकतो ए ॥ १९ ॥ नृपादिक सवि हरखीया, पुत्र
रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण
जर्यां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरे सी निर
धारिनें, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते
कहे बल इति थापना, कीधी ठे करी कल्पना, उत्थापना,
चित्त माने ते कीजीयें ए ॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो,
तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठमी
ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठमी, सो दीनारनी दीठमी,
ऊथमी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी
गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतबल
नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें गेमीयो,
घरवाखर लूंटी लीयो, जीवत दीयो, निज जापित

परिपालवा ए ॥ २६ ॥ शूर कहे वरपातरे, मलया प्रीतमशु खरे, इणिपुरें, निश्चयशु दीसे मली ए ॥२७॥ ज्ञानी वचन साचुं मल्यु, वरपातें दुःख निर्दल्यु, दूरें टल्यु, सकट सघलु आजथी ए ॥ २८ ॥ राज्य मल्यु को तूहर्खे, सिरू नृपें पुजनें वखें, ते तिण वेखें, तातन णी आप्यु वही ए ॥ २९ ॥ सकुदुवा ये महीपति, व हेता स्नेह रसोन्नति, शुजमति, राज काज करता वहे ए ॥ ३० ॥ चोथे खन्डें मीठडी, एकवीशमी रस पूठ ठी, इठमी, दास कही कांतें चखी ए ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कालें तेणे समे, करता ठमविहार ॥ पारस जिनना शिष्य मुनि, चन्द्रयशा अणगार ॥ १ ॥ ते पुरवरने उपवनें, समवसरया गुरु राज ॥ केवलधर सुर नर नम्या, वींट्या साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी त्रिहु लोकने, पूज्य कृपारस सिंधु ॥ जव अनत चाखे यथा, रूपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई वीनव्या, विहु नृपतिने वेग ॥ पुरजन वृंदे परिवरया, आवे नृप सतेग ॥ ४ ॥ पचाजिगमन साचवी, प्रणमी जिननें जम ॥ धर्मकथा सुणता थके वेग विनयी तेम ॥ ५ ॥

ढाल बावीशमी ॥ वणझारानी देशी ॥

॥ चित्त बूजो रे कांई ढांको मोहनी निंद, जागो त्रि
षयघारिणीथकी, नवि बूजो रे ॥ चि० ॥ एतो विषमो
काल पुलिंद, ढल जोवे ढानो तकी ॥ न० ॥१॥ चि०
॥ थेंतो सांकमे ढेरामांही, सूता काल अनादिना ॥
न० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहिं, खोया फोकट के
ई दिना ॥ न० ॥ २॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, ए
हमां स्वाद न को अछे॥ न० ॥ चि० ॥ रहेशो जो ल
पटाय, पछतावो होशे पछें ॥ न० ॥ ३ ॥ चि० ॥ वर्जो
हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ ढां
को मैथुन नूर, परिग्रह मूर्छा मति नजो ॥ न० ॥ ४ ॥
॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी ढांकजो
॥ न० ॥ चि० ॥ प्रेम नाव संचार, तजजो द्वेष नमा
कजो ॥ न० ॥ ५॥ चि० ॥ कलहने अन्याख्यान, चा
की रति अरति तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ पर परिवादादा
न, न करो माया मृषा रजो ॥ न० ॥ ६॥ चि० ॥ मि
थ्यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ न० ॥
॥ चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, गण अढारह नित्य
थी ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जींतो इंड्रिय गाम, मन मां
कमजुं वश करो ॥ न० ॥ चि० ॥ वावो चित्त सुगम,

शील सुरगो आदरो ॥ ज०॥ ८॥ चि०॥ परचो योगा
भ्यास, अहनिशि जावो जावना ॥ ज० ॥ चि०॥ सुगति
दीये विलास, कारण एता पावना ॥ ज० ॥ ए॥ चि०॥ क
त्रिम ए ससार, तन धन यौवन कारिमां ॥ ज०॥ चि०॥
जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज०॥ १०॥
॥ चि०॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां
॥ ज० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्राहि, वालानें आपे
दगां ॥ ज० ॥ ११ ॥ चि०॥ पुण्य अने वली पाप, एहि
ज साथें आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ जोगवशे डुःख आ
प, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ ज०॥ १२ ॥ चि० ॥
चुरु तणु जिम ढाण, नरजव धर्म विना तिस्यो ॥ ज०॥
॥ चि० ॥ सुलहा जवजव प्राणि, धर्म नहीं मलशे इ
स्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत डुलज, मा
नव जव पुण्यें लह्यो ॥ ज० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सु
लज, सफल करो हवे ते वह्यो ॥ ज०॥ १४॥ चि०॥
याचो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आव
शे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाख गमे जजाल, धर्म मारग वि
घ थावशे ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आ
प, क्लेशो पढी जाणयु नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ ॥ टालो
जव सताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ ज० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ ज० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ ज० चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ ज० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ जगवन् मलया जलथकी, करखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पत्नणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ दुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधि मां गजमीन ॥ का० ॥ पमतां जारंम मुखथकी, अति दुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मत्स्यनें वांसे पमी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ

शील सुरगो आदरो ॥ ज०॥ ७॥ चि०॥ परचो योगा
भ्यास, अह निशि जावो जावना ॥ ज० ॥ चि०॥ मुगति
दीये विलास, कारण एता पावना ॥ ज० ॥ ए॥ चि०॥ क
त्रिम ए ससार, तन धन यौवन कारिमां ॥ ज०॥ चि० ॥
जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज० ॥ १०॥
॥ चि०॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां
॥ ज० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें आपे
दगां ॥ ज० ॥ ११ ॥ चि०॥ पुएय अने वली पाप, एहि
ज सार्थे आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ जोगवशे दुःख आ
प, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ ज०॥ १२ ॥ चि० ॥
तुरु तणु जिम ठाण, नरजव धर्म विना तिस्यो ॥ ज०॥
॥ चि० ॥ सुलहा जवजव प्राणि, धर्म नहीं मलशे इ
स्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ ।च० ॥ दश दृष्टांत दुलज, मा
नव जव पुण्यें लही ॥ ज० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सु
लज, सफल करो हवे ते वही ॥ ज० ॥ १४॥ चि०॥
यावो अति ठजमाल, अवसर फिरि नहीं आव
शे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाख गमे जजाल, धर्म मारग वि
च यावशे ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आ
प, कहेशो पछी जाएयुं नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ ॥ टालो
जव सताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ न० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ न० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ न० चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ न० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ नगवन् मलया जलथकी, ऊखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पन्नणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ दुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधिमां गजमीन ॥ का० ॥ पमतां नारंरू मुखथकी, अति दुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मत्सनें वांसे पमी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ

॥ का० ॥ गावें नयपद स्या जएयां, श्रवणें सुएया रे, मीनें मनमां तूठ ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहापोह करया थकी, मीनें चकी रे, दीठो गत जव श्राप॥ का०॥ मीवा वाली नि रखतां, मन हरखता रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का० ॥ ॥ ४ ॥ जोतां मलया ठखखी, पुत्री डु खी रे, लागो विचारण मीन ॥ का० ॥ देखे डु खें अवघरूी, पहमां पमी रे, डुर्विधिनें श्राधीन ॥ का० ॥ ५॥ मुजथी कां ई न नीपजे, नवि सपजे रे, उपकारकना काम ॥ का० ॥ तोपण मूकु इहा थकी, रूडु तकी रे, जिहा होवे वस तीनु गाम ॥ का० ॥ ६ ॥ यदपि कदाचित् ए वली, डु खथी टली रे, पामे वल्लज योग ॥ का० ॥ इम चिं ति तेणे माठलें, धरी पाठलें रे, मूकी थल संयोग ॥ ॥ का० ॥ ७ ॥ कधर वाली निरखतो, पहनें फितो रे, डु ख धरतो जस राय ॥ का० ॥ नेहें हियरूे फूरतो, जल पूरतो रे, पाठो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥ गतजव देखी जागीयो, सोजागीयो रे, माछो पामी विवेक ॥ का० ॥ फासु श्राहार श्राहारतो, मन धारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ए ॥ पूरी फख श्रायुष तिहां, सुगति इहां रे, ऊपजशे लघु कर्म ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, जव थाक

शे रे, आराधि जिनधर्म ॥ का० ॥ २० ॥ सद्गुरु वचनें सद्दहे, साचुं कहे रे, नृपादिक नविलोग ॥ ॥ का० ॥ वेगवती नव सांनली, कहे एम वली रे, अहो अहो नावी जोग ॥ का० ॥ २१ ॥ लोक कहे एक एक प्रत्यें, जूर्ज मह नलें रे, पाल्यो जननी प्रेम ॥ का० ॥ दाख्यो पण लोहारिकें, अधिकाधिकें रे, वानी धारे हेम ॥ का० ॥ २२ ॥ मलया चरित्त सुहामणुं, रलियामणुं रे, कहेतां वाधे प्रीति ॥ का० ॥ ढाल त्रेवीशमी ए सही, मन गह गही रे, कांतिवि जय शुन रीति ॥ का० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूढे वली नर राजिर्ज, नगवन् करुणावंत ॥ मलया महबल पूर्वनव, नांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥ बालायें वली महबलें, श्यां श्यां कीधां कर्म ॥ जेह थकी यौवन समे, लाध्यां ङुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि नणे महीपति सुणो, थिरकरी चित्र बनाव ॥ मलयाने म हबल तणा, नांखुं गत नवनाव ॥ ३ ॥

ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर नलुं, ॥ जिहां पांकु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी गण तुज पुरवरें, एक गृहपति हुतो स

मृद्ध रे ॥ प्रियमित्र नामें अपुत्रिउं, धनवतो पूर्वे प्रसिद्ध रे ॥ धनवतो पूर्वे प्रसिद्ध, पूरवभव केवली, इम भांखे रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रण दयिता तेहने हूती, रुडा वली जड़ा नाम रे ॥ त्रीजी तिम प्रियसुदरी, नामें तस प्रीतिनुं ठाम रे ॥ ना० ॥ २ ॥ वहेन सगी धुरनी विन्हें, माहो माहे धारे नेह रे ॥ किंतु उपर प्रिय मित्रनें, नवि बेहो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुदरी साथें पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते बेहु अगना, पोषे मनमां अति रोष रे ॥ पो० ॥ ४ ॥ प्रियसुदरी प्रियमित्रथी, सिलं कलह करे नित्यमेव रे ॥ प्रायें सोकलणी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें हुतो मित्र रे ॥ प्रियसुदरी साथें तेणें, मांडी रतिप्रीति विचित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अथ स्नाने करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीठो तिहां, तब जाग्यो कोप अछेह रे ॥ त० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगें कही, तस चरित्र रहस्यनु तेण रे ॥ पुरबाहिर काढ्यो परो, निग्रही कोप मशेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बोल्या तिहां केइ वाणिया, जाणे तेह गुह्यनी वात रे ॥ नहीं ए अजाणी अमथकी, पण न करु कोइ परता

त रे ॥ प० ॥ ए ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, विरला कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनवदन जांखुं करी, नागो दिशि धारी एक रे ॥ दुर्वह अटवी मां पड्यो, नूख्यो वली तरस्यो ठेक रे ॥ नू० ॥ ११ ॥ पार लह्यो अटवी तणो, त्रीजे दिन तेणे नेठ रे ॥ आव्यो वही एक गोकुलें, दीठ पशुपालक देठ रे ॥ दी० ॥ १२ ॥ महिषी कुल वन चारता, बेठा तरु ठा या ठाम रे ॥ नोजननो अरथी थसी, आव्यो तेह पा सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया, आपे पय महिषी दोहि रे ॥ पामर जन पण आचरे, करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त णुं नाजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ वे समीप सरोवरें, शीतल जल थानक केय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ पंथे वहेतो अनुक्रमें, चिंते चित्त एम सुहन्न रे ॥ कोइकने आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयत्न रे ॥ हो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम सामुहो, मलीयो मुनि पुण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन टाणे आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ प्रतिला

ची एह साधुनें, सारुं मुज वछित काज रे ॥ सा०॥
॥ १८ ॥ धारी मनशु एहवु, कर जोमी श्रागल श्राय
रे ॥ पभणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध श्रठे मुनिराय
रे॥ प० ॥ १९ ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो
फासु पय एह रे ॥ द्रव्यादिकनी शुद्धता, निरखे मु
नि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ साध्यु श्रनर्गल ना
मथी, मदनें शुज कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी श्रा
वियो, सरपासें लई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ श्राप
कृतारथ मानतो, पीवे पय शेष तिकोय रे ॥ विषम
तटें सरोवर तणे, जल पीवा वेगो सोय रे ॥ ज० ॥ २२ ॥
पग लपट्यो तिहांथी लशी, पमियो जल ऊंमे जाय रे ॥
मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥
म० ॥ २३ ॥ विजय नरेशरने घरें, सुत रत्न पणे उ
त्पन्न रे ॥ कंदर्प नामे थापियो, तस तात मरण
संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो श्राक्रमी, थई
वेगो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खर्में ए कही, कांतें चो
वीशमी ढाल रे ॥ कां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुदरीशुं प्रियमित्र त्यां, विलसंतो एकतान ॥ रु
डा जड्डा नारिशु, बांधे वैर निदान ॥ १ ॥ श्रन्य दिनें

प्रिय मित्रने निज ललनां लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय भे टवा, चाल्यो सपरीवार ॥ २ ॥ पंथें वहेतो अधमगें, आ व्यो ज्यां वड हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे त्यां निज डेठ ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अशु ज सुकृत ए मुंड ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अ शुज अखंड ॥ ४ ॥ इम कहेती प्रियसुंदरी, जन वा हन थोजाड ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रांड कुहाडि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जसोदानें गोरीमें ढोला, पडीरे नगारारी ठोर ढोला, जाग मजा जे रे रणसिंघ जागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने इहां हांजी, परिसह मो टो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग्ग ठावे ॥ त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नज उससियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥ चि० ॥१॥ पद अंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्या न महोदधि लहेरमां हांजी, झीले मुनि अविकार हां जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमझुं बाकरी हांजी, जनो ए हठ मांझि हांजी, कहेती एहवुं रे, कोपी मछराली ॥ कुमतें व्यापी रे, आचरणें काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

सेवक प्रत्यें हांजी, मर्यादा वट टाळि हांजी ॥ क० ॥ ३ ॥ साहमा ए इटवाडयी हांजी, जारे लाव हुताश हांजी, ए पापीनें मांजियें हाजी, जिम होये अशुच विनाश हाजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल पहनें हुवे हांजी, फीटे वली अहकार हांजी, सुदरी सेवक पहवां हाजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे में चरणे पाडुका हाजी, पहेरी वे नहीं आज हाजी, इटामां कुण जायशे हांजी, विषम पलें विण काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदामह एहवो हांजी, चालो आगें सदीस हांजी, वचन सुणी पीचटासनां हांजी, चोल्यो चढावी रीश हाजी ॥ क० ॥ ७ ॥ कहेता एहवु रे, कोप्यो मनरालो ॥ कुमतें व्याप्यो रे, आचरणें कालो ॥ अहो सेवक सुदरी तणा हाजी, बाध्यो वरूशु पाय हांजी, भूमी जिहां लागे नहीं हांजी, वली कटक नच आय हांजी ॥ क० ॥ ८ ॥ वाहनथी प्रियसुदरी हाजी, ऊतरे हेठी तुरत हाजी ॥ मुनिवर पासें आइनें हांजी, निवुर इम पजपत हांजी ॥ क० ॥ ९ ॥ इण अपशुकनें अमतणो हाजी, कदिमस होजो वियोग हाजी ॥ विरह हजो ताहरे सहा हाजी, वाहालानो वली सोग हाजी ॥ क० ॥ १० ॥

पाखंमी तुं पापीउ हांजी, राक्षसनो अवतार हांजी ॥ सब जयंकर सत्वनें हांजी, दुर्जग तुज आकार हांजी ॥ क० ॥ ११ ॥ निठुर इम आक्रोशथी हांजी, तप सीनें त्रणवार हांजी, पाषाणे करी आहशे हांजी, करती कोप अपार हांजी ॥ क०॥१२॥ उंघो मुनिना हाथ थी हांजी, ऊम्पी लीये निरलज्ज हांजी ॥ निज वाह नमां थापीनें हांजी, टाले कुशुकन कज्ज हांजी ॥ क० ॥ ॥ १३ ॥ कुशुकन फल एहनें हुउ हांजी, चालो ह वे निहचिंत हांजी ॥ इम कहेतां परिवारनें हांजी, सुखें दंपती पंथे वहंत हांजी ॥ क० ॥ १४ ॥ यक्ष जवन पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हांजी, बेठा करजोमी बिन्हें हांजी, सारे विधिशुं सेव हांजी ॥ क० ॥ १५ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, तस घर दासी एक हांजी ॥ एहवुं बोली रे, सुंदरी सुगुणा ली ॥ सुमतें व्यापी रे, आचरणा वाली० ॥ कर जोमी दंपती प्रतें हांजी, समजावे इम ठेक हांजी ॥ए०॥ १६ ॥ पापकरम बांध्युं महा हांजी, आज तुमें विण काज हांजी, उपशम धर तेहवो घणुं हांजी, संताप्यो रु षिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो को क रे हांजी, एहवा रुषिनी जेह हांजी ॥ इहजव परजव

मा खहे हांजी, दारिद्र दुःख अठेह हाजी ॥ ए० ॥ ॥ १८ ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमा हाजी, वेष कह्यो वद नीक हाजी, आदर करतो वेषनें हाजी, आणे मुगति नजीक हाजी ॥ ए० ॥ १९ ॥ दासी वचनें तेहवा हाजी, पाम्यां ते प्रतिबोध हाजी॥दुर्गति दुःखथी बीह ना हाजी, थरक्या थई गतक्रोध हाजी ॥ ए ० ॥ २० ॥ पछतावो करता हीये हाजी, झरतां लोचन नीर हा जी, दीन मना थइ आपने हाजी, नींदे वली वली धीर हाजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रशसता हा जी, पाछां आवे धाम हाजी, तेहिज मुनिपासे जइ हाजी, वदे पग शिर नाम हाजी, ॥ ए० ॥ २२ ॥ चो था खरु तणी हुई हाजी, ए पणवीशमी ढाल हांजी, कांति कहे धन्य ते नरा हाजी, मन साले ततकाल हाजी ॥ ए० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो धर्मध्वज आज हु, पाछो फरी पामेश ॥ सोहिज ए थानक थकी, काउस्सग्ग पारेस ॥ १ ॥ क री प्रातज्ञा एहवी, तिमहीज ठजो तेह ॥ राग दोष परिणति तजी, पेठो उपशम गेह ॥ २ ॥ गुण निरखी सयम तणा, स खहे दपती तास ॥ धर्मध्वज पाछो दि

, करता स्तुति अभ्यास ॥ ३ ॥ निजकृत कुचरित
वेष्टना, संचारी सवि राग ॥ गदगद कंठें वीनवें, ध
रतां डुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
ल्योजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
मारा लोची ॥ वारीहो दक्षिणरी हो
राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो
थांशुं कीधी जेरु महारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो
जाउं चामणें साधुजी ॥ राज रूकी चांति हो आदरी,
कोप नाख्यो डूरें फेकी ॥ मा० ॥ १ ॥ मेंतो थारी कीध
हो अवगना, पकीयां मोहें बेहु आप ॥ मा० ॥ चव उप
ग्राही इहां आकरुं, अलवें बांध्युं बुरुं पाप ॥ मा० ॥
॥ २ ॥ खमजो महोटी एह ।वराधना, करुणामें रूके म
नवालि ॥ मा० ॥ ताता कूता पूठें हो जो चसे, पण गज
न पके तेहने ख्याल ॥ मा० ॥ ३ ॥ जंबुक उचो कूके हो
रोशमां, जोरे सोरें मुखकानें पास ॥ मा० ॥ तोही जो
ही मातो हो केसरी, मांके नहीं हणवानो क्यास ॥
मा० ॥ ४ ॥ दोषें पोष्यो चारी हो आतमा, थाशे केहा
अमचा हवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीयें, दू

टा जेथी पातक जाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ पारी काउस्सग्ग त्या हो इम कहे, कोपा जो में एम अकरू ॥ चोखा प्राणी, वारी हो सयमना हो खीजें चामणा प्राणीजी० ॥ जावे कोई नाहीं हो लोकमा, थाशे साधु धरम शत खंरु ॥ चो० ॥ ६ ॥ थेंतो लेखो शुद्ध विवेकशु, पालो रुम्रो जिननो धर्म ॥ चो० ॥ गम्रो दूरें गाढी ए मूढता छेदो चवना पोपक कर्म ॥ चो० ॥ ७ ॥ पामी सूधी शिक्षा हो साधुथी, श्रद्धा आणी साचे चित्त ॥ चो० ॥ बार व्रत चावें हो उच्चरया, समकित शुद्ध जाचावि चित्त ॥ चो० ॥ ८ ॥ जन्के पानें मुनिने आमंत्रिनें, आव्या गेहें दंपती हर्षें ॥ चो० ॥ लीना चीना सार संवेगमा, नाखी मनथी कुमति निकर्षे ॥ चो० ॥ ९ ॥ आवे पुरमा साधु ते गोचरी, चमतो चमतो घर घर बार ॥ चो० ॥ तेहनें गेहें आव्या पुण्यथी, वेषधारी उपशम सार ॥ चो० ॥ १० ॥ निरखी बेहु साधुनें हरखिया, मानें आतम नें सुकयछ ॥ चो० ॥ फासु आपे हो असना चावशुं, दंपति मनमां रीजी लछ ॥ चो० ॥ ११ ॥ पाले बारे व्रत त्या हो निरमला, मिथ्यामत अलगो त ठोरु ॥ चो० ॥ चोथे स्वर्गे चावी उवीशमी, कालें जां खी दाख मन कोरु ॥ चो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुडा ज्रडा नारिनें, शोक्य अने पिउ साथ ॥ म
हा कलह एक दिन हुउं, तेणें निर्भंछी नाथ ॥ १ ॥
शोक्य धरम जगमां निपख, साले साल समान ॥ स
हे मरण पण नवि सहे, शोक्योमां अपमान ॥ २ ॥
धिग धिग जीवित आपणुं, जनम निरर्थक कीध ॥
कलह टले नहीं को दिनें, डुहग पणे पिउ दीध ॥ ३ ॥
यथाशक्ति दानादिकें, कीधां परजव कज्ज ॥ मरण श
रण हवे आदरी, नांखवां डुःखशिर रज्ज ॥ ४ ॥ एक
मनी बे बेहेनमी, चिंती एम एकांत ॥ ठानें जई कूवे
पमी, करवा डुःख विश्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ नायतानी देशी ॥

॥ रुडा मरण तिहां लही, जयपुर नृप श्रीचंद्रपाल
रे लाल ॥ तेहनें घर पुत्री पणे, थई कनकवती इति
बाल रे लाल ॥ ॥ १ ॥ जांखे गत जव केवली, निसुणे प
रषद् धरी कान रे लाल ॥ वैर न करशो केहथी, जो
होय हियमे कांई शान रे लाल ॥ जां० ॥ २ ॥ वीरध
वल इणे राजिये, परणी ते प्रेम रसेण रे लाल ॥
जड्रा मरी थई व्यंतरी, बीजी परिणाम वशेण रे ला
ल ॥ जां० ॥ ३ ॥ जमती ते वन व्यंतरी, एकदिन

पुर पृथिवीगण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रियसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ जां० ॥ ४ ॥ देखी वेर सभारियु, कोपें कलकलती चित्त रे ॥ लाल ॥ सुता विहू ऊपर जई, नाखे निशिमा घरविंति रे लाल ॥ जा० ॥ ॥ ५ ॥ शुभ परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ जां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते, हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी, तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ जां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परजवें जे बांध्यु वेर रे लाल ॥ रुडा चडा नारिशु, तस फल इहां लाधा घेर रे लाल ॥ जां० ॥ ८ ॥ पूरव वैर संजारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस मांके प्रथम आण रे लाल ॥ जा० ॥ ए ॥ पुण्य प्रजावें एहनें, न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूनो निशि देखी एहें, करती उपसर्गह दुष्ट रे लाल ॥ ॥ जा० ॥ १० ॥ वस्त्र विभूषण कुमरना, हरिया इणे क्रोधे व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमां मूकीयां, लाधा ने कुमरनें आप रे लाल ॥ जा० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलनें आदि, रूगायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख-

मीपुंज मनोहरू, सुरवनमाला अनुकार रे लाल ॥ ॥ जां० ॥ १२ ॥ सूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह रियो निशिमांहिं रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी, संजारी वैर अथाह रे लाल ॥ जां० ॥ १३ ॥ गतन्न व वहिंननी प्रीतथी, थाप्यो जई कनका कंठ रे लाल ॥ कोरुी न्नवें पण रस दीये, है विषमी प्रेमनी गंठ रे लाल ॥ जां० ॥ १४ ॥ चोथे खंमे सुंदरू, थई सत्तावी शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी रधवल जूपाल रे लाल ॥ जां० ॥ १५ ॥

दोहा

॥ इणे अवसर विस्मित हीये, वीरधवल जूपाल ॥ पूछे इम केवली प्रत्यें, थापी करतल जाल ॥ १ ॥ स्वयंवर मंरूप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो नहीं मलया प्रत्यें, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हसे कुमर कुमरी मनें, निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र विचित्र ते, जांखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमर मली पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें जव वैर थो, विरच्यो कूरू प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें, कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक गुरुनी कथा, आखे सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ जीरे जीरे स्वामी ॥
॥ समो सख्या ॥ एदेशी ॥

॥ वचन सुणी केवली तणां, बोल्या परषद लोको रे ॥ कदल कद वधारवा, विष जलधर जोको रे ॥ १ ॥ धिग धिग चित्त नारी तणु, अनरथ फल आपे रे ॥ कुमति कदाग्रह पोषीनें, रस रीतें ठलापे रे ॥ धि० ॥ २ ॥ कहे वली आगें केवली, महबल निशि मांहीं रे ॥ व्य नरीयें हणवा जणी, अपहारयो ठलाही रे ॥ धि० ॥ ॥ ३ ॥ महबल मूठी आहणी, नाठो विकराली रे ॥ विषम चरित्ता व्यतरी, न करे वली आली रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ सेवक सुदर ते मरी, थयो चूत ठदको रे ॥ बाहिर पुहवीठाणने, ते वरूमा प्रचको रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जमतो महबल विधिवशें, आव्यो वरूतरु हेठ रे ॥ न चूर्ने तिहां ठंलरव्यो, निरखी गतजब देठ रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ वरू शाखें पग एहना, बाध्यो माथे नीचे रे ॥ जिम धरणी अरूके नहीं, कटक नवि खुचे रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ वचन सजारी एहवु, प्रियमित्रनु तेणें रे ॥ क रया पीरू कुमरनें, सच मारूघो एणे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ शयना मुखमा अवतरी, ईम बोल्यो हसतो रे ॥ मूठ दृभ काइ तुझनें, देखी बाध्यो एकतो रे ॥ धि० ॥ ९ ॥

तुं पण ए द्विज वृक्षतलें, आगामिणी रातें रे ॥ बंधाशे ऊंचे पगें, नीचे शिर थातें रे ॥ धि० ॥ १० ॥ सहेशे बहु दुःख पापथी, टांग्यो जिम चोर रे ॥ तेपण ते द्विज मद्दबलें, सह्यां दुःख कठोर रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ रुद्रायें एकण दिनें, लोनें लही लागो रे ॥ चोरी पि उनी मुद्रिका, गतजवमां आगो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ मुद्रा सुंदर सेवकें, दीठी लेतां ठाने रे ॥ जोतो पियु मुद्रा प्रत्यें, समजाव्यो शानें रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ रुद्रा पासें मुद्रिका, दीठी में ठे जाउ रे ॥ मांगी लीयो इम हलफल्या, आकुल कांइ थाउ रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ व चन सुणी सुंदर तणा, रुद्रा मन रूठी रे ॥ सुंदर सा थें चोरटी, लक्ष्वानें ऊठी रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कोपा कुल बोली इस्युं, जूठ इम कांइ नांखे रे ॥ दुर्मति काप्या नाकना, कांइ शरम न राखे रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ मुद्रा में लीधी किहां, आल एम चढावे रे ॥ मुज स रखी नूंडी नथी, जाणे ठे तुं चावे रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ मौन करी सुंदर रह्यो, बीहीतो मनमांहिं रे ॥ प्रिय मित्रें करी ताफना, लीधी मुद्रा त्यांहिं रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ लघुता कीधी शोक्यमां, रुद्रा अपमानी रे ॥ दीन व दन जांखी थई, रही बापकी ठानी रे ॥ धि० ॥ १ए ॥

दुर्वचनें बांध्यां जिके, रुडा जवें पापो रे ॥ जोगवियां फल तेहना, कनका थई आपो रे॥ धि०॥२०॥ सूति पणे ए सुंदरी, जव वैरिणी जाणी रे ॥ कनकवतीनी नासिका, लीधी मुखें ताणी रे॥ धि० ॥ २१॥ हसता बांधे जे जीवमो, तेह रोतां न बूटे रे ॥ अनरस जा वें परिणमी, चिरकालें ते छूटे रे॥ धि० ॥ २२ ॥ ढाल कही अमवीशमी, चोथे खमें ए चावी रे ॥ कांति कहे मन उल्लसी, सुणो श्रोता चावी रे॥ धि०॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कहे सुगुरु जूपति जणी, शेष कथा विरतत॥ सावधानता आदरी, परषद सकल सुणत ॥ १ ॥ म वन धरतो गतजवें, प्रियसुदरीशु राग॥ कदर्प्प जव तेहथी हुउं, मलयाशु रस लाग ॥ २ ॥ पूर्वें मलया महवलें, लही सकलपें मर्म ॥ दीधु दान सुसाधुने, पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥ ३ ॥ तेहथी सुकुलादिक तणी, सामग्री लही आंहिं ॥ आराधि विहरुं नहीं, सुकृत कमाई क्यांहिं ॥ ४ ॥ जवतारक जिनधर्मनें, रीजि जजो अह खीज ॥ उलटो पण सवलो फलें, जूमि पम्या जो बीज ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठेगणत्रीशमी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥
॥ प्रियसुंदरी मुनिवरनें देखी, आप कुलवट कां
णि उवेखी रे ॥ हुई साधुनी दूषी ॥ बंधु वियोग ह
जो नित्य ताहरे, तुंतो दीसे राक्षस जाहरे रे ॥ हु० ॥
॥ १ ॥ रूपें तुं दीसे नयकारी, प्राण नूतनें दे दुःख
नारी रे ॥ हु० ॥ तुज मुख जोतां पुण्य पणासे, म
ल मलीन वपुष तुज वासें रे ॥ हु० ॥ २ ॥ इम क
हीनें पाषाण प्रहारें, हण्यो मुनिवरनें त्रण वारें रे ॥
॥ हु० ॥ महबल पण तिहां मौन करीनें, अनुमोदे
दृष्टि धरीनें रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ बेहु जणें महापातक
बांध्युं, नीषण नव बंधन सांध्युं रे ॥ हु० ॥ पछता
वो करतां वली पाछें, बहु खेपव्युं समजी आछें रे
॥ हु० ॥ ४ ॥ खेपवतां दल ऊगर्‍या जेहवुं, इहां फ
ल लह्युं तेहथी तेहवुं रे ॥ हु० ॥ त्रिहुं वारें लह्यो
वधु वियोगो, न मटे पूरवकृत नोगो रे ॥ हु० ॥ ५ ॥
कनकाथी लाधो अतिवंको, एणी रात्रिचरनो (राक्ष
सीनो) कलंको रे ॥ हु० ॥ वंक विना मूकी वन सी
में, रखनी गिरि गहन तटीमें रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ देश
विदेश लह्यां दुःख केतां, पार आवे न कहे तेतां रे
॥ हु० ॥ बिहुं जण कर्म तणे अनुसारें, सह्यां संक

ट विविध प्रकारें रे ॥ छु० ॥ ७ ॥ रूपी मुनि रयह
रणु लीधु, मलयायें तिम वली दीधु रे ॥ छु० ॥ तेहथी
पुत्र वियोग लहीनें, फरी पामी संयोग वहीनें रे ॥ छु०
॥ ७ ॥ करी उपसर्ग सुसाधु विराध्यो, अंतें तिम जे
आराध्यो रे ॥ छु० ॥ तेहिज छु उद्मस्थ टलीनें, हुउं
केवली तपसीनें रे ॥ छु० ॥ ए ॥ विद्दु जणनो बीजो
नव एही, महारे नव एकज तेही रे ॥ छु० ॥ वचन
सुणी मनमा कमखाणो, वली बोल्यो इम महीराणो
रे ॥ छु० ॥ १० ॥ नगवन् कनकवती तेम असुरी,
तस वैर विरोधें प्रसरी रे ॥ छु० ॥ करशे एहुनें वली
काई मातु, किंवा वैर पुरातन घातु रे ॥ छु० ॥ ११ ॥
सूरि नणे असुरी कर तारुी, गई वैर विरोध विठामी
रे ॥ छु० ॥ कनकवती नमती इहा आवी, विषमो
एक दाव उपावी रे ॥ छु० ॥ १२ ॥ एक उपद्रव करशे
कापें, तुज सुतनें वैराटोपें रे ॥ छु० ॥ कनका असुरी
छुरित छुरता, नमशे नव काल अनंता रे ॥ छु० ॥
॥ १३ ॥ मलया महचलनो नव नाख्यो, पहमा अव
शष न राख्यो रे ॥ छु० ॥ उंगणत्रीशमी चोथे खंडें,
कांतें कही ढाल उमंगें रे ॥ छु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलया महबलनुं तिहां, निसुणी चरित विशाल ॥ नव निस्पृह परषद हुई, धरी वैराग्य रसाल ॥ १ ॥ दंपति सहगुरु मुखथकी, निसुणी आप चरित्त ॥ अति वैरागें आदरें, बारे व्रत सुपवित्त ॥ २ ॥ मुनि सेवा करशुं सदा, आणी नक्ति विशेष ॥ ग्रहे अनि ग्रह एहवो, सुगुरु मुखें निर्दूष ॥ ३ ॥ केता संयम आदरे, श्रावकनां व्रत केय ॥ नद्रक नावी केई हुआ, रागादिक नाखेय ॥ ४ ॥ चरित आप संताननां, सांन लीनें बिहुं नूप ॥ नवनिरुक थई ऊमह्या, संयम ग्रहण अनूप ॥ ५ ॥

॥ ढालत्रीशमी॥ जिनवचनें वैरागीयोहो धन्ना॥ एदेशी॥

॥ जिनवचनें वैरागीउ हो राया, इम कहे बे कर जोम ॥ राज्य चिंता करि आपणी हो सामी, तुम पासें मन कोम रे हो मोरा सामी, संयम लेशुं बे ॥ १ ॥ संयम रस पीयूषमां हो सामी, केलि करण मन हुंस ॥ विषयादिक लागे तिसा हो सामी, जेहवा कटुक थल तूसरे ॥ हो० ॥ २ ॥ अवसरविद नाणी कहे हो राया, मा प्रतिबंध करेह ॥ तहत्ति करी ऊव्या बिन्हे हो राया, आव्या निज निज गेह रे॥ हो० ॥ ३ ॥ पो

इवीगण तणो कीयो हो राया, सूरें महबल राय ॥ सागरतिलकें थापियो हो राया, शतबल अभिषेका य रे ॥ हो० ॥ ४ ॥ वीरधवल वसुधाधवें हो राया, मल यकेतु अभिधान ॥ आप तणे पाटें ठव्यो हो राया, तिहांद्विज देई सनमान रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ पद चिंता आ प आपणी हो राया, कीधी जनपद क्षेत ॥ संयम ले वा सचरे हो राया, निज निज नारी समेत रे ॥ हो० ॥ ॥ ६ ॥ ते केवली पासें जई हो राया, संयम स्ये अंगी कार ॥ रूके हितशिका ग्रहे हो साधु, चरण करण गु णधार रे ॥ हो मोरा साधु, सयम पाले वे ॥ ७ ॥ सयम दूपण टालवा हो साधु, शम दम शौच पवित्र ॥ तृण मणिनें सरिखा गणे हो साधु, गणे समा रिपु मित्र रे ॥ हो० ॥ ८ ॥ गुरु पासें हुआ अभ्यसी हो साधु, द्वा दश अंगी जाण ॥ ठठ अठम आदें घणां हो साधु, करता तप शुभ जाण रे ॥ हो० ॥ ए ॥ महासती पासें ठवी हो साधु, नृपराणी देइ दीख ॥ सामायिक आदें ग्रहे हो साधु शिवपद साधन शीख रे ॥ हो० ॥ १० ॥ दिन केताइ तिहा रही हो साधु, उपगारी गुरु राय ॥ विहार करे वसुधा तलें हो साधु, बिहु मुनि सेवे पाय रे ॥ हो० ॥ ११ ॥ शोषी तन तप आकरे हो साधु,

सघलां ते व्रत पाल ॥ सुरलोकें थया देवता हो साधु,
संलेषण संन्नालि रे ॥ हो० ॥ १२ ॥ महाविदेहें सिझशे
हो साधु, कर्मतणो करी नाश ॥ अक्षय अव्याबाह
नुं हो साधु, लहेशे पद सविलास रे ॥ हो० ॥ १३ ॥
चोथे खंमें त्रीशमी हो साधु, ढाल कही अन्निराम ॥
कांति विजय कहे माहरो हो साधु, ते मुनिने होजो
प्रणाम रे ॥ हो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ न्नगिनी पति न्नगिनी प्रत्यें, आपूछी अति प्री
ति ॥ आवे आप पुरें वही, मलयकेतु वरु रीति ॥ १ ॥
सागर तिलकपुरें ठवी, सेनानी निन्नंग ॥ महबल
आवे निजपुरें, शतबल सुत लेई संग ॥ २ ॥ पाले रा
ज्य महाबली, गाले अरियण मान ॥ सेवे श्री जिन
धर्मनें, सकुटुंबो महिराण ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ मयणरेहा सती ॥ ए देशी ॥

॥ ते व्यंतर साहायथी रे हां, महबल देश अने
क ॥ साधे महाबली ॥ श्रीजिन वचनां धर्मनी रेहा,
करे महोन्नति एक ॥ सा० ॥ १ ॥ पुरपाटण संबाहणें
रेहां, थापी जिण प्रासाद ॥ सा० ॥ करे नक्ति मुनि
वर तणी रेहां, छांमी पंच प्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥ बो

जो सुत मह्वल तणो रेहां, हुओ सहसवल नाम ॥ सा० ॥ वर लक्षण गुण सायरू रेहां, वश वधारण मान ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकदिनें रयणी समे रेहां, मह्वल मलया नारि ॥ सा० ॥ श्लोक पुरातन चित्त धरे रेहां, अन्वय अर्थ विचार ॥ सा० ॥ ४ ॥ विधिपदनी वक्तव्यता रेहां, चांखी अदृष्ट सरुप ॥ सा० ॥ धर्मा धर्म पदार्थनो रेहां, कथक अदृष्ट अनूप ॥ सा० ॥ ५ ॥ स्वर्ग मुक्ति गति साधना रेहां, हेतु प्रथमपद वाच्य ॥ सा० ॥ नरकादिक गति कर्पणे रेहा, बीजो हेतु अवाच्य ॥ सा० ॥ ६ ॥ कारण जुगपदनो कह्यो रेहां, एकज पद पर्याय ॥ सा० ॥ जाति प्रमुख अनेक छे रेहां, ते छना वाचक प्राय ॥ सा० ॥ ७ ॥ परिपाको रस ते दीये रेहां, चिंतित होये अकयत्न ॥ सा० ॥ शुभ अशुभा दिक जावथी रेहां, थे परिणत फल सत्न ॥ सा० ॥ ८ ॥ अवश्यपणाथी तेहनी रेहां, शक्ति कही बलवंत ॥ सा० ॥ पूरवपक्ष विचारतो रेहां, हुइ निज वश तेह तत ॥ सा० ॥ ए ॥ विषय कषाय वशें पड्या रेहां, ते न लहे तस व्यक्ति ॥ सा० ॥ न्यायें अशुभ विचावनी रेहा चाखे रस परिपक्ति ॥ सा० ॥ १० ॥ जाणो छ वेसे आपथी रेहां, सहज प्रत्यें परतीर ॥ सा० ॥ अ

हो अहो जननी मूढता रेहां, पीवे विष तजी खी र ॥ सा० ॥ ११ ॥ आज लगें नवि उंलख्यो रेहां, निर्मल सहज स्वन्नाव ॥ सा० ॥ नूली नमी नवमां घणुं रेहां, जिम जलनिधिमां नाव ॥ सा० ॥ १२ ॥ दाव नहिं चूकुं हवे रेहां, करवा निज उचितार्थ ॥ सा० ॥ न्नीनी परम संवेगमां रेहां, धारी इंम श्लोकार्थ ॥ सा० ॥ १३ ॥ महबल पण तव ऊन्नग्यो रेहां, नवथी विषय विमुख्क ॥ सा० ॥ परिणति संयम सारनी रेहां, हुइ विहुंने अन्निमुख्क ॥ सा० ॥ १४ ॥ विद्या शीखे शैशवें रेहां, यौवन साधे न्नोग ॥ सा० ॥ वृद्ध पणे व्रत आदरे रेहां, अंते अणसण योग ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ नीति पुराणें एहवुं रेहां, नांख्युं नृप कर्त्तव्य ॥ सा० ॥ महबल मन धारी इश्युं रेहां, सजग हुउं मन न्नव्य ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुत्र सहसबलनें ठवे रेहां, निजपाटें धरी प्रेम ॥ सा० ॥ सागरतिलकें थापीउं रेहां, पहेलो शतबल जेम ॥ सा० ॥ १७ ॥ मलया साथें उन्नवें रेहां, आवे सुगुरु समीप ॥ सा० ॥ पंच महाव्रत उच्चर्यां रेहां, विधिपूर्वक अवनीप ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ ढाल हूइ एकत्रीशमी रेहां, चोथे खंमे अदो

प ॥ सा० ॥ कांति कहे सुणतां हुवे रेहा, अध्यातम रस पोप ॥ सा० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुविहा शिक्षा पालता, विहु जण तप जप लीन ॥ कहे विहार महीतलें, थया सुगुरु आधीन ॥ १ ॥ गुरु आदेशें विहुं जणा, जइ नदननें पास ॥ वारे व्यसनथकी सदा, श्रीजिनधर्म प्रकाश ॥ २ ॥ आप कृतारथ मानता, थे वाधव नृप पूत ॥ मांहो माहि सुशीलथी, थया नेह सजुत्त ॥ ३ ॥ विहुनी श्रीजिन धर्मथी, नेहदी सासे धात ॥ बीजानें पण शीखवे, मारग ते अवदात ॥ ४ ॥ राजऋषि महबल हुवे, वहेतो व्रत असिधार ॥ आगमविद गीतार्थमां, हुर्ज शिरोमणि सार ॥ ५ ॥ एकाकी विचरण नणी, मागी गुरु आदेश ॥ कुक्की सबल महामुनि, विचरे देशविदेश ॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ रमतां फाटो घाघरो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपशमधर मुनि सेहरो रे, सुरगिरि थिर परें चित्त रे राजे ॥ सौम्यें रे जेह आगें पूरण चन्द्रमा रे लाजे ॥ १ ॥ सर्व सहे वसुधा समो रे, अप्रतिहत वायुनें रे तोलें ॥ फूजे रे परिसहथी जेहवो केसरी अनोलें ॥ २ ॥ आलवन ईहे नहीं रे, गगनपरें निरपे

क्ष रे आपें ॥ दीपे रे रवि झीपे ताजा तेजने प्रतापें ॥ ३ ॥ व्रतनो नार उपाडवा रे, समरथ शकटें जेह वो रे धोरी ॥ नाजे रे रागादिकना गढ सिंधुरा वल फो री ॥ ४ ॥ पंकज पत्र तणी परें रे, रहे निर्लेप सदैव रे रूडो ॥ दरियो रे गांजीर्यें जेहनें आगलें न ऊंडो ॥ ५ ॥ अंजन लेश धरे नहिं रे, निर्मल जेहवो शंख रे गाजे ॥ आवे रे उपसर्ग सूरिम आदरी रे गाजे ॥ ६ ॥ विहरंतो मुनि एकलो रे, सांज समय एक दि सनें रे टांणे ॥ आव्यो रे पुर सागरतिलकें उद्याणे ॥ ७ ॥ शतवल सुत ऋषि रायनो रे, राज करे तिहां राजवी रे शूरो ॥ वारे खड्ग धारें अरिनें न्यायमां रे पूरो ॥ ८ ॥ ते ऋषि निरखी उलखी रे, हर्ष जस्यो वनपाल रे दोडी ॥ आव्यो रे नूपतिने प्रणमी वीन वे कर जोडी ॥ ए ॥ देव महाबल साधुजी रे, आज जनक तुम पुण्यथी रे आव्या ॥ वनमां रे एकाकी सं यम योगमां रे नाव्या ॥ १० ॥ शतबल नृपति सुणी इश्युं रे, हरषवशें रोमांचशुं रे व्यापे ॥ प्रीतें रे वनपा लकनें मणिनूषणां त्यां आपे ॥ ११ ॥ अवनीपति चिं ते इश्युं रे, आज हुउ बे असूर रे माटे ॥ काले रे वां दीशुं युक्तें ऋद्धिनें रे थाटें ॥ १२ ॥ धन्य धरा हुई मा

हुरे रे, पावन ए पुर लोक रे सारू ॥ दीधो रे जे पुर्ये जनकें श्राइने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पादुका रे, मूकीनें नरनाथ रे वदे ॥ त्यांहि रे श्रति पर्के रातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग चेटिनो रे, लोची ते निशि छुःखथी रे कार्डे ॥ प्रगटो रे हवे प्रगट्यो दिनकर दीपियो प्रगाढें ॥ १५ ॥ गाम कुई सत्रीशमी रे, चोथे खर्के एह रे चोखी ॥ कांतें रे शुज शातें चाखी रगमा रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जमपद पुर चटकत॥ दैवयोगथी छुस्कणी, तिण पुर श्रावी रहत ॥ १ ॥ तेहिज दिन सध्या समे, काननमां गई काम ॥ दृष्टि पड्यो मलयध्वज मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम ॥ २ ॥ निरखी रूपें ठंसखी, हुई महा चय चीती ॥ तेहिज ए सुत शूरनो, मलयध्वज मुनि श्रवनीत ॥ ३ ॥ मूलथकी ए माहरां, जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां कदे, तो माहारे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह जणी विरचु इहां, तेहवो कोई उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं, मुज कुचरित्त पलाय ॥ ५ ॥ करु उपेक्षा किम हवे, श्रनरथ चापु पाय ॥ नहिं मुज जीवत श्रन्यथा, वली

इण पुर न वसाय ॥ ६ ॥ दुष्ट चरित्रा एहवुं, धारी मन मां पाप ॥ कारज अवसर पक्खती, जई बेठी घर आप ॥

ढाल तेत्रीशमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ एदेशी ॥

सांज विहाणी पछी रातडीजी, व्यापिउं घोर अंधार ॥ तग तग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिरण निशिचार ॥ सां० ॥ १ ॥ एकरूपें थया विश्वनाजी, जूजुआ वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलसमेजी, तमगुणें आप बल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता सुररमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी तेह अलि बांधियाजी, कमल कारागरें दीन ॥ सां० ॥ ३ ॥ लोक निज निज घर विश्रमेजी, वली मट्या मार्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य पणे तेह जिम जार ॥ सां० ॥ ४ ॥ अगनी धुखंती ग्रही हाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्त्तिधर धर्म ज्यों थिर रह्योजी, काउस्सग्गें झलकंते देह ॥ सां० ॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जड्यांजी, संत व्यवहार विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, नावि मुनि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं बाहिरेंजी, निरखीयो शून्य वन जाग ॥ दुष्ट कनका लही आपणोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां० ॥ ७ ॥

सूरे रे, पावन ए पुर लोक रे वारू ॥ दीधो रे जे पु ण्यें जनकें श्राज्ने दीवारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पा डुका रे, मूकीनें नरनाथ रे वदे ॥ त्यांहि रे अति चर्के रातो पापनें निकदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग चेटिनो रे, लोची ते निशि फुःखथी रे काढें ॥ प्रगट्यो रे हवे प्रगव्यो दिणयर दीपियो प्रगाढें ॥ १५ ॥ ढाल हुई बत्रीशमी रे, चोथे खर्मे एह रे चोखी ॥ कांतिं रे शुभ शातें जाखी रगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जनपद पुर जटकत॥ दैवयोगथी फुःखणी, तिण पुर श्रावी रहत ॥ १ ॥ तेहिज दिन सध्या समे, काननमां गई काम॥ दृष्टि पड्यो महबल मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम॥ २ ॥ निरखी रूर्षे उलखी, हुई महा जय जीती ॥ तेहिज ए सुत शूरनो, महबल मुनि अवनीत ॥ ३ ॥ मूलथ की ए माहरां, जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां कदे, तो माहारे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह जणी विरघु इहां, तेहवो कोई उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं, मुज कुचरित्त पलाय ॥ ५ ॥ करुं उपेक्षा किम हवे, श्र नरथ चापुं पाय ॥ नहिं मुज जीवत अन्यथा, वली

॥ढालचोत्रीशमी॥रागवंगाल॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी
॥ रे जीव क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप
कौं तार॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप सं
नार ॥ मेरे आतमा !! हांरे रागादिककी संग निवार
॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर
न उपाव, मत नूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥
काल अनादिका नटक्या अनंत, अजुअ न पाया न
वजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो
फिरि न मिले औसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आ
ठे नाव जिहाज, तर ले नवसागर बिनु पाज ॥ ज्ञा० ॥
नावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रे
॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वनावें करिकें करार, जैसें प
वैं नवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ डुःख पाय तैं नरक निगोद,
करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ता डुःख आ
गें या डुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन ॥
॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर इ
न उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
न आयु, आइ नई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहि
र तनकुं जारेंगी आगि, अन्यंतर तन नहीं इन ल
गि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल, अ

काष्ट अगारनें कारणेजी, किणहीकें थापिया आण॥ गतदिनें सीममा सहजथीजी, सामटा ते मल्याटाण ॥ सा० ॥ ८ ॥ तेह काठें करी पापिथीजी, आवरे साधुनें तेम॥ चिहु दिसें निरखता साधुनुंजी, अग दीसे नहीं जेम ॥ सा० ॥ ए ॥ धिंटता साधुने काष्ठशुंजी, आणी हृत्या महा व्याप ॥ चउगइ दुःख ससारनेंजी, विंटीयो तणीयें आप ॥ सा० ॥ १० ॥ पूर्व जन्म वैरथी तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सलगावीयो चिहु दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सा० ॥ ११ ॥ मुनियें काउस्सग्ग ध्यानमाजी, देखी उपसर्ग मरणांत ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योग रस शात ॥ सा० ॥ १२ ॥ खम्म चोथे खरी खातशुंजी, एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे इवे इहांजी, साधशे साधु जयमाल ॥ सा० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उल्लंघ्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि नरनें तन पावनें, खातो धूमविघेर ॥ १ ॥ कोमल तनु ऋषिरायनुं, वाले वन्हि तपंत॥ मूलथकी फनका तणा, जाणे सुहृद् न दहंत॥२ ॥ विकटोपद्रव पीलता, सहेतां श्री ऋषिराय । नाणे निज आतम प्रत्यें, देश डम न तिरोध॥

॥ढालचोत्रीशमी॥रागबंगाल॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी
॥ रे जीउ क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप
कौं तार॥ ज्ञानी आतमा ॥हांरे तेरे घरका रूप सं
नार ॥ मेरे आतमा॥ हांरे रागादिककी संग निवार
॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर
न उपाव, मत नूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥
काल अनादिका नटक्या अनंत, अजुअ न पाया न
वजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो
फिरि न मिले औसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आ
ठे नाव जिहाज, तर ले नवसागर बिनु पाज ॥ ज्ञा० ॥
नावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रेर
॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वनावें करिकें करार, जैसें पा
वैं नवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ ङुःख पाय तैं नरक निगोद,
करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ता ङुःख आ
गें या ङुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन ॥
॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर इ
न उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
न आयु, आइ नई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहि
र तनकुं जारेंगी आगि, अन्यंतर तन नहीं इन ला
गि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल, अ

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मेरे सब सौं होय, जीउ सकलसौं वैर न कोय ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ आप खमाउ दोषरतीउ, मोसौं खमहो सिगरे जीउ ॥ ज्ञा० ॥ असे धरे मुनि निर्मल ध्यान, क्षपकावलीके चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकौं प्रजारे निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्ल ध्यानानलको प्रयोग, अतर बाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसौं भव उपग्राही कर्म्म, भस्म करें ।उनुमें तजी चर्म्म ॥ ज्ञा० ॥ अतगरू केवली व्है के साध, पायो मुगतिपद भयो हे अबाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, भवकौं जलां जलि दै निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खंडें राग बंगाल, चोतीसमी पूरी भइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कांति विजय कहे देखहु खेल, समतासौं भयो कर्म उखेल ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित आय हुताशनें, हुई जिव्हारें तेथ ॥ नाठी कनका पापिणी, दीक्षिती केथ अनेथ ॥ १ ॥ अहो दुष्टता नारिनी, विधि विरची विष सींची ॥ मा रे अबर्वे अपरनें, तस रस सरवस खींचि ॥ २ ॥ म ति जेहनी पग हेठले, दाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

करतां तेहनें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु हणतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ नांख्यो आगम मां इस्यो, तिर्थंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ भ्रष्ट हुई शुन क र्मथी, डुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां, अ ष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवर्यो, अवनीपति सविलासो रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल नक्ति विलु द्धो रे ॥ जनक वदन जोवा नणी, उत्कंठित मन सू धो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आडंबरें, काननमा जव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह नस्म मय गयो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयाथकी, महीपति डुःखसांहें नड्यो रे ॥ नक्तें प्रीतें रे नोल व्यो, धसके धरा तल पड्यो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें नाख्यो रे राजवी, मूर्छाणो मन ऊणो रे ॥ सजग हुर्ज उ पचारथी, पामे तव डुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ प रिकर डुःखियो रे नृपडुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करला पट अनिषेको रे ॥ ॥ आ० ॥ ६ ॥ नूपति पनणे रे पापीये, किणे ए की

धु अकाजो रे ॥ निर्जय नि कारण वेरीयें, उपसर्ग्यो मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ जवत्रमणथी रे दुर्मति, बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियडु रे तेहनु, वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा रा रे तातजी, पामीनें पण दुहिलां रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हु पहिला रे ॥ आ० ॥ ए ॥ मीट तुमारी रे रस जरी, न पडी माहारे अगें रे ॥ वचन तुमरा रे नवि सुण्या, वेशी क्षण एक रंगे रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहि रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी ठांहि रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख हुर्ज मुज जेतो रे ॥ इण वेला मुज पापथी, थयो दु खरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हु अनाथो रे ॥ सुतवत्सल जाता मुन्हें, लीधो काइ न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकु रे तेहवी, एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लणु ठी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पुस्यो रे जनकनें, विलपे ईम रूपालो रे ॥ कातें चोया रे सरूनी, कही पणती समी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरित लोचन आंसुयें, खेदाकुल नृपाल ॥ निजन टनें इम आदिसे, करि भृकुटीनो चाल ॥ १ ॥ पग अनु सारें निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीनें पाप फल, आवे उदय विकट्ट ॥ २ ॥ आप हृदय गाणे ठव्यो, बीजो दुष्ट परिणाम ॥ दुःअधर्प रस सींचतां, कर्युं क टक विराम ॥ ३ ॥ मुनि हिंसा शाखाशतें, पाम्यो अति विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, वाध्यो चिहुं पख वार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अभिमुख हूउं स मक्ष ॥ हिंसकनें फलशे हवे, पोष्यो पातक वृक्ष ॥ ५ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ लाछलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी ततकाल, कठ्या नृप मठराल, आज हो दुठा रे जण रूठा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां इत उत भूम, मांहे सवली धूम, आज हो धोरे रे अ नुसारे पगनें तेहनेंजी ॥ २ ॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत कुंज निवेश, आज हो दीठी रे त्रिय बीठी पेठी खाह मांजी ॥ ३ ॥ नीचे मुख नयनीत, श्याम वसन अविनीत, आज हो बेठी रे उपरांठी काया गोपवीजी ॥ ४ ॥ सुहमें साही केश, काढी बाहिर देश, आज हो आणी रे कलुषाणी सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नृपें ताकी

जोर, पामती मुख सोर, आज हो पूछे रे कहे शु छे कारण वेरनुजी ॥ ६ ॥ इणिठते महाजाग, मुनिवरनें इणे जाग, आज हो साखें रे तुज पासें न करे को इ स्युजी ॥ ७ ॥ दृणी घणी जूपाल, सींची तरुनी माल, आज हो जाखे रे सवि दाखें करणी आपणीजी ॥ ८॥ रूगे जूप तिवार, नानाविध देई मार, आज हो मारी रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥ ९॥ आप चरितने यो ग, पामी फलनो नोग, आज हो ठही रे डु ख पुठी न रकें ऊपनीजी ॥ १० ॥ नरक तणा सताप, सहेशे अ ति डु:ख आप, आज हो वकें रे जवचकें जमशे बापमी जी ॥ ११ ॥ चोथे खमें रसाल, ठत्रीशमी एह ढाल ॥ आज हो काते रे जखि जातें जाखी शाखयीजी ॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ जूमिपाल निज तातनो, शोक अतीव करत ॥ समजाव्यो सचिवा विकें, पण दृणा नवि ढामत ॥ १ ॥ जाणी तेहवु तातनु, डुस्सह मरण विराम ॥ पमियो शोकसमुडमां, जूप सहस्रवल ताम ॥ २ ॥ शतबल दशशतबल बिन्हें, जनक शोक चित्त धारि ॥ लखमण राम तणी परें, तप अरतिनें धार ॥ ३ ॥ कृष्णदेव वलिचडनें, द्वारावतीने दाह ॥ शोक हुर्व पितृनो जि

स्यो, तिस्यो हुउं इहां प्रांह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजरा जनें, जिसी अजाभी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो, विषम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सात्रीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ ए देशी ॥

॥ एहवें निर्मल चरित्त पवित्ता, सत्य शील संतोष विचित्ता ॥ पालंती व्रत एक चित्ता, साध्वी मलया तप जुत्ता हो राज, महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्में नवि पमि बोहे हो राज ॥ म० ॥ १ ॥ एकादश अंगनी जाण, पामी शुन्न अवधिनाण ॥ नावंती थिर अप्पाण, संयम तव योग विहाण हो राज ॥ म० ॥ २ ॥ संदेह नविकना टाले, कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें नाले, महाबल निर्वाण निहाले हो राज ॥ म० ॥ ३ ॥ निज नंदन प्रतिबोधेवा, नवताप डुरंत हरेवा ॥ आवी तिण पुरि ततखेवा, होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज ॥ म० ॥ ४ ॥ साधुयोग वसतीनें ठामें, पशु पंमग रहित सुधामें ॥ साध्वीनें गण अभिरामें, विंटी रही आइ सुकामें हो राज ॥ म० ५ ॥ शतबल नूपति अति नक्तें, वांदे श्रावकनी युक्तें ॥ समजावा साध्वी युगतें, जिणथी पामे वली मुक्तें हो राज ॥ म० ॥ ६ ॥ राजेंड पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो, पाम्यो शिवसुखमह

मूरो हो राज ॥ म० ॥ ७ ॥ उपसर्गो कनकवतीयें, न कलु मन कलुष प्रतीयें ॥ नवसागर तरता तीयें, अवलंबन दीधु श्रीयें हो राज ॥म० ॥ ८ ॥ धन पुत्र कलत्र गृह नार, जस कारण तजीयें सार ॥ तप लोच क्रिया व्यवहार, साधीजें विविध प्रकार हो राज ॥ म० ॥ ९ ॥ सेवे जे गिरि वन घाटा, सहियें कटुक वचनना कांटा ॥ उपसर्ग उरगनी आटा, खमीयें थई धीरजना साटा हो राज॥म० ॥ १० ॥ दुर्लन ते पद तातें साधु, नीगमीयु भवनय बाधु ॥ हवे कां मन शोकें दाधु, करे कांई वपुष ए आधुं हो राज ॥ म० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य हुई मुनिराय, तिर्णे हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय, कांई शोक करे इणे ठाय हो राज ॥ म० ॥ १२ ॥ पोतानो वाल्हो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शोक के हर्षज होई, कहे हियमें विचारी जोई हो राज॥म०॥ ॥ १३ ॥ विश्वानल पीडा तातें, सांसही होशे पहु वातें ॥ चिंता म करे तिलमातें, जय अरथी खिति सहे गातें हो राज ॥ म० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहेलु तिहां दुःख सहे बाधे ॥ निज कारज सिद्धि आराधे, तव आयत फल सुख लाधे हो राज ॥ म० ॥ १५ ॥ पहेलु दुःख सघले दीसे, पाछें सुख सजन हींसे ॥ इ

में जाणीने विश्वावीशें, मन नाखे शोकमां कीसें हो राज ॥ म० ॥ १६ ॥ नेट्या नहीं चरण पिताना, मत कर इंम नरि चिंताना ॥ पहेली परे हवणां दाना, तुज नक्तिना गुण नहीं ठाना हो राज ॥ म०॥ १७ ॥ शोक मूकीने हवे नूप, संसारनो नावि सरूप ॥ दृढ धारी विवेक अनूप, तज दूरें ए नवकूप हो राज ॥ म० ॥ १ॻ ॥ दुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुकार ॥ लखमी जिम वीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार हो राज ॥म०॥ १ए ॥ तुज सरिखा जो इंम करशे, शोकाकुल हियरुं नरशे ॥ बापमलो किहां संचरशे, धीरज थानक विण फिरशे हो राज ॥म०॥ २० ॥ इंम धर्म तणो उपदेश, निसुणी प्रतिबुऊयो नरेश ॥ ठंमे सवि शोक कलेश, संवेग लह्यो सुविशेष हो राज ॥ म० ॥ २१ ॥ प्रणमे नित्य नित्य नूपाल, महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥सामत्री शमी ए कही ढाल, चोथेखंम कांति रसालहोराज ॥ म०

॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना मुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥ करे महोन्नति धर्मनी, धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शतबल मुनि निर्वृतिथलें, मांम्यो नवल प्रासाद ॥ तात तणी प्रतिमा तिहां, थापे तजी विषवाद ॥ २ ॥

उत्सव रंग वधामणा, नर्त्तवे निशिदीश ॥ ले आहो लखमी तणो, अवसरविद अवनीश ॥ ३ ॥ सकल नगर लोकां प्रत्यें, करी महा उपगार ॥ नृपनें पूछी महत्तरा, तिहांथी करे विहार ॥ ४ ॥ पुहवीगण म हापुरें, लघु सुत बोधण काम ॥ समवसरी मलया महा, सती नमी नृप ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आजत्रीशमी ॥ जाजरीया मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीपति साधवी मुखेजी, निसुणी रे श्रीश्रुत धर्म ॥ सपरिवार जिन धर्ममाजी, थिर थयो प्रीछीनें मर्म ॥ १ ॥ गुणवंतो रे महीपति, नावी सहसबल नाम ॥ ए आकणी ॥ दिन केताइक अंतरेंजी, शतबल नामें नरिंद ॥ महत्तरा वदन नणीजी, थयो उतकठ अमंद ॥ गु ॥ २ ॥ लघु बाधवना प्रेमथीजी, आकरव्यो उमगत ॥ आवे तिहा परिवारसु जी, थे बा धव त्या मिलत ॥ गु० ॥ ३ ॥ बे बाधव विन प्रत्यें जइजी, वांदी महत्तरा पाय ॥ सुणे धरमनी देशनाजी, मन थिरजावें तहराय ॥ गु० ॥ ४ ॥ स मकितधारी व्रतधरजी, पूजितदेव त्रिकाल ॥ दानें पोषे पात्रनेंजी, जीवदया प्रतिपाल ॥ गु० ॥ ५ ॥ य

थाशक्ति तप आचरेजी, साहमीनी करे जक्ति ॥ दान
शाला मांरु घणीजी, वारे अधर्म प्रसक्ति ॥ गु० ॥ ६ ॥
मारि शब्द जनपद थकीजी, काढे दूर तदंत ॥ वीतरा
ग आणा धरेजी, धारे चित्त विकसंत ॥ गु० ॥ ७ ॥
गाम नगर पुर पाटणेजी, थापे जिनना प्रासाद ॥ जि
नजवनें जिन बिंबनेंजी, पूजे अति आल्हाद ॥ गु० ॥
॥ ८ ॥ अठाइ महोत्सव करेजी, रथ यात्रा विरचं
त ॥ तीर्थ यात्रा आदें घणांजी, सुकृत अनेक करंत
॥ गु० ॥ ए ॥ धर्मजारना धुरंधरुजी, मांहो मांहि
सनेह ॥ शासननी उन्नति वधीजी, करता रहे तिहां
बेह ॥ गु० ॥ १० ॥ नृप अनुजाइ पुरतणाजी, लोक
सकल सेवे धर्म ॥ लोकोत्तर धर्मे तिहांजी, ढांक्यो
लौकिक जर्म ॥ गु० ॥ ११ ॥ शुद्ध धर्ममां थापिनेंजी,
पुरजनने समजाई ॥ आपूछी बिहुं पुत्रनेंजी, अने
थि महत्तरा जाई ॥ गु० ॥ १२ ॥ घणा वरस लगें
पालीयुंजी, चारित निरतीचार ॥ तपोयोगध्यानें करी
जी, लघु कस्या डुरितना जार ॥ गु० ॥ १३ ॥ अंतें अण
सण आदरेजी, श्रीमती मलया नाम ॥ आराधीनें क
पनीजी, अच्युत कल्पें ताम ॥ गु० ॥ १४ ॥ बावीश
सागर देवीनुंजी, पालीने निरुपम आय ॥ महा विदेहें

अनुक्रमेंजी, ऊपजशे शुजगाय ॥ गु० ॥ १५ ॥ वोधिजाव लहेशे तिहांजी, सुगुरु सयोग लहे वि ॥ शुद्ध चारित्र तिहां पमिवजीजी, लेहेशे सुगति सुखहे त्रि ॥गु०॥१६॥ ढाल कही अमत्रीशमीजी, चोथा खमनी एह ॥ कांति कहे मलया इहांजी, पामी जवतणो छेह ॥ गु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनथकी, पामी मलया पार ॥ ते माटे ससारमा, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप रीक्रक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानाज्यास ॥ फुहिलम स कट जम्परे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥ २ ॥ सकटमा पण पालीयु, जिम मलयायें शिल ॥ तिम वली वीजो पाल शे, ते लेहेशे शिवलील ॥ ३ ॥ महाबलें जिम सासह्यो, माहा विषम उपसर्ग ॥ तिम वली जे सहेशे खरो, ले हेशे ते अपवर्ग ॥ ४ ॥ जिम प्रथम व्रत आदर्यो, दप तीयें दृढ चित्त ॥ आदरवा तिम जावथी, वीजे पण सुप वित्त ॥ ५ ॥ कीधी मुनि आशातना, दंपतीयें पुर जेम ॥ फुस्क हेतु जाणी तिसी, करशो मा कोई तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥ दीगे दीगे रे वामाजीको नदन दीगे ॥ ए देशी ॥

॥ जावे जावे रे जवि करजो ज्ञान अज्यास ॥ ज्ञानें

संकट कोमि पलाये, ज्ञानें कुमति न बाधे ॥ ज्ञानें सु जश लहे जगमांही, ज्ञानें शिवपद साधे रे ॥ नवि क रजो ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां, मुगति हेतु जिन नांख्युं ॥ तोपण योगक्षेमनुं हेतु, पहेलुं ज्ञानज दाख्युं रे ॥ न० ॥ २ ॥ पासतणा नि र्वाण दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे हुई सत्य शील सलूणी, मलया सुंदरी सुविवेक रे ॥ न० ॥ ३ ॥ श्लोक एकनो नाव विचारी, तेह लही नवपार ॥ ते कारण शिवसाधन साचुं, ज्ञानज एक उदार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ शंख नरेश्वर आगें पहेलुं, श्री केशीगणधारें ॥ मलय चरित नांख्युं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें रे ॥ न० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व लेई, श्रीजय तिलक सूरींदें ॥ नूतन मलयचरित्त संक्षेपें, नांख्युं अति आनंदें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति नामें, त्रण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि इम संबं ध सूधो, धुर अधिकारें लीधो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीत पगण गणनायक गिरुआ, श्रीविजयप्रन्न सूरि ॥ गुण वंता गौतम गुरु तोलें, महीमां महिमा सनूर रे ॥ न० ॥ ८ ॥ तास शिष्य कोविदकुल मकन, प्रेमविजय बु ध राया ॥ कांतिविजय तस शिष्यें इणि परें, विध विध

भाव बनाया रे॥ ज०॥ ए॥ संवत सर मुनि मुनि विधु (१७७५) वर्षे, रही पाटण चोमास॥ श्रीविजयक्षमा सूरीश्वर राज्ये, गाई मलया उल्लास रे॥ ज०॥ १०॥ अखा त्रीज तणे शुभ दिवसें, रास हुउं सुप्रमाण॥ चालककीमानी परें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे॥ ज०॥ ११॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यूनाधिक कांई भाख्यु॥ सघ सकलनी साखें तेहनुं, मिछामिदुक्कम्‌ दाख्यु रे॥ ज०॥ १२॥ उत्तमना गुण परिचय करता, होय समकितनो शोध॥ उत्तर लाभ अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे॥ ज०॥ १३॥ पाटण नगरनो सघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी॥ चिहु खंडें थई सर्व मलयायें, ढाल पंचाणु कीधी रे॥ ज०॥ १४॥ जे भवि भावें भणशे गुणशे, लेहेशे ते जयमाल॥ उंगुणचालीशमी कही कांनें, चोथा खंडनी ढाल रे॥ ज०॥ १५॥ सर्व श्लोक संख्या॥ ३४०० ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलयसुंदरीचरित्रेप्रकृतकान्तिविजयगणिविरचितेप्राकृतप्रबंधे शीलावदातपूर्वभववर्णनोनामाचतुर्थखंड परिसमाप्त॥